* श्रीराधासर्वेश्वरो जयति *

व्रजविनोद

लाल बलबीर का हजारा

एवं (उनके अनुज)

प्रेमसखी की कविताएँ

श्रीधामवृन्दावन

प्रकाशक
श्रीनिम्बार्क शोधमण्डल
वृन्दावन

सम्पादक–मण्डल
व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य, पंचतीर्थ
विहारीदास 'वृन्दावनी'
गोविन्दशरण शास्त्री
राधेश्याम अग्रवाल, एम. ए., सा०र०
(मथुरा)

न्यौछावर
५) पाँच रु०

प्रथमावृत्ति, १०००

★

प्रकाशन–तिथि
अक्षयतृतीया
सं० २०२६, (अप्रेल १९६९)

मुद्रक
बनवारीलाल शर्मा,
श्रीसर्वेश्वर प्रेस, वृन्दावन (मथुरा)

नखशिख वर्णन वि० सं० १९४६ माघ शुक्लपक्ष की शुक्रवारी किसी तिथि को हुआ था—

निधि विधि ग्रह निशिकर हि लह, सम्वत् श्री सुखकन्द ।
माघ शुक्ल तिथि पर भृगू, रच वृन्दावन चन्द ॥

हजारे में मुद्रित पावस पच्चीसी, गिरिराजाष्टक, होरी कीर्तन, राधा शतक, फुटकर कवित्त, प्रेम पचासा, कालियवचन, उद्धव गोपी सम्वाद, दानलीला, कालीदह के कवित्त, दावानल पान, अघासुर वध, वच्छहरण, अन्तर्लापिका, वहिर्लापिका, ब्रह्मचारी लीला, मनिहारी लीला, जोगिनी लीला एवं जयपुरी, अँग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं की रचनाओं में तथा व्यंजनवंध आदि में रचना काल का उल्लेख नहीं मिलता।

हजारा (व्रजविनोद) का प्रकाशन उनकी विद्यमानता में ही हुआ; ज्ञात होता है। उस समय तक की सभी रचनायें इसमें आगईं हैं। उसके पश्चात् भी वे रचना करते ही रहते थे। वि० सम्वत् १९६० के पश्चात् की उनकी एक रचना बाल-पच्चीसी है, जो स्वयं उन्हीं के हाथों से लिखी लाला बाँकेलाल (बलवीर के तृतीय पुत्र) के यहाँ प्राप्त हुई है। किन्तु उसके आदि के १० छन्द नहीं उपलब्ध हुए। वह ई० सन् १९०४ में गोपालप्रसाद विद्यार्थी की रफ कापी में लिखी हुई, उसमें है शालिगराम मास्टर के उर्दू में हस्ताक्षर हैं। लाल बलवीर ने जो सम्वत् लिखे हैं वे स्पष्ट नहीं हैं किन्तु इतना तो निश्चित है कि सन् १९०४ के पश्चात् ही वह लिखी गई थी। उसकी अन्तिम पुष्पिका का ब्लाक नीचे दिया गया है।

होलिकोत्सव
सं० २०२५

व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य
पंचतीर्थ

"तहैं-२४-कोउ नौनतैं बहु जात लला मग [illegible] है छहरु
"पावत हैं-तिनके गहि पुछ लखैं चत है उह-चोकि उठे
"मग धावत हैं-नितके संग पू मल जात चले नंद देख
"उठा[illegible]र लाव वहैं-बलवीर जु मोहन सोहन के यह
" ख्याल नये नित गावत हैं-२५-दोहा [illegible]
" युक्त जुक्त सब सूर के मम बुध नाहि गंभीर ।।
"बाल विनोद पचीसिका । कहैं लाल बलवीर ।।-
" [illegible] बाल बिनोद पच्चीसी श्री लाल बलवीर कृत
[illegible] क जो बजु स्वासं [illegible]

दो शब्द :—

प्रेमनगर व्रजभूमि है, जहाँ न जावै कोय।
जावै तो जीवै नहीं, जियै तो बौरा होय॥

व्रजवसुन्धरा के कण-कण में संगीत की सुमधुर स्वर-लहरियाँ अनुगुञ्जित होती हैं। यहाँ के प्रत्येक लता-बेलि-विटप का स्पंदन लास्यमय—लीलामय है। 'साँकरी गली में माई काँकरी गड़तु है'—यह है यहाँ की अपढ़ ग्रामीण व्रजबालाओं की बोली, जिस पर शत-शत महाकवियों की कविताएँ न्यौछावर हैं। व्रज की इसी महामाधुरी को देखकर एक बार देवर्षि नारद आनन्दातिरेक से मूर्च्छित हो उठे थे। फिर, कहते हैं वे दहाड़ मारकर रुदन करने लग गये। एक व्रजबाला ने जब उनसे पूछा कि—'बाबा, तू काहे कूँ रोय रह्यौ है, या व्रजभूमि में तोपै ऐसी कौन-सी विपदा आय परी ?' तो अश्रु-पूरित नयनों को उत्तरीय से पोंछते हुए देवर्षि ने अवरुद्ध कण्ठ से जो उत्तर दिया था उस पर ज्ञानी-गुमानी महापण्डितों को फिर-फिर विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा था—'देवि, इस व्रजभूमि में दुःख या किसी प्रकार की विपत्ति की अनुभूति के लिए तो अवकाश ही कहाँ है; तथापि क्षणभर के लिए मेरा चित्त इस चिन्तन को लेकर विक्षिप्त हो उठा कि जो लोग अद्यावधि संसार बन्धन में आबद्ध हैं वे ही धन्य हैं, क्योंकि मुझे पूरी आशा है कि वे एक-न-एक दिन इस अचिन्त्य महिमामय व्रजधाम के अकारण-करुण कृपाकण के अधिकारी होंगे (अतः उनके लिए तो चिन्ता करना ही व्यर्थ है।) परन्तु, उन बेचारे हतभाग्य जीवों का क्या होगा जो कैवल्य मुक्ति को लेकर इस रसमय महासिन्धु की मधुर-मदिर रसवीचियों से वञ्चित रह गये ! यह है व्रजधाम के अनुपम-अगाध आनन्दाम्बुधि का केवल दिशा,निर्देशः मात्र इङ्गित, वह इधर है इधर ! इस ओर !!

व्रजविनोद आपके कर-कमलों में है। यह क्या है, कैसा है, इसे हम क्या बताएँ, आप स्वयं ही इसका रसास्वादन कर के निर्णय कर लेंगे। हमारी तो सर्वदा यह अभिलाषा रही है कि 'श्रीसर्वेश्वर' के प्रेमी पाठक महानुभावों की सेवा में प्रतिवर्ष एक अनुपम उपहार प्रस्तुत करते रहें। परन्तु, आप जानते ही हैं कि श्रीधाम में 'श्रीजी का मन्दिर' आज अनेकविध लोकोपकारी पारमार्थिक सेवाओं का एक अनुपम केन्द्र बन चुका है, अतः तत्सम्बन्धी व्यस्तता और कुछ आर्थिक संकोच के कारण भी, हम अब तक ऐसा करने में पूर्णतः सफल नहीं हुए हैं। तथापि श्रीसर्वेश्वर-प्रकाशन-समिति ने अब यह निश्चय कर लिया है कि जैसे भी होगा, हम पाठक महानुभावों को प्रतिवर्ष ही एक उपहार भेंट करते रहेंगे। कहना न होगा कि हमारे इस निश्चय की सफलता आपकी पूर्ववत आत्मीयता, सहयोग और भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन की कृपा-कादम्बिनी पर ही अवलम्बित है।

किमधिकं विज्ञेषु !

[illegible]पाक

श्री लाल बलबीर : सम्प्रदाय
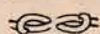
श्री लाल बलबीर और प्रेमसखी दोनों सहोदर भ्राता थे और एक ही सम्प्रदाय एवं एक ही गुरु के शिष्य । किन्तु कुछ लेखकों ने भ्रम से उन्हें भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के अनुयायी लिख डाला था । उनमें किसी ने किसी से जैसा सुना वैसा ही लिख डाला । विशेष अनुसन्धान नहीं किया, न उनकी रचनाओं का ही पूरा अध्ययन किया । कुछ सज्जनों ने यद्यपि उनकी रचनाओं का अध्ययन किया तथापि "राधारमण" आदि शब्दों को देखकर लाल बलवीर राधारमणीय गौड़ीय सम्प्रदाय के होंगे ऐसा अनुमान कर लिया । "श्रीगुरु दीन दयाल जू" ऐसे शब्दों से उनके गुरुदेव के नाम का भी अनुमान लगाकर "दीनदयाल" नाम लिख डाला । इस प्रकार इस सम्बन्ध में विशेष छानबीन न होने के कारण लाल बलवीर के सम्प्रदाय में भ्रान्त धारणायें बन गई थीं । जिन सज्जनों ने लाल बलवीर को राधारमणीय गौड़ीय सम्प्रदाय का अनुयायी लिख दिया है उनका यहाँ थोड़ा उल्लेख करना आवश्यक है जिससे कि उनके द्वारा समुत्पन्न भ्रम का परिमार्जन हो सके ।

मथुरास्थ बाबू प्रभुदयालजी मीतल ने कई पुस्तकें लिखी हैं उनमें एक है—चैतन्य मत और व्रजसाहित्य, उसमें चैतन्यमत के रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । लाल बलबीर को भी उन्होंने उसी मत के अनुयायियों में परिगणित कर लिया है, किन्तु उसका कुछ भी आधार भूत प्रमाण उन्होंने नहीं दिया ।[1] इस व्रजविनोद विशेषांक का प्रकाशन करते समय जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने निम्नाङ्कित पत्र लिखा :—

ता० १।३।६६

मान्यवर श्रीअधिकारीजी ! प्रणाम ।

आपका पत्र प्राप्त हुआ । यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप 'व्रजविनोद' ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहे हैं । इसके रचयिता ला० बद्रीदास उपनाम लाल बलबीर का उल्लेख मेरे ग्रन्थ चैतन्य मत और व्रज साहित्य में हुआ है, आपके लिखे अनुसार इस ग्रन्थ की एक प्रति मैं आपके अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ ।

जिस समय उक्त ग्रन्थ की सामग्री मैं एकत्र कर रहा था उस समय "लाल बलवीर" के विषय में मुझे ला० नन्दकिशोरजी मुकुटवाले से पता चला था । उन्हीं से मुझे ज्ञात हुआ कि लाल बलवीर राधारमणीय गोस्वामियों की शिष्य परम्परा में थे, इसीलिए मैंने उनका उल्लेख उक्त ग्रन्थ में किया है, मुझे उनके राधारमणीय होने का कोई पक्का प्रमाण नहीं मिला था इसी लिए मैंने वह प्रमाण भी अपने ग्रन्थ में नहीं दिया है । आपने व्रजविनोद ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भवतः इस दृष्टि से किया है कि आप उन्हें निम्बार्क सम्प्रदायी मानते हैं । यदि वे किसी प्रमाण से निम्बार्क सम्प्रदाय के अनुयायी सिद्ध होते हैं तो इससे मुझे प्रसन्नता होगी । क्योंकि इस तरह उनके सम्प्रदाय का निश्चय तो हो जावेगा, मुझे उन्हें राधारमणीय मानने का कोई आग्रह नहीं है । मेरा वृन्दावन आना तो इस समय सम्भव नहीं है, हो सका तो होली बाद मैं आपसे मिलूँगा ।

आपका—प्रभुदयाल

---

१ चैतन्य मत और व्रज साहित्य (प्रथम संस्करण सं० २०१९) पृ० ३४८

हमने श्रीमीतलजी को इसी विचार विमर्श के लिये बुलवाया था कि जब लाल बलबीर के ग्रन्थ में जो उनकी विद्यमानता में ही आज से ७५ वर्ष पूर्व श्यामकाशी प्रेस में मुद्रित हुआ था। अनेकों स्थलों पर उनके सम्प्रदाय और गुरुदेव के नाम का स्पष्ट उल्लेख है, फिर आपने उन्हें चैतन्य (गौड़ीय) मत में किस आधार पर लिख डाला ? उसका प्रत्युत्तर यद्यपि मीतलजी ने उपर्युक्त पत्र द्वारा दे दिया तथापि उनके द्वारा लिखित उस पुस्तक को पढ़नेवालों में तो वह भ्रान्ति बनी ही रहेगी। विशेष छानबीन किये बिना लिखे जाने के कारण ही बहुत से कवियों के सम्प्रदाय आदि परिचय सम्बन्धी भ्रान्तियाँ फैल गई हैं।

मीतलजी ने लाल बलबीर के सम्बन्ध में जो बातें लिखी वे सब सुनी सुनाई ही हैं, उनमें कोई बात ठीक भी हो सकती है किन्तु–उनका जन्म संवत् १९१५ अथवा उससे कुछ पूर्व, वह और उनका घराना राधारमणीय गोस्वामियों की शिष्य परंपरा में चैतन्य मतानुयायी था, ये दोनों तो सम्भावना मात्र ही हैं।

ला० नन्दकिशोर जी मुकुट वाले साहित्य प्रेमी हैं। उन्होंने बलबीर का मुद्रित हजारा पढ़ा होगा। उसमें "मेरे श्रीराधारमण" आदि पदों को देखकर उन्होंने अनुमान कर लिया हो और वही मीतलजी से कह दिया हो। किन्तु हमने उनसे कई बार पूछा तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में निषेध कर दिया कि "यह तो हमें पता नहीं कि लाल बलबीर किस सम्प्रदाय के अनुयायी थे, वे कैसा तिलक लगाते थे, यह भी स्मरण नहीं है।

श्री मीतलजी की भाँति ही श्रीराधेश्याम अग्रवाल एम. ए. साहित्यरत्न जो लाल बलबीर के पौत्र लगते हैं, कई एक पत्र-पत्रिकाओं में भ्रम से उन्हें राधारमणीय लिख दिया है।१ राधेश्यामजी उत्साही लेखक हैं अन्वेषण में रुचि भी है, किन्तु मीतलजी के लेख का ही संस्कार उनके हृदय में जम गया। उसी के अनुसार "मेरे श्रीराधारमण" आदि पदों का तात्पर्य समझलिया। वास्तव में केवल "राधारमण" आदि शब्दों के आधार पर ही किसी सम्प्रदाय का निश्चय नहीं हो सकता। भगवान् के राधारमण आदि नामों का सभी सम्प्रदायों में प्रयोग होता है।

ऐसी ही सम्भावना उन्होंने प्रेमसखी के एक दोहे में की है :—

"श्रीगुरु दीनदयालु जू यह अवलाषा मोर" इस पद में प्रयुक्त दीनदयाल विशेषण को ही प्रेमसखी के गुरु का नाम निर्धारित करना चाहा है और "परस राम पद वंदिके" इस पद से प्रेमसखी द्वारा अपने पिता रामलाल के नामोल्लेख की सम्भावना करली गई है। वास्तव में इनमें पहला गुरु का विशेषण है और दूसरा "श्रीपरशुरामदेव" की वंदना है। इन्हीं श्रीपरशुरामदेवजी की परम्परा में उनके गुरुदेव श्रीकृष्णअली थे जिनका नामोल्लेख प्रेमसखी और बलबीर दोनों भ्राताओं ने अनेकों स्थलों पर किया है।

श्रीराधेश्यामजी का ध्यान उन पदों की ओर आकर्षित कराया गया तब उन्हें यह निश्चित् हुआ कि प्रेमसखी की भाँति लाल बलबीर भी श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के ही अनुयायी थे। इस अभिमत का उनका एक लेख प्रस्तुत ग्रंथ के आरम्भ में ही संलग्न है।

---

१ द्रष्टव्यः—शिक्षक संसार वर्ष ४ अंक १० (सन् १९६८)। वही वर्ष ५ अंक १ पृ० ३ (सन् १९६८ ई०) ब्रजभारती वर्ष २१, अंक १ पृष्ठ २३ (ज्ये० वि० सं० २०२४)। ज्ञानदा वर्ष २ अङ्क १ पृ० ६६ (सं० २०२५) आदि-आदि।

डा० शरणविहारीजी गोस्वामी ने भी सम्भवत: श्रीमीतलजी का ही अनुकरण करके लाल बलबीर को गौड़ीय सम्प्रदाय के रचनाकारों में सम्मिलित कर दिया है, किन्तु वे उसके पोषक कुछ भी प्रमाण नहीं दे सके हैं। पाद टिप्पणी में केवल—इनका जीवन परिचय इनके पुत्र श्रीबाँकेलालजी से प्राप्त हुआ है—इतना निर्देश कर दिया है।[1] "इनका देहावसान ७८ वर्ष की आयु में सं० १९७१ में हुआ" डा० गोस्वामी का यह उल्लेख भी निराधार ही है, क्योंकि अनुसंधान द्वारा यह निश्चित होगया है कि वि० सं० १९७७ श्रावण कृष्णा अमावस्या को उनका देहान्त हुआ था। उस समय उनकी आयु ८० वर्ष से भी कुछ अधिक थी। अस्तु ! लाल बलबीर की रचनाओं का अनुशीलन न करने से ही उपर्युक्त सभी लेखकों को भ्रम हुआ है। उसके निवारणार्थ, यहां लाल बलवीर की रचनाओं के उन अंशों को उद्धृत कर देना परमावश्यक हैं जिनमें कि उनके सम्प्रदाय और गुरुदेव का संकेत ही नहीं स्पष्ट उल्लेख मिल रहा है। उससे पूर्व प्रेमसखी के उद्गार भी अवलोकनीय हैं जिनमें उन्होंने अपने सम्प्रदाय और गुरुदेव का नाम व्यक्त किया है—

श्री निम्बारक भजहु मन, श्री भट श्री हरिव्यास।
परसराम पद सुमरि कैं, कृष्ण अली की आस ॥[2] (व्र. वि. पृ. १५४)

इस मंगल दोहे में प्रेमसखी ने श्रीनिम्बार्काचार्य, श्रीभट्ट, श्रीहरिब्यास, श्रीपरशुरामदेव, और अपने गुरुदेव श्रीकृष्णअलिजी का स्मरण करके अपनी गुरु परम्परा दिखलाई है। इसके अतिरिक्त–'कृष्ण अली जू की कृपा विन को निहारी है', 'कृष्ण अली मंगला की आरती करत', 'कृष्ण अली जू मिली भली मोहि', 'प्रेमसखी सांझी की लीला कृष्ण अली जू के बल गाई, सदा रहौं रंग देवी जू कौ चरन शरन निशिदिन लपटाई'— इन पदों के द्वारा रहस्य परम्परा का उल्लेख भी कर दिया है। अपने को उन्होंने, श्रीरंगदेवीजी के यूथ के अन्तर्गत श्रीकृष्ण अलीजी का कृपापात्र (शिष्य) घोषित किया है।

कहीं-कहीं पर कृष्ण अली शब्द से उन्होंने सखी रूपा श्रीगुरुदेव और उपास्य रूपा श्रीकिशोरीजी इन दोनों का एक साथ भी बोध कराया है। सखी नाम परम्परा में भी अपने गुरुदेव का सखी रूप से निम्नांकित एक पद में उन्होंने स्पष्ट स्मरण किया है—

प्यारी मोहि कीजै वृन्दावन वासी।
मोसी दीन नहीं कोउ सुन्दर तुमसी नहीं सुख रासी॥
श्रीरंगदेवी हितू सहचरी श्रीहरिप्रिया उपासी।
काहे घर तजि फिरत आन ग्रह मेटो जगत की हांसी॥
रहौं सदा पद कंज मंजु गह निरखौं हास विलासी।
प्रेमसखी की आस निरन्तर कृष्ण अली की दासी (पृ. १९८ पद ९५)

इस पद में श्री रंगदेवी (निम्बार्क) हितू (श्रीभट्ट) हरिप्रिया (हरिव्यास) और उन्हीं की परम्परावाली कृष्ण अली (अधिकारी कृष्णदास) की अपने को दासी कहा है। इसी का विशेष स्पष्टीकरण उनके 'कृष्ण अलो की शरन पाइकैं प्रेमसखी सुख राशी हैं हम।'

---

१ श्रीकृष्ण भक्तिकाव्य में सखीभाव पृ० ६४५।

२ प्रेमसखी की फुटकर रचनाओं में आरम्भिक मंगलाचरण। यह व्रज विनोद के साथ वि० सं० १९५० में स्वयं उन्होंने प्रकाशित करवाया था, पृ० ३२४।

इस पद में होगया है । 'सन्त गुरु षिमियो अपनों जान' इत्यादि पदों द्वारा कहीं-कहीं पर कृष्ण अलीजी को उन्होंने सन्त भी कहा है ।

इन सब उद्धरणों से निर्विवाद सिद्ध है कि प्रेमसखी (प्रेमदास) श्रीनिम्बार्कीय परशुरामदेवजी के द्वारान्तर्गत कृष्ण अली (कृष्णदासजी अधिकारी) जी के शिष्य थे । वे वनखंडी मुहल्ले में ही श्रीजी की नई कुञ्ज में विराजते थे । उनके पास ही रामलालजी अग्रवाल के पुत्र बद्रीप्रसाद और प्रेमदास रहा करते थे । और वे उन्हीं श्रीकृष्ण अलीजी (अधिकारी कृष्णदासजी) के शिष्य थे, यह उन्ही ला० बद्रीप्रसाद (लाल बलवीर), की रचनाओं में स्पष्ट उल्लिखित है; उनके कुछ अंश यहाँ उद्धृत किये जाते हैं—

श्रीगुरुचरन सरोज रज मम उर करौ निवास (षडऋतु शतक का आरम्भ) यहाँ सामान्य रूप से गुरुदेव का उल्लेख है किन्तु उसके अन्त में उन्होंने अपने गुरुदेव का नाम स्पष्ट रूप से दे दिया है–'कृष्ण अली पद कमल बल षड्ऋतु शतक वषान ।' नख-शिख वर्णन में भी स्पष्ट कर दिया है–'रहौ लाल बलवीर सिर, कृष्ण अली पद धूर ।' इसी प्रकार शिख-नख वर्णन के आदि में–'श्रीगुरु चरन सरोज रज वन्दौं बारम्बार ।' ऐसा सामान्य निर्देश करके पश्चात् 'कृष्ण अली पद कमल बल जो कछु वरनी जाय' इसमें स्पष्ट नामोल्लेख किया है । प्रेमदासजी की भाँति उन्होंने भी अपने गुरु को सन्त कहा है–

श्रीगुरु सन्तन के चरन उर लावन की आस ।
ये ही अवलाषा रहै कोउ करौ उपहास ॥

इसी प्रकार शिख-नख की पूर्ति पर अपने गुरुदेव (कृष्ण अली) जी को श्रीरंगदेवी (निम्बार्क) जी के यूथान्तर्गत भी उन्होंने कहा है —

श्रीरंगदेवी की सखी कृष्ण अली सुसुजान ।
तिनहि कृपा शिखनख कह्यो, अपनी मति अनुमान ॥

गदेवीजी के सम्बन्ध में कुछ स्वतन्त्र पद भी उन्होंने बनाये हैं—

श्रीरंगदेवी अब में शरन तिहारी आई ।

श्रीराधा शतक के आदि में—

कृष्ण अली पद कमल रज मम उर करौ निवास ।

और अन्त में–कृष्ण अली की कृपादृष्टि पाय, पाय राधा ठकुरायन के पायन की चाकरी । ऐसा कृष्ण अली नाम वाले अपने गुरुदेव का नाम स्मरण रूप मंगलाचरण किया है ।

इन सब उद्धरणों के अन्तः साक्ष्य से प्रमाणित होता है कि 'श्रीरंगदेवी-यूथ की सखी श्रीकृष्ण अली' अर्थात् श्रीनिम्बार्कीय परशुराम द्वारे के अधिकारी श्रीकृष्णदासजी की जिस प्रकार वन्दना प्रेमदास ने की है ठीक उसी प्रकार उन्हीं अपने गुरुदेव की वन्दना लाल बलवीर ने की है । यदि वे गौड़ीय सम्प्रदाय के होते तो उनके निरीक्षण में प्रकाशित हजारा में चैतन्य या गौराङ्ग आदि शब्दों से वंदना किये विना कदापि नहीं रहते । किसी भी गौड़ीय सम्प्रदाय के व्यक्ति का ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं मिलता जिसमें कि महाप्रभुजी का नामोल्लेख न हो । ऐसी स्थिति में किसी भी प्रकार का संदेह अवशिष्ट नहीं रहता कि लाल बलबीर किस सम्प्रदाय के अनुयायी थे ? उनके निम्बार्कीय होने में ऊपर प्रदर्शित उनकी उक्तियाँ ही प्रमाणभूत हैं जो सूर्य की भाँति प्रकाश करके भ्रम के अज्ञानान्धकार को समूल नष्ट कर रही हैं । विचारशील विद्वान् उनकी रचनाओं का मनन करके इसी निष्कर्ष को अपनायेंगे और सभी भ्रान्त धारणायें समाप्त होंगी, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है ।

—सम्पादक

श्री लाल बलबीर और प्रेम-सखी की गुरु परम्परा :—

प्रकट नाम	रहस्य नाम
१—श्रीहंस भगवान्	
२—श्रीसनकादिक	(हरिणा आदि)
३—देवर्षि श्रीनारद भगवान्	(मुग्धादि)
४—श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीनिम्बार्क-महामुनीन्द्र	(श्रीरङ्गदेवी)
५—श्री श्रीनिवासाचार्यजी	(नव्यवासा)
६—श्रीविश्वाचार्यजी	(विश्वाभा)
७—श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी	(उत्तमा)
८—श्रीविलासाचार्यजी	(विलासा)
९—श्रीस्वरूपाचार्यजी	(सरसा)
१—श्रीमाधवाचार्यजी	(मधुरा)
११—श्रीबलभद्राचार्यजी	(भद्रा)
१२—श्रीपद्माचार्यजी	(पद्मा)
१३—श्रीश्यामाचार्यजी	(श्यामा)
१४—श्रीगोपालाचार्यजी	(शारदा)
१५—श्रीकृपाचार्यजी	(कृपाला)
१६—श्रीदेवाचार्यजी	(देवदेवी)
१७—श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी	(सुन्दरी)
१८—श्रीपद्मनाभभट्टाचार्यजी	(पद्मालया)
१९—श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी	(इन्दिरा)
२०—श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्यजी	(रामा)
२१—श्रीवामनभट्टाचार्यजी	(वामा)
२२—श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी	(कृष्णा)
२३—श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी	(पद्माभा)
२४—श्रीश्रवणभट्टाचार्यजी	(श्रुतिरूपा)
२५—श्रीभूरिभट्टाचार्यजी	(भगवती)
२६—श्रीमाधवभट्टाचार्यजी	(माधवी)
२७—श्रीश्यामभट्टाचार्यजी	(असिता)
२८—श्रीगोपालभट्टाचार्यजी	(गुणाकरी)
२९—श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी	(बल्लभा)
३०—श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी	(गौरांगी)
३१—श्रीकेशवभट्टाचार्यजी	(केशी)
३२—श्रीगांगलभट्टाचार्यजी	(पवित्रा)
३३—श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टा०	(कुंकुमांगी)
३४—श्री श्रीभट्टाचार्यजी	(हितू)
३५—श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी	(हरिप्रिया)
३६—श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी	(परमा)
३७—श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी	(हितअलवेली)
३८—श्रीनारायणदेवाचार्यजी	(नित्यनवीना)
३९—श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी	(मनमञ्जरी)
४०—श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी	(गौरांगी)
४१—श्रीगोविन्दशरणदेवाचा०	(गुणमंजरी)
४२—श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचा०	(रूपमंजरी)
४३—श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचा०	(रसमंजरी)
४४—श्रीकृष्णचरणजी, अधिकारी	(कृष्णप्रिया)
४५—श्रीदामोदरदासजी	(दामा)
४६—श्रीकृष्णदासजी	(कृष्ण अली)

लाल बलबीर (दासी)	प्रेमदास
(बद्रीप्रसाद)	(प्रेमसखी)

★

आभार प्रदर्शन

श्री व्रजविनोद के प्रकाशनार्थ सर्वप्रथम पं० जगन्नाथजी गौड़ और श्रीरि शर्मा इन दोनों सज्जनों से विशेष प्रेरणा मिली। राधाशतक और व्रज विनोद की मुद्रित पुस्तकें भी इन्होंने दीं। लाला नन्दकिशोरजी मुकुट वालों से लाल बलबीर की रचनाओं के कुछ हस्तलिखित पन्ने और उनको जीवनी के सम्बन्ध में जानकारी भी प्राप्त हुई। लाल बलबीर के पुत्र ला० बाँकेलाल और उनके सुपुत्र दाऊदयाल आदि सभी परिवार से, परिचय सम्बन्धी जानकारी और हजारे की हस्तलिखित प्रतियाँ भी प्राप्त हुई। श्री राधेश्यामजी अग्रवाल (श्री लाल बलवीर के पौत्र) एम. ए. मथुरा, से हजारा के आरम्भ और प्रेमदासजी की रचनाओं के अन्तिम भाग का संदर्भ प्राप्त हुआ, जो बहुत

खोजने पर भी अन्यत्र प्राप्त नहीं हो सका था। श्रीराधेश्यामजी के लेखों से अच्छी सहायता प्राप्त हुई। उन्होंने एक लेख भी लिखा। इस प्रकार व्रजविनोदकार के परिवार का सराहनीय सहयोग रहा।

पं० श्री वासुदेवशरणजी और उनके भागनेय पु० ब्रजगोपालजी ने भी हजारे की प्रतियाँ जुटाने में विशेष योग दिया। बाबू श्रीप्रभुदयालजी मीतल से भी अपेक्षित सामग्री और परामर्श मिला। डा० गोस्वामी शरणविहारीजो के शोध-प्रबन्ध का भी उपयोग किया गया। डा० श्रीनारायणदत्तजी शर्मा, प्रधानाचार्य जवाहर विद्यालय मथुरा, पं० गोविन्द शर्मा शास्त्री एम. ए. आदि आत्मीयजनों से विचार एवं लेख आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इन सबके सहयोग से ही प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन, प्रकाशन में सफलता प्राप्त हुई।

अत: उपर्युक्त सभी सज्जनों के हम हृदय से आभारी हैं।

जहाँ-तहाँ प्रूफ संशोधन में त्रुटियाँ हो गयी हैं, उन स्थलों को विज्ञ पाठक सुधार कर पढ़ने का कष्ट करें।

—प्र० सम्पादक एवं प्रकाशक

विषय सूची

*

—:o:—

* श्रीराधासर्वेश्वरो विजयतेतराम् *

ब्रजविनोद

वृन्दावन--शतक

* दोहा *

गोरी मन भोरी अहो, श्रीराधे सुख रास।
चरन कमल बंदन करौं, पुजवौ जन की आस ॥ १ ॥
श्रीराधे राधे रटौं, राधे कौ उर ध्यान।
मम कुल देवी देवता, राधा रमण सुजान ॥ २ ॥
श्री गुरु चरन सरोज जुग, मम उर करहु निवास।
कछु छवि वरनन चहत हौं, वृन्दाविपिन विलास ॥ ३ ॥
जै जै श्रीवृन्दाविपिन, जै जै श्रीसुखरास।
जै जै रसिकन प्रान-धन, मम उर करहु निवास ॥ ४ ॥
ब्रह्म सनातन शुद्ध हरि, हरन सकल जग फन्द।
सो वृन्दावन चन्द में, फँस्यो प्रेम के फन्द ॥ ५ ॥
जे मन मोहन लाड़ले, मोहे सुर मुनि वृन्द।
सो छवि लखि मोहित रहे, श्रीवृन्दावन-चन्द ॥ ६ ॥
श्रीवृन्दावन चन्द छवि, कापर बरनी जाय।
काकी समता दीजिये, रही गिरा सिरनाय ॥ ७ ॥
तीन लोक ते सरस है, वृन्दावन सुख कन्द।
जहँ निस दिन विहरत रहैं, श्रीराधागोविन्द ॥ ८ ॥
तजो गेह सुख देह के, और जगत के फन्द।
जुगल चरन सों प्रीति कर, बस वृन्दावन चन्द ॥ ९ ॥

* कुण्डलिया *

श्रीराधा राधा रटौ, त्याग जगत की आस।
व्रज वीथिन विचरत रहौ, कर वृन्दावन वास॥
कर वृन्दावन वास रसिकजन संगति कीजै।
प्रेम पंथ मन ढरौ त्याग विष अमृत पीजै॥
कहैं लाल बलबीर होय आनन्द अगाधा।
निश्चै करिके चित्त कहौ श्रीराधा राधा॥१०॥

* दोहा *

नमो नमो वृषभानुजा, नमो नमो सुखरास।
नमो नमो असरन सरन, मम उर करो निवास॥ ११ ॥
जद्यपि अधम मलीन हौं, तदपि तिहारी आस।
सदा कृपा करि दीजिए, श्रीवनराज निवास॥ १२ ॥
श्रीवृषभानु–कुमारि जू, विनय करौं सुनि कान।
देहु निरन्तर आपने, चरन कमल कौं ध्यान॥ १३ ॥
हृदै सरोवर प्रेमजल, तुम पद हृद अरविन्द।
मन मिलिंद चाहत प्रिये, सदा सदा मकरन्द॥ १४ ॥
अब कछु बरनन चहत हौं, वृन्दाविपिन विलास।
कृपा दृष्टि करि स्वामिनी, पुजवहु जन मन आस॥ १५ ॥

* कवित्त *

(१६)

प्यारी श्री विहारी जू की रूप उजियारी राधे, इनके सदाँई पद-पद्म सिरनाऊँ मैं।
कृष्ण अली आप हौ जुगल रङ्ग रली भली, दीजै बुध ये जु तुम्है विनती सुनाऊँ मैं॥
लाल बलबीर रहौं पासी जू खवासी माँहि, कृपा की कटाक्ष होय दासी भाव पाऊँ मैं।
अति ललचाऊँ हिय मोद माँहि छाऊँ, कहूँ वृन्दावन-चन्द कौ सुजस वर गाऊँ मैं॥

(१७)

जाकौं नेत नेत कहि वेदन बखान्यौं, ईश ध्यान में न आनौं अचरज सुखदानी हैं।
और कौन पावै मति शारदा की सकुचावै, याके देखिबे कौं कमला सी ललचानी हैं॥
लाल बलवीर भुज मेलि करैं केलि दोऊ, हिये सुख झेल सेवैं सखी गुनखानी हैं।
चौधेहु भुवन परयन्त थाने जाने यहाँ, श्यामा-श्याम राजा बनराज राजधानी हैं॥

(१८)

गोप हूँ ते गोप महा राजत हैं वृन्दाटवी, तिनकी झलक उर कैसे झलकाय हैं।
ललिता विशाखा रंगदेवी श्रीसुदेवी आदि, अली श्री किशोरीजी की तिनैं सिरनाय हैं॥
लाल बलवीर दासी भाव भावना में पाय, हियें उतसाह सौं सदा ही जस गाय हैं।
लैहैं पद पद्मन की रेनु तनु धार जबै, श्यामा-श्याम जू की राजधानी रस पाय हैं॥

* दोहा *

श्यामा जू की सहचरी, हाहा श्री ललितादि ।
चरन कमल वन्दन करौं, पूजौ मन अह्लादि ॥ १९ ॥
मैं मति हीन मलीन हौं, और न कछू उपाय ।
कृष्ण अली पद कमल बल, जो कछु बरन्यो जाय ॥ २० ॥

* कवित्त *

(२१)

यमुना की कूल पै रही हैं द्रुमबेली भूल, द्रवें मकरन्द फूल सुषमा दिमानी जू ।
तिन पैं मुदित मन कूकैं पिक सारी कोर, सबतें इकन्त रावरी ये राजधानी जू ॥
इनकी छबीली छवि ये जू सुख रासि कछू, लाल बलबीर मुख चहत बखानी जू ।
दोऊ कर जोर जोर कहूँ बार बार राधे, कीजिये सुदृष्टि मोपै वृन्दावन रानी जू ॥

(२२)

वृथा ही जनम हाय लाखन लुकाय गये, सदा भ्रमना के माँहि मति भरमाइये ।
दारा सुत देह गेह ही में अति नेह रह्यो, सत्संग कों न रंग छई जड़ताइये ॥
लाल बलबीर अबै लागी आस तेरी वीर, तू ही जग जीवन की जीवन बताइये ।
हाहा सुख साधे करौ करुना अगाधे, मेरी मेटौ मन बाधे वृन्दावन में बसाइये ॥

(२३)

ये हो मन मित्र सीख येती चित धार मेरी, झूँठे सुत वाम धाम नेह बिसराइयै ।
कठिन कराल काल व्याल कौ है ख्याल जाल, परो ताके गाल वासौं कौंन उबराइयै ॥
लाल बलबीर हरिदासन कौ दास हूजै, प्रेम रस पीजै सदा सुख बीच छाइयै ।
छोड़ जग फन्द धन्ध लखौ विवि चन्द छैल, वृन्दावन-चन्द कौ गुनानुवाद गाइयै ॥

(२४)

अति सुकुमार छवि सार श्री लड़ैती लाल, प्रेम उर माल रति पति कौं लजावें हैं ।
कालिन्दी के कूल भूल रहे द्रुम बेली फूल, बीन अंग भूषन नवीन लै सजावें हैं ॥
नाना रस रेल खेल ही कौ सुख झेल झेल, दोऊ मुसिक्यावैं दोऊ दोऊ कौं रिझावें हैं ।
सुख बरसावें अली गनन रिझावें हेर, लाल बलबीर मुख बांसुरी बजावें हैं ॥

(२५)

बड़े बड़े मुनी ज्ञानी वास हेत ललचानी मती, वेदहू नें नेत नेत कह गायो है ।
मोहन के प्यारे भारे ध्यान धर धर हारे, तिनहूँ कौं याकौ ना प्रभाव दरसायौ है ॥
लाल बलबीर राजधानी श्रीकिशोरी जू की, चौधेहू भुवन में अखण्ड तेज छायौ है ।
राधिका की दासी सुखराशी जौलों होय नहीं, तौलों बनराज जू कौं कौनें रस पायो है ॥

(२६)

फूलें हैं फलें हैं फल फूल वर रस मूल, झूम झूम भूमि झुकि रहीं तरु डाली हैं ।
कुन्दन सी बेली लपटानी हैं द्रुमन घन, राधा मन-मोहन सुदिष्टि कर पाली हैं ॥
लाल बलबीर कीर कोयल किलोलें बोलें, लेत मन मोलें तान गावत निराली हैं ।
वृन्दावनचन्द जू की सुखमा कहाँलौं कहूँ, चारों ओर जहाँ रंग-रंग की बहाली हैं ॥

(२७)

सोभित हैं पाँती मन भाँती द्रुम वेलिन की, सरस सजीली लचकीली बहुतन की।
द्रवें मकरन्द अलि वृन्द वृन्द रस लेत, अति सुख देत पूर करें चाह मन को॥
लाल बलबीर संग कढ बढ चलीं डारी, परम विचित्रनी सुवरन वरन की।
राधा मन मोहन की मोहनि विहार भूमि, बर्नत बनेन देख छवि वृन्दावन की॥

(२८)

हरी हरी भरी फल फूलन सों बेली भेली, नाना रंगरेली तरु कंठ लपटानी हैं।
कोऊ दुत मुक्त लसें कोऊ हीर ही कों कसें, मानिक पिरोजा करें नीलम-लजानी हैं॥
लाल बलवीर दिव्य द्रव्य द्रवें मकरन्द (वृन्द) जुगल सनेह दृष्टि पोखसों बढानी हैं।
सहित अलीन वनराज कों निहारें रानी, राधिका जू संग मनमोहन गुमानी हैं॥

(२९)

वरन वरन खग राजें वनराज जू मैं, जुगल विलोकत आनन्द उर बढ़े हैं।
नाचत हैं संग संग छवि सों अनेक ढंग, होत मति पंगु अनुरागन में मढे हैं॥
कहत बलवीर उड धावें नभ आवत, उतर द्रुमडारन पै पपीहा चढे हैं॥
कबहू किलक कू कू कूक कैं सजीले सुर, राधा घनश्याम के विमल जस पढ़े हैं॥

(३०)

खेलत हँसत वनराज मैं विहारी प्यारी, नाना खग मण्डली की शोभा मन भावे हैं।
निरत दिखावें केते गगन उडावें लखि, लाड़ली बुलावें तिनें सीघ्र फिरि आवें हैं॥
कोमल मधुर तोड़ तोड़ फल लावें सो सो, सबै बनरानी जू की भेंट लै चढावें हैं।
लाला बलबीर उर दम्पति बढावें सुख, अति ही सजीले सुर राधा गुन गावें हैं॥

(३१)

काहे कों सुजान मन धावत कुठौर ठौर, वृथाँ जगवादन में कहा सुख पावै है।
सांचो कर मानत है दारा सुत तात मोरा, इन को समूह बौरा छिन में बिलावै है॥
याते बलबीर सब जनियें असार यार, बाजीगर कौ सौ खेल प्रगट दिखावै है।
वृन्दावनचन्द राजें राधा नन्दलाल सार, छवि उजिआर प्रीति तिन सों न लावै है॥

(३२)

नवल निकुंजन में खेलत हैं छविपुंज, नाना विधि ही के रचें साज सुख दानी जू।
लावत सुमन कली गृहत नवीन आली, माल पहिरावें रङ्ग-रली मन मानी जू॥
लाल बलबीर अंग सुखमा निहारें भली, प्रान धन बारें बिनै करें मृदु बानी जू।
वृन्दावनचन्द जू मैं राजत सदैव दोऊ, राधा मनमोहन के संग सुख दानी जू॥

(३३)

कुण्डला अकार यामैं यमुना तरंगे लेत, बहत सुहौनी धार सुखमा बिलन्द की।
फूले अरविंद तहां गुंजत अलिन्द वृन्द, पावत अनन्द धूम उड़त सुगन्ध की॥
लाल बलबीर सुक सारौ केकी कोकलादि बैठे द्रुम डार तान रटत अनन्द की।
दोऊ व्रजचन्द मिलि राधिकागुविन्द आली, निरखें छबीली छबि वृन्दावनचन्द की॥

(३४)

वृन्दावन चन्द जू कौ नाम रसना तें लेत, कोटि-कोटि केलि के कलेश पुंज खोवत हैं।
सुभग सजीली यहां कालिन्दी तरंगे लेत, नीलमणि माल याके कण्ठ मनों सोहत हैं॥
लाल बलबीर मनमोहन रसिकराय, राधिका छबीली लै छबीली छवि जोहत हैं।
करत विलास सुख रास नये नये हास, लता ओट ललितादिक हेर मन मोहत हैं॥

यमुना घाट

(३५)

बने हैं सुघाट घाट अष्टा पद हीरन के, सीढ़िन मैं मणिन की प्रभा सरसात हैं।
चित्रित विचित्र जगमगत तिवारी जारी, बैठिक सुढारी हेर नैन अरुझात हैं॥
लाल बलबीर कूल दोऊ सम तूल भूल, रहीं द्रुम डार मध्य यमुना सुहात हैं।
वृन्दावनचन्द जू के राजा श्रीविहारी प्यारी, करैं जलकेलि भुज मेल कैं अन्हात हैं॥

(३६)

परौ आय द्वार सुनि सुजस अपार चारु, कबहू तो कृपा की कटाक्ष सों तकाऔगी।
सहचरि संग पाऊँ सेवा रुख ओर धाऊं, पद सहराऊँ तबै हेर सचु पाऔगी॥
लाल बलबीर दासी जानकैं सदैव पासी, राखौ सुखरासी चाह चित की पुजाऔगी।
दोऊ कर जोरी करूँ बिनती करोरी गोरी, हा हा श्रीकिशोरी ऐसें कब अपनाऔगी॥

(३७)

परम रुचिर भूमि साखा द्रुम रहीं झूमि, खिलत प्रसून हेर लागत न पलकैं।
गुंजत अलिन्द मकरन्द पान करैं खग, मोद मन भरैं बैठे डारन पै मलकैं॥
लाल बलबीर भुज अंसन पै मेल श्यामा-श्याम करैं केलि पन्थ धरैं पग हलकैं।
प्रेम लपटानी मुख बानी कहैं राजरानी, कैसी सुख दानी बनराज छबि छलकैं॥

(३८)

उद्धव-से सखा मनमोहन सों बार बार, बिनती करत हिय ये ही भाव भरि हैं।
वृन्दावन बास सुखरास दीजै साभरे जू, गुलम लता ह्वैकें सदाँ अनन्द करि हैं॥
लाल बलबीर वर रावरी विहार भूमि, झूम झूम लूम लूम ताकी ओर ढरि हैं।
गोर्धन गुआल गोपी रज पद पंकज की, आय आय हमरे तबै ही सीस परि हैं॥

(३९)

लाड़लौ ललन लै प्रसून कौं सुंघावैं तुमैं, लैलै कैं सुबास रास तास ओर हर्षेगीं।
परम प्रवीन रसलीन जू नवीन प्यारी, चिबुक रंगीन कर कञ्जन सौं पर्सेगीं॥
लाल बलबीर दासी जान सुखरासी ये जू, मेरे हिय गेह रस रूप घटा वर्षेगीं।
वृन्दावन रानी सुखदानी ये छबीली राधे, दूर होंय बाधे कब ऐसी विधि दर्शेगीं॥

(४०)

वृन्दावनचन्द में सदैव फल नाना भांति, रंग रस भरे द्रुम बेलिन में दर्से हैं।
सीताफल अंबु सेव संतरा अनार चारु, झूमत हैं बात सों छबीली छबि वर्षे हैं॥
लाल बलबीर तहां खेलें श्रीविहारी प्यारी, भये तुष्ट पुष्ट दृष्टि ही सों ओर पर्से हैं।
कर सों उतार सुकमार देत लाड़ली कौं, खात औ खवावत में मनहिं मन हर्षे हैं॥

(४१)

आयौ कर संतन की संगत में बार बार, सदां पद पकञ्ज में शीस कौं नवायौ कर।
न्हायौ कर प्यारे मारतण्ड तनया मैं जाय, रज को लगाय अंग अंग हुलसायौ कर॥
पायौ कर प्रभु के प्रसाद कों प्रसन्न ह्वै कैं, नेम वनराज जू की परिक्रमा जायौ कर।
लायौ कर ध्यान मन मगन होय हृदै बीच, बैठकैं निकुंजन में राधा गुन गायौ कर॥

(४२)

कोटि कोटि अण्डन में धन्य ब्रह्म मण्डल है, यामैं उनचास कोटि भूमि सुखकन्द है।
तामें सप्तद्वीप सप्तद्वीपन में जम्बूद्वीप, तामें नव खंड भर्तखण्ड में अनन्द है॥
तामें चार धाम नीके सप्तपुरी मध्य देस, तामें व्रजमण्डल की छाई मकरन्द है।
चौधे हू भुवन बैकुण्ठ पर्यंत जेते, तातें सरबोपरि श्रीवृन्दावन चन्द है॥

(४३)

दाऊजी कौ माखन औ मिसरी अनोखी खीर, गोकुल को लोटी सो सवाद बन्दवाने की।
चन्द्रमा की चन्द्रकला चहुँ ओर जाहिर है, दही औ बतासे वृन्दादेवी मन माने की॥
मथुरा के पेड़ा वर टेंटी व्रज मण्डल की, गोवरधन अन्नकूट सोभा सरसाने की।
दूध औ महेरी हेरी प्यारे नन्दगाम ही की, अतिसै सुगन्ध नीकी बीरी बरसाने की॥

(४४)

वनराज बेली अलबेली भाँति शोभित हैं, छईं कल पल्लव सों अंगन अथोरे हैं।
फूले नव फूल भरे सौरभ अतूल अलि, लेत रस मूल फूल फूल चहुँ ओरे हैं॥
लाल बलबीर श्यामा श्याम रूप राँचे साँचे, पंछी गुन गावें अनुरागन में बोरे हैं।
चित्र के लिखे से जुग मित्र कों निहारें मन, प्रेम के समुद्र पर लै रहे झकोरे हैं॥

(४५)

रसिक विहारी सुकमारी प्रान प्यारी जू को, सुखमा सजीली वनराज की दिखावें हैं।
कैसे द्रुम बेली रंगरेली फल पल्लव सों, झुक-झुक झूम-झूम भूम चूम जावें हैं॥
सहित सुवास फल फूलकें झरें अतूल, चारों दिशि ही में मनो इन्द्र झर लावें हैं।
डारन पै बैठे अनुरागन सों सारो शुक, सुभग सजीली रसना सों तान गावें हैं॥

(४६)

प्रीतम की प्यारी प्रिया प्रिया प्रान प्यारो पीयु, दोउन की दोऊ छवि-सिन्धु में तरावें हैं।
दोऊ नव करें खेल दोऊ भुज अंस मेल, दोऊ सुख झेल झेल मन्द मुसिक्यावें हैं॥
लाल बलबीर वनराज के विलासी दोऊ, सखिन चकोरन के लोचन सिरावें हैं।
गावें राग रागिनी रसीले चटकीले मुख, मधुर मधुर वर बाँसुरी वजावें हैं॥

(४७)

देखत हैं शोभा लोभा बढ़े प्रेम गोभा वन, लाड़ली ललन मन अति हरषावैं हैं॥
लटकत धावें द्रुम बेलिन के पास दोऊ, दोउन के दोऊ नाम हित सों बतावें हैं॥
सारो पिक कीर केकी कोयल किलोल करैं, मधुरे सुरन सों सजीली तान गावें हैं।
लावत हैं मिष्ट फल लाल बलबीर दासी, हित वनराज के विलासी को पवावें हैं॥

(४८)

जाने को जतन सों मिली है रे मनुष्य देह, याकौ सार येही सतसंगत में पोय जा।
दारा सुत भ्रातन के गेह सों सनेह तोर, मोर मुख दास हरिदासन को होय जा॥
लाल बलबीर द्रुम बेली रंगरेली भेली, झूमत नवेली मन इनहीं कौं जोय जा।
सोयजा सकल जग फन्दन के धन्दन सों, वृन्दावन-चन्द जू के रस माँहि भोय जा॥

(४९)

ग्वालन के संग श्रीगुपाल जू चरावैं गाय, गावैं राग रागिनी उमंग भरे मन में।
बाँसुरी बजावें हाव भावन जनावें, मित्र-मण्डली रिझावैं हैं भरे हैं प्रेम-पन में॥
लाल बलबीर जू की अंग अंग माधुरी, निहारत बने हैं ना बनें हैं बरनन में।
विविध विलास को प्रकास जहाँ राजत है, याते मन मेरो सदाँ बसे वृन्दावन में॥

(५०)

जानें को जतन सों बनो है यह दाव तेरो, याको सुख हेरौ पग बाहर न दीजियै।
चौधेहू भुवन ते इकन्त ये विहार भूमि, लाड़ली लला की रज अंग धार लीजियै॥
लाल बलबीर द्रुम बेली रंग रेलिन में, संतन के संग बैठ प्रेम रस पीजियै।
कृपा कौं विचारो राधे नाम कौं उचारो, ऐसो वृन्दावन-चन्द में सदाँ ही बास कीजियै॥

(५१)

कोऊ है न अपनो ये जान जग सपनो सो, बिन सतसंगत वृथा ही तन तपनों।
छोड़ कटु वादन कों भ्रमना विषादन को, नार मिठ नादन कों जान विष कपनों॥
लाल बलबीर बनराज जू कौ साज हेर, कीजिये न फेर दृढ़ ही सों बास थपनों।
छिन छिन घरी घरी रैन दिन आठौं जाम, साँचौ सुखधाम श्यामा-श्याम नाम जपनों॥

(५२)

फूल रहे सरस सजीले तरु ठौर ठौर, फूल रहे फूल धुंध छई मकरन्द को।
सीतल सुहौनी लौनी पवन झकोरे लेत, गूँज रहीं चारों दिशि अवली अलिन्द की॥
लाल बलबीर जहाँ प्रेम भरे श्यामा श्याम, खेलत हँसत तान गावत पसन्द की॥
दुरें दुख दुन्द बढें उर में अनन्द, प्यारे लीजिये विलोकि छवि वृन्दावन-चन्द की॥

* पद *

(५३)

मेरी टेर सुनो सुकुमारी।
अखिल लोक चूड़ामणि सुन्दर मनमोहन की प्यारी॥
परम उदार दयानिधि नागरि दीनन ओर निहारी।
दासी जानि कीजिये स्वामिनि महत टहल अधिकारी॥

(५४)

किशोरी मोकौं दै श्रीवृन्दावन वास।
चाहे सो कीजै श्रीसुन्दरि पूजौ मन की आस॥
खग मृग लता रेनु द्रुम बेली निरखों रास विलास।
दासी जान आन उर स्वामिनि कीजै रूप प्रकाश॥

(५५)

भजौ मन श्रीवृन्दावन-चन्द।
हरित नील दुति द्रुमन लिपट रहीं हेम बेलि सुख कन्द॥
फूले सुमन समूह लेत अलि झूम झूम मकरन्द।
दासी निरखि जहाँ विहरत मिल श्रीराधा गोविन्द॥

(५६)

किशोरी राधे विनती करों करजोर।
कीजै दया दयानिधि नागरि राखौ चरनन ओर॥
द्वारें परी दीन हौं टेरत अब ना बनै मुख मोर।
दासी जान न टार विपुन तें छवि निरखों निशिभोर॥

(५७)

श्रीराधा मोरी एक अरज चित लावो।
तुम सरबज्ञ सुजान शिरोमणि करुणासिंधु कहावो॥

और न कोउ हितू मो जग में जाके पास श्रमावो।
दासी दीन परी द्वारे पै श्रीबनराज बसावो॥

(५८)

श्रीराधे जू निबाहे बनेंगी।
मो सम नहीं दीन या जग में दया दृष्टि सों तकाये बनेंगी॥
औगुन भरी परी द्वारे पै सैनन माँहि बुलाये बनेंगी।
दासी जानि चरन की स्वामिनि श्रीबनराज बसाये बनेंगी॥

(५९)

मन रे तू चल श्रीवृन्दावन हेर।
घर के धूमर धूमते कढ़बढ़ क्यों कर राखी देर॥
भूलौ भ्रमत बहुत दिन बीते अब सब कष्ट निबेर।
श्यामा श्याम जहाँ मिल खेलत उन चरनन सिर गेर॥

(६०)

दीजै मोकों श्रीवृन्दावन बास।
कुमर किशोरी गोरी भोरी करुनानिधि सुख रास॥
सैन बैन रस दैन जुगल वर लखौं परसपर हास।
दासी दीन परी द्वारे पै पूजौ मन की आस॥

* कवित्त *

(६१)

श्रीवन समान नहीं सुखमा बिलोकी आन, फरत सदैव फल फूलन सों बेली हैं॥
जहाँ श्यामा श्याम विहरत रहैं सुखधाम, तहाँ आठौ जाम संग सोहत सहेली हैं॥
लाल बलबीर लता झूम झुकि रहीं भूमि, केतकी गुलाब गुल-दावदी कुएली हैं।
जुगल सरोज मकरन्द की गहन विन्द, गरबगहेली पांय परत चमेली हैं॥

(६२)

कदम अनार अंबु जंबु औ अशोक थोक, झूम झूम झोटा लेत सुखमा अनन्द की।
प्रफुलित सुमन समूह कुञ्ज कुञ्जन में, गुंजत मधुप धूम छाई मकरन्द की॥
लाल बलबीर जहां यमुना तरंगे लेत, खेलन की भूमि ये ही प्यारी-नँदनन्द की।
दुरें दुख दुंद बढ़ें उर में अनन्द प्यारे, लीजिये विलोकि छवि वृन्दावन-चन्द की॥

(६३)

असल अमोल है अनूपम हैं रेनु याकी, सिद्धि कामना की देन वारी हैं अनन्द की।
जाकों अङ्ग लाय लाय सार वस्तु पाय पाय, गाय गाय बानी सुधा सानी प्रेम फन्द की।
लाल बलबीर याकी महिमा कहाँ लौं कहूँ, और लोक लोक की बड़ाई सबै मन्द की।
फन्द की हरैया है करैया आनन्द सदां, लीजिये विलोकि छवि वृन्दावन-चन्द की॥

(६४)

काशी औ प्रयाग द्वारावती कौं निहार आये, व्रज माँहि आयो जब आयबो कहा रह्यो।
गंगा सिन्धु सरस्वती सरजू में न्हाय आयौ, जमुना में न्हायौ जब न्हायबो कहा रह्यो॥
लाल बलबीर व्रजराज की रंगीली छबि, हिये माँहि लायो जब लायबो कहा रह्यौ।
प्रभु प्रसाद पायो सीस संतन कूँ नायो, श्रीवृन्दावन पायो जब पायबो कहा रह्यो॥

(६५)

आनन्द के कन्द नन्दनन्द श्रीगोविन्द जू के, पद उर लायौ जब लायबो कहा रह्यौ।
हरषि हरषि मारतण्ड तनया में जाय, बार बार न्हायौ जब न्हायबो कहा रह्यौ॥
लाल बलबीर वृषभानु की कुमारी जू कौ, सदा गुन गायौ जब गायबो कहा रह्यौ।
प्रभु-प्रसाद पायौ सीस संतन कूँ नायौ, श्रीवृन्दावन पायो जब पायबो कहा रह्यो॥

(६६)

बनो दाव तेरो बैन मान ले तू मेरो, सुख पाय है घनेरो नेह कीजै रसिकन में।
रज अंग धारो श्यामा श्याम कौ उचारो, जग सीस छार डारो सदा बिचरौ लतन में॥
लाल बलबीर हारो माया मद मोह द्रोह, पोह मन अब तौ किशोरी के चरन में।
और फरफन्द जेते छोड़ दे जगत के ते, सदाँ ही मगन ह्वै कै बस वृन्दावन में॥

(६७)

एरे मन मेरे तो सों विनती करत ह्वौं रे, काहे कौं भ्रमत व्रजभूमि पंथ गह रे।
लता द्रुम बेलिन में राधा राधा धुन होय, तहाँ जाय काम क्रोध लोभ मोह दह रे॥
लाल बलबीर जन जुगल उपासी सबै, उनहीं की पद रज सीस धार लह रे।
और की न आस कीजै वृन्दावन वास सदाँ, राधे श्याम श्यामा श्याम राधे श्याम कह रे॥

(६८)

छूटी बेलि बेलि पै लपट रंग रेल मेल, चित्रन में चित्र जे विचित्र दरसत हैं।
चहचही चटकीली चमचमात चारों ओर, लहलही लाँबी लोनी कारे सरसत हैं॥
लाल बलबीर श्यामा श्याम के रिझायबे कौं, रची हैं सखीन छबि हेर हरषत हैं।
वृन्दावन-चन्द जू की देखौ कुञ्ज कुञ्जन में, साँझिन मैं कैसे रंग रूप बरसत हैं॥

(६९)

कहूँ राधा बाग रचौ गहवर निकुंज वन, लूम रहीं लता लौनी भूमि परसावनी।
कहुँ चीरघाट नन्दघाट औ विहारघाट, जमुना तरंगें लेत हिये हुलसावनी॥
लाल बलबीर रचौ कहुँ रास मण्डल, अखण्ड रूप जगमगात आभा ससि दावनी।
कैसी मन भावनी रिझावनी रची है वीर, देखो चलि साँझी वृन्दावन की सुहावनी॥

(७०)

कोऊ रची सखिन अवधपुरी मधुपरी, कोऊ रची कासी सुखराशी मन भावनी।
रचत प्रयाग तिरबेंनी सुख देनी कोऊ, कोऊ जगदीशपुरी मोद उपजावनी॥
लाल बलबीर चहचही चटकीली हेर, झमझमात आभा सुरपुर की दबावनी॥
कसी मनभावनी रिझावनी रची है बीर, देखो चलि साँझी वृन्दावन की सुहावनी॥

(७१)

जान देरी कीरति लली के सँग कानन ते, जलज खिले हैं ताके दलन लै आन दे।
आन देरी जान वाली सकल सहेली तहाँ, रचना रचेंगी जिन जिय तरसान दे॥
स्यान देरी छाँड़ हिय हरषि रजायसु दे, दास कहैं जस नीके हरि गुण गान दे॥
गान दे री गीत रस रंग ढरें आनँद के, नाहिन तें साँझी के दरस हेत जान दे॥

(७२)

कल्पतरु लतिका सरस पारिजात फूल, चिंतामणि भूमि है हरैया दुख दंद है।
सेवत रसिक जाकौं सदाँ ही उमंग भरे, और जग बासना सों भई मति मन्द है ॥
लाल बलबीर श्यामा श्याम की बिहार थली, देख रंग-रली भयौ उर में अनन्द है।
कोट कोट अण्डन कौ खण्डन प्रलै में होत, सबसो नियारो प्यारो वृन्दावन-चन्द है ॥

(७३)

वृन्दावन चाहै बास दास ह्वै किशोरी जू कौ, ह्वै कैं जिन दूजी ओर चित ना डुलावैगो।
मनिक महल में विराजें प्रिया प्रीतम जू, तिनकौं सदैव हित ही सों गुन गावैगो ॥
लाल बलबीर लैगौ रसिकन संग रंग, होयगौ अभंग तन ताप कौं नसावैगो।
प्रानन समान बनराज कौं गिनैगो तबै, जबै रस रीति प्रीति ही की रीति पावैगो ॥

(७४)

देखन विपुन शोभा रसिकविहारी प्यारी, हरषि हरषि निज कुंज ही सों आये हैं।
मोरछली केलि हेत माल माधुरी की बेल, कदम कनेर लाल देख सुख पाये हैं ॥
छूट चले सुमन नवाड़े रायबेलिन के, करी ना झमेल हस्त कंज झर लाये हैं।
लाल बलबीर दासी गोप सुखमा प्रकासी, कौन भाग जागे ऐसे रूप दरसाये हैं ॥

(७५)

कोमल कमल हू सों रेनु बनराज जू की, सीतल सुगन्ध मन्द ब्यार लगै प्यारी जू।
चंपक चमेली रायबेली द्रुम बेली भेली, झूमि झूमि भूमि झुकि रहीं सबै डारी जू ॥
लाल बलबीर कीर कोयल कलोल करें, गुंजत मधुप मोर शोर करें भारी जू।
लीने संग प्यारी खिली चन्द की उजारी आज, बन में विहार करैं बाँकड़े विहारी जू ॥

(७६)

गोपीनाथ करिहैं सनाथ प्यारे गोविन्द जू, जुगल किशोर चितचोर उर धरिये।
श्री मदनमोहन जू बाँकड़े विहारी प्यारी, छबि उजियारी ताय चित्त तें न टरिये ॥
लाल बलबीर राधा-बल्लभ निकुंज हेर, राधिकारमन जू कौ मोद उर धरिये।
दीजै परदक्षिना हिये में भाव रक्ष ऐसे, वृन्दावन-चन्द में सदैव बास करिये ॥

(७७)

वृन्दावनवारी प्यारी अरज हमारी ये ही, दया की निधान एती बिनै कान कीजिये।
और जग जाल के न ख्याल में बिहाल करो, उर प्रतिपाल नेह कुंज में ढरीजिये ॥
लाल बलबीर दासी आपनी खवासी जान, कछू सुखराशी जू टहल माँहि लीजिये।
चरन सरोजन सों नेह रहै आठौं जाम, और सों न काम बास वृन्दावन दीजिये ॥

(७८)

खेलन किशोरी चितचोरी गोरी भोरी आई, लाल बलबीर संग आपने विपन में।
फूले फूल भेली रायबेली चंपक चमेली, चाँदनी कुयेली जुही जाफरा लतन में ॥
मोतिया मदनबान मालती गुलाब गेंदी, झूम झूम परें प्रिया-प्यारे के पगन में।
सुख होय तन में बढ़त मोद मन में, सुनिरखें जुगल छबि आज वृन्दावन में ॥

(७९)

सोनजुही केतकी कनेर कुन्द मोरछलो, माधवी अनूप जुही फरी है लतन में।
फूले हैं अनार कचनारन दिनेशमुखी, लाड़ली ललन हेर लेत हैं करन में ॥
लाल बलबीर वर सेवती गुलाब चीनी, कदम कतार छबि छाई लटकन में ॥
सुख होय तन में बढ़त मोद मन में, सुनिरखें सुमन छबि आज वृन्दावन में ॥

(८०)

ग्रीषम निशा में घनश्याम बाम यूथ मध्य, प्रफुलित सोभा बनराज की निहारी जू।
फूलीं द्रुम बेली अलबेली तें निहार लीजै, गुंजत मधुप बाय मन्द लगै प्यारी जू ॥
लाल बलबीर छबि देखबे ही लायक है, चलौ री सहेली सौंह खाऊँ मैं तिहारी जू।
लीने संग प्यारी खिली चन्द की उजारी, आज वन में विहार करैं बाँकड़ेबिहारी जू ॥

(८१)

छोड़ जग नेह कों सनेह करि प्रीतम सों, छिन-भंग देह को गुमान कहा मन में।
झूठे धन धाम बाम एकहुँ न आवै काम, रटौ श्यामा-श्याम हरषित होय तन में ॥
लाल बलबीर पीऊ-प्यारी को मधुर रस, रसिकन संग पान कीजै करनन में।
बिचरो पुलिन में निहारो लतकन ही में, लाड़ली लला कौं करि बास वृन्दावन में ॥

(८२)

श्रीबन सुहावने की सुखमा कहाँ लौं कहूँ, हेम-मई भूमि प्रभा पन्नन ललन में।
दीरघ न लघुताई गहे सबै समताई, दीये गलबाहीं सी दिखाई हरषन में ॥
लाल बलबीर फूले सुमन मलीन कांति, गुंजत मधुप पाँत सौरभ लगन में।
लाड़ली ललन में लगावैं चित मित्त नित्त, सोई नर पावैं ऐसे बास वृन्दावन में ॥

(८३)

फूले हैं फले हैं द्रुम बेलि बहु भाँतिन सों, होत ना निपात पात गात में अगन में।
तिनपै विहंग राजैं दिव्य बहु भाँति गाजैं, सुजस किशोरी को उमंग भरे मन में ॥
लाल बलबीर छबि पाई तिन ही नें, जिन उर पुर राजे हैं अभंग प्रेम पन में।
वे ही बड़भागी अनुरागी पिया प्यारी जू के, धन्य भाग जाके करे बास वृन्दावन में ॥

(८४)

कंचन अवनि कोट कुंज पुंज कमनीय, कोविद कहत कवि काँति न अथोरी के।
कदम कनेर केर कुञ्ज कमरख हेर, कमला कतार हैं कठैर चहुँ ओरी के ॥
लाल बलबीर कञ्ज केतकी कमोद कुंद, केवड़ा कलीन पंख कमल करोरी के ॥
कूक कूक केकी कल कोकला कपोत कोर, कानन किलोल करें कीरति किशोरी के ॥

(८५)

बाबा बनखण्डी महादेव व्रज जाहिर हैं, व्यास जू को घेरो सो अनूप छबि छायौ है।
चारों ओर सदन बने हैं लाल लाड़िली के, चन्द ते दुचन्द रूप ऐसो दरसायौ है ॥
सदाँ ब्रजवासी रूप माधुरी निहारो करें, और सों न काम श्याम श्यामा गुन गायौ है।
लाल बलबीर नाम लै लै सब टेर करें, राधिका कृपा तें बास वृन्दावन पायौ है ॥

(८६)

चंपक बरन मृगलोचनी सलोनी राधे, और की न आश मेरें तुही है उपास री।
मेटो जग त्रास कीजै कुमति को नाश, मोहि जान निज दास करो हिये मैं प्रकाश री ॥
लाल बलबीर जन धीरज-धरैनी मन, तोसी तो तुही हैं और काकी करौं आस री।
पूरी कर आस मेरी एहो सुखरास मोकों, कृपा करि दीजै सदाँ वृन्दावन बास री ॥

(८७)

छबीली रंगीली रस आगरी किशोरी गोरी, राख निज ओरी मति मोरी यह धीजिये।
नागरी उजागरी जू सदाँ रूप आगरी जू, लाल बलबीर दया दासन पै कीजिये ॥
कीरति दुलारी मनमोहन की प्रान प्यारी, करूँ मनुहारी बिनै एती सुन लीजिये।
मेरी यह आस पूरी कीजै सुखरास सदाँ, हिय में हुलास बास वृन्दावन दीजिये ॥

* श्रीराधे जू सहाय *

वृन्दावन-अष्टक

* दोहा *

(८८)

लोक चतुर्दश मुकटमणि सदाँ सर्व सुखकन्द ।
श्रीवृषभानु कुमारि को श्रीवृन्दावन-चन्द ॥

* कवित्त *

(८९)

चाहत हैं जाकी रज शंभु चतुरानन से, करें गुनगान उतसाह बास ही कौ है ॥
धर धर ध्यान हारे सामल सुजान ही कौ, स्वामिनी कृपा बिना न मिलत घरी कौ है ।
करत खवासी हरिदासी हरिवंशी व्यासी, जिही जो दिवावें होय दासी भाव जी कौ है ।
लाल बलबीर नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारो, वृन्दावन-चन्द वृषभानुनन्दनी कौ है ॥

(९०)

राजत लतान ही में नवल छबीले खग, करें रस गुन गान प्यारी लालजी कौ है ।
मधु भरे झूमें फल वृन्द बहु भाँतिन के, तिन में मधुर स्वाद सरस अमी कौ है ॥
ठौर ठौर वापी कूप सरिता सलिल भरे, पैरें कल हंस बंस रूप हित ही कौ है ।
लाल बलबीर नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारौ, वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी को है ॥

(९१)

मंडित मुकर वृन्द मानिक महल राजैं, तिनमें प्रकाश सूर सहस ससी कौ है ।
करत विहार जहाँ रसिक बिहारी प्यारी, सुखी सुखमा री काज करैं हित ही कौ है ॥
मधुर मधुर कल अलि कुल गुंजत हैं, करैं रस पान फूले कंज सब ही कौ है ।
लाल बलबीर नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारो, वृन्दावन-चन्द वृषभानु नन्दनी को है ॥

(९२)

खेलत हैं जामें रस भरे छैल श्यामा श्याम, मधुर मधुर शब्द होत बाँसुरी कौ है ।
किंकनी कनक पग नूपुर झनकत हैं, तैसो ही सजीलो सुर सरस सिखी कौ है ॥
सीतल सुगन्ध ही सों चलत समीर धीर, जाकौ बास दास को सदाँ अनन्द ही कौ है ।
लाल बलबीर नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारो, वृन्दावन-चन्द वृषभानुनन्दनी कौ है ॥

(९३)

झूम रहीं लता लोनी फल फूल पल्लव सों, तिनमें सरस सुख कल्प तर ही को है ।
चारों ओर तरनि तनूजा जू तरंगे लेत, तीर करें ध्यान संत प्यारी लालजी कौ है ॥
मधुर मधुर सुर कोकिला मराल मोर, गुंजत हरत सोर सक्र दुंदुभी को है ॥
लाल बलबीर नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारो, वृन्दावन-चन्द वृषभानुनन्दनी को है ॥

(९४)

छोड़ छोड़ राज काज सकल समाज साज, दारा सुत चित्त वित्त जान सब फीकौ है ।
परम प्रवीन भावना में जे भरे हैं संत, तिनकों अनन्द देन हारो हित ही कौ है ॥
चार फल दायक सकल लोक नायक है, महिमा अनन्त राजै सुखमा भरी को है ।
लाल बलबीर नीकौ लागे प्रान पीकौ प्यारो, वृन्दावन-चन्द वृषभानुनन्दनी को है ॥

(९५)

ठौर ठौर विपिन में कीरतन होय जहाँ, गावें रस भरे संत राग हित ही को है।
देत परदक्षिना निकुंज प्रेमलक्षना सों, झूम गिरें हत सुध देह की गती को है ।।
जुगल निहारें छबि ढारें दृग बार धार, करत सुजान पान रूप माधुरी को है।
लाल बलबीर नीकौ लागै प्रान पी को प्यारो, वृन्दावन-चन्द वृषभानुनन्दनी को है ।।

(९६)

झूम रहे सरस सजीले तरु ठौर ठौर फूलि रहे, फूल भार पत्र फल ही कौ है।
गुंज रहीं अवली अलिन्द मकरन्दन कौं, करें रस पान खान मोद अति जी कौ है ।।
चित्रित विचित्र खग नाना विधि शोभित हैं, निरख भुलानों मन रति के पती को है।
लाल बलबीर नीकौ लागै प्रान पीकौ प्यारो, वृन्दावन-चन्द वृषभानुनन्दनी कौ है ।।

(९७)

नवल निकुंजन में नवल छबीले छैल, खेलैं नव ख्यालन अनेक हरषन में।
तोड़ तोड़ सुमन नवीन नव बेलिन तें, गूंथ गूंथ भूषन नवीन साज तन में ।।
लाल बलबीर रस रास में रंगीले दोऊ, नाचत मदन भरे गोपिन के गन में।
विविध विलास कौ प्रकाश जहाँ राजत हैं, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ।।

(९८)

बैठे द्रुम बेलिन पैं नवल छबीले खग, राधा गुन गामैं प्रेम प्रीति की लगन में।
फूलें हैं सुमन पुंज अलि कुल करें गुंज, पीवैं मकरन्दन कों विहरें मगन में ।।
लाल बलबीर चलैं सीतल समीर धीर, हरैं मग पीर कौं लगे हैं आय तन में।
बिविध बिलास कौ प्रकाश जहाँ राजत है, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ।।

(९९)

सदाँ ही सरद रितु होति रस रास वर, सदाँ ही बसंत फूलें सुमन लतन में।
सदाँ साँझी होरी डोल ग्रीष्म हैं जल विहार, पावस बहार हरे रङ्गन घटन में ।।
लाल बलबीर सदाँ नवल निकुंजन में, झूलत हिंडोले लाल-लाड़ली मगन में।
बिबिध विलास कौ प्रकाश जहाँ राजत है, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ।।

(१००)

श्याम सेत हरित गुलाबी लाल नीले पीत, नाना रङ्ग फूले कंज मंजुल सरन में।
दमदमात लता लोनी भूमि परसत झूमि, तिनमें छबीले खग गूंजत सघन में ।।
लाल बलबीर दोऊ खेलत लड़ैती लाल, सुखमा बिशाल हेर होत हैं मगन में।
बिबिध विलास को प्रकाश जहां राजत है, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ।।

(१०१)

झूमि झूमि लतिका रही हैं छिति चूमि चूमि, फरैं फल फूल रस मूल तन तन में।
गूँज रही अवली अलिदन की जोर भरी, ढरी चहुँ ओर मधु लेत हैं मगन में ।।
लाल बलबीर खग तिन पैं लड़ैती लाल, सुखमा बिसाल हेर गहत करन में।
बिबिध बिलास कौ प्रकाश जहाँ राजत है, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ।।

१०२)

मंजुल अमल भल सूरज सुता कौ नीर, ताकौं पान कीयें आवें लाल प्यारी मन में।
तीर तीर राजत हैं संत प्रेम नेम भरे, दरस किये ते ना रहत तन तन में ।।
लाल बलबीर लतिकान में रंगीले छैल, राधा राधा गान करें पंछी हरषन में।
बिबिध बिलास को प्रकाश जहाँ राजत है, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ।।

(१०३)

गामैं जस सेस याकें रसना हजारन ते, चार चतुरानन सदाँई हरखन में।
उद्धव से प्यारे भारे चाहैं सुखरास बास, गुलम लता ह्वै रज धारे तन तन में ॥
लाल बलबीर महादेव मुनि नारद से, इनहीं कौ ध्यान धरें भरे भाव पन में।
बिबिध बिलास कौ प्रकाश जहाँ राजत है, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ॥

(१०४)

खेलत हैं यामें लाल-लाड़िली रसिक बर, राजत रंगीले छैल गोपिन के मन में।
ठुमक ठुमक ताता थेई कर नाचैं कभी, भुनर मुनर बाजैं नूपुर पगन में ॥
लाल बलबीर सजैं चीर नव रंग नीके, भूखन जड़ाऊ जगमगे तन तन में।
बिबिध बिलास को प्रकाश जहाँ राजत है, ताते मन मेरो सदाँ बसै वृन्दावन में ॥

(१०५)

हरी हरी लतिका ललित लहराय रहीं, कालिन्दी तरंगे लेत दृगन लखाइये।
खिले कंज सरस सजीले रँग रंगन के, लेन हित गंध के अलिन्द रास धाइये ॥
गाय रहैं केकी तान तानके रसीली तान, जिनकी रनन आगें रागनी लजाइये।
दास कहैं चेत रे अचेत चित्त लाड़ले तें, लाड़ली के कानन के सदाँ जस गाइये ॥

(१०६)

हीरन सी जगमगात रेनुका सजीली सेत, अंगन लगाये ते कलेस जग जाय रे।
सीतल सजल जल कालिन्दी तरंगे लेत, तनक अन्हाये ते अनन्द अधिकाय रे ॥
रहिये जहांई दृढ़ गहिये अचल है कै, ध्यान लै धरेये नीकैं संत सत लाय रे।
दास कहैं चेत रे अचेत चित लाड़ले तें, राधिका के कानन के सदाँ जस गाय रे ॥

* अमृतछन्द *

(१०७)

श्रीवृन्दावन-चन्द में, खेलत लाड़ली लाल।
सदाँ लालबलबीर कह, गुंजत मोर मराल ॥

मोर मरालहि। कुंज तमालहि। अमित विसालहि।
सहचरि जालहि। रचि रचि ख्यालहि। नव नव आलहि।
करत खुस्यालहि। जुगल कृपालहि। बहुविध मन मन।
जानि परम धन। सेवत निशि दिन। श्री वृन्दावन ॥

(१०८)

राजहिं श्यामा श्याम जू, श्री वृन्दावन-चन्द।
सदाँ लाल बलबीर कह, सेवत सहचरि वृन्द ॥

सहचरि वृन्दहि। करत अनन्दहि। लख विवि चन्दहि।
दरस अमंदहि। आनन्द कन्दहि। हरिजन फन्दहि।
पिय हित काजहिं। सब सुख साजहिं। मिल सुर गाजहिं।
रागनी लाजहिं। लखि छबि छाजहिं। दोउ सँग राजहिं ॥

(१०९)

कुंजन कुंजन जुगल सँग, विहरत श्यामा बाल।
तहाँ लालबलबीर द्रुम, निरखहिं ताल तमाल॥

ताल तमालहि। किंसुक जालहि। अमित विशालहि।
कमरख लालहि। झूमत डालहि। सुभग रसालहि।
हारसिंगारहि। फरत गुलाबहि। पुंजन पुंजन।
छबि छबि लुंजन। अलि कुल गुंजन। कुंजन कुंजन॥

(११०)

श्रीवृन्दावन-चन्द हरि, विहरत लाड़िलि संग।
तहाँ लालबलबीर वर, जमुना लेहि तरंग॥

लेहिं तरंगहि। सामल रंगहि। कांति अभंगहि।
लख गति दंगहि। उपमा पंगहि। लगत न संगहि।
प्रफुलित कमलहि। मंजुल दलनहि। अलि कुल गुंजन।
जस रस पुंजन। कुंजन कुंजन। श्रीवृन्दावन॥

(१११)

शिव विधि उद्धव से करैं, ये बलबीरहि आस।
देहिं लाड़िली लाल कब, वृन्दाविपिनहि बास॥

विपिन निवासहि। ये मन आसहि। रज शिर लावहिं।
विवि गुन गावहिं। ध्यान धरावहिं। हिय हरषावहिं।
अति ललचावहिं। टेर सुनावहिं। होय कृपा कब।
बिनै करत सब। दीजिये कहें अब। शिव बिधि उद्धव॥

(११२)

श्रीवृन्दावन-चन्द वर, सुखमा भरो अनंत।
सेवत हैं बलबीर सँग, लै रितु सदाँ बसंत॥

सदा बसंतहि। राधिका कंतहि। सुमन अनंतहि।
द्रुम बिकसंतहि। हिय हरषावहिं। झुकि महि आवहिं।
मधुकर गावहिं। अति रस पावहिं। धारत यह प्रण।
तजत नहीं क्षण। जान परम धन। श्रीवृन्दावन॥

(११३)

कीजिय ये दृढ़ चित्त में, तज दारा सुत वित्त ।
कहैं लालबलबीर जू, बस वृन्दावन नित्त ॥

नित वृन्दावन । है आनन्द घन । रसिकन कौ धन ।
आयुस छिन छिन। जाय समझ मन । लोभ कहा तन ।
विवि गुन गाइय । धनी रिझाइय । छबि लखि लीजिय ।
हँस रस पीजिय । लख लख जीजिय । विलम न कीजिय ॥

(११४)

राजहिं श्यामा श्याम जँह, जमुना लेय तरंग ।
तीर तीर बलबीर लख, झूमहिं ललित लवंग ॥

ललित लवंगहि । मालती संगहि । बड़हर बेलहि ।
अंब अनारहि । हार सिंहारहि । श्रीफल केलहि ।
चंप चमेलिय । लटकन रेलिय । अति छबि छाजहिं ।
अलिगन गाजहिं । रस वर काजहिं । सँग सँग राजहिं ॥

(१२५)

लाड़ली कानन की छटा, लीजिये लाल निरक्ष ।
ललित लता तर दास कह, खिले कंज कल लक्ष ॥

लक्षन रंग । सजे कल संग । अनेक तरंगहिं ।
चल सारंगहिं । अँग लग हीलहिं । गिरत धरन नहिं ।
अलि रस लहहिं । सरस जस कहहिं । हरषित आनन ।
संत चित्त चहहिं । यह दृढ़ गहहिं । लाड़ली कानन ॥

(१२६)

राजहिं कानन दास कहि, निशि दिन लाड़ली लाल ।
सँग सँग अलिगन लै सदाँ, खेलत नये नये ख्याल ॥

नये नये ख्यालहि । करतए भालहि । अति रस जालहि ।
देकर तालहि । नृत्यत हालहि । कइ कइ चालहि ।
निरख निहालहि । सजन रिझालहि । हरषित आनन ।
सखिगन गानन । हित रस तानन । राजहिं कानन ॥

(११७)

कंचन के सदन जड़े हैं मनि हीरन के, तैसी ही झलक रही चाँदनी जरी की है।
लता लता हरित हरित दल कंजन तें, तैसे ही अलिंदन की रास हित ही की है॥
दास कहैं सरिता तरत कल हंस हंस, चात्रक रटन कीर ललित सिखी की है।
जगजगात देखरी निशाकर दिनन्द ही तें, लाड़ली के कानन की कांति अति नीको है॥

(११८)

ललित लतन की छटान की घटा हैं दीह, तीर श्रीकलिंदजा के राजें रस सार हैं।
देख अली केला हैं कठैर खट्टा खिरनी हैं, नारियल चन्दन हैं नारंगी अनार हैं॥
गेंदा गेंदी लटकन चाँदनी कनेर जुही, केतकी अनेक कंज कचनार डार हैं।
दास लाल लाड़ली के कानन के ध्यान धरें, टारें ना छिनक जे दृगन ते निहार हैं॥

पावस बत्तीसी

(११९)

कारी-कारी-कारी आई दै दै दीह अंधियारी, छरर-छरर जल धारन झराती हैं।
सीरी सीरी सीरी आली सारंग सरस धाईं, अति ही सजीली चञ्चला जे तड़तड़ाती हैं॥
दास कहैं केकी कीर चात्रिक चटकदार, रसना रसीली तान नीकी तान गाती हैं।
नैसिक निहार देख लाड़ली छटा तें आय, कनक अटा तें घटा घिस घिस जाती हैं॥

(१२०)

कारी लीली हरित जँगाली रंग रंग हाली, सरस सजीली दिस दिसन तें आती हैं।
गहर गहर गहराय जल डारत हैं, सरर-सरर सीरी धनंजय सिधाती हैं॥
दास कहैं लहर-लहर लतिकान डारी, दलन सहित कंजही को लहराती हैं।
नैसिक निहार देख लाड़िली छटा तें आन, कंचन अटा तें घटा घिस-घिस जाती हैं॥

(१२१)

गरजे हैं केकिन की हर्ष-हर्ष नाचत हैं, चात्रिक रटान तें अनंग जंग सरजे हैं।
सरजे हैं अहंकार कंथ तज अरजै हैं, तेहदार चंचला चटकदार तरजें हैं।
तरजें हैं लेहैं रस सरस अनन्त कंत, चलरी रंगीली जिय जानि निज हरजें हैं।
हरजें हैं कहा तज ठाड़े छल-बलन हैं, दास कहैं देख घन कैसे आज गरजे हैं॥

(१२२)

कीजै का जतन आली लाड़िली रिस्यानी आज, आई घन गर्ज घटा इनैं नैक टार दै।
केकी कीर चात्रिक चिचाय करें काँय-काँय, जान ही की हान जान लै लै जल गार दै॥
दास कहैं दरस कराइये दया करिकें, हा हा हे दियाली हेली धीर हिये धार दै।
सरर-सरर हरी सरसी लगें हैं दीह, तड़िता तरज्जें याहि अग्न धर जार दै॥

(१२३)

काहे तें रिस्यानी है सियानी नन्दनन्दरानी, रीति है अयानी जैसी हठ जिय लाई है।
रसिक रसीली रस रीति तें गरल घाली, हरी की जंगाली तान चात्रिक जनाई है॥
कीजिये निहाली जी दयाली छैल शीघ्र हाली, दास दरशन हेत अखियाँ-रिहाई हैं।
नेक ही निकस आली गेह तजि देख चाली, काली-काली-काली घन गर्ज घटा आईं हैं॥

(१२४)

सीरी सीरी सर सी सिधानी हैं धनंजै दीह, लाड़ली रिसानी नहीं जानै तन हरजें।
काँय काँय केकी कीर कंसे ये कसाई आली, चात्रिक चिकार करें हिये आन दरजें॥
दास कहैं कैसे धीर धारें ना निहारें छिन, तड़िता तड़ड़-तड़ड़ तड़ड़ड़ तरजें।
धाय धाय दिसन तें दै दै अंधियारी देख, घिर-घिर गहरे गहर घन गरजें॥

(१२५)

गर जैहैं अहंकार कंत तज अर जै हैं, अरजै हैं एती जान तेरी जिये हरजे हैं।
हरजे हैं ऐहें नाह नैंक री न लरजे हैं, लरजे हैं लैहें ते अनग रंग सरजे हैं॥
सरजे हैं एती नेह दास लख तरजे हैं, तरजे हैं चंचला अंधेरी निस दरजे हैं।
दरजे हैं लाल हिय हेरती न ढर जैहैं, ढर जैहैं नैन जल कारे घन गरजे हैं॥

(१२६)

सरर-सरर सीरी चलत धनंजै दीह, अरर-अरर जाँय लतिका लरज कैं।
तेहदार तीखी सान धरीसी सटाक आली, तड़ता रही हैं तेज तरज तरज कैं॥
दास कहैं लाड़ली लगत लाल अंगन, अनंग की रही हैं घटा सरज सरज कैं।
कारे-कारे गिरि से सजे लै री दिसान ही तें, आये ये रंगीले घन गरज गरज कैं॥

(१२७)

कंचन अटान चढ़ राजत रंगीले आज, अंग अंग हरित सजीले चीर धारे हैं।
कंज की कली के नीके केते हित ही के जीकै, लै लै निज करन सिंगारन सिंगारे हैं॥
दास कहैं आली रस रंग होकें रंग रंगे, अरे रहैं चित हित छिनक न टारे हैं।
अंस कर डारे रस कंत नेह गारे छैल, धारा धर धारन की झरन निहारे हैं॥

(१२८)

कनक अटारी चढ़ निरखैं घटा री दीह, तडता छटा री ये अनन्द देन हारी हैं।
अलि गन गानन तें लता कंज कानन तें, केकी की रटान ये अनंग की जगारी हैं॥
दास कहैं छरर-छरर जल झारें घन, सरर-सरर चलैं हरी हितकारी हैं।
देख देख आली नैन कीजिये निहाली कैसें, राजत रंगीले संग राधा गिरधारी हैं॥

(१२९)

आइ ये रंगीली तीज रीझ रीझ साजन के, कर रस रंग अंग अंग ते लगाइये।
गाइये सजीली तान तान तान केकी कीर, राजत लतान हेर चित ललचाइये॥
चाइये सरस खिले कंज कल केतको के, दास रस हेत ये अलिंद रास छाइये।
छाइये दिशान दिश घिर घिर अँधेरी दै दै, लाडिली निहार घन गर्ज घटा आइ ये॥

(१३०)

कारे हैं अखण्ड घन हरी के हठीले दल, धड़ड़-धड़ड़ धड़ गाजत नगारे हैं।
गारे हैं अहंकार सजन तज अंत जैहैं, आज गति चंचला के तेग कर धारे हैं॥
धारे हैं अनत जलधर सर सान धरे, शक्र धनु साज साज तेह कर झारे हैं।
झारे हैं अनंत नैन नीर लाल दास कहैं, चल री हठोली आये केकी हलकारे हैं॥

(१३१)

आंदी हैं गहर घिर घिर के दिशान सेती, छरर-छरर जल धार छिरकाँदी हैं।
लांदी हैं तरेर दार तीषी तीषी सथ्थ-सथ्थ, तड़ड़-तड़ड़ तड़ता जैं तड़-तडादी हैं॥
गांदी हैं अलिन्दन दीं रास हित कंजन दें, दास कहैं केकी तान तान ले जनादी हैं।
छांदी हैं अनंग सेन अंगन जगाँदी लख, लाडिली अटातें घटा काली दरसादी हैं॥

(१३२)

छड्ड दिती सक्र सीरी धनंजै जनन हित, दरखतांदी डालियाँ लहर लहरांदी है।
नाचदीं हैं कानन कतार केकी लक्ख लीजै, लाडिली न निकी साडी गल्लें चित्त लांदीं हैं॥
घिन्नदी हैं अलनदी असगध कंजन दी, दास कहैं कियां ये सजीली तान गांदी है।
आंदी हैं गरज घिर घिर दे अंधेरी चंगी, कंचन अटादें नाल घटा घिस जांदी है॥

(१३३)

राधाए कन्हाई ताकी कानन थाकिये छिले, हरस हरस रस रस गानए करीयेचे।
सीतल गंधेए हरी से खाने आछेसि यदी, ए गाछे ओ गाछे(केने) कंज दले ए हालीये चे॥
दास दिश दिशन ते काली ए घटाए येई, झिल्ली ए केकी ए कीर चात्रिक डाकिये चे।
तडड-तडड तड तार तरजीये जदी, झिझक राधेर लाल गाये के लागीये चे॥

(१३४)

गाछे गाछे तले तले केकीरा करीचे गान, राधा ए कन्हाई राधा राधा ए डाकीये चे।
सकल साजीले साज गाये के 'राई ए लाल', ए तीर अनंगे कांति सेखाने ढाकीये चे॥
दास कहैं सारङ्ग चलो छे गंध सीतल कै, कानन के राज ही ये अटाए थाकीये।
गरज गरज येइ जल धार के ढालीयें, काली काली केंने लाल घटाए थाकियें चे॥

(१३५)

आई छै रंगीली तीज जान कें रगीले छैल, हरि तन रंगी लाल चीर अंग धारैं हैं।
लागे अंग अंगनें सजोला साज साजैं छैंजु, सहित अनंग रंग नेह गन गारैं छैं॥
दास कहैं केकी कीर ररैंछें रंगीले जस, छरर-छरर घन गर्जं नीर ढारैं छैं।
कंचन अटान चढ़े राजैं छैं लड़ैती लाल, काली काली कैयां राज घटान निहारैं छैं॥

(१३६)

कानन निहारन सिधाये छैं लड़ैती लाल, रसिक रसीले अंस अंस कर घालैं छैं।
साजैं छैं सिंगार अलिकार नग हीरन के, अंगन निकाई ते अनंग रंग टालैं छैं॥
दास कहैं सीरी सीरी सारंग चलैं छैं भली, लतिका दलन तें सरस कंज हालैं छैं।
चालो चालो हाली कीजै अखियाँ निहाली कैयाँ, छरर-छरर घन धरा नीर ढालैं छैं॥

(१३७)

सरर-सरर सीरी धाई है धनंजै दीह, तरर-तरर तरु डार लहराती हैं।
छरर-छरर नीर छिरकैं धरनि घन, झिल्लीं गन चात्रक सजीली तान गाती हैं॥
दास कहैं देखरी गगन की निराली गत, काली लीली ललित जंगाली दरसाती हैं।
गरज गरज घिर घिर कें दिसान सेती, कैसी ये अदां से आली घटा चली आती हैं॥

(१३८)

केकी गन हंकन की झींगुर झनंकन की, हरी की हसंकन सरस सरसाती हैं।
सारंग की चालन की नीर घन ढालन की, नदी नद तालन की कांति अधिकाती हैं॥
दास कहैं लाडली निहारिये रंगीली गत, हरी हरी लतिका ललित लहराती हैं।
कारी कारी दिसन तें दै दै दीह अन्धियारी, गहर गहर घटा घिर घिर आती हैं॥

* अमृत-ध्वनि *

(१३९)

गर्जहिं घन धड़ड़ड़ धड़ड़, तर्जहिं तड़ितहि संग।
डरत लाड़िली दास कह, लागत लालहि अंग॥

(१४०)

अंगहि लगत अनंगहि जगत ररत केकिय गन ।
संगहि रसत सरस गत सजत हरक्षहिं तन तन ।।
सररर चलत हरिय चित हरत करत गल सज्जहिं ।
छररर झरत धरन जल तड़त धड़ड़ धन गज्जहिं ।।

(१४१)

घिर घिर घहरत दिसन तें, जलधर दास गरज्ज ।
निरख लाड़िली लाल कहँ, तड़ड़ड़ तड़ित तरज्ज ।।

तड़ित तरज्जहिं । अति गति सज्जहिं । दिनकर लज्जहिं ।
सररर तज्जहिं । चलत धनज्जहिं । सखि गन गज्जहिं ।
तरल दलहि लहि । कंज कलि रलति । ढिलति छिति तिरति ।
अलिरस लहति । हरिस चित चहति । घन घहरत घिरघिर ।

(१४२)

सज सज सकल सिंगार तन, राजत कनक अटान ।
हरषत अति हिय दास कह, निरखहिं असित घटान ।।

असित घटानहिं । तड़ित छटानहिं । अधिक सिहानहिं ।
अलिगन गानहिं । चात्रक तानहिं । सिखिन रटानहिं ।
सरित तड़ानहिं । सारस आनहिं । नृत्तत गज गज ।
लाल ललन अज । छिनक न संग तज । त्रिसत सज सज ।।

(१४३)

हरि हरि लतिका ललित अति, राजत दलन सहत्त ।
खिले कंज कल दास कह, अलिगन रसहि लहत्त ।।

रसन लहतहिं । अलिन सहतहिं । सरस चहतहिं ।
हरस गहतहिं । त्रिसा दहतहिं । राग कहतहिं ।
तड़ित तरज्जहिं । जलघर गज्जहिं । अति जल झर झर ।
सरितन चल ढरि । धरन करत तरि । राजत हरि हरि ।।

(४४)

कारिय लालिय लाड़िली, घटनहिं रंग निरक्ष ।
झर-झर जे जल गगन तें, दरसत दास धनक्ष ।।

दरस धनक्षहिं । रंगन लक्षहिं । हरित हि धानिय ।
सारद रँगिय । कासिनी संगिय । केसरि तानिय ।
लख रसखानिय। संदलि खालिय । चंदनि तालिय ।
सरस जंगालिय । अत हरतालिय । अगर इकांलिय ॥

(१४५)

आये हैं लालन लाड़िली, नैक द्दगन्न निहारि ।
अति अधीन चरनन चितै, दास कलेशहि टारि ॥

टार कलेशहिं । राख न लेसहिं । अँग सँग लीजिये ।
दया करीजिये । छिन छिन छीजिये । चित हँसि दीजिये ।
नाहिक खीजिये । कहा गनीजिये । ते तन ताये हैं ।
सिषि हरिषाये हैं । चात्रक गाये हैं । घिर घन आये हैं ॥

(१४६)

आइ ये घिर घिर कें घटा, असितहि गगन निहार ।
दास ललन तें लाड़िली, दीजिये तें रिस टार ॥

तें रिस टारिये । द्दगन निहारिये । सिख हितकारिये ।
का जिय धारिये । नेह न गारिये । रीति अनारिये ।
सिखि हरषाइये। चात्रक धाइये। टेर लगाइये ।
तें न लजाइये । संक न लाइये । लै रस प्याइये ॥

(१४७)

सँग सँग राजत चंचला, गरजत घनहि हरक्ष ।
दास लाल कहँ लाड़िली, यह गत सरस निरक्ष ॥

सरस निरक्षिये । रंगन लक्षिये । घिर घिर गहरत ।
सररर हल्लिये । सारंग चल्लिये । तरगन लहरत ।
झिल्लि झनंकहि । हरी दनंकहि । किलकत अँग अँग ।
शिखिगन रट्टहिं । छिनकन हट्टहिं । राजत सँग सँग ॥

* कवित्त *

(१४८)

हरित मनीन वर बँगला में ठाड़े लाल, सामल घटा की भर प्यारी को लखावैं हैं ।
झूमि रहीं लतिका अवनि पर लूमि रहीं, विविध बिहंग रंग रंग दरसावैं हैं ॥
नाचत सिखीन बाल अति ही बिसाल चाल, गहत कृपाल छूटै दौर दौर धावैं हैं ।
लाल बलबीर दास कूक फिर आय आय, सुभग सजीली सुर राधा गुन गावैं हैं ॥

(१४९)

निकस निकुंजन तें आये छवि-पुंज प्यारे, रूप उजियारे बन हेर हेर हरष।
झूम झूम द्रुम अंब जंबुन को भेंट करें, लूम लूम लूम चूम-चूम पग परसें॥
लाल बलबीर दासी खासी सँग सुख रासी, चीर नवरंग अंग अंगन में दरसैं।
उमड़ उमड़ घन घिर घिर आये घूम, छूम छूम छोटी छोटी बूँदन सौं बरसें॥

(१५०)

कदम धरैन कचनार ह्वै रह्यो है मन, कुंद किसमिस बनातार दीये घरसें।
अरनी असोख री अनारस न हूजै लीजै, जायफल माधुरी है मिठ्ठा बोल हरसें॥
लाल बलबीर जू सों लवली रहौ ना चीड़–ताई को बिसार तिहीं नैन लख तरषैं।
पाँपरी तिहारे बेर कीजै अब तू न हेर, कूकत हैं मोर–छली घोर घन बरसें॥

(१५१)

केकी कूक कूक कें किलोल करें कुञ्जन में, कोकला कपोत री कदम्ब चढ़ हरसैं।
कुमर किशोर जू सों कुमरि किशोरी केलें, को विध करी है कहौ कहा सुख सरसें॥
लाल बलबीर कान्ह कूल श्रीकलिन्दजा के, कून्द कर हाय रहे देख किमि तरसें।
कैसी कारी घटा घन काम की कटारी लै लै, कर कर कोप कौं कठिन नीर बरसें॥

१५२)

बिज्जु तन दमदमाय दशहूँ दिशान दीह, श्याम घन सारी साज ढरी मनौं साँचे हैं।
मधुर मधुर कल झिंगुर झिंगार करें, नूपुर कनक किंकिनी के सोर माचे हैं॥
बग पाँत मोती माल केकी जन देंहि ताल, इन्द्र की बधून कर-म्हैंदी बूँद राचे हैं।
लाल बलबीर श्यामा श्याम के रिझायबे कौं, पावस प्रपंच कचनी सी बन नाचे हैं॥

गिरिराज-अष्टक

(१५३)

चारों दिशि सोभित सदाँ, जाके संत समाज।
सब देवन कौ मुकट मनि, राजा श्रीगिरिराज॥

(१५४)

कोमल अमल मंजु अङ्ग हैं अनूप याको, दरशन किये तें सकल भ्रम भाज हैं।
याकी लै सरन संत सेवत हैं श्यामा श्याम, रटैं आठौं जाम जिनें दूसरे न काज हैं॥
लाल बलबीर मान इन्द्र को गरैया व्रज–जन कौ सहैया रहे जग जस गाज हैं।
पूजें शुभ काज राखे दासन की लाज सदाँ, सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(१५५)

झूमि रहीं लतिका सुहौनी लोनी ठौर ठौर, फूल रहे कंज अलि पुंज गुंज गाज हैं।
कोकिला मराल बाल बोलत चकोर मोर, सदाँ ही बसंत रितु ही की दुति छाज हैं॥
लाल बलबीर मनमोहन रसिक राय, जू ने कर धारे भारे सुखमा जहाज हैं।
पूजें सब काज राखैं दासन की लाज सदाँ, सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(१५६)

तीर तीर शोभित सरोवर मनीन कांति, अमल सुजल पूर मिष्ट सुभ साज हैं।
तिनपै मुदित मन विहरैं मराल बाल, सुखमा विशाल उपमा की गति लाज हैं॥
लाल बलबीर संत भावना भरें हैं जेते, राजत गुफान ध्यान लावैं जस गाज हैं।
पूजें सुभ काज राखे दासन की लाज सदाँ, सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(१५७)

सेवत हैं संत सांति भरे जे अनन्त आय, सरन लहत छांड़ि जग के समाज हैं।
परस किये ते परसत ब्रजचन्द मानौं, दरस किये ते कोटि-कोटि अघ भाज हैं॥
लाल बलबीर जान कीजिये निवास प्यारे, याके सुख आगें सुर पुर ही कौ लाज हैं।
पूजै सब काज राखें दासन की लाज सदाँ, सर्व सुख साज गिरिराज महाराज हैं॥

(१५८)

भूमि रहीं लतिका सजीली फल पल्लव सों, इनकों विलोकि देत काम आन सैंठी हैं।
खेलें लाल लाड़िली सदांई मन मोद भरे, लीने संग सखिन की मण्डली इखैंठी हैं॥
लाल बलबीर सर्व सुख की रहत भीर, दुख को न लेस बेस सुखमा समैठी हैं।
ऐंठी ऐंठी फिरें मति काहे कौं निहार चलि, सब सों सरस गिरिराज की तरैठी हैं॥

(१५६)

इन्द्र जज्ञ ही कौं माँचौ घर घर जोर शोर, मोद भरी डोलें गोपी सर्व सुख साज की।
पापर पकौरी दधि दूध पकवान बहु, करेंगी सकल भेंट भूमि सिरताज की॥
लाल बलबीर हँसि कह्यो नन्द जू सों जाय, जनम भगौरा याकी सेवा कौन काज की।
राखै जन लाज पूजैं सदाँ शुभ काज ऐसो, है न जग दूजौ पूजा कीजै गिरिराज की॥

(१६०)

गरज गरज आये शक्र के सिखाये धाये, घिर घिर गगन अनंत जल ढारे हैं।
तड़ड़ तडड तेज तडिता तरज्जैं घन, कारे कारे गिरि से दिखात ये डरारे हैं॥
दास कहैं नन्दलाल टारिये कराल जाल, राखिये दयाल त्रास जात ना सहारे हैं।
करुनानिधान कान्ह जानिकें जनन हानि, शीघ्र कर तान गिरिराज करधारे हैं॥

(१६१)

तेरी सीख लीनी जग्य गिरि ही की कीनी चित्त, ऐसी नायँ चीनी त्रास हैं जे घनेरे हैं।
सक्र रिस आये घन सेना साज लाये जल, अति ही झराये लाय धाय धाय घेरे हैं॥
दास दीन कहाँ जाइ कैसी करै कासों कहैं, सकना सहाय कीये जतन घनेरे हैं।
हा हा लाल लाड़ले सरन जन जानि लीजै, देर जिन कीजै आज लाज हाथ तेरे हैं॥

(१६२)

छाये हैं गगन आन अति ही डरारे दीह, गरज गरज गरजत कारे कारे हैं।
कर कर जतन अनेक हारे कहाँ जायँ, धर धार ही तें धारा धार जल ढारे हैं॥
दास कहैं करुनानिधान जन जान हानि, लागी ना छिनक लैं कलेस दर डारे हैं।
अहंकार गारे सक्र करें जन जै जै कारे, खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

(१६३)

आये हैं हठीले घन गरज गरज कारे, खण्डत हैं धरा दीह जल धार ढारे हैं।
तेहदार तीखी तेज तड़ता तड़तड़ात, धड़धड़ात हेर हिया अधिक डरारे हैं॥
दास कहैं कीजिये सनाथ जी अनाथ जान, सकल सियान ज्ञान आन दल डारे हैं।
अहंकार गारे सक्र करैं जै जै कारे जन, खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

(१६४)

देख जज्ञ हानी सक्र हीय रिस ठानी, रीति करें हैं अयानी खल सीघ्र इन्हैं डंडिये।
तृन धन धान्य खायँ केतें हित हीके जीके, सकल सजीले साज दीये हैं अखण्डिये॥
दास घन टेरिकें सिखाये चित लाये हाल, जाय जल काल तें कराल धार छांडिये।
गैया [illegible] नर-नारी धरानन्द नन्द, कीजिये निकन्द गिरिराज आज खण्डिये॥

१६५)

चले हरषाय धाय राज की रजाइस लै, तड़ड़-तड़ड़ तड़ता के गन तरजैं।
धारा-धार ही तें धर धार लैं ढरन लागे, अति ही डराने जन जान जान हरजैं॥
दास कहैं कारे कारे देख कें डरारे दीह, गह गह चरन करन लागे अरजैं।
हा हा लाल लाडिले सरन राखि लीजै आज, काल तें कराल ये हठीले घन गरजैं॥

(१६६)

कारे कारे गगन ते आये ये डरारे आज, छंडें जल खण्डें धरा करें जन हरजैं।
तैसी ही जरैया दीह अग्नि कीसी दैया आय, चंचला चिराय रही तड़तड़ाय तरजैं॥
दास कहैं कीजिये सनाथ जी अनाथ जान, कासों कहैं करें डारैं हिये धाय दरजैं।
हा हा लाल लाड़ले सरन राखि लीजै आज, काल तें कराल ये हठीले घन गरजैं॥

(१६७)

तेरें ही कहै तें जाय गिरि की सरन लीनी, तेरे ही कहे ते सक्र जज्ञ लै नसाये हैं।
देत रहे साज जन सदाँ सदाँ हर्ष ही तें, तैंनें ही हठीले काज नये ये कराये हैं॥
दास कहैं नन्दलाल कीजै जी जतन हाल, थर्थरात गात जन अधिक डराये हैं।
याई ते रिसाये राज दलन सजाय दीने, काल ते कराल घन गर्जा गर्जा आये हैं॥

(१६८)

कागा धेनुका से तिरना से खल डारे हन, अधिक कराली काली अहंकार गाइये।
केते डर आये तिनें खेलत टराये तरु, देखत गिराये जन हीकें हितकारिये॥
दास कहैं करुनानिधान नन्दलाल हाल, एती जी रज आज सीघ्र हिये धारिये।
सक्र रिस आये साज सेना चढ़ लाये घन, गर्ज रहे कारे देख त्रास दास टारिये॥

(१६९)

आये हैं गरज कारे कारे ये डरारे घन, सखन कहेतें लाल झड़क निहारे हैं।
तड़ड़ तड़ड़ तेज तडिता तरज्जें आज, तैसे ही हठीले दीह जल धार ढारे हैं॥
दास कही लाल हाल इनकी सरन लीजै, जिनने तिहारे खीर खाँड खाय डारे हैं।
करुनानिधान कान जानिकें जनन हानि, खेलत ही लाल गिरिराज कर धारे हैं॥

१७०)

राज के कहेतें घन आय धाय धाय केतें. कर कर तेह देह जल ढरकाये हैं।
सात दिन सात रात कीनी दीह दीह घात, जाय जाय लाय लाय सिन्धु लै रिताये हैं॥
दृगन निहारैं खल आय आय राजी जन, कृष्णचन्द्रजी नें चक्र गगन तनाये हैं।
सजन रिझाये सक्र दल लै हराये लाल, लाडिले ललन कर गिरि ले धराये हैं॥

(१७१)

चले खिसियाय घन सेन कही राजन तें, सात दिन-राति जल ढार हार आये हैं।
रंचक न जाय जर जाय हाय राह ही तें, सहस दिनेश कांति चक्र लै तनाये हैं॥
दास कहैं तहाँ छल सकल हिराय किये, जतन अनेक किये चले ना चलाये हैं।
जायकें लजाये नहीं कार्ज एक सार आये, नाथ कर कृष्ण गिरिराज लै धराये हैं॥

(१७२)

लाखन धूकार चित धनी तें करी रे रार, कैसें निसतार जाय तहाँ कहा कैहे रे।
जिनहीं के दीने राज सकल सजोले साज, तिनके रिस्याये जाय काकी छाँह लैहे रे॥
दास त्रास ही तें छिन छिन तन छीजत है, ये ही है जतन नाथ चर्न जाय गैहे रे।
करुनानिधान नहीं त्यागें जन दीन जान, सरन लहे ते हाल संसै दाह दैहै रे॥

(१७३)

लंकें सँग साथी गाय सकुचत आये जहाँ, तहाँ नन्दलाल नख गिरिधर राखे हैं।
दीन दीन दीन कह सर्न नाथ राख लीजै, गिरे थहराय धाय चर्न सिर नाखे हैं॥
दास कृष्ण हृदै लाय कही धीर धारिये जी, धन्य करिकें ढिठाई दर्स रस चाखे हैं।
धरा धर दीजै गिरि दया दृष्टि कीजै जन, अति ही अजान कीने निष्ट दीह साखे हैं॥

* अमृतछन्द *

(१७४)

धर चित लालन सिक्ष तेहि, दास हरषि गल गज्ज।
चले सकट लद खान हित, खीर खंड जन सज्ज॥

सज्ज सकल जन । हर्षहिं तन तन । लग्गहिं चरनन ।
जल सिर ढारहिं । चीरन धारहिं । कहें लखि धन धन ।
अग्गहि धर धर । आनन दैकर । खान कहत हर ।
सक्रहिं रिस जल । छांडहि घन जल । हरि नख गिरिधर ॥

(१७५)

कर कर अकरन दास जिन, दीनिहँ जज्ञ नसाय।
कहैं सक्र यह घनन सन, देखिय यहि क्षण जाय॥

देखिय यहि क्षन । धाय सकल जन । कहत झटक्कर ।
आज हटक्कर । तड़ित चटक्कर । लटक लटक्कर ।
दीजिये कह डर । गरज गरज कर । छंड़िय जल धर ।
खंडिय गिरि कर ॥

(१७६)

घहरत आये दिशन तें, अति अखंड दल सज्ज।
कारे कारे दास यह, करत जनन्य हरज्ज॥

करत हरज्जहिं । लख जिय लज्जहिं । गग् गग् गज्जहिं ।
अति कल अज्जहिं । जांकित तज्जहिं । तड़ित तरज्जहिं ।
देत अंधेरिय । कठिन घनेरिय । हरि गन लहरत ।
लग तन थहरत । तें ललक हरत । घिर गन गहरत ॥

(१७७)

गग्गन राजहिं दिशन तें, हिय रिस धरहिं अखंड।
लै लै जल घन दास कह, धाये धरनहिं खंड॥

खंडत धरनहिं। जन कर डर नहिं। गगनहिं अड़ अड़।
छंड़त झड़ड़ड़। अति जल सड़ड़ड़। दिशनहिं धड़ड़ड़।
असित घटानहिं। तड़ित छटानहिं। तत्त तरज्जहिं।
गिरि चट्टांनहिं। अधिक सिहानहिं। गग्ग गरजहिं॥

(१७८)

तेरेहि कहबे ते ललन, गिरि कीने सिरतज्ज।
चढ़े सक्र रिस कर कठिन, राख दास जन लज्ज॥

राखिये लज्जहिं। कर जन कज्जहिं। नास अकज्जहिं।
लै दल सज्जहिं। अति घन गज्जहिं। करत हरज्जहिं।
तज तज डेरहिं। आये हैं नेरहिं। लख निसचेरहि।
जतन घनेरहिं। कर कर हेरहिं। हस्तन तेरहिं॥

(१७९)

धारे गिरि कर लाड़िले, अचरज ख्याल रसाल।
दास चरन सिरनाय कह, जै जै जै नन्दलाल॥

जै नन्दलालहि। हर जन जालहि। कठिन करालहि।
अरि तन सालहि। ततकालहि। लै हन डालहि।
नइ नइ चालहि। दै कर तालहि। छिन छिन जारहिं।
जहाँ निहारहिं। तहाँ सिधारहिं। कइ तन धारहिं॥

(१८०)

डारहिं झर झर सात दिन, दास कहैं घन सक्र।
धारहिं गिरिधर गिरिहि कर, दिये गगन धर चक्र॥

चक्र तनाण्यं। नीर अचाण्यं। धरन न धाण्यं।
जन्न रिझाण्यं। अति हरषाण्यं। लै जस गाण्यं।
निज तन ताण्यं। तहाँ लजाण्यं। कार्जन सारहि।
दास तिहारहि सत्त जना रहि। कठिन निहारहि

(१८१)

राखिय जड़ता अति हियें, जाने नहिं सिरतज्ज।
हाय हाय तें दास है, कीने कठिन अकज्ज॥

कठिन अकज्जहिं । निज गृह तज्जहिं । तन कर थर थर ।
अति डर लग्गहिं । गाय लै अग्गहिं । चले जहाँ हर ।
गिरि नख सज्जहिं । जन सज गज्जहिं । दासन लखिये ।
सीस चरन्नहिं । राख धरन्नहिं । सरन हि रखिये ॥

(१८२)

खेलहिं लालन दास कह, केतिक ख्याल निरक्ष ।
चकई गेंद चिरइ चिरा, लैकर नचत हरक्ष ॥

नचत हरक्षहिं । लेत निरक्षहिं । गिर गिर गह गह ।
आनन लग्गहिं । हित गन जग्गहिं । ततता कह कह ।
धरन ढकेलहिं । चलत अकेलहिं । हँस हँस ते लहिं ।
ये रस रेलहिं । जननि सकेलहिं । हिय हरखे लहिं ॥

(१८३)

नृत्यत हरि जननिय सदन, थिरक थिरक गति लेत ।
दास दृगन्न निहार सखि, निज गन हर्षहि देत ॥

देत अनंदहि । चाहत चंदहि । गगन करत कर ।
सहज सहज रर । ठन गन कर कर । दीजिये कह लर ।
किंकिनी रज्जहिं । कटि तट गज्जहिं । झननन अति गत ।
लचक लचक कर । चरन अचक धर । हँसि हँसि नृत्यत ॥

(१८४)

जै जै जै श्रीराधिके, जै नन्दनन्द अधार ।
जै जै कीरति लाड़िली, दासहि दृष्टि निहार ॥

दृष्टि निहारिय । जै हितकारिय । अर्जहि धारिय ।
दीन तिहारिय । कष्ट निवारिय । संशै टारिय ।
दीन दयालिय । करत निहालिय । दरशन दै दै ।
हित गन कै कै । सरनन लै लै । धन धन जै जै ॥

(१८५)

रज्जहिं हीरन के सरन, लाड़िली लाल निरक्ष ।
करत सहचरी दास कह, केतिक काज हरक्ष ॥

करत हरक्षहिं । हित गन लक्षहिं । चित हित लह लह ।
रंग रंगीलिन । रसिक रसीलिन । तिन सन कह कह ।

केइ जल दानिय। अतरन दानिय। लै कर सज्जहिं।
छिनक न तज्जहिं। कर हित कज्जहिं। संग संग रज्जहिं॥

(१८६)

कारिय जीरी तें धरी, लालन नेह सनाय।
सीतल चीनी दास कह, रहैं तिहारिय चाय॥

चाय तिहारिय। ले जस आरिय। चित हरि दीजिय।
धनी न खीजिय। खें रंगनी जिय। रार न कीजिय।
छन्द कटेरिय। तज जस ले रिय। आलस टारिय।
नर अल आरिय। चन्दन हारिय। तें हित कारिय॥

(१८७)

चढ़ तरु लालन गेंद हित, दह गिर गइय निरक्ष।
धसे गरज्जत दास कह, कालिन्दी यह रक्ष॥

धसे हरक्षत। जन हित रक्षत। नाग झटक्कहिं।
अंग खटक्कहि। जगे सटक्कहिं। लडे हटक्कहिं।
छंडत गरलहि। खंडहि चह तन। अति रिस अड़ अड़।
हन्नहिं झड़ झड़। गर्जहिं धड़ धड़। झट हर सिर चढ़॥

(१८८)

कीजिये लालन तें हितहि, दासहिं सिख धर कान।
कान तिहारी चाह करि, रर तज यहि रसखान॥

खान अनंदहि। आनन्द चंदहि। चलन गयंदहि।
दहरिस अंगहि। हेत अनंगहि। कर हर संगहि।
गह निज रीतहि। छांडि अरीतहि। तें जस लीजिय।
जिय जिन खीजिय। धीर धरीजिय। हित गन कीजिय॥

(१८९)

कर कर सकल सखन ललन, अचक अचक दधि गहन।
धसत हरष तहँ तहँ सकल, जहँ घर अलिन लखयन॥

लखि तन अलि घर। धसत हरष भर। सहित सखन चर।
झट झट चखत। लखत जन हटत। डरत न घट घट।
(जद) घर घर चलत। धरन धर दलत। कढ़त हरखत।
छल कर लहत। रहस यह चहत। ललन सदन कर॥

(१९०)

थेई थेई नृत्यति लाड़िली, ललन दास कह संग।
निरख कांति तन की रति हि, लाजत सहित अनंग॥

लजत अनंगहि। राजत संगहि। आनन्द हियधर।
खड़कत चंगहि। दरसत रंगहि। अलि गन जस रर।
जलज सिंगारहिं। हित कर धारहि। अंग अंग केई केई।
चाहत तिय जेहि। लालन कर तेहि। नृत्यति थेई थेई॥

(१९१)

हँसि हँसि राधा संग हरि, लचक नचत नँदलाल।
निरखत सखिजन दास कहें, देत सकल कर ताल॥

तालहि देत। ललन कर हेत। सितार खंनकहि।
चंग न लहत। सरंगिन गह कर। झांझ झनंकहिं।
थेई थेई करत। अंस कर धरत। निरख थक्कहिं ससि।
लचक लचक कर। चरन अचक धर। नृत्यत हँसि हँसि॥

(१९२)

रज्जहिं लाड़ली लाल सँग, दास दृगन्न निहार।
सीतल अति जल जंत्र तें, चलत सरस गत धार॥

धारहि चलत। सरस गत ढलत। जलज तन निर्खहिं।
ललन हरर्षाहिं। दृगन निरखहिं। हित गन रखहिं।
अतर ढरानहिं। तर तरखानहिं। अलि जन सज्जहिं।
जस गन गज्जहिं। सारद लज्जहिं। लख लख रज्जहिं॥

(१९३)

राजहिं श्यामा श्याम सँग, मंजुल महल गुलाब।
झलति बीजना दास अलि, गन मन अमित उछाव॥

अमित उछावहिं। अतर लगावहिं। प्यारी पिय अंग।
मिल सुर गावहिं। जुगल रिझावहिं। बहु विधि रँग रँग।
सुमन सिंगारन। सुभग सुढारन। रुख लै साजहिं।
अति छबि छाजहिं। रति पति लाजहिं। दोउ सँग राजहिं॥

(१९४)

गावहिं सारद जस सरस, मन बलबीर हमेश।
श्रीवृषभान कुमारि पद, बंदत सेस महेश॥

सेस महेशहि । सहित गनेशहि । ध्यान धनेशहि ।
सुभग सुरेषहि । दिपत दिनेशहि । रमत रमेसहि ।
जतन जलेशहि । प्रेम प्रजेशहि । नारद धावहिं ।
हित फल पावहिं । मन हरषावहिं । सारद गावहिं ।

(५)

कुंजन कुंजन लाड़िली, ललन संग बलबीर ।
करहिं केलि रस रेलि बर, लख हरषत सखि भीर ॥

भीर सिरावहिं । द्दगन लगावहिं । हितन जनावहिं ।
चमर ढुरावहिं । सिर पद नावहिं । मिल जस गावहिं ।
मोर मरालहिं । बिहरत बालहिं । पुंजन पुंजन ।
छबि गन दुंजन । अलि कुल गुंजन । कुंजन कुंजन ॥

(१६६)

छैल छबीली राधिके, जै बलबीर अधार ।
जै जै श्रीवन राजनी, जै जै तन सुकमार ॥

तन सुकुमारिये । रूप उजारिये । मोहन प्यारिये ।
सब सुख सारिये । परम उदारिये । कीर्ति दुलारिये ।
नेह नवीनिये । पिय रँग भीनिये । गुन गरबीलिये ।
रंग रंगीलिये । प्रेम पगीलिये । छैल छबीलिये ॥

(१६७)

श्रीराधा राधा रटौं, राधा ही कौ ध्यान ।
सदा लाल बलबीर उर, राधा नाम प्रधान ॥

ध्यान धरहिं । जतन बहु करहिं । अबल मन कर कर ।
सुख उर भरहिं । द्दगन जल ढरहिं । चरन सिर धर धर ।
यह हम साधहिं । नाम अराधनहिं । हर जग बाधे ।
जन सुख साधे । सुजस अगाधे । जैं श्रीराधे ॥

* कवित्त *

(१६८)

आज व्रजराज जू कें लाल कौ जनम भयौ, छयौ उर मोद नयौ अति सुखदाई हैं ।
नाचें सुर किन्नरी खरीरी उर चाह भरी, गाजत मृदंग झांझ ढोलक सवाई हैं ॥
लाल बलबीर कौं दरस पाय पाय गाय, गीत सुखदाई द्रव्य अमित लुटाई हैं ।
देख चलि आली नैन कीजिये निहाली कैसो, जसुमति जू के द्वार बाजत बधाई हैं ॥

* दोहा *

श्रीवृन्दावन छबि कछू, पावस गिरिवर जान ।
पिय प्यारी को रहस वर, कीयौ सतक सुजान ॥१६६॥

सम्बत शशि निधि वेद ग्रह, भादों अदहि जान ।
गुरु बासर बलबीर कियौ, सत वनराज सुजान ॥२००॥

षड्ऋतु-शतक

* दोहा *

जै जै श्रीराधारमन, जै जै श्रीसुखरास ।
जै जै रसिकन प्राण धन, मम उ र करौ निवास ॥२०१॥

मेरे श्रीराधारमन, अति सरूप सुकमार ।
कोटि कोटि रति काम छबि, इन पर डारूँ बार ॥२०२॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज, मम उर करौ निवास ।
कछु षटऋतु बरनन करौं, करौ बुद्धि परकाश ॥२०३॥

* कवित्त *

(२०४)

गावैं व्रज-नारी र ग रागिनी अपारी बाजैं, सारंगी मुरज धुन बीन एकतारी है ।
साजें सीस सारी जरी किरन किनारी वारी, जगमग जोत होत हियो हर्न हारी है ॥
लाल बलबीर रस रास में सुजान संग, नाचत अभंग प्रेम अंग अंग भारी है ।
जैसी निशि प्यारी लगै चंद को उजार तैसी, राजत बिहारी संग राधा सुकुमारी है ॥

(२०५)

भूले सुर चन्द चन्द थकित कुरंग भये, मोद उर छये बीन बाजत रसाला हैं ।
सुनि सुनि कानन में आईं नारि कानन में, बिधीं प्रीति बान उर लागत उताला हैं ॥
लाल बलबीर रचौ कौतुक विशाला भये, एक कए गोपी सँग एक नन्दलाला हैं ।
नाचें व्रज बाला राधा मोहन गुपाला मानों, सामल घटा में नचें दामिन की माला हैं ॥

(२०६)

लाड़ली लला की छबि देख री निराली आली, सेत अंग वस्त्र हीर आभूषण धारें हैं ।
बाँसुरी बजावैं हरषावैं मुसिकावैं गावैं, सखी सुख पावैं हेर सीस चौंर ढारें हैं ॥
लाल बलबीर कर करसों मिलावें उर, मोद कौं बढावैं छैल गल भुज डारें हैं ।
सुखमा अमद सुखकन्द राधिका-गोविन्द, दोऊ व्रजचन्द चन्द चान्दनी निहारें हैं ॥

(२०७)

साजे अंग अंग चीर जगत जरी के नीके, तैसी हीर हारन की झलक झलाकी हैं ।
तैसे ही रँगीले छैल नेह रंग राचे तैसी, चाँदनी चटकदार चन्द की कला की हैं ॥
दास कहैं तैसी क ट किंकिनी कनक राजैं, तैसी ही चटक कर (माँहि)कर छला की हैं ।
देख देख आली नैन करिये निहाली कैसी, सरद निशा की झांकी लाड़ली लला की हैं ॥

रास

रास

(२०८)

हीरन के सदन सजाये हित हीके जीके, चाँदनी जरी की नीकी झालर झला की है।
कंचन सिंगासन हैं खासे सेत आसन हैं, राजत तहाँ ही अली गन गान ताकी है॥
दास कहैं दासी खासी लै लै री अतर आसी, अंगन लगाय चाय नेह रंग छाकी है।
देख देख आली नैन करिये निहाली कैसी, सरद निशा की झाँकी कृष्ण राधिका की है॥

(२०९)

नील भये अचल सकल नद नद्दिन के, थकि रहे पंछी तन सुधि बिसराई है।
सुरभी समूह सुनि मौनी ओ मगन भये, छये उर मोद नये बैन सुखदाई है॥
लाल बलबीर थकि रहे चन्द तारागन, सीतल समीर आय अंग लिपटाई है।
सर्द रितु आई सुखदाई मन भाई माई, आज व्रज-चन्द मिल बाँसुरी बजाई है॥

(२१०)

हँस उर मोद छये खञ्जन प्रगट भये, थिन ने पंथन की ताप बिसराई है।
पल्लव नवीन भये सुमन रंगीन भये, मीन भये मुदित अमल जल पाई है॥
लाल बलबीर मनमोहन मगन भये, जाय वनराज जू में बाँसुरी बजाई है।
विमल आकाश भये चन्द के प्रकाश भये, तिमिर के नाश भये सर्द रितु आई है॥

(२११)

मोरन को शोर गयो घनन कौ घोर गयौ, झिगुर कौ जोर गयौ मोरन अनन्द है।
पपिहा की कूक गई चकोरन हूक गई, दादुर की दूक गइ जुगनू गन मन्द है॥
लाल बलबीर अबै पावस को जोर गयो, सरद कौ शोर छयौ बहत सुगन्द है।
तम कौ निवास गयौ बिज्जु कौ प्रकाश गयौ, कैसो ये अमंद आज दमदमात चन्द है॥

(२१२)

फूले अरविंद वृन्द विमल तड़ागन में, बागन चमेली खिली सुखमा अमंद है।
सीतल सुगन्द मन्द चलत समीर बीर, प्यारे बलबीर संग राधा सुखकन्द है॥
बहारें छबीले लखें लहरें कलिन्दजा की, देख छबि ताकी होत उरन अनन्द है।
जैसी ये दमकै आली रेनु वनराज जू की, तैसो ही चमकै चारु सरद कौ चन्द है॥

(२१३)

अमल अकाश देख ससि कौ प्रकाश देख, मिटी है चकोर पीर विरहा दरद की।
प्रफुलित कंजन पै गुंजत मधुप पुंज, झरत पराग मानों बरषा जरद की॥
लाल बलबीर संग बिहरें बिहारी प्यारी, रही ना निशानी दिश दसन गरद की।
वृन्दावन-चन्द जू की देखो रेनु दमदमात, चमचमात चारों ओर चाँदनी सरद की॥

हिम-शिशिर के कवित्त

(२१४)

बैठी केलि मन्दिर में सुन्दरि सिंगार साज, आगम बिलोकि रही प्यारे नन्दलाला कौ।
द्वारन में परदे परे हैं मखतूलन के, तूल भरे दमदमात लाल रंग गाला के॥
लाल बलबीर के रिझावन विचित्र चित्र, रचे चित्रसाला में अनेक केल माला के।
पाला के कसाला के न समान बिसाला जहाँ, राजत अनेक वस्त्र रेसमी दुसाला के।

(२१५)

गरम गिलौरी हेन कुलनोंनी नेजन की, विजन अनेकन में गरम मसाला हैं।
सुन्दर मधुर मीठी मेवा धरी थारन मे, परा के सुधा ले भरे कंचन के प्याला हैं॥
लाल बलबीर जू कें पाला के कसाला कहाँ, आय आय लागत नवीन उर बाला हैं।
जरें दीप माला सेज सुन्दर विशाला जाके, साल हैं दुशाला हैं विशाला चित्रशाला हैं॥

(२१६)

बैठी चित्रशाला में बिलोकत पिया की बाट, होयगो कहारी खाय गरम मसाला ते।
सीतल समीर अंग तीर सी लगै है बीर, मानों ये लिपट आई बरफ हिमाला ते॥
लाल बलबीर पीर कबलौं सहूँ मैं बीर, कीजिये उपाय री बचाऔ काम ज्वाला ते।
भई मैं बिहाला बिन एरी नन्दलाला नहीं, सिसिर कौ सीत जाय साल औ दुशाला ते॥

(२१७)

कौनें बिरमाये छैल अजहुँ न आये अबै, मैन लेत दाये को बचावै शीत काला ते।
दौर दौर आली भुक भाँकत भकोरन में, लगन लगी है मोर मदन गुपाला ते॥
लाल बलबीर बिन जागी बिरहा की पीर, जाइयै जरूर दौर लाइये उताला ते।
भई मैं निहाला बिन एरी नन्दलाला नहिं, सिसिर कौ सीत जाय साल औ दुशाला ते॥

२१८)

बैठे चित्रशाला में विशाला रूप बाला लाल, एक बैस बाला उभै अंग उजिआला हैं।
दीनें गलबाहीं तन मन सों लगाई मानों, सुन्दर अमोल कण्ठ मेली बनमाला हैं॥
लाल बलबीर ब्यापै हिम की न पीर बीर, प्रेम रनधीर पियें रूप रस प्याला हैं।
देखि छबि आला बाला होत हैं निहाला संग, राजैं प्रतिपाला राधे छैल नन्दलाला हैं॥

(२१९)

शोभित सखिन मध्य सुन्दर नवेली बाल, ऐसी छबि देत हैं अनूप तिहिं काला में।
जैसें उडुगन मध्य राजत सुधाधर जू, फैलि रही जगा जोति जोबन उजाला में॥
लाल बलबीर अंग भूषन नवीन राजैं, जटित जवाहर अमोल हेम माला में।
सजी सेज आला आमैं मदन गुपाला आज, ओढ़ि कें दुशाला बाला बैठी चित्रसाला में॥

(२२०)

राजैं आस पास दासी खासी कर बीन लै लै, गावत सुहावनी अनूप तान ताला में।
चारों ओर द्वारन में परदे पसमीनन के, राखे भर अतर अमोल दीपमाला में॥
लाल बलबीर प्याला भरे खीर पन्नन के, पानन के बीर भर राखे हैं मसाला में।
सजी सेज आला आमैं मदन गुपाला आज, ओढ़ि कें दुशाला बाला बैठी चित्रशाला में॥

(२२१)

चमचमात चाँदनी चंदोवा लगे चन्द्रमा से, राजैं तसबीरें बिपरीत रत बाला की।
चौलंग दिवालगीर सोहत फनूस भाड़, चहकैं चिराग छबि छाई दीपमाला की॥
लाल बलबीर सजी सुन्दर सजीली सेज, गिलम गलीचे गादी सुरख दुशाला की।
सिसिर के पाला के कसाला काटबे के हेत, रची है विशाला चित्रसाला नन्दलाला की॥

(२२२)

आज रंग महल बिराजैं सिरी श्यामा श्याम, जगमग चारों ओर दीपक उजाले हैं।
बिबिध बनातन के पर्दे परे द्वारन में, लाल बलबीर भब्बा भूमत निराले हैं॥
बिद्रुम पलंग तापै गादी मखमली जापैं बसन रंगीले तर अतर सँमाले हैं।
कहा सीत पाले खाय गरम मसाले पियें, प्रेम मधु प्याले ओढ़े चौहरे दुशाले हैं॥

(२२३)

बिहरत रहै बनराज जू में आठों जाम, और सों न काम गान गावैं नन्दलाला के।
फाटी सी पिछौरिया में राजत हजार चीर, दीपत अनूप रूप छीने मृगछाला के॥
लाल बलबीर श्यामा श्याम जू के रंग भरे, तिन कौं न व्यापत कसाला भूल पाला के।
ओढ़ ओढ़ साधु प्रेम कुटी में निवास करैं, गूदरी गुथेंमा मान मारत दुशाला के॥

* बसन्त-वर्णन *

(२२४)

वनन पै बागन पै बागन की बीथिन पै, वृक्षन पै बेलिन पै शोभा सरसंत है।
व्रज की नवेलिन पै बेनिन पै वस्त्रन पै, बेसर बुलाखन पै ब्यूह दरसंत है॥
लाल बलबीर जू की बाँसुरी पै बैनन पै, बिहँसि बिलोकन पै हेर हरषंत है।
बनंत बनंत ना बहार है अनंत देखौ, वृन्दावन-चन्द पै बसंत बरषंत है॥

(२२५)

केरन पै क्यारिन पै किंशुक कसुंभन पै, फूल कचनारन पै किसलै सजंत है।
कुन्द पै कदम्ब पै कपोत कुल कारन पै, कोकिल कुकारन पै कैविध लसंत है॥
लाल बलबीर कंज पुंजन पै कुञ्जन पै, कामिन के कंठन पै हेर हरषंत है।
कुंडल कपोलन पै केशर पै देख आज, कुमर कन्हैया पै बसंत बरसंत है॥

(२२६)

फूले हैं पलास आस पास बन बागन में, मधुर मधुर टेर कोकिला लगाई है।
गुंजत मधुर पुंज पुंज कुंज कुंजन में, सीतल सुगन्ध मन्द पवन सुहाई है॥
लाल बलबीर बस बालम विदेश रहे, को करै सहाय पीर मैन को सवाई है।
पथिक प्रबीन प्यारे एतनी कृपा करिकै, कहियो जाय कंत सों बसन्त ऋतु आई है॥

(२२७)

बेल बन बागन में सुमन बसंती खिले, पवन बसन्ती ये त्रिबिध सुखदाई है।
बसन बसन्ती धार धार अंग अंगन में, केशर बसन्ती खौर भालन सजाई है॥
लाल बलवीर प्यारी प्रीतम के संग सबैं, गावत बसन्ती राग मोद सरसाई है।
देख छबि जाई भई व्रज में अवाई बड़े, भागन ते प्यारी ये बसन्त रितु आई है॥

(२२८)

गुंजत मधुप पुंज पुंज कुंज कुंजन में, कोकिला औ कीर तान गावत हसंत की।
फूले हैं गुलाब मौर फूले महँकारन के, सरसों सरस फल फूलन लसंत की॥
लाल बलबीर फूल फूले हैं पलासन के, फूल मई भूमि पौन त्रिविध गसंत की।
देखौ चलि प्यारी छबि देखबेई लायक है, वृन्दावन-चन्द में बहार है बसन्त की॥

(२२९)

कुन्दकली केतकी कसूँम कचनारन की, कदली कदम्बन की कांति सरसाई री।
अंबुज अनार बौर लीजै लख आमन के, जामन के पातन में छाई अरुनाई री॥
सुन्दर सरस शुभ सरसों सुहायमान, पुष्प झर भूमि भूमि मानों पियराई री।
लाल बलबीर बीर देखिये बहार बेस, आज रितुराज फूल बाटिका सजाई री॥

(२३०)

सीतल पवन मन्द चलत सुगन्ध लीयें, फूली द्रुम डार बेल शोभा है अनंत की।
कोकिला कहूँकैं कूकैं करत किलोल कीर, गुंजत मधुप धुनि गावैं हरषंत की॥
लाल बलबीर फूले सुमन सुबास भरे, आई हरषन्त रितु सबै जीव जन्त की।
मोहन सुजान गुन खान प्रान प्यारे ये जू, कैसी मन भावन बहार ये बसन्त की॥

(२३१)

भूमि रहे द्रुम डारन में बहु, बौर प्रसून खिले सुखदाई।
गुंजत भौंर मनोज भरे मनों, कोकिल प्रेम की तान सुनाई॥
सीतल मन्द सुगन्ध लिये बल-बीर समीर बहै सुखदाई।
आय सुजान निहारिये जू व्रज-माँहि बहार बसन्त की आई॥

(२३२)

गेंदा पै गुलाब पै गुठेर गुल लालन पै, गोपन पै ग्वालन (पै) गुलाल दरस्यौ परै।
पावन पै पत्रन (पै) पलासन पै पत्रिन पै, पुष्पन के पुंज पै पराग परस्यौ परै॥
लाल बलबीर सज्यौ सीतल समीरन पै, सेवन पै सौंफ पै सरस सरस्यौ परै।
बाँसुरी पै बन पै बिहारी पै बिलोक बीर, वृन्दावन-चन्द पै बसन्त बरस्यौ परै॥

(२३३)

सरसों पै सर पै सरोवर पै सेवती पै, सन्दल सुगन्ध पै समूह सरस्यौ परै।
कालिन्दी के कूलन पै केंवरा कनेरन पै, कोकिल के कण्ठ पै कलोल करस्यौ परै॥
लाल बलबीर लौनी लतन लवंगन पै, लफ लफ लूमि लूमि लोट लरस्यौ परै।
व्रज की वधून पै बिहारी पै बिलोक बीर, वृन्दावन-चन्द पै बसन्त बरस्यौ परै॥

* होरी *

(४३४)

चित्रा रंग देवी जू विशाखा ललितादि आली, लीनी सब टेर वृषाभानु की किशोरी जू।
फागुन सुहागन ये भागन तें आयौ सखी, केशर घुरावौ भरियो गुलाल झोरी जू॥
लाल बलबीर आये नन्द के रंगीले छैल, लीने ग्वाल-बाल ठाड़े सांकरी की खोरी जु।
एती सुनि गोरी सबै धाईं चहुँ ओरी कहैं, होरी लाल होरी ! आज होरी लाल होरी जू॥

(२३५)

मोर के पखौआ सीस गुंजन की माला गरै, मुख में तमोल बैन बोलैं बरजोरी के।
गावत धमार चलैं पिचकी अपार परैं, नीरन फुहार अंग भीजत किशोरी के॥
लाल बलबीर लाल छाँड़त गुलाल लाल, अवनि अकाश द्रुम लाल चहुँ ओरी के।
धाईं सहजोरी गोरी लोक लाज तोरी कहैं, दौरि घेर लेऔ री(ये)खिलारी आये होरी के॥

(२३६)

बाजत मृदंग ढोल मानों घन घोर आये, उड़त अबीर चहुँ ओर धुंध छाई है।
कुंकुम गुलाली चलैं चामीकर वर मानों, जुगनू जमातें की जमातें दरसाई है॥
लाल बलबीर नारी सारी ओढ़े जरी वारी, झमकैं अमन्द चपलासी चमकाई है।
पिचकी अपार छूटैं नीर की फुहार धार, मानों बरसाने बरसा ने झर लाई है॥

(२३७)

इतैं ठाड़े नन्दलाल लीने गोप ग्वाल बाल, उतैं लै सखीन वृषभानु की किशोरी है।
मन्द मुसिक्यावैं राग नये नये गावैं बहु, बाजन बजावैं लै उड़ावैं रंग झोरी है॥
लाल बलबीर बाढ़ी मदन उमंग अंग, धाई कहैं होरी लोक हू की लाज तोरी है।
करैं बरजोरी मुख मींजत हैं रोरी धूम, माची चहुँ ओरी बरसाने आज होरी है॥

(२३८)

मोहन छबीले कौं पकरि लीनों होरी माँहि, मोर को पखौआ छीन सारी सीस धारी है।
खञ्जन से नैनन में अंजन अँजाय दीनों, दीनों मुख पान भाल बेंदी दई कारी है॥
लाल बलबीर प्यारी प्रीतम मनाय दीनों, रंग की कमोरी सीस ऊपर सों ढारी है।
हँसैं बूझैं नारी बोली भान की दुलारी प्यारी, आई मथुरा तें एक गोप की कुमारी है॥

(२३९)

बाँध गोल गोरी मनमोहन गहोरी कोऊ, मींजे मुख रोरी आज होरी लाल होरी है।
छीन लई लकुट मुकट बेनु पीत पट, चूंदरी उढ़ाय हसैं बधूटी हँसोरी है॥
लाल बलबीर लोक पालन कौ पाल लाल, देखौ व्रज बालन की बंध्यौ प्रेम डोरी है।
बूझैं चित चोरी नई कौन ये कहोरी हँसि, कहत किशोरी भोरी नन्द जू की छोरी है॥

(२४०)

दौर दौर आवौ छैल ग्वाल गोल संग लावौ, ढप ही बजावो गावो राग लाज बोरी के।
कहाँ बल भैया मैया संग के सहैया तेरे, कौन है छुड़ैया तो खिलैया बड़े होरी के॥
लाल बलबीर गरुताई कौं बिसार दीजै, दीनताई लीजै जस गावौ मन भोरी के।
रीझें जब गोरी सुनि टेर तुम ओरी तबै, चरन छुवाय छोड़ें कुमरि किशोरी के॥

(२४१)

आये फाग खेलन गुपाल बरसाने माँहि, धाय चलीं गोरी गृह काजन तें छूट छूट।
कनक कमोरी जोरी ढारत बसंती नीर, छाँड़त अबीर मुठि झोरिन ते लूट लूट॥
लाल बलबीर लाल करत अनोखे ख्याल, मसके उरोज आँगी बन्द जायँ टूट टूट।
लूटि जाय छलसों छबीले रस बार बार, कुंकुम चलावै गिरैं लगैं तर फूट फूट॥

(२४२)

कीरतकुमारी इत रसिक रँगीले छैल, माची धूम धाम पिचकीन के चलाने में।
उड़त गुलाल लाल भये हैं लड़ैती लाल, परत फुहार धार केशरिया बाने में।
लाल बलबीर अंग चुअत बसन्ती नीर, होय मन मुदित धमार राग गाने में।
रंग के लगाने में अबीर के उड़ाने में सु, आज व्रजराज फाग खेलें बरसाने में॥

(२४३)

आये फाग खेलन गोपाल वृषभानु पुरा, गावैं ख्याल दे दे ताल उर हरषत हैं।
इततें किशोरी गोरी सखिन के यूथ मध्य, लेकर अबीर पी कपोल परसत हैं॥
कंचन पिचक तक मारत बिहारी नीर, लाल बलबीर अंग प्रीत दरसत हैं।
छज्जन तें छात तें झरोखन तें मोखन तें, लाल नन्दलाल पै गुलाल बरषत हैं॥

* ग्रीष्म-वर्णन *

(२४४)

मंजुल महल मालती के नीके साज राखे, महकें उड़त उर बाढ़े मैन मद्दी हैं।
छूटत फुहारें नीर सीतल गुलाब बारे, चंदन चहल चारू चौक में चौहद्दी हैं॥
लाल बलबीर तहाँ राजत बिहारी प्यारी, सुन्दर सुहावन गुलाबन की मद्दी हैं।
राजैं रूप राशी दासी करत खवासी तहाँ, ग्रीषम कौ गरम गरूर किये रद्दी हैं॥

(२४५)

चंदन लगाय अङ्ग लियें प्रान प्यारी संग, गति है निराली सुख बाँसुरी धरन की।
चन्दनी ही बागे साज सर्व लोक सिर ताज, सुखमा निहार गौर सामरे बरन की॥
सुमन सिंगार कीने प्यारी पिय रँग भीने, लाल बलबीर छबि तापन हरन की।
लीजै ललि झाँकि बाँकी बाँके की बाँकी अदा की,बलि बलि जाऊँ प्यारी बिहारी चरन की॥

(२४६)

चन्दन सिंगासन पै फूलन के आसन पै, रसिक बिहारी प्यारी तापैं सुख पावहीं।
कोऊ कर छत्र धारे कोऊ सखी चौंर ढारे, लाल बलबीर दासी बीजना झलावहीं॥
नाना गति भेदन सों नाचत बजावें बीन, अति रसभीनी प्यारी तानन सुनावहीं।
लखि सुख पावहीं बुड़ावैं रस सागर में, छिन छिन नये नये चोजन लड़ावहीं॥

(२४७)

द्वार दर परदे पराये मालती के नीके, छूटत फुहारे भारे री गुलाब नीर के।
चन्दन चहल मची चौक मैं चौहद्दी चारू, चलत झकोरें जोरें सीतल समीर के॥
लाल बलबीर दासी लै लै जुही चौंर ढारें, रूप कौं निहारैं छैल प्रेम रनधीर के।
जीवन अधार सुकमार-सार आज दोऊ, राजत बिहारी प्यारी मन्दिर उसीर के॥

(२४८)

बैठे रंग महल रँगीले गरबीले छैल, छबि सों छबीले प्रेम रंग रस भीने हैं।
कीने हैं सिंगार अङ्ग अङ्गन सजीले चट-कीले मटकीले पट निपट नवीने हैं।
लाल बलबीर दासी निरख सिरावैं नैन, मन मद भरी सैन करत रँगीने हैं।
मालन नवीने लाइ सुमन सजीले प्यारी, पग धर दीने लाल नासा लाय लीने हैं॥

(२४९)

चन्दन चहल चारु चारों ओर चौकन में, चन्दनी चुनेमा चीर चोंपन सों धारे हैं।
चम्पक की चाँदनी में चामीकर चमचमात, चन्दमुखी चंचल सैचरी चौंर ढारे हैं॥
चरचित चोवा बलबीर चित चाहन सों, चाहन सों चत्रभुज चंगेरें निहारें हैं।
चाँदनी सी चादर पै चौंसर चमेलिन के, चाल चित चोजन सौं चौतरफी पारे हैं॥

(२५०)

चलत फुहारे नीर सीतल सुगन्ध बारे, झरन अपारे हेर मेघ झर लाजे हैं।
अतर लगाय चाय हिये हरषाय दोऊ, अङ्ग अङ्ग सुमन सिंगार शुभ साजे हैं॥
लाल बलबीर दासी लै लै कैं नवीन बीन, गावत प्रबीन रस रंग राग ताजे हैं।
देख सुर साज रीझे रसिक रसीले आज, मालती महल राधारमन बिराजे हैं॥

(२५१)

कोऊ जलदानी सुखसानी लै अतरदानी, कोऊ लै गुलाब नीर अङ्ग चरचामें हैं।
कोऊ चौंर ढारें फूल रूप कों निहारें आली, कोऊ सुख सानी लै लै बीजना झुलामें हैं॥
लाल बलबीर दासी सुमन नवीन बीन, चुन चुन शुभग सिंगारन सजामें हैं।
जो जो मन भावै प्रान प्यारी श्रीबिहारी जू के, सो सो बनराज श्रीनिकुंज में लड़ामें हैं॥

(२५२)

चारों ओर द्वार परे परदे उसीरन के, छूटत फुहारे नीर सीरे चित चाव के।
सखी चौंर ढारैं फूल अंगन अतर बोरैं, सौरभ झकोरें साज मदन उछाव के॥
लाल बलबीर दासी खासी कर बीन लै लै, गावैं राग रागिनी रसीले हाव भाव के।
दाव कें विलोक की निकाई सुखदाई आज, राजत बिहारी प्यारी मन्दिर गुलाब के॥

(२५३)

फटिक सरोवर में अमल सुजल भल, नाभी के प्रमान तहाँ कंटक न काई है।
तामें जल केलि करैं रसिक बिहारी प्यारी, चूबक लगाय पिय पग सिरनाई है॥
लता झुकि रहीं फल पल्लव सों ताके बीच, बीच बीच बीच जल जंत्र बारि छाई हैं।
परत फुहार भारी भीजें पिय प्रान प्यारी, लाल बलबीर दासी हरे हरषाई हैं॥

* पावस-वर्णन *

(२५४)

ललित लवंगन की लहलहीं लोनी लता, लफ लफ लूम लूम झूम चूम जावै री।
सहित सुगन्धन सों सीतल समीर धावै, चारों ओर जोर सोर मुरवा मचावै री॥
लाल बलबीर बिन भूषन बसन भोग, पय पान पानी उर पीर कौं बढावै री।
कछुना सुहावें मोहि मदन जरावैं आली, देखि घनश्याम घनश्याम याद आवै री॥

(२५५)

झूम झूम आवैं घूम घूम जोर सोरन सों, झप झप लूम लूम भूमि चूमि जावैं री।
तड़ड़ तड़ित तेज तड़कें गगन बीच, सरर सरर ये समीर बीर धावैं री॥
अरर अरर नीर ढरकें अपार धार, लाल बलबीर बिन ब्रज कौं डुबावै री।
कछू ना सुहावैं उर मदन जरावै आली, देखि घनश्याम धनश्याम याद आवै री॥

(२५६)

केकी कूकि कूकि कें करेजा करें टूक टूक, दूक दूक दादुर दुखारे प्रान खावैं री।
सूक सूक पिय बिन पिंजर भयो शरीर, पीय पीय बैन पापी पपिया सुनावै री॥
लाल बलबीर बिन ढरैं नैन नीर बीर, बिरहा मरोरन तें कौन ले बचावै री।
कछु ना सुहावै मोहि मदन जरावै आली, देख घनश्याम घनश्याम याद आवै री॥

(२५७)

कारी कारी रैन ये डरारी झुकि आई प्यारी, मारत कटारी मदनाग में भरी भरी।
बोलत पपैया मोर सोर करैं चारों ओर, बरषें बिलन्द बुन्द बादर घरी घरी॥
लाल बलबीर मनमोहन न आये बीर, हेरत दिशान कौं बिसूरत खरी खरी।
हाय बिन कंत को सहाय करै मेरी अब, सूनी देख सेज कौं पुकारती हरी हरी॥

(२५८)

कारे कारे भारे घन छाये चहुँ ओर आली, प्यारे बनमाली बिन लागत डरावने।
फूले हैं कदंब अंब जंबु झुकि झोटा लेत, गुंजत मधुप ये मदन उपजावने॥
लाल बलबीर ये पपैया रटै पीऊ पीऊ, काढ़े लेत जीव बैन बोलै तन तावने।
पवन झकोरैं घन बाँध बाँध जोरैं घोरैं, बरष गये री एक आये बरषावने॥

(२५९)

पावस में छाये परदेश री प्रवीन नाथ, चमचमात चंचला चहूँघाँ आय तरजैं।
तैसी अंधियारी रैन लागत डरारी मोहि, प्यारे बनवारी बिन हिये होत दरजैं॥
लाल बलबीर बिन कैसें मैं धरूँ री धीर, ब्यापी मैन पीर करूँ कासों जाय अरजैं।
हरजैं न जानैं कछु बरजै न कोऊ जिनैं, देख बजमारे घन बेर बेर गरजैं॥

(२६०)

बालम बिदेश बीर बरषा बरावत हैं, बोलत बिहंग बन बेलिन पै हरषैं।
बान पंच आन आन बेधैं हैं बदन बीच, बारी बैस बावरी बचावै कौन डर सैं॥
लाल बलबीर बैठी बारहदरी के बीच, बाट कौं बिलोकै ना बिलोके नैन तरसैं।
बिरहा बढ़ावन कौं बादर बुरैया बीर, बाद बदि बदि कें बिलन्द बुन्द बरसैं॥

(२६१)

पावस में पिले पंचबान जू के पांचौ बान, प्रानन निकारें लेत पापी पुंज हरसैं।
पीऊ पीऊ करिकें पपैयरा पुकार करे, पीउ परदेश री पखेरू प्रान तरसैं॥
लाल बलबीर पूर पोहमी पतौषन सों, पथिक प्रवीन कौन पूछैं पंथ दरसैं।
पीकर पताल पानी पानकी पजारे घन, पल पल प्रबल प्रचण्ड धार बरषैं॥

(२६२)

कूकत हैं मोर जोर झींगुर मचावैं सोर, पवन झकोर अङ्ग लागें काम सर से।
भूमि भई हरित सरित जल पूर भई, पातकी पपीहा पीऊ पीऊ धुनि करसे॥
लाल बलबीर घर मोहन न आये बीर, कारी बजमारी घटा काल सम दरसें।
बाँध बाँध जोरें घन घोरें चहुँ ओरें आज, धारा बाँध धर पै अखण्ड धार बरषें॥

(२६३)

सावन के दिवस डरावने लगन लागे, प्यारे बनमाली बिन आली जीउ तरसे।
पातकी पपैया पीऊ पीऊ पीऊ टेर करैं, कामी काम आन जान बेधत हैं सर से॥
लाल बलबीर केकी कूकत गुमान भरे, चपला चमंकि के डरावत हैं हरसे।
बाँध बाँध जोरें घन घोरें चहुँ ओर आज, धारा बाँध धर पै अखण्ड धार बरषे॥

* हिंडोरा *

(२६४)

चलो री सहेली मिल आज सबै वृन्दाबन, बाढ़त उमंग सुन मोरन के सोरे में।
सीतल समीर मन्द चलत सुगन्ध लिये, छोटी छोटी बुंदिया झरत चहुँ ओरे में॥
लाल बलबीर सजौ चीर नवरंग अङ्ग, कंचुकी कसूँभी रंग धारो कुच कोरे में।
कीरति किशोरी वृषभान की दुलारी राधे, आज बनवारी संग झूलत हिंडोरे में॥

(२६५)

ललित लवंग की निकुंज में हिंडोरे चढ़ि, राजत जुगल अङ्ग अङ्गन हरषियाँ।
सारी फुलनारी सीस राजत पियारी जू के, प्यारे सिर राजत अनूप मोर पखियाँ॥
लाल बलबीर दोऊ दोऊ को निहारैं डीठ, कितहुँ न टारैं मधुभरी चारु अँखियाँ।
कीरति किशोरी वृषभान की दुलारी राधे, झूलत बिहारी सङ्ग देत झोटा सखियाँ॥

(२६६)

कारी कारी घटा भारी उमड़ घुमड़ आईं, छोटी छोटी बूँदन की परत फुआर हैं।
बोलत चकोर मोर सोर करैं चारों ओर, सीतल सुगन्ध लियें चलत बयार हैं॥
लाल बलबीर लता भूमि लगीं झूम झूम, ललित लवंगन की फूल रहीं डार हैं।
देखौ कुंज कुंजन में झूलत हैं श्यामा श्याम, वृन्दावन-चन्द में हिंडोरा की बहार हैं॥

(२६७)

आली आउ आउ नैंक निरखौ उताली, वनराज की बहाली टुक हिये माँहि धारोरी।
झूमत कदंब अंबु जंबु सुखमा सों निंबु, तिन पै हजार सुरपुर बाग बारो री॥
फूले अरविन्द कुन्द सेवती गुलाब पुंज, दिव्य मकरन्द हेर पारजात टारो री।
झूलत हिंडोरे तहाँ राधिका-रमन लाल, लाल बलबीर प्यारी छबि कौं निहारो री॥

(२६८)

नवलकिशोर नव जोबन में जोर दोऊ, नवल सिंगार साजे श्याम तन गोरे में।
नवल उमंग नव प्रेम में अभंग खेलैं, नव नव ख्याल नव मैन मद जोरे में॥
नवल समाज सुख साज नवकाज नव, लाल बलबीर दासी रहत निहोरे में।
नवल ही राग गावैं लाल लाड़िली झुलावैं, नवल निकुञ्ज माँहि नवल हिंडोरे में॥

(२६९)

रतन जटित भूमि साखा द्रुम रहीं झूमि, लेत मग चूमि चूमि झरनि प्रसून की।
नाचत मराल बाल बरही विशाल चाल, पपिया रसाल तान गावैं सुर दून की॥
लाल बलबीर बहैं सीतल समीर धीर, छूम छूम झरैं नीर बुंदियाँ सुहून की।
राधा वनमाली आज नवल हिंडोरे आली, झूलत उताली छवि देखो री दुहून की॥

(२७०)

दोऊ गरबीले छैल छबि में छबीले प्रेम, रंगन रंगीले दोऊ श्याम तन गोरे में।
दोऊ सुर गावैं दोऊ दोऊ कौं रिझावैं, सुन दोऊ हरषावैं मन बँधे प्रेम डोरे में॥
दोऊ हैं प्रवीन अङ्ग अङ्गन नवीन दोऊ, दोऊ रस लीन भये रूप के झकोरे में।
लाल बलबीर दासी करत खवासी आज, झूलत निकुञ्ज राधारमन हिंडोरे में॥

(२७१)

सावन सुहावन की आई हरिआली तीज, गावत मलार ब्रज बाल तन गोरे की।
ओढ़ें सीस सारी श्यामा सोहनी सुनैरी कारी, चंपई नरंगी औ कसुँभी रंग बोरे की॥
लाल बलबीर प्रान प्रीतम के अङ्ग सङ्ग, झूलत उमंग भरी मदन मरोरे की।
जेहर झनक पैं खनंक कटि किंकनी की, बेसर चमंक पैं दमंक है हिंडोरे की॥

(२७२)

आये घन कारे मोर सोर करैं भारे नव, झिल्ली झनकारें औ उचारें तान जोरे की।
प्रीतम की प्यारी अङ्ग अङ्ग सुकमारी, मुख चन्द उजियारी मुसिक्यान चित चोरे की॥
लाल बलबीर झूलैं मदन उमंग भरी, उड़त दुकूल पौन चलत झकोरे की।
जेहर झंनक औ खनंक कटि किंकिनी की, बेसर चमंक पै दमंक है हिंडोरे की॥

(२७३)

सारी सीस सामरी सँजोई सजी जारीदार, जरी की किनारी कोर बादले सुमारिये।
जेवर जवाहर के जग्मगात अङ्गन में, झलझलात कंचुकी कसुंभी उर धारिये॥
लाल बलबीर छवि निरखि सिराने नैन, रमा उमा मोहनी रती हु वार डारिये।
कौन लख नारी सुध देह ना बिसारी प्यारी, सामरी सखी के चल झूलन निहारिये॥

* ऋतुवर्णन प्रकीर्ण *

(२७४)

झूलत हिंडोरे प्रान प्रीतम के अङ्ग सङ्ग, मदन उमंग की तरंग में भरी भरी।
लाल बलबीर दोऊ गावत मलारैं चलैं, सीतल बयारैं बेली झूमत हरी हरी॥
उर चमकाय पाँय भूमि ते लगाय धाय, लेत हैं सिहाय झोटा दीरघ घरी घरी।
पट फहरात जात छिन आवैं छिन जात, मानौ आसमान तें विमान लै परी परी॥

(२७५)

झूलत हिंडोरना में दोऊ मदमाते छैल, हिये हरसावैं देख रूप की मेहरिया।
हरष हरष हँस हँस झूम झोटा देत, उमड़ उमड़ चलीं रूप की नहरिया॥
चलत समीर मन्द सीतल सुगंध लियें, लाल बलबीर घन गरजैं गहरिया।
फहर फहर करैं प्रीतम कौ पीत पट, लहर लहर करैं प्यारी की लहरिया॥

(२७६)

गरज गरज घन घिर घिर घूम आये, छोटी छोटी बूँदन की परत फुहरिया।
ताल नदी नारन के नीर उमगान लागे, मन्द मन्द चालन सों चलत नहरिया॥
नवल निकुंजन में झूलत लड़ैती लाल, लाल बलबीर पौन चलत सहरिया।
फहर फहर करै प्रीतम को पीत पट, लहर लहर करै राधे कौ लहरिया॥

(२७७)

आये हैं गरज घन घोर चहुँ ओर बहै, सीतल समीर बारि बूँद छबि छाती हैं।
रची हैं हिंडोरा मारतंड तनया के तीर, फूली द्रुम डारन पै कोकिला कुकाती हैं॥
लाल बलबीर दोऊ झूलत हैं श्यामा श्याम, मोर करैं शोर नारि मिल मल्हार गाती हैं।
पीत पट प्यारे कौ परो है आन प्यारो पर, चूनर लड़ैती की गुपाल पै चुचाती है॥

(२७८)

आली बाग देखबे गई ही हुती वृन्दावन, तहाँ झूला डार राख्यौ सामरे गुपाल ने।
कह्यो मुसिक्याय गज गौनी ये सलोनी इतै, आऔ झूलि जाऔ त्याग जगत जंजाल ने॥
लाल बलबीर जौलौं झूलन न पाई बीर, तौलौं आय धाय कोप कीनों सुरपाल ने।
उमड़ घुमड़ घन बरषन लागे नीर, कामरी उढ़ाय कैं बचाई नन्दलाल ने॥

(२७९)

प्रीतम के संग में उमंग भरी झूलें बाल, धुरवा निहार एक बैन कह्यो सुन्दरी।
येहो मनभामन ये सावन सुहावन की, कारी कारी भारी घिर आईं घटा धुंधरी॥
आज ही निकार माय दीनी मोहि ओढ़न कौं, लाल बलबीर ना मचैयौ कहीं दुंदरी।
ये हो मान सैयाँ तुम लेहुँ मैं बलैयाँ, यह कामरी उढ़ाय कें बचाय लीजै चूँदरी॥

(२८०)

संग सखियन के किशोरी गई बागन में, अंग अंग आभूषण राजै कर मूँदरी।
ताही समैं झूला डार झूलत मयंकमुखी, गावत मलार सों मची है बहु दुंदरी॥
धुरवा धुकार झर लायो सह जोरन तें, लाल बलबीर घिर आईं घटा धुंधरी।
श्याम प्रीति सों सनी भई है सराबोर सारी, प्यारी की सुरंग रंग भीजि गई चूनरी॥

(२८१)

मुदित मुदित झूला डारत कदम तर, झूलत जुगल तहाँ कूकि रहे मुरवा।
गावत मलार गोपी जन उर हरषत, कोयल भरत मानो बागन में सुरवा॥
फहर फहर पौन चलत चहूँये दिस, झूमि झूमि झुकि बरषन लागे धुरवा।
लाल बलबीर पिय पट फहरान लागो, लहर लहर करै प्यारी कौ चुँदरवा॥

(२८२)

ल्हैरदार भूमि खग बोलत लहरदार, ल्हैरदार लता पता पुष्पन सों छाई है।
ल्हैरदार दासी सुख रासी हैं खवासी माँहि, ल्हैरदार द्रुमन पैं दांमरी गिराई है॥
ल्हैरदार आभूषन साजे अङ्ग अङ्गन में, ल्हैरदार झोटैं लैत छैल सुखदाई है।
ल्हैरदार ल्हैलहात लाल बलबीर जू की, पीत पट लाड़िली की सारी लहराई है॥

(२८३)

आज सखी माधुरी लतान में नवेली बाल, पचरँग डारी डार मखतूल दामरी।
कुन्दनपटी में नवरत्न की कटीली कांति, देख दृग भ्रांति छबि लेत मनु भामरी॥
झीने सुर गावैं कर बीन लै बजावैं मन, जुगल रिझावैं हरषावैं व्रजवामरी।
लाल बलबीर दासी देख चल सुखरासी, झूलत छबीली छबि श्याम संग सामरी॥

(२८४)

कारे कारे धुंधरे उतंग अङ्ग अङ्ग वारे, बकुल कतारें हैं न दीरघ दतारे हैं।
चपला चमंक हैं न झूल झमकत आवैं, बरषैं न मेघ मधु झरत अपारे हैं॥
लाल बलबीर बीर झूमत झुकत आवैं, मानिनी के मानगढ़ तोरबे सिधारे हैं।
हैं न घन कारे छूटे जोम भरे जंगी ये तौ, मदन महीप के मतंग मतवारे हैं॥

(२८५)

आये घूम घूम झूम झूम चहुँ ओरन सों, कारे कारे धूंधरे पुष्टटि अङ्ग भारे हैं।
लाल पीत लीले कुंभ चित्रित विचित्र रंग, झमझमात बिज्जु मनौ झूल वस्त्र धारे हैं॥
लाल बलबीर मानिनी के मान तोरिबे कौं, देखरी हजारन किरोरन हुंकारें हैं।
हैं न घनकारे छूटे जोम भरे जंगी ये तौ, मदन महीप के मतंग मतवारे हैं॥

(२८६)

उमड़ घुमड़ घन घिर घिर आये घूम, झूमत झुकत मानों लंक सी लकत हैं।
माधुरे सुरन कर झींगुर झिगारत हैं, मन्द मन्द मानों सुर मेखला बजत हैं॥
लाल बलबीर बिज्जु दमकैं दसन मानों, जुगनूं चमंक स्त्रुति कुण्डल लसत हैं॥
चटकैं अटान पै घटान कों निहारि प्यारी, आज नभ मांहि ये गनेस से नचत हैं॥

(२८७)

बोलें न मयूरन की भीरन विडार देरी, टार देरी दादुर धुकार तन छोलैंना।
छोलैंना तन कौं यह धुरवा धुकारन सों, दामिनी दमंकै चहुँ ओर आय डोलैंना॥
डोलैंना जुगनून जमातें ये जरावैं मोहि, लाल बलबीर पौन आय भौन खोलैंना।
खोलैंना अनंग खातो जौन आवै मेरो पीउ, पातकी पपीया पीउ पीउ कह बोलैंना॥

(२८८)

प्यारी आई देख ये बहार नई पावस की, आज घन रंग ये अनेक रंग छायौ है।
सोसनी सुनेरी शुभ्र संदली सबज काई, सूहे सरबती स्याह सबज सहायौ है।
लाल बलबीर सपतालु सुरमई सेत, सबजी सुजान ये सजीले साज लायौ है॥
सुन्दर सयानी मन मानी सीस सारी साज, सामन में इन्द्र रँगरेज बनि आयौ है॥

(२८९)

लीले असमानी खाखी बैंगनी मकोईया हैं, बैंजनी जुमर्दी आँबी जांमनी सुहायो है।
कासनी कपासी खसखासी नाफरी गुलाबी, मूँगिया कपूरी तोती धानी साज लायो है॥
चन्दनी बदामी औ नरंगी नीबुआ हैं बेस, चंपी फालसी कुँ देखि जोजई सुहायौ है।
लाल बलबीर राधे अचरज नयो घन, सामन में इन्द्र रँगरेज बनि आयो है॥

(२९०)

गरज गरज घन घिर घिर आये देख, धाये दिस दिसन ते अधिक डरारे री।
धारा धर धार नीर ढरकें गगन तेज, तड़कत आज हियें धीरज न धारे री॥
चात्रक चिकार करें अलिगन गान करें, नीलकण्ठ तान कहि कहि जिय जारे री।
दास कहै छाये कंथ आये नहि आज तक, तक तक राग दृग हेर हेर हारे री॥

(२९१)

आये हैं न कंत आली छाये किन देश जाय, चात्रक चिकारन नें जीय तरसाये हैं।
साये हैं सखी री सज लागी संग साजन के, हरष हरष हिये हिये ते लगाये हैं॥
आये हेरी गीत नीलकंठ अलि के कईन, आयकें अनंग तन तीर लै चलाये हैं।
लाये हैं कटक साज इन्द्र घन दास कहैं, गरज चलेरी एक गरजत आये हैं॥

(२९२)

आई नीर लैंन कौं पठाई मोहि सास जू नें, बीच बन चपला चहूँघाँ चमकाई है।
कूकि उठे मोर जोर मदन मरोर भरे, सरर सरर पौंन धाई पुरवाई है॥
लाल बलबीर घटा आई बरषारी कारी, परत अपार जल को करै सहाई है।
जानिकैं गरीब मोहि प्यारे ब्रजराज जू नें, कामरी उढ़ाय लाल चूनरी बचाई है॥

(२९३)

आई मैं निहारन कौं बाग अनुराग भरो, सोभा वनराज जू की मेरे मन आई है।
फूली द्रुम बेली अलबेली ते निहार लीजै, गुंजत मधुप सीरी पवन सुहाई है॥
एते में उमड़ घन आये चहुँ ओरन ते, लाल बलबीर भारी मेघ झरलाई है।
जानि कें गरीब मोहि प्यारे व्रजराज जू ने, कामरी उढ़ाय लाल चूनरी बचाई है॥

(२९४)

* होरी के कवित्त *

खेलत हैं फाग अनुराग भरी बागन में, मोसर लै आव गहो रसिक बिहारी ये।
छीन लई लकुट मुकट बेनु पीत पटी, हँसैं ब्रजबाल सबै दै दै करतारीये॥
लाल बलबीर लूट खायो दधि खोर खोर, आज सब बासर की कसर निकारिये।
डारिये अबीर नीर कीजै सराबौर याहि, मलिकैं गुलाल गाल गुलचा द्वै मारिये॥

(२९५)

खेलत में होरी गोरी छल सों गोविन्दै गहि, मींड़ि मुख रोरी दौर नीर सिर डारिये।
कोऊ गुलचावैं मुसिक्यावैं ये सुनावैं बैन, अब कहौ ललाजू को सहायक तिहारिये॥
लाल बलबीर ह्वै अधीर रसलीन छैल, मधुर मधुर बैन ऐसे कें उचारिये।
डारिये गुलाल औ अबीर नीर आछी भाँति, एहो व्रज-बाल गाल गुलचा न मारिये॥

॥ जयपुर की बोली में ॥

(२९६)

कैंयाँ नें करोछो म्हारी बैंयाँ नें बिसारी दीजै, अँयाँ ना बनें अबार खेल ना सुहासी जी।
पनियाँ नें जासीं इठें बार थें लगासी म्हेला, सास जी रिस्यासी दूजें बाई झुंझलासी जी॥
थारे बलबीर बहु लारे छैं सखा अहीर, घालें छैं अबीर दृग धूम उड़ जासी जी।
प्रात उठि आसी लासी संग की सहेल्याँ नें जी, थानें ये गुपाल जदी होरी नें खिलासी जी॥

(२९७)

पनियाँ भरन जिन जाओ मोरी सजनी ये, ठाड़ो मग रोकत है नन्द कौ लंगरवा।
हँसि हँसि गावैं ग्वाल आँखन नचावैं लाल, नीर भर मारत कनक पिचकरवा॥
केसर अबीर नीर घोर अङ्ग भिजवत, थर थर काँपै देह चुवत चुंदरवा।
लाल बलबीर लाज कैसें कें बचैगी बीर, भयौ है अनोखो ब्रज होरी कौ खिलरवा॥

(२९८)

जोई उर डरपत हीय मोरी सजनीय, जोई जोई आगु आय गयो मोरे कलवा।
साँवरो बिहारी तकमारी पिचकारी दौर, रंग की कमोरी सिर ऊपर ते ढलवा॥
दौरिकें अबीर बलबीर मुख मिड़वत, हरष हरष हँसि आय लाग्यौ गलवा।
नैनन नचाय मुसिक्याय मन हरि लीनो, तब ही ते मोर तन रहत बिहलवा॥

* सवैया *

(२९९)

आयौ गुपाल लै संग में ग्वाल री, साँकरी खोर पै रंग रचायौ।
नैनन कौं सुख देऔ सखी, कुल कान की बान सबै बिसरायौ॥

त्यौं बलबीर बन्यौ यह बानक, बीतिहै फाग तौ दाव न पायौ ।
त्यागि कै संग लैऔ भर अंक सु, लाल के गाल गुलाल लगायौ ॥

(३००)

लैकै अलीन किशोरी किशोर पै, हर्ष चली जहाँ साँकरी खोरी ।
सांवरो छैल छबीलो तहाँ, बलबीर उड़ावै अबीरन झोरी ॥
नीरन की पिचकारी चलैं चहुँ, ओर सखी सो गई मुख मोरी ।
प्यारी के गाल सों लाल गुलाल,लगाय कह्यो हँसि होरी है होरी॥

(३०१)

आये उतै ते सखा लै किशोर सु धाइ इतै तें सखी लै किशोरी ।
लै बलबीर सुगंधित नीर अबीर चलावैं चहूँ दिशि सो री ॥
बाजत ताल सों चंग पखावज राग धमारन की घन घोरी ।
प्यारी नें लाल के गाल गुलाल लगाय कह्यो हँसि होरी है होरी ॥

(३०२)

आज किशोरी लखी हुती फाग मैं खेलत ही सँग भानुकुमारी ।
कंचन की पिचकी तक मारैं उड़ावैं अबीर उतैं बनवारी ॥
त्यौं बलबीर अनंग उमंग में बाढ़ौ दोऊ दिशि आनन्द भारी ।
प्यारी के रंग में लाल रंगे सु गई रँग लाल के रंग में प्यारी ॥

(३०३)

खेलत फाग में लाड़िली लाल कौं, लै मुस्कियाय गई एक गोरी ।
सीस पै सारी सजा जरितार की कंचुकी धार दई बरजोरी ॥
लै बलबीर दियो दृग अंजन दीनों बनाय गुपाल कौं गोरी ।
अंग लगाय कही मुसिक्याय लला फिर खेलन आइयो होरी ॥

* दोहा *

श्रीबनराज निकुंज में, पिय प्यारी सुख दैन ।
षटऋतु सहचरि बपु धरे, सेवत हैं दिन रैन ॥३०४॥

कृष्ण अली पद कमल बल, षटऋतु शतक बखान ।
जो बाँचै सुन उर धरै, रीझैं श्याम सुजान ॥३०५॥

ऋषी वेद ग्रह इन्दु जुत, सम्बत सृष्टि सुजान ।
मगशिर कृष्णा चौथ रवि, दिवस पूर सतु मान ॥३०६॥

षड् ऋतु–शतक

* अमृत-ध्वनि *

(३०७)

कूर्कहिं केकी गिरिन पै, अति उर भरे अनन्द।
लर्क्षहिं पियतिय गगन छबि, बिज्जुहि झमक अमन्द॥
मद्दत् चलत सुगंद्दत ढलन, समीरक हल हल।
गग्गग् गरज चतुर दिशि तरज, अमित जल ढल ढल॥
फुल्लेहु सुमन अनेक द्रुमन अवनो पर झुक्कहिं।
दादुर दुक्कहिं जुगनू चमकहिं पपिगन कुक्कहिं॥

(३०८)

सररर् चलत सुगंध लै भन बलबीर समीर।
अररररर चहुँ ओर तें छाँडत हैं घन नीर॥
नीरक ढरत समीरक चलत नदी नद भर भर॥
दादुर दुक्कहिं पपिगन कुक्कहिं पिय पिय तर तर॥
जुगनू चमकहिं तड़ित तमंकहिं तरररररररर।
बगुल कतारहिं उड़त अपारहिं सरररररररर॥

(३०९)

गिरवर को पूजा करी बढ़्यौ प्रबल उर क्रुद्ध।
माया श्रीबलबीर की हरी सक्र को बुद्ध॥
बुद्ध असुद्धहिं करन विरुद्धहिं यहि विध उर धर।
मोसन जुद्धहि को सह क्रुद्धहि पठ बहु बद्दर॥
सिद्धहि सरवर लावहु जल भर छडह व्रज पर।
आयसु उर धर अब न बिलम कर षंडहु गिरवर॥

(३१०)

फन फन नृत्तत सामरे आये नभ सुर वृन्द।
सुमन झरावहिं प्रभुहिं पैं लख बलबीर अनन्द॥
नन्द लखतहिं सुमन बखतहि लक्खहिं व्रज जन॥
अधरन सज्जहिं मुरलिय बज्जहिं कहैं जन धन धन।
नूपुर चरनन गज्जत झननन नृत्तत फन फन॥

(३११)

श्रीराधा राधा रटौ, राधा कौ उर ध्यान।
सदां लाल बलबीर उर, राधा नाम प्रधान॥

ध्यानन धरहिं। जतन बहु करहिं। अचल मन कर कर।
सुख उर भरहिं। दृगन जल ढरहिं। चरन सिर धर धर।
यहि हम साधहिं। नाम अराधहिं। हरत न बाधा।
जन सुख साधा। सुजस अगाधा। जैं श्रीराधा॥

श्रीराधा–शतक

* सोरठा *

आई तुमरे द्वार, श्रीवृषभानु कुमारि जू।
चेरी हौं सुकमार, चरन सरन मैं राखिये॥३१२॥
श्रीवृषभानु कुमारि, परम उदार कृपाल तुम।
दासी मोहि बिचारि, टहल महल की दीजिये॥३१३॥
सारद नारद सेस, सुरपति पसुपति प्रजापति।
बंदत रहैं हमेस, श्रीवृषभानु कुमारि पद॥३१४॥
अति मलीन मति हीन, दीन तुम्हारी सरन हौं।
श्यामा परम प्रबीन, मोहि निकुंज बसाइये॥३१५॥

* दोहा *

कृष्ण अली पद कमल रज, मम उर करो निवास।
राधा शत की लालसा, पूरन हो सुखरास॥३१६॥

* कवित्त *

(३१७)

कोमल कमल हू सों गहरे गुलाबन सों, ललित रसाल पत्र आभा के हरन हैं।
लाल हैं गुलाल गुंज हिंगुर सिंदुर बिंब, ये कहा बिचारे रंक समता करन हैं॥
लाल बलबीर उर करत विचार चारु उपमा, हजारन की सुषमा दरन हैं।
रसिक जनन धन ये ही हैं अगिन सर्व, आनँद करन राधारानी के चरन हैं॥

(३१८)

माखन तें मृदुल अरुण भल मानक तें, हीरा नग जालन की परभा हरन हैं।
हिंगुर गुलाल गुंज सेंदुर सकुच रहैं, जावक मजीठ हेर होत आ सरन हैं॥
कमल गुलाबन के दरन बरन नीके, लाल बलबीर जू के मन आभरन हैं।
रसिक जनन धन ये ही हैं अगिन सर्व, आनन्द करन राधारानी के चरन हैं॥

(३१९)

मानक महल में बिराजैं राज राजेश्वरी, चार दश लोकन की उपमा लजानी की ।
आस पास दासी खासी करत खवासी केती, कोऊ जलदान इत्र दान पानदानी की ॥
लाल बलबीर द्वार भारती भमानी रानी, अस्तुति सुनावैं हरषावैं वेद बानी की ।
केती सुखदानी देवरानी यहाँ आय आय, आरती उतारचो करैं राधे महारानी की ॥

(३२०)

गावैं गुन सारद बजावैं रस लीन बीन, ठाड़े करजोर द्वार अस्तुति करैं सुरिन्द ।
शंभु चतुरानन धनेस से दिवाकर से, शेष से सहस्र मुखी जाचत रहैं फनिन्द ॥
लाल बलबीर दासी करत खवासी ऐसें, नवल सरोजन कौं सेवत हैं जो अलिन्द ।
तैसें नदनन्द वृजचन्द (श्री) माधव मुकुन्द, बंदित गोविन्द राधे तेरे चरनारविन्द ॥

(३२१)

रंभासी रमा सी औ गिरा सी गिरिजा सी लै लै, खान पान दान मन अमित हुलासी में ।
किन्नरी सुरी सी उरबसी सी भली सी बीसी, सेवैं हुलसी सी सदाँ रहैं आस पासी में ॥
लाल बलबीर बिमला सी कमला सी केती, रूप कौं निहार हार रहे भाव दासी में ।
इंदुमा दमा सी सुखमा सी उपमा सी खासी, राधे महारानी जू के रहत खवासी में ॥

(३२२)

चौंर चन्द रानी लिये छत्र लै दिनेश रानी, शोभा सरसानी अङ्ग रहत हुलासी में ।
लिये इत्रदानी सुखसानी हैं जलेश रानी, गहे पानदानी इन्द्ररानी खड़ी पासी में ॥
लाल बलबीर पीकदानी लै धनेस रानी, देखी वनराज माँहि ऐसी सुखरासी में ।
इन्दुमा दमासी सुखमा सी उपमासी दासी, राधे महारानी जू की रहत खवासी में ॥

(३२३)

जेती देवदारा गर्भ रूप कौ अपारा तेती, राधे महारानी त्यारे द्वार में झूलैं आन ।
चरन पलोटैं कोटैं बाँध सुख मोटैं कहैं, धन्य धन्य आप सी रची न बिधि भू मैं आन ॥
लाल बलबीर वनराज राज राजेश्वरी, राजो जू सदैव व्रजराज पद छूवैं आन ।
दीजै सुखदान दान दीन जानि स्वामिनी जू, करैं गुनगान कुञ्ज मग रज चूमैं आन ॥

(३२४)

वृन्दावन-चन्द में अखण्ड राज राजेश्वरी, राजत सदैव सेवैं सखी सुखदानी हैं ।
कोऊ छत्र लीनैं चौंर कीनैं रंग भीनैं बीनें, लै लै कें बजावैं गावैं विरद अमानी हैं ॥
ठाड़े कर जोरैं लखैं मुख रूप ओरैं जाके, लाल बलबीर मनमोहन गुमानी हैं ।
जेती देवरानी सुर पालन की रानी तेती, राधे महारानी जू के रहैं दरवानी हैं ॥

(३२५)

आवैं दौर दौर दारा द्वार महारानी जू के, रूप कौं निहारैं प्रान वारैं विमला सी हैं ।
रती सी गिरा सी गिरजा सी सुखरासी आसी, रंभा सी रमा सी कर जोरत दमा सी हैं ॥
आई सिरमौर बासी जेती लोक लोकन की, लाल बलबीर कोटि ससि सी प्रकासी हैं ।
पासी हैं न कोऊ सम सुखमा अपार राजैं, सब में अधिक एक राधे रूप रासी हैं ॥

(३२६)

सेवत व्रजेश्वरी कौं कोटि कोटि जूथेश्वरी, रूप ओर ढरैं करैं सोई रुचि आवैं हैं ।
चतुर विशाखा चुन लावैं चीर चान्दनी से, ललित प्रवीन बीरी कर सों पवावैं हैं ॥
लाल बलबीर छबि निरखैं सुजान कान्ह, बार बार प्यारी जू पै चौंर लै ढुरावैं हैं ।
इन्द्र चन्द्र बरुन कुबेर नारि ठाड़ी द्वार, राधे महारानी जू के मुजरा न पावैं हैं ॥

(३२७)

हीरन कौ महल पुतायो जुही सारन सों, देहरी दुआरन सों उड़ै गन्ध बे प्रमान।
चमचमात चन्द्रमा से चान्दनी चन्दौवा चारू,तैसोई जरी को नीकौ राखौ है बितान तान॥
लाल बलबीर चल देखिये सुजान प्यारे, सेवैं आस पास दासी लीये सौंज सुखदान।
रूप के गुमान भरी बैठी मनि आसन पै, राधे महारानी सरबोपरि विराजमान॥

(३२८)

लागी आस तेरी उर चाह है घनेरी सुनि, लीजै बिनै मेरी दीन जान राख पासी मैं।
हियौ अकुलावैं छिन धीर न धरावैं नैन, रावरे बिलोके बिन रहत उदासी मैं॥
करुनानिधान गुन खान ये सुजान प्यारी, कीरत दुलारी जिन राखौ जी निरासी मैं।
ये हो सुखरासी वृन्दा विपुन विलासी कीजै, लाल बलबीर जू कौं आपनी खवासी मैं॥

(३२९)

मुनिन के वृन्दन के वृन्द सदाँ वन्दें तुम्हें, आनन्द के कन्दै नँदनन्दै सँग लीजिये।
तीन लोक जीवन के सोकन की हारनी, प्रसन्न मुख पंकज सों चर्न सर्न दीजिये॥
निकुञ्ज भू विलासिनी प्रकाशनी हौ ग्यान की, व्रजेन्द्र भान नन्दनी अरज्ज सुनि लीजिये।
कहन्त बार बार मैं तिहारे दरबार में, सुलाल बलबीर पै कृपा कटाक्ष कीजिये॥

(३३०)

कीरति कें कन्या भई आये व्रज गोपी गोप, नाचैं कूदें गामैं दधि गोरस लुटावैं हैं।
बीना लै प्रवीन राग गावत रिसीस ठाड़े, होय हर्ष भोलानाथ डमरू बजावैं हैं॥
लाल बलबीर व्रजराज जी के द्वार आली, चार मुख वारे चार वेदन सुनावैं हैं।
देवता विमान चढ़े सेवन जनावैं और, दुंदभी बजावैं गावैं फूल बरषावैं हैं॥

(३३१)

काहू कही कीरति कें कन्या कौ जनम भयौ, गोपी गोप ग्वाल सुन सबै हरषाये हैं।
कंचन कटोरन मैं केशर अतर घोर, दूध दधि हार्दिका के कलस सजाये हैं॥
लाल बलबीर साजे वसन विशाल अङ्ग, उरन उमंग व्रजराज द्वार आये हैं।
देखि छवि छाये गोप इन्दु से प्रकाश रहे, आज व्रजराज जू कें बाजत बधाये हैं॥

(३३२)

बैठी कुञ्ज माँहि महारानी व्रजराज जू की, अङ्ग की सुगंधि भौंर भ्रमत भ्रमाने से।
चाह भरी दासी सुखराशी चौंर छत्र लिये, कोऊ परबीनें राग गामें मनमाने से॥
लाल बलबीर कर जोरत महेश सेस, सहित दिनेश उर रहत सकाने से।
याकी पद रेनु जाचैं नारद सुरेस ठाड़े, राधे महारानी के दुआरे दरबाने से॥

(३३३)

चन्द दुति मन्द होत जाके मुखचन्द आगें, बैनी कौं फनिन्द लख रहत सकाने से।
खंजन कुरंग अलि मीन गत दीन होत, निरख सरोज दृग रहैं कुम्हिलाने से॥
लाल बलबीर देव-दारा चौंर छत्र लीनें, भूषन नवीनें पहिरावैं मनमाने से।
जाकी पद रेनु जाचैं नारद मुनेश ठाड़े, राधे महारानी के दुआरे दरवाने से॥

(३३४)

जगर मगर होय रही मन मन्दिर में, फैल रही आभा तहाँ जरी के बितान की।
फरस दुरस्त बिछ रहे चौक चांदनी से, तापै बलबीर जू बिछात बादलान की॥
कोऊ लियें छत्र पाछैं बीजना ढुलावैं कोऊ, कोऊ लै प्रवीन बीन गामैं तान मान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ, मेरी कुल पुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३३५)

ठाड़ी कर जोर दासी खासी उर चाह भरीं, प्रेम में पगीली तान गावत गुमान की।
कोऊ पानदान लै गुलाबदान पीकदान, कोऊ हरषाय ब्यार ढोरें बीजनान की॥
कोऊ बलबीर लै लै अतर लगावें अङ्ग, कोऊ करजोर देत बीरी मुख पान की।
वृन्दावन महल बिराजैं महारानी सदाँ, मेरी कुलपुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३३६)

कढ़ी अंग अंगन तें रूप की तरंग ऐसी, कोटि कोटि कला कलाधर की लजान की।
लाल बलबीर छबि दिपत अनूप ऐसी, रमा की न उमा की न रानी पंचबान की॥
पायन तें सीस लौं निहारैं खड़ी देवदारा, आरती उतारैं करैं न्यौछवर प्रान की।
वृन्दावन महल बिराजैं महारानी सदां, मेरी कुलपुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३३७)

चंपकबरनि मृगलोचनी सलोनी प्यारी, रचि विधि कौन विध कवन सयान की।
कंचन तें गोरी तन नवलकिशोरी भोरी, जात मुखमोरी उर रति के गलान की॥
मुख के उजास आगे ससि कौ प्रकास लाजै, लाल बलबीर मति मोही पिय कान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ, मेरी कुलपुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३३८)

पन्नन के मन्दिर में हीरन के काम भये, लसत तिवारी जारी फटिक सिलान की।
जटित सितारे सिन्धु लखें नभ तारे मन्द, झलकें अमन्द उडगनन गलान की॥
लाल बलबीर दासी खासी चपला सी खरी, काम की प्रिया सी तान गामैं मन मान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ, मेरी कुलपुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३३९)

कंचन अवनि तापै भवन पिरोजन के, लालन की पुतरी दमकैं कुलकान की।
फटिक सिलान तें समारौ चौक चाँदनी सो, नीलम की बेल तामैं लागी प्रिय आन की॥
जड़े हैं पिरोजा द्वार द्वारी की किनारिन में, लाल बलबीर जारी गजमुकतान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदां, मेरी कुलपुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३४०)

चारौं ओर दासी खासी सोहत खवासी माँहि, स्वामिनी लड़ैती कौं सुनामैं तान मान की।
कोऊ परबीन बीना सारंगि सितार लै लै, कोऊ लै मृदंग चंग बाँसुरी मिलान की॥
लाल बलबीर लै लै आरती उतारै कोऊ, कोऊ चौंर ढारै कोऊ सुखमा बखान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ, मेरी कुलपुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३४१)

सती सी सची सी कर चौंर लियें मैंनका सी, नाचै उरबसी तान गावै हुलसान की।
रंभा सी दमा सी कमला सी बलबीर दासी, कोऊ छत्र लीनै कोऊ चौंरन ढरान की॥
अष्ट सिद्धि नौऊ निद्धि पायन पलोटैं लोटैं, ठाड़ी कर जोर सबै रानी देवतान की।
वृन्दावन महल विराजैं महारानी सदाँ, मेरी कुलपुज्ज राधे बेटी वृषभान की॥

(३४२)

कंचन सिंहासन पै बैठी वृषभान सुता, लखत प्रभान प्रभा ससि की लजावैं री।
नव सीस सारी लगी मुक्तन किनारी धारी, उडगन कांति लख मलिन दिखावैं री॥
चारों ओर दासी सुखरासी चपला सी खड़ी, रतनमै डांडी चारु चौंरन ढुरावैं री।
पन्नगी पुरी सी किन्नरी सी बलबीर भ्रमैं, राधा महरानी जू के मुजरा न पावैंरी॥

(३४३)

बैठी जातरूप कें महल वृषभान सुता, देवन को सुता द्वार दौर दौर आवैं हैं।
चाह भरी चौंपन सों चुन चुन चीर चारु, भूषन नवीन बोन साज साज लावैं हैं॥
लाल बलबीर महारानी श्रीवनेश्वरी के, अङ्गन उमंग प्रीति ही सों पहिरावैं हैं।
गावैं हैं सुजस हरषावैं बीन कों बजावैं, दीन ह्वै दयानिधि के सोस पद नावैं हैं॥

(३४४)

जातरूप नुपूर अनूप पग गाजें तैसी, किंकिनी झनक धुनि छाई एक तारी री।
तैसी पचरंगी जंगी जेबदार घाँघरे की, लहलही लोनो लगें घूमन घुमारी री॥
लाल बलबीर दासी हेर सुखरासो सीस, जरीदार चादर में किरन किनारी री।
आज सुखमारी पर वारौं कोटि मैननारी, राजत बिहारी संग राधा प्रान प्यारी री॥

(३४५)

बैठे कंज आसन पै नवल निकुंज मांहि, श्यामा श्याम दोऊ रूप रंग रस भीने हैं।
मन्द मुसिक्यावैं कर चिबुक छुवावें भुज, अंसन धरावैं राग गावत रंगीने हैं॥
लाल बलबीर बीन लै लै कें बजावैं प्रिया, सुन सुन लाल भये अधिक अधीने हैं।
प्रेम की घुमेर घूम गिरत सुजान दौर, प्यारी सुकमारी जी ने अंक लाय लीने हैं॥

(३४६)

विंदा सखी विपिन सम्हार राखैं नीकी भांति, श्यामा चीर विविध नवीन साज लावैं है।
मुदिता मदन मोद मई प्रेम बातें करैं, चन्दा लै विचित्र अङ्ग चन्दन लगावैं हैं।।
लाल बलबीर उर नन्दना अनन्द करैं, भामा मन भाये तन भूषन सजावैं हैं।
मुदिता जु बीजना लै सुमन झलावैं आली, सदा सर्व कुञ्ज राधारानी कों लडावैं हैं।।

(३४७)

ठाड़ी फुलवारी में दुलारी वृषभान जू की, सील ब्रतधारी ताकी मुसिक्यान प्यारीये।
सारी सीस धारी है सुनैरी जरी कोर वारी, आँखैं कजरारी आगें मैन सर टारिये॥
लाल बलबीर अङ्ग अङ्ग सुखमा अपारी, रमा उमा हू की गति मन्द कर डारिये।
सांचे की सी ढारी त्यारे मन की जियारी लाल, रूप उजियारी नैंक चलिकैं निहारिये॥

(३४८)

करें जल केलि वृषभान की कुमारि राधा, परम प्रवीन संग नवल अलीन वृन्द।
लै लै उछिटावैं अङ्ग अङ्ग सों मिलावैं हँसि, चुबकि लगाय धाय गहैं पद अरविन्द॥
लाल बलबीर लाल माधुरी लतान माँहि, रूप कौं निहारें दूर परो उर प्रेम फन्द।
मानौ हरषाय आये बारुनी परब पाय, तारागन सहित अन्हात श्याम सिन्धु चन्द॥

(३४९)

खावौ चोर चोर दही मही साँझ भोर सबै, भवन ढंढोर त्यारी कीरति बिख्याती है।
लैकें कहुँ चीर आप आभूषन भाज जैहो, याही तें ललन सब ललना सकाती हैं॥
चंचल चपल चटकीले नैन सैन करौ, ताते बलबीर तुमैं कोऊ ना पत्याती हैं।
आवौ दौर दौर कहा काम है तिहारो यहाँ, उतै जाउ उतै इतै लाड़िली अन्हाती हैं।।

(३५०)

उठो हो किशोरी गोरी भोर भयो लाड़िली जू, हँसि हँसि ठाड़ी बैन कीरति सुनावैं हैं।
ललिता, विशाखा, चंपलता, चित्रा, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगदेवी, सुदेवी जगावैं हैं॥
लाल बलबीर लै लै बीन कों बजावै कोऊ, कोऊ मुस्कियाय धाय चरन सिरावैं हैं।
झीनें सुर गावैं तन आलस नसावैं सबै, राधा मुखचन्द कौं चकोर ललचावैं हैं।।

(३५१)

उठि मुसिकात अङ्गरात जमुहात प्यारी, आलस बलित नैंन झप झप जावें हैं।
दौर वृषभान रानी गोद लै लड़ैती जू कौं, सिर कर फेर बेर बेर समरावें हैं॥
मीजत हैं कर जुग दृगन किशोरी गोरी, लाल बलबीर उपमा ये उर आवें हैं।
मानौं जुग मीन फँसे मदन अहेरी जाल, जानि निज बन्धु कंजु अरितें छुड़ावें हैं॥

(३५२)

स्वामिनी जू भामिनी जू हंस कल गामिनी जू,कोटि द्युति दामिनी जू पीउ चितचोरी जू।
लाल संग रमनी जू केलि रस कमनी जू, छवि कंज बदनी जू सर्व तन गोरी जू॥
सखी सभा मंडनी रसिक लाल बंदनी, अनन्द रस कन्दनी चतुरी और भोरी जू।
लाल बलबीर दासी तोरी सर्न सुखरासी, रखिये सदैव पासी कीरति किशोरी जू॥

(३५३)

कंज छवि बदनी जू रमा रूप रदनी जू, कोक कला हदनी जू हेरि मम ओरी जू।
रति रन मंडनी जू मैन मद खण्डनी जू, प्रेम रंग रंगनी जू सुकुमार भोरी जू॥
चातुर्य चतुरा जू माधुर्य मधुरा जू, अन्न फल अधरा (जू) ललन हित गोरी जू।
लाल बलबीर दासी तोरी सर्न सुखरासी, राखिये सदैव पासी कीरति किशोरी जू॥

(३५४)

आई हाल देखि मैं किशोर जू किशोरी गोरी, फैली मुख आभा तन बसीकर्ण जी को है।
दृगन की ओर लख भौंर मुख मोर गये, अधर अरुन स्वाद सरस अमी को है॥
मदन उमंग अङ्ग जोबन तरंग भरी, लाल बलबीर उतसाह तुम पीको है।
देखौ नँदनन्द सुख कन्द व्रजचन्द प्यारे, आप तें अधिक नेह भानु नन्दनी को है॥

(३५५)

चली वन शोभा देख नवल किशोरी गोरी, आगें मग लाल पीत पट ही सों झारे हैं।
जित जित लता झुकि रहीं तित तित ही सों, निज कर पल्लव सों गहि के निवारे हैं॥
लाल बलबीर रस लीन ह्वै प्रवीन दीन-ताई के वचन प्रान प्यारी सों उचारे हैं।
चलो जी निकुंज छबि पुंज सुख सैन कीजै, बिनै मान लीजै हँसि अंस भुज धारे हैं॥

(३५६)

जमुना अन्हात वृषभान की कुमारि राधा, रूप की अगाधा तन छबि वृन्द बरसैं।
रमा उमा दमा सी सची सी सतभामा हू सी, मेनिका सी जाकी पद रेनुका कौं तरसैं॥
लाल बलबीर झुकि झुकि लता ओट लाल, बेर बेर हेर हेर हेर मन हरसैं।
चुबकि लगाय निसरत प्रान प्यारी मानौं, सामल घटा में चन्द छिप छिप दरसैं॥

(३५७)

कानन लौं अंखियाँ अन्यारी कजरारी लट, नेह भीनी प्यारी सटकारी घुंघरारी हैं।
रूप ही के भूषन सों भूषित सदैव अङ्ग, अङ्गन निहार चम्प हेम दुति हारी हैं॥
लाल बलबीर नैंक चलिकें निहारो प्यारे, मैन मदवारे छैल शोभा अति भारी हैं।
रमा उमा नारी परें पायन विचारी आय, सब में मुकट मनि राधा प्रान प्यारी हैं॥

(३५८)

राधे बदनारबिन्द बिमल अमंद आगें, कोटि कोटि मैन रति चन्द द्युति टारौ री।
कोमल सुढार जुग भुजन निहार सर्व, सहित मृनाल कंज ही कौ गर्व गारौ री॥
लाल बलबीर प्यारी लटक चलन तापें, मद भरे करी औ मराल जाल वारौ री।
नूपुर झनक श्रवनन में परै सदैव, इन ही कौं धारौ ब्रह्मानन्द कौं विसारौ री॥

(३५६)

ठाड़ी चित्रसारी में दुलारी वृषभान जू की, रूप रति रमा उमा दमा तें उजाला है।
हीरन के हार चारु हियरा बहार देत, कंगन चुरीन दुति दीपति निराला है॥
लाल बलबीर नैन भरें मधु बैंस प्याला, तनक विलोक लाला होउगे निहाला है।
जेवर विशाला अङ्ग अङ्गन रतन जाला, कनक लता में मनौं जगी दीप माला है॥

(३६०)

परम उदार सुकमार छबि सार आँखें, मैन मद वारी ब्रत सील उर भोरी है।
भीनें लंकवारी सिर चन्द्रिका चमकवारी, भौंयें बंक वारो मनौं धनु बिन डोरी है॥
लाल बलबीर छबि देखिये सुजान ताकी, और को कहा है जुवतीन चित चोरी है।
उमा रति कोरी वारौं नख पै करोरी सर्व, अङ्ग अङ्ग गोरी वृषभानु की किशोरी है॥

(३६१)

खेलत सघन वन कुंज की लतान माँहि, राधिका रंगीली आज सहित अलीन वृन्द।
पुष्प तोरि लावैं कोऊ भूषन बनावैं बहु, अङ्गन सजाव धार धार पिया परसंद॥
लाल बलबीर सर्व नवल प्रवीन एक, एक तें रंगीन परबीन रूप में अमंद।
देखो नदनन्द सुखकन्द वृजचन्द प्यारे, मानौं सुर बाग में प्रगट डोलैं कोटि चन्द॥

(३६२)

संग सखियान के किशोरी वृषभान जू की, देखन विपिन छबि हरषि सिधाई है।
जित मग धरत चरन सुकमार तित, तित मनौ लोहित बनात सी बिछाई है॥
लाल बलबीर उठै सौरभ तरंग अङ्ग, चहुँ ओर अलिन की पाँति घिर आई है।
रंभा रति मैन नारी पावत न समता री, रमा उमा इन्दुमा ते सुखमा सवाई है॥

(३६३)

फटिक मनीन कौ महल कमनीय तामें, जरी कौ बितान तन्यौ सुखमा अनन्द की।
चारौं ओर दासी खासी बिहरैं खवासी माँहि, सर्व रूप राशि करैं टहल पसंद की॥
लाल बलबीर कोऊ लैं लैं परबीन बीन, गावत रंगीन तान भरी प्रेम फन्द की।
दाबि कें त्रिलोक की निकाई सुखदाई राधे, हीरन तखत बैठी रानी व्रजचन्द की॥

(३६४)

उठी अँगरात मुसिकात प्रभात प्यारी, आलस सों भरे नैन मैन मदमाते हैं।
ढीले कबरी के जाल टूटी लर मुक्तमाल, बीरन की सुर्ख चिह्न गण्डन पैराते हैं॥
लाल बलबीर नव जोबन उमंग अङ्ग, उरज उतंग कंचुकी में उमगाते हैं।
पाते हैं न हेम जाकी अङ्ग समताई माई, बदन निहार ससि पूरन लजाते हैं॥

(३६५)

कंचन अजिर माहिं बैठी चन्दमुखी प्यारी, चाँदनी सी सारी सीस तास बादला की हैं।
हीरन के हार गरैं मोतिन सों माँग भरें, बेनी ढर जानु परैं भ्रकुटी पिनाकी हैं॥
लाल बलबीर कजरारी अनियारी भारी, आँखें मतवारी प्रेम मैन मद छाकी हैं।
ऐसी छबि काकी हेरि जैसी वृषभानुजा की, रमा उमा मैनका सी पग तल ताकी हैं॥

(३६६)

जाकी सुन बानी बीन कोकिला सकानी मन्द, मन्द मुसिकानी बिज्जु घन की लजेरी हैं।
बैनी सटकारी आगैं पन्नगी लहर हारी, चन्द ते सुचन्द चारु बदन उजेरी हैं॥
लाल बलबीर जू की प्रानन की प्यारी मति, कहै का बिचारी तन सुखमा घनेरी हैं।
राधा महारानी जू की रूप की छटा कों हेर, रमा उमा मैंनका सी सर्व नारी चेरी हैं॥

(३६७)

कंचन बरन भूमि साखा द्रुम रही झुमि, झरत प्रसून अलि गुंज होत प्यारी है।
कूकत केकीन जाल बिहरैं मराल बाल, जल जंत ताल पाय मोद मन भारी हैं ॥
लाल बलबीर चलि देखौ वनकुञ्ज माँहि, ये तौ सब पुंज छबि आज ही निहारी है।
हीरन सिंगासन पै बैठी तास आसन पैं, रूप गरबीली तहाँ राधा सुकमारी है ॥

(३६८)

सोहत सुदेश सने सुन्दर सजीले स्याह, लामैं लहरारे सटकारे फटकारे बाल।
बाधे मखतूल तार सेंदुर की माँग पार, केशर की खोर बाँकी सोहत बिसाल भाल ॥
लाल बलबीर नासा बेसर हैं मोरदार, भूषन नवीन राजैं गरैं गज मुक्तमाल।
आई मैं निहार हाल देखौ चल नन्दलाल, तुमैं वो प्रवीन राधे करैगी निहाल हाल ॥

(३६९)

कंचन महल तनो जरी कौ वितान तामैं, मोतिन की झालरें झमकें चहुँ ओरी की।
अतर गुलाबन सों अजिर पुतायौ चौखी, गिलमें बिछाई हैं हरित लाल कोरी की ॥
लाल बलबीर तहाँ ठाड़े कर जोरें लखें, दृगन की ओरैं तान गावत निहोरी की।
आई हाल देख औ दिखाऊँ छबि तोहि बैठी, हीरन तखत राधे कुमरि किशोरी की ॥

(३७०)

महल मनीन के बिराजी वृषभानु सुता, देखन की सुता आय आय पग परसैं।
सुजस उचारैं कोऊ सीस चौंर ढारैं कोऊ, रूप कौं निहारैं बेर बेर हेर हरसैं ॥
लाल बलबीर छबि तनक बिलोकि देखौ, रम्भा रति रमा उमा हू तें अति तरसैं।
राधे महारानी जू के सर्व अङ्ग अङ्गन तें, कोटि कोटि छवि के छता से आज बरसैं ॥

(३७१)

जाके पद नेति नेति बंदत सुरेस सेस, तेरे पद सीस नाय ठाड़े कर जोरी री।
जेतो नट नागर तू नागरी छबीली बाल, कहा प्रतिपाल भई ऐसी मत भोरी री ॥
लाल बलबीर मिल दोऊ रस रंग कीजै, दीजै सुख नैनन कौं मानि बिनै मोरी री।
रही रैन थोरी अब सैन करौ गोरी, कुञ्ज प्रीतम के संग मिलि कीरति किशोरी री ॥

(३७२)

बार बार प्यारी तेरी जाऊँ बलिहारी दीजै, मान कौं बिसरि सुकमारी मान मोरी री।
तेरे गुन गान ही सों ध्यान प्रान प्रीतम कौ, रावरे सरूप कौं निहारैं छैल ओरी री ॥
लाल बलबीर मुख चन्द सो बिलोकि प्यारे, मोर चन्द धारैं सीस करै आस तोरी री।
दोऊ कर जोरी छैल द्वार पै खरो री, नैंक हेरौ उन ओर वृषभान की किशोरी री ॥

(३७३)

जब तें बिसारी चित्रसारी प्यारी प्रीतम की, तब तें बिसारी सुधि लाल खान पान की।
उठत कराहि गिरै भूमि अकुलाय धाय, राधा राधा राधा रट लागी सुख दान की ॥
लाल बलबीर जी सों भूलि न गुमान कीजै, छाँड़िये रंगीली हाल एती हठ मान की।
कीजै अब ही पयान लीजै जी अरज मान, दीजै पति प्रानदान बेटी वृषभान की ॥

(३७४)

कीजै जी न मान मेरी एती लै अरज मान, देखिये विचार मन आपने ही ओरी री।
जाके गुन गान करैं नारद सुरेश सेस, शंभु चतुरान धनेस कर जोरी री ॥
परम प्रवीन भये प्रेम के अधीन ठाड़े, लाल बलबीर जू बिलोकैं बाट तोरी री।
हेरि इन ओरी गोरी भोरी चित्त चोरी तोरी, प्रीत में बिंधो री कान्ह कुमर किशोरी री ॥

(३७५)

बरनैं जलेस जू धनेश जू सुरेस जू से, निज निज जन की हरैया सब बाधिका।
नारद मुनेस जू गनेस बलबीर प्यारे, रिद्ध सिद्ध बुद्धि के दिवैया सुख साधिका॥
सेस जू महेश जू प्रजेस जू रमेस जू की, महिमा पुरानन में सुनी है अगाधिका।
सब ही कें राज व्रजराज जू की राजेश्वरी, सोई कुलपुञ्ज मो किशोरी सिरी राधिका॥

(३७६)

चमचमात जरी के बितान चारु चाँदनी से, चन्द से चँदोवन की रही दुति सरसाय।
मोतिन की झालरैं झमंकें जोर जेब बारी, गिलम गलीचे निज चौक में दिये बिछाय॥
लाल बलबीर दासी सबैं सुखरासी सबैं, मैन अबला सी खासी अस्तुति रहीं सुनाय।
नाह रससानी हरसानी श्रीकिशोरी राधे, फटिक मनीन के सिंगासन पं बैठी आय॥

(३७७)

बैठे हैं मनीन के सिंगासन जुगल छैल, लाल कर कंज लै किशोरी कौं दिखावैं हैं।
प्यारी गहि लियौ ललचाय हरषाय लै लं, सरस सुबास हेर हेर मुसिक्यावैं हैं॥
परम प्रवीन रस लीन भुज मेल कण्ठ, करैं नव खेल सुख पुंज उपजावैं हैं।
लाल बलबीर दासी निरखि सिरावैं नैन, आवत न बैन मैन रति कौं लजावैं हैं॥

(३७८)

कारी बेनी सीस ते लहर लेत पाइन लौं, मानों पूरचन्द के सुधा कौं पीये हैं फनिन्द।
मृग मद भाल विन्द दिपत अमन्द मानो, बिकसे सरोज की सुबास लेत हैं अलिन्द॥
चंचल चपल नैन ताक वृषभानजा के, मीन सर थाके हैं अनंग सर सरमिन्द।
लाल बलबीर चलि देखौ नदनन्द प्यारे, जाकी छबि आगें हीन होत रति रंभा वृन्द॥

(३७९)

सारी सीस राजत रंगीली चटकीली लीली, निरखि लजानी गति घन की तरन की।
चंचल चलाक नैन सेत रतनारे कारे, खंजन खिजानें गति छीन अलिगन की॥
तेरे अंग अंगन की निरखि निकाई सची, जात री लजाई गती रती की दरन की।
दास कहैं लालन के हिये के हरन हारे, कंज लखि हारे हेर झलक चरन की॥

(३८०)

जलज अधीन रहैं कंज लख दीन रहैं, निरख लजाने ससि सरद निशा के हैं।
ऐसे हैं झलकदार गिरजा न इन्दिरा के, रती के न सची के न सिया के गिरा के हैं॥
सेस सनकादि आदि नारदादि ईस सीस, नाय रटैं ध्यान सदाँ सिर ताज ताके हैं।
अष्ट सिद्धि दायक हैं संतन सहायक हैं, दास निज नायक चरन राधिका के हैं॥

(३८१)

चरन हैं नीके हित ही के जन मन ही के, संकट हरन रिद्ध सिद्ध के धरन हैं।
धरन धरा के तें धरत ध्यान रैन दिना, गाते जस नेति नेति आनन्द करन हैं॥
करन हैं कंज दल गंजन अरुण एड़ी, नखन झनक कांति ससि की हरन हैं।
हरन अधीरता के धीरता धरन हारे, दास चित धारैं राधारानी के चरन हैं॥

(३८२)

जाके जस गाये चतुरानन नें नेत नेत, ताही तें कहाये सदाँ सृष्टि के करन हैं।
जाके जस गाये ईस सीस नाय ध्यान लाय, ताही तें कहाये खल दल के दरन हैं॥
जाके जस गाये सेस रसना हजारन ते, ताही ते कहाये निजधारा के धरन हैं।
जाके जस गाये जग ताके जस छाये दास, करैं चित्त चाहैं रानी राधे के चरन हैं॥

* सवैया *

(३८३)

सोहत मोर पखा सिर पै कल भाल पै केसर खोर दिये जू।
झूमत घूमत जात सिहात नवीन प्रसून के हार हिये जू॥
दीजै कहा उपमा बलबीर पड़ी पछितात लजात हिये जू।
या छबि सों बिहरैं जमुना तट राधिका श्याम सिंगार किये जू॥

(३८४)

डोलत बोलत राधिका राधिका राधा रटो सुख होय अगाधा।
सोवत जागत राधिका राधिका राधिका नाम सबै सुख साधा॥
लेतहु देतहु राधिका राधिका तौ बलबीर टरै जग बाधा।
होय अनन्द अगाधा तबै दिन रैन कहौ मुख राधा श्रीराधा॥

(३८५)

श्रीवृषभानु सुता पद पंकज मेरी सदा यह जीवन मूर है।
याही के नाम सो ध्यान रहै नित जाकें रटे जग कंटक दूर है॥
श्रीवनराज निवास दियो जिन और दियो सुख हू भरपूर है।
याकों बिसार जो औरै भजौं बलबीर जू जानिये तौ मुख धूर है॥

* कवित्त * (अष्टसखी सेवा)

(३८६)

कंचन जटित भूमि रत्न द्रुम रहे झुमि, पंछी कल गान करैं तहाँ मृदुबानी के।
बिमल बिलंद जामैं फूले हैं सुमन वृन्द, गुंजत अलिन्द मधु हेत मृदुबानी के॥
लाल बलबीर बनराज की रंगीली छबि, गावत मुनिन्द पति श्रीपति भवानी के।
तामें दिव्य दिव्य भासमान से प्रकाशमान, धवल महल बने राधे महारानी के॥

(३८७)

मण्डल मनोनमय राजत अमन्द ताकी, सुखमा निहार भान कोटि ससि लाजैं हैं।
सहित सुबास पद्म षोडश कलीन ताके, दल दल पर सहचरी जस गाजैं हैं॥
लाल बलबीर दासी सुखमा निहारैं खासी, छबि रास छैल प्रेम मैंन खेल साजैं हैं।
रूप मद छाके नेह मैंन अबला के दाव, चाह भरें दोऊ श्यामा श्याम संग राजैं हैं॥

(३८८)

अष्ट सखी आठौं जाम सेवत हैं सुखधाम, ललिते प्रबीन बीरी रुचिर बनावैं हैं।
प्रेम प्रीति बातें घातें दंपति सिहातें रहैं, लहैं रुख जबै तबै रुचि सों पवावैं हैं॥
लाल बलबीर अंग रंग गऊरोचन सों, बसन नवीन मोर चन्द से सजावैं हैं।
श्याम राधिका कों बनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३८९)

चतुर विशाखा अबिलाषा रूप माधुरी की, चुन चुन सुमन नवीन साज लावैं हैं।
जो जो मन भावत है रसिक रसीली जू के, सोई सो रसीले हित ही सों पहिरावैं हैं॥
लाल बलबीर द्युति दामिनी सी देह राजै, उडगन मण्डल से बसन सुहावैं हैं।
श्याम राधिका कौं वनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३९०)

चंपक लता जू हैं प्रवीन बर बिंजन में, अति ही अनूप खटरस के बनावैं हैं।
जैसी रुचि पावैं हर्ष सोई सोई साज लावैं, लै लै हित ही सों पीय प्यारी कौं पवावैं हैं॥
लाल बलबीर तन चंपक बरन दियौ, नील पट श्यामा साज सोई हरषावैं हैं।
श्याम राधिका कौं वनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३९१)

चित्रा जू विचित्र मन भावैं पिया प्यारी जू के, विविध सुगन्धि नीर रुचिर बनावैं हैं।
जैसी रुचि पावैं ललचाय मुसिक्याय धाय, सो सो रसलीन आन पान कौं करावैं हैं॥
लाल बलबीर तन कुंकुम बरन धनि, बसन सुनैरी सिखि सुभग सजावैं हैं।
श्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३९२)

परम प्रवीन तुंगविद्या सब विद्या माँहि, सकल नवीन बाजे हित सों बजावैं हैं।
गावैं राग रागिनी रिझावैं प्रिया प्रीतम कौं, सुखमा निहार हेरि हेरि सचु पावैं हैं॥
लाल बलबीर गौर बरन हरन मन, पंडुर बसन तन अति ही सुहावैं हैं।
श्याम राधिका कौं बनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३९३)

सखी इन्दुलेखा सुखदेवा प्रिया प्रीतम कौं, कोक की कलान की चालन कौं जनावैं हैं।
बसीकर्न मन्त्र जन्त्र तंत्र बहु भाँतिन के, सकल प्रवीन रसलीन कौं सिखावैं हैं॥
लाल बलबीर हेर अंग हरताल रंग, बसन सुमन दाड़िमी से लै सजावैं हैं।
श्याम राधिका कौं वनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३९४)

सखी रंगदेवी सुखदेवी प्रिया प्रीतम कौं, भूषन नवीन नख सिख पहिरावैं हैं।
करिकै इकत्र चित्र लिखत विचित्र चित्र, परम पवित्र जुग मित्र कौं दिखावैं हैं॥
लाल बलबीर आभा केसरी कमल अङ्ग, जपा पुष्प की सी सीस सारी लै सजावैं हैं।
श्याम राधिका कौं वनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३९५)

सुघड़ सुदेवी अति ही है सुखदेवी हेर, सुठि रूप ही कौ जी कौं अति ही रिझावैं हैं।
रुचि कें सिंगार करैं हियैं अति भाव भरैं, नख सिख साज राज मुकर दिखावैं हैं॥
लाल बलबीर सुक सारी कौं पढावैं तन, सुभग सजीली सूही सारी कौं सजावैं हैं।
श्याम राधिका कौं वनराज की निकुंजन में, छिन छिन नये नये चोज सों लड़ावैं हैं॥

(३९६)

अष्ट सिद्धि दायक हैं संतन सहायक हैं, सृष्टि ही के नायक हैं आनन्द करन हैं।
दरन हैं कलि के कलेसन के जाल हाल, करत निहाल लीनी आन ये सरन हैं॥
दास दृग रंजन हैं खलगन गंजन हैं, कंज लखि हारे लाल कांतिन हरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे, तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(३९७)

चीकने चटकदार अंग ही के रंग रँगे, जलज रंगीन की ललाई के हरन हैं।
एड़ी की अदां की झाँकी अँखियाँ सिराती रहीं, नारंगी अधीन लगी देखत डरन हैं॥
दास कहैं नखन निकाई तें नगीने कहा, तारन तरैयन की कांतिन हरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे, तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(३९८)

साधन की आस सदाँ सिद्ध ही करन हारे, अष्ट सिद्ध निद्ध देत रक्षा के करन हैं।
जाके ध्यान धरत सरत जन काज नीके, जाके त्रास नासे हैं दरिद्र के हरन हैं॥
दास कहैं करत निहाल ततकाल हाल, जिनकी सरन लेत रंचिक डर न हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे न निहारे जैसे, तारन तरन (श्री) राधारानी के चरन हैं॥

(३९९)

चार दश देशन अखण्ड जस छाय रहे, जिनके दरस सिद्ध कारज करन हैं।
सदाँ ही ढरन हियें आनन्द जनन ही के, सरन लिये ते अरिदल के दरन हैं॥
दास कहैं दयासिन्धु दारिद हरैया घट-घट के लखैया हैं अधीरता हरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे, तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(४००)

नाहक रचत जन्त्र तन्त्रन के साधन तें, ये कहा रंगीले त्रास काल की हरन हैं।
नाहक गरत सीत जारत अनल देह, तिन तें हठीले कहा कारज सरन हैं॥
दास कहैं चेत चित्त तिनकी सरन लीजें, जिन के रटत जग काही के डर न हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे, तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(४०१)

छाँड़ जग जालन के ख्याल तें रँगीले हाल, जाकी लै सरन जहाँ काही के डर न हैं।
दारा तात जननी सजाती जात जेते जान, तेते जान घाती सिद्ध कारज हरन हैं॥
दास कहैं चेत दयासिन्धु तें लगाय हेत, रहिये निकेत अघ दल के दरन हैं।
धीरज धरन हारे ऐसे ना निहारे जैसे, तारन तरन राधारानी के चरन हैं॥

(४०२)

आज व्रजराज प्यारे लाड़िली किशोरी जू सों, रंग रंगे प्रेम पगे केशन गुथावें हैं।
औंछत हैं बार प्रान प्यारी श्रीबिहारी जू के, सी करत लाल पीठ उरज लगावें हैं॥
लाल बलबीर तन भृकुटी चढ़ाय हेर, कोमल कपोल गोल कर गुलचावें हैं।
हँसि मुसिक्यावें उर आनन्द बढ़ावें दोऊ, कोटि रति मैन हू के प्रेम कौं लजावें हैं॥

(४०३)

आज सखी सुन्दर सुहावनी निकुंज माँहि, लाल मखतूल की बिछायत रंगीनी हैं।
तापरि विराजें प्रिया प्रीतम रंगीले छैल, खेलत हैं चौंसर अनूप रंग भीनी हैं॥
पाँच पाँच जुगल परे हैं श्रीबिहारी जू के, प्रिया के सरस सो सरस चाल कीनी हैं।
लाल बलबीर दासी बीरी दई ललिता कौं, प्रिया कौं पवाय पुनि लाल सुख दीनी हैं॥

(४०४)

गई हुती कुंजन में सुखमा की पुंजन में, दृष्टि परी लीनी गहि दीनी तब सोहनी।
दाँयें कृष्णदासी बाँयें जोरें कर प्रेमदासी, आगें बलबीर दासी ठाड़ी हुलसौहनी॥
कंचन सिंहासन पै राजत बिहारी प्यारी, कहत बनै ना री बने हैं छबि जोहनी।
एक अली चौंर ढारै एक आरती उतारै, आज मैं निहारी छबि प्यारी बिस्वमोहनी॥

(४०५)

कारे अनियारे कोरवारे नैन कजरारे, कुरंग कमनी किये हेर लाल डोरी के।
कानन करनफूल जटित कनीके कसी, कारचोवी कंचुकी कठोर कुच गोरी के॥
लाल बलबीर कवि कहत बने न कांति, कमल कलाधर कौं करें दुत थोरी के।
कंचन सिंहासन पै राजत कुमर कान्ह, कीजिये दरस बलि कुमरि किशोरी के॥

(४०६)

कोमल कछारे केस कारी सीस सारी बेस, कंठ चंपकली हार कुसुम झरत हैं।
कंचन करन कटि किंकिनी कनक बाजें, कीरति कुमारी गति करी की हरत हैं॥
लाल बलबीर केलि कुंज कौं सिधारी प्यारी, केसर कुसुम कांति मग में ढरत हैं।
कंज केलि केहर कलस कंबु कुन्द कीर, कुरंग कलाधर कौं कायर करत हैं॥

(४०७)

डोलत फिरत मुख बोलत में राधे राधे, और जग जालन के ख्यालन सों हट रे।
सोवत जगत मग जोवत में राधे राधे, राधे रट राधे त्याग उर ते कपट रे॥
लाल बलबीर धर धीर रट राधे राधे, टरैं कोटि बाधे रट राधे झटपट रे।
एरे मन मेरे चेत भूलिकें न हो अचेत, राधे रट राधे रट राधे राधे रट रे॥

(४०८)

राधा गुन गावें तहाँ दौर दौर जाओ प्यारे, राधा गुन है न जहाँ भूल कें न डट रे।
राधे जू की चरचा सलोनी लौनी होय जहाँ, सुनिये लगाय श्रुति तहाँ ते न हट रे॥
राधा राधा नाम ही सों काम राख आठौं जाम, लाल बलबीर जग जाल कौं न ठट रे।
एरे मन मेरे चेत भूल कें न हो अचेत, राधे राधे रट राधे राधे राधे रट रे॥

(४०९)

कीरति किशोरी वृषभान की दुलारी प्यारी, अरज हमारी सुकमारी कान कीजै री।
भ्रमना भ्रमावै छिन छिन अकुलावै मन, कछु ना सुहावै उर धीरज धरीजै री॥
लाल बलबीर दासी चेरी हैं चरन ही की, सरन लई हैं सो निभाय मोहि लीजै री।
कीजै दीन जान दान एहो करुनानिधान, सदा तेरौ ध्यान औ निकुंज बास दीजै री॥

(४१०)

कोऊ जलसैया कोऊ करै सूलसैया, कोऊ पंचधूनी तैया कोऊ दूध के अहारी हैं।
पवन अहारी कोऊ तीर्थ व्रतधारी कोउ, दान धर्म धारी कोऊ ज्ञान ध्यानधारी हैं॥
लाल बलबीर दया जीव उरधारी कोऊ, सील उरधारी कोऊ ब्रह्म के विचारी हैं।
साधन अपार नहीं जानत विचार सार, मेरे तौ अधार वृषभान की दुलारी हैं॥

(४११)

छोड़ शुभ कर्म कौं कुधर्म में लगोई रह्यो, सार कौं न गह्यो भई भिष्ट मति मेरी है।
संतन के संग में न रंगो री अभंग रंग, जंग करिबे कौं मति सृष्टि सों घनेरी है॥
अबै बलबीर जग जानकैं कनिष्ठ दई, सब ही कौं पिष्ठ मिष्ठ तुही इष्ट हेरी है।
कोटि कोटि कष्टन के नष्ट करवैया दैया, बड़ी ये बलिष्ठ राधे कृपा दृष्टि तेरी है॥

(४१२)

वेही नर्कवासी मद मांस के उपासी, उर कपट के रासी कूट कर्म न कौं धारैं हैं।
जानौं स्वर्ग वासी जप तप धर्म कर्म रासी, वेद भेद भासी मान मन तें न टारैं हैं॥
लाल बलबीर तिनैं जानौ बैकुंठ बासी, और कौं न मानैं बैठ ब्रह्म कौं बिचारैं हैं।
गऊ लोकबासी बनैं जुगल किशोर दासी, जक्त सों उदासी राधे नाम कौं उचारैं हैं॥

(४१३)

पुल जी पुलस्त जी अगस्त जी वशिष्ठजी से, अंगिरा जी भृगु क्रतु जी से सदां धरैं ध्यान।
गौतम जी धूमर जी जामदग्नि सौनक जी, मारकंड कौंडक जी मानप जी करैं गान॥
लाल बलबीर कौं दधीच जी मरोच जी से, बामन जी कण्ठ जी से रिखी मुनी बेप्रमान।
सेवैं गुन खान नन्दनन्दै राधिके सुजान, सोई व्रजचन्द तेरे पद रज बंदै आन॥

(४१४)

बिश्वामित्र गालव जी चिमन उदालक जी, सिंगी रिषी पर्वतजी करैं जोग तप गान।
उतँगजी मतंगजी से रोमहर्ष लोमस जी, पारासर आत्रेयजी करैं नाम रस पान॥
लाल बलबीर पिप्पले जी बालमीक जी से, प्रेम के सहित ध्यान लावैं हिय हुलसान।
सेवैं गुन खान नन्दनन्दै राधिके सुजान, सोई ब्रजचन्द तेरी पद रज बंदै आन॥

(४१५)

केते चित चाहि चाहि नावैं सिर जाय जाय, अति हुलसाय गुन गावैं सिभु ग्यानी के।
केते मन लाय लाय सुजस सुनावैं द्वार, कालिका कृपाली जू के सारदा भवानी के॥
लाल बलबीर रघुवीर दुजवीर केते, निज निज इष्टन में ढरैं मृदुबानी के।
सेवैं सुखधाम पूजैं दास मन काम मैं तो, बन्दौं पद कंज मंजु राधा महारानी के॥

(४१६)

जोग जग्य जप तप तीरथ गवन व्रत, कबहुँ न हरिदास श्रवण कथा करी।
भ्रमना भ्रमायौ माया मोह मद लिपटायौ, वृथा जग बादन में उमर बिता करी॥
लाल बलबीर मति हीन मैं मलीन पीन, सेवा रसिकन तनहूँ की नहिं जा करी॥
कृष्ण अली जू की कृपा दृष्टि बर पाय पाय, राधा ठकुरायन के पायन को चाकरी॥

* सवैया *

(४१७)

श्रीवृषभानु सुता पद पंकज में निसि बासर ध्यान लगायौ।
मेरी तो जीमनमूर यही कुलपुज्ज सोई मुख गाय सुनायौ॥
जाकौं अहो बलबीर त्रिलोक के नायक हू नित सीस नवायौ।
श्री गुरुदेव दया करि राधिका मंत्र सिरोमनि नाम बतायौ॥

(४१८)

नारद सारद सेस सुरेस महेस सदां उर ध्यान धरायौ।
और जिते सुर सिद्ध मुनीस सबै मन गावन कौं ललचायौ॥
खेलत हैं वनराज निकुंजन पी बलबीर करैं मन भायौ।
श्री गुरुदेव कृपा करि राधिका मंत्र सिरोमनि नाम बतायौ॥

(४१९)

जानत न काव्य कोस छन्द के बनायबे कौं, पिंगुल प्रमान कौं न नेंक डर आनो है।
जानत न नव रस सतक संचारिन कौं, अलंकार हाव भाव हू को ना चिह्नानो है॥
लाल बलबीर बनराज को निवास पाय, जमुना अस्नान प्रभु को प्रसाद पानो है।
सब ही कौ सार भवसागर तें पार करै, मन में विचार एक राधा नाम जानो है॥

* दोहा *

धरे राधिका सतक में, कवित एक सौ तीन ।
निरख होंयगे मगन मन, जो हैं रसिक प्रवीन ॥४२०॥
धूषन भूषन गनागन, कौं उर है न विचार ।
कृपा दृष्टि कर रसिकजन, लीजौं ग्रन्थ सुधार ॥४२१॥

(४२२)

केकी जो बनावै तौ बनैयौ बनराज जू कौ, कूक कूक नाच नाच सुजस सुनाऊँ मैं ।
लता द्रुम बेली रंगरेली जो करौ तौ करौ, रावरे ही अंगन पै पुष्प-झर लाऊँ मैं ॥
जो पै रज-रेनुका बनावौ मन भायौ ये ही, तौ पै पद पंकजन सीस पै धराऊँ मैं ।
ये ही बर पाऊँ ललचाऊँ सुख साधे राधे, बास दै निकुंजन को तेरौ ही कहाऊँ मैं ॥

शिख-नख वर्णन

* दोहा *

श्री गुरुचरन सरोज रज, बन्दौं बारंबार ।
अति मलीन मो दीन के, तुम ही तारन हार ॥४२३॥
अपनी अपनी वस्तु सौं, करैं सकल बिवहार ।
रसिक अनन्यन धन्य ही, श्रीवृषभान कुमारि ॥४४२॥
श्रीवृषभान कुमारि छबि, का पर बरनी जाय ।
जाके पद नख कोर के, कोटि इन्दु सम नाय ॥४२५॥
भूमिलोक सुरलोक सब, रहे पताल लजाय ।
कुमरि माधुरी अंग की, समता दीजै काय ॥४२६॥
मैं मतिहीन अधीन हौं, और न कछू उपाय ।
कछु छबि बरनन चहत हौं, हूजै आय सहाय ॥४२७॥
श्रीवृषभान कुमारि की, तन छबि सिंधु अथाय ।
कृष्ण अली पद कमल बल, जो कछु बरनी जाय ॥४२८॥
दियो किशोरी लाड़िली, श्रीबनराज निवास ।
ऐसे ही अपनाइये, जान आपनों दास ॥४२९॥
श्रीगुरु संतन के चरन, उर लावन की आस ।
ये ही अवलाषा रहै, कोउ करौ उपहास ॥४३०॥

(४३१)

अतर समारे घुंघरारे हैं लछारे श्याम, घनहूँ सों कारे सुकमार दरसत हैं ।
अलिगन हारे हेर पन्नग लजारे किधौं, सुखमा के सिन्धु में सिवार सरसत हैं ॥
लाल बलबीर जू नें जब सों निहारे तब, ही सों री सुजान कान हेर हरसत हैं ।
प्यारे सटकारे केस असि ही सुढार राधे, झूम झूम झूम आन जानु परसत हैं ॥

(४३२)

चीकने चटकदार नीलमनि तें अपार, अंधकार धूमधार ही के मनों सार हैं।
कैधों अलि गान हार कैधौं पन्नगी कुमार, कैधौं सुकुमार ये कलिन्दजा की धार हैं॥
लाल बलबीर मनमोहन के मोहन हैं, सुखमा अपार मन करत बिचार हैं।
कैधौं मखतूल तार रूप सर के सिवार, कैधौं सटकारे प्यारे राधिका के बार हैं॥

(४३३)

चीकने चटकदार लहर लहर करैं, हिय धीर धरैं लखें ऐसे ना सिखी के हैं।
नेह रङ्ग रङ्गे कै सिंगार रङ्ग ही के रङ्गे, कै जे रङ्गराचे री कलिन्द नन्दनी के हैं॥
दास कहैं दयासिन्धु धीरज धरैया तन, आनन्द करैया री सदां जे लालजी के हैं।
देख देख आली नैन करिये निहाली कैसे, कारे कजरारे केस कीरति लली के हैं॥

(४३४)

सीस तें निकस अंधकार किसी धार चार, हेर हारे केकिन की कांतन हरी के हैं।
अहिराज हारे अलिगन दल डारे केते, नील नग ढारे तारे कञ्ज अलसी के हैं॥
दास कहैं ऐसी ना कलिन्द नन्दनी की धार, असित जलज हैं न लाल गंडकी के हैं।
देख देख आली नैन करिये निहाली कैसे, कारे सकटारे केस कीरति लली के हैं॥

* शीश फूल-वर्णन *

(४३५)

कैधौं श्याम घन पै बिराजौ री मराल बाल, असित सरोजन पै जुगनू को डेरो है।
कैधौं अहि कुंडली बनाय मन लाय धरी, कैधौं धुरवा पै उडगन को बसेरो है॥
कैधौं शिव जटा मध्य विष्णुपदी को निवास, लाल बलबीर लख लाल मन चेरो है।
कैधौं निशि मण्डल में प्रगटयौ है इन्दु आय, कैधौं सुख साधे राधे सीस फूल तेरो है॥

(४३६)

कोमल अमल भल चरन बिलोक सोक, बारिध बुड़ानो मुरझानो अरविन्द है।
तार सी चलत लंक केहरि बिलोकि संक, मधु भरी चालन पै थकित गयंद है॥
लाल बलबीर मुख सुखमा अपार राधे, उपमा लजानी जगमगत अमंद है।
तेरे सीस सीसफूल ऐसो छबि देत आली, जैसें श्याम घन में प्रकाश फेर चन्द्र है॥

(४३७)

कुहू की कुमारि नीलमनि की कतार हैं, कलिन्दजा की धार कोटि सुखमा धरैनी हैं।
पन्नगी नगी हैं किधौं दीपसिखा ही है किधौं अलग ह्वै धार चली ससि सों रिसैनी हैं॥
लाल बलबीर रतिनाथ की छुरी हैं किधौं, लाल नन्दलाल जू की मन हरलैनी हैं।
अलिगन सैनी है कि तम घन रैनी हैं ये, कैधौं सुख साधे राधे रावरी ये बैनी हैं॥

(४३८)

कैधौं अरविन्दन की लैन मकरन्दन कौं, सिमटे सुहावनो अलिन्दन कौ वृन्द हैं।
कैधौं निशि पति कौं मिलन आई सुखदाई, हिय हरषाई छबि दीपति अमन्द हैं॥
लाल बलबीर तेरी बैंनी कौं बिलोकि राधे, सुखमा अगाधे लाल जू के भ्रम फन्द हैं।
कैधौं मुखचन्द्र सों सुधा कौं पियें मन्द मन्द, लहर लहर पाछें करत फनिंद हैं॥

* माँग वर्णन *

(४३६)

कैधौं श्यामघन माहिं उडत मराल बाल, सहित सितार हेर सुखमा अपारा है।
कैधौं तम पुंज कौं बिदारन सुधाकर नें, लाय धरौ सीस चारु चामीकर आरा हैं ।।
लाल बलबीर छबि निरख जुड़ाने नैन, आवत न बैन मुख प्रेम फन्द डारा है।
श्यामा तेरी मोतिन सों मांग भरी राजत है, मानों गिरि नील शृङ्ग विष्णुपदी धारा है।।

* पाटी वर्णन *

(४४०)

अन्नत उरोज ढाँप राखे कंचुकी में मनों, सुन्दर अमोल गोल नट के बटा हैं जे।
चंचल चपल चारु पलकें सुढार मानों, सान धरें राजें चारु काम के पटा हैं जे ।।
लाल बलबीर मुख सुखमा अगाधे राधे, हरैं जग बाधे लाल मन कौं सटा हैं जे।
इंगुर की मांग मध्य राजें जुग ओर पाटी, तड़िता समेत मानों सामल घटा हैं जे ।।

* बन्दनी वर्णन *

(४४१)

कैंधौं रूप सागर पै चेंदुआ मरालन के, राजत सुढार बाड़ परमा बिलंदनी।
कैंधौं सोम व्योम मध्य पूरन निशा को जान, तोरन तनाय सीस तारन अमंदनी ।।
लाल बलबीर मनमोहन सुजान राधे, रीझ रहे देख जे परैया प्रेम फन्दनी।
प्यारी सुख कन्दनी हरैया तम दंदनी ये, राजत बिसाल भाल मोतिन की बंदनी ।।

* बैनी वर्णन *

(४४२)

कैंधौं भूमि नन्दन निकन्द तम वृन्दन कौं, लीनों शशि गोद मोद उर में धरेना हैं।
कैंधों चारु चंपक के दल ले सजीले स्वाफ, बैठी आन कीनों बीर बधूटी बिछोना हैं ।।
लाल बलबीर हेर मोहन रसिक राय, सुखमा अथाय कहैं मन कौं हरेना हैं।
राजत अमोल गोल करत किलोल तेरो, मानिक जटित भाल चामीकर बेना हैं ।।

* भाल वर्णन *

(४४३)

चामीकर चौकी में प्रगट जोति हीरन की, कैंधौं मन बैठक अनूप लाल जी की है।
कैधौं छीरनन्दन प्रघट अष्टमी को नीकौ, सीतल करन हेर दृष्ट सब ही की है ।।
लाल बलबीर उर करत बिचार चारु, सुखमा अपार उपमा की दुति फीकी है।
भा हू रती की न रमा रमनी की ऐसी, राजत विशाल भाल कीरति लली की है ।।

(४४४)

कंधौं अरविन्दन की लैन मकरन्दन कौं, अलिन को वृन्द जे समाज साज बैठो है।
कीरति किशोरी चित चोरी गोरी भोरी तोरी, भृकुटी निहार भ्रम लाल आज बैठो है ।।
लाल बलबीर अबै कहैं कर जोरी मोरी, ऊकत सुनोरी उर एही काज बैठो है।
बदन मयंक आज राह रन जीतबे कौं, कौन सर भ्रकुटी कमान साज बैठो है ।।

* लट वर्णन *

(४४५)

फूले बारिजात की गहन मकरन्द वृन्दे, सिमट सुहावनी अलिन पाँति आई हैं।
कैधौं कुल त्याग पन्नग कुमारी प्यारी, सरद ससी पै अमी पीवन कौं धाई हैं॥
लाल बलबीर बाढ़ी सुखमा अपार राधे, हेर हेर प्रीतम की अखियाँ सिराई हैं।
बदन सलोल में कपोल गोल गोल प्यारी, तिन पैं सुजान किधौं लट लटकाई हैं॥

(४४६)

आईं गेह त्यागि कें अधर रस लैन हेत, लहर लहर धीरें धीरें सटकत हैं।
लीक हैं सिंगार की सी कलिन्दजा धार की सी, हेर नन्दलालन के नैन अटकत हैं॥
दास कहैं नई नई चढ़त तरंगें चाउ, चहत न संगे अंग अंगे झटकत हैं।
चीकनी चटकदार गंडन के तीर राधे, कारी सटकारी त्यारी लट लटकत हैं॥

(४४७)

नागिन लली हैं कैं सिंगार लीक ही हैं अलि-गन की लरी हैं चित हेर झटकत हैं।
अंधकारनी हैं कै हिरन तारनी हैं आली, कैंजे ससि ही तें रस हेत अटकत हैं॥
दास कहैं लाल नन्दलाल जी के नीके हित, ही के जे अनन्द दैन हारी सटकत हैं।
चीकनी चटकदार गंडन के तीर राधे, कारी सटकारी त्यारी लट लटकत हैं॥

* बेंदी वर्णन *

(४४८)

राधे भाल रावरे अमंद बिन्द बन्दन को, कैधौं अरविन्द पै सुधा को बिन्द राखौ आन।
कुन्दन पटी पै किधौं चुनी कौ प्रकाश खास, कैधौं मुकर पै मानिक धरी सुजान॥
लाल बलबीर बाढ़ी सुखमा अपार प्यारी, जिनैं देख रीझे मनमोहन सुजान कान।
कैधौं सिन्धु नन्दन मयंक महाराज जू की, मोद भरी गोद में मही को पूत बैठो आन॥

(४४९)

कीरति कुमारी सुकमारी त्यारी भाल मध्य, केशर की बिन्दका की सुकमा बढ़ी सुजान।
पुरट सिला पैं पुखराज को निवास खास, कैधौं प्रगटी है गऊ मोदक की आन खान॥
लाल बलबीर मोहि राखे नन्दनन्द प्यारे, टरत न टारे छैल प्रान धन मन मान।
कैधौं बार जात मध्य चंपक कली है भली, कैधौं ससि सेज बिछायोढो सुर गुरु आन॥

(४५०)

शोभा के सदन में धरी है नीलमनि किधौं, कैधौं अल चेंदुआ गुलाब में दुरानों है।
पूरन मयंक जगमगत असंक तापैं, किधौं ये कलंक ही कौ अंक दरसानो है॥
लाल बलबीर कैधौं सुरसो ससंक ह्वै कें, हेम गिरि रजनी जमाव आज मानों है।
प्यारी तेरी भाल पै अमन्द मृगमद बिन्द, देख देख राधे मनमोहन लुभानों है॥

(४५१)

जा दिन तें हेरे नँदनन्दन रंगीले छैल, तादिन तें किये लाल जतन घनेरे हैं।
लालसा लगी री रहै छिन छिन देखन की, रसना तिहारे जस रटत घनेरे हैं॥
दास कहैं दरशन दीजिये दया की सिन्धु, कोजिये निहाल लाल ठाड़े चल नेरे हैं।
कारे अनियारे कजरारे रतनारे राधे, चंचल चलाक ऐड़दार नैंन तेरे हैं॥

(४५२)

खञ्जन खिजाने हार कानन सिधाने हेर, जलज लजाने किये अलिगन चेरे हैं।
झिक झहराने जल तल ही धराने रहैं, तीक्षन अनग जी के सर गर गेरे हैं॥
दास कहैं जेते हैं हिरन ताके जेर की ये, ललन नें सरी ये अनंद देन हेरे हैं।
कारे अनियारे कजरारे रतनारे राधे, चंचल चलाक ऐंड़दार नैन तेरे हैं॥

(४५३)

खञ्जन खिस्याने से लजाने गये कानन री, चंचलता हेर कें अदां की चाल हारे हैं।
झिक झहरानी सीसकानी रही जल तल, चीकनी चटकतान हेर अंग गारे हैं॥
दास नैंक ताके जे छिदत नैन ताके जे, अनंग सर ताके ताते ताके अनियारे हैं।
कीने नँदनन्दन अधीन रस लीन राधे, चंचल चलाक चटकीले नैन त्यारे हैं॥

(४५४)

जंगी हैं हटीले हैं कटीले जंग जीतन को, नेक ही निहारे तें अनंग सरथाके हैं।
चंचल चलाक चटकीले हैं रंगीले छैल, छैल के छलैया हैं सनेह रस छाके हैं॥
दास कहैं कंजन के खञ्जन के गंजन हैं, रंजन धनी के हैं धरैया धीरता के हैं।
जाहिर जहान ऐंड़दार ; अदां के झाँके, करन नसा के ताके नैन राधिका के हैं॥

(४५६)

टारे हैं टरे न कर जतन अनेक लीने, नेक ही निहारत घायल कर डारे हैं।
डारे हैं जलज गार केते सर सरतन के, खंजन खिस्याने अलि केते जिय हारे हैं॥
हारे हैं हिरन हहराने झहराने झेके, दास कहैं ग्यान लख कानन सिधारे हैं।
धारे हैं धरारे तीखे सान धरे अनियारे, नैन हैं कि तेरे जे अनंग के कटारे हैं॥

* नासा वर्णन *

(४५७)

कीर गये कानन निहार कें निकाई नीकी, लाल नन्दलाल के निहारन की आसा है।
चीकनी चटकदार दिया की सिखासी खासी, हेर हेर दासी हेर हेरन हिरासा है॥
दास कहैं धन्य करनी ये करता की ताकी, रची करताकी कहा जन्त्र ले निकासा हैं।
कीया रंग खासा कंत दिल की दिलासा,सदां आनँद की रासा आली राधिका की नासा है॥

(४५८)

नासा है अली जे दास दासिन के त्रासन की, सदां हीं करत निज जनन के हांसा है।
हांसा हैं ये हेर हेर लाल नन्दलाल जी के, नैक ना निहारे छैल हाल ही निसासा है॥
रासा है री दास कहैं अष्ट सिद्ध निद्धिन की, धीर की धरैया है करैया जस खासा है।
खासा है तेज नीका झलझलात रैन दिना, सहित अलंकृति श्रीराधिका की नासा है॥

(४५९)

कंचन की बेली सी नवेली अलबेली चाल, गरब गहेली गजराज कौ नलैठो है।
उन्नत उरोजन पै आंगी कसि बाँधी तागी, मानों काम जोबन को बटुआ समैठो है॥
लाल बलबीर बेनी पीठ पै डुलत मानों, कदली के पत्र नाग फिरै ऐंठो ऐंठो है।
बेसर अमोल करै मुख पै किलोल मानों, चन्द रखवारी कीर चक्र लिये बैठो है॥

(४६०)

कारे मतवारे घुंघरारे हैं लछारे बार, नैंन कजरारे लाग भरी है सनेह की।
चन्द सो मुखारविन्द झलकै अमन्द सदा, कनक लता सी छबि कहूँ कहा देह की॥
लाल बलबीर लखे लोनी लचकीली लंक, केहरि के संग उर भूलै सुध गेह की।
सारी फुलवारी में झलक झलकत नीकी, बर्नत बनै न छबि बेसर के बेह की॥

(४६१)

अतर अन्हाय साजे उभै दस आभूषण, सीस सीसफूल मन बेंदी भाल धर हैं।
गरें गुलीबन्द बाजूबन्द पहुँची हैं कर, छला कटि किंकनी की झनक मन रहैं॥
लाल बलबीर पग पायजेब बिछिया हैं, नीबी कटि किंकिनी की झनर मनर हैं।
नासिका बुलाख मोती भूमि झुकि झोटा लेत, मानों रूप सिंधु में सुहावनी लहर हैं॥

(४६२)

कैधौं रूप सागर की सीप हैं सुहौनी लौनी, तामैं काम कारीगर किये छिद्र आन हैं।
तामें जातरूप के अनूप जुग धारे प्यारे, जागत जड़ाऊ नव रतनन की खान हैं॥
लाल बलबीर तेरे कानन तरौना राधे, रीझत गुपाल हेर सुखमा महान हैं।
सान भरी छूटी लट तिन पै झलूमी आन, सामल घटा में मनों छिपे उभै भान हैं॥

* कपोल वर्णन *

(४६३)

जोबन महीपति की कंधौं ये बिहार भूमि, कैधौं चटकीले चारु मुकर अमोल हैं।
कनक लता में किधौं बिकसे सुमन जुग, कोमल अमल भल सुखमा अतोल हैं॥
लाल बलबीर मनमोहन के मोहन हैं, जोहन करत लाल लेत मन मोल हैं।
गोरे गोरे गोल अरुनाई भरे राजें तेरे, कैधौं सुख साधे राधे नवल कपोल हैं॥

(४६४)

भरे अनुराग प्रीति रंग में रंगे अभंग, मानों गरबीले छंल रन के अडोल हैं।
गहरे गुलाबी आबी चमकत आरसी से, पूरन अमी से ये गुलाब उर छोल हैं॥
लाल बलबीर जू के प्रानन के प्यारे भारे, रूप के उजारे उर करत किलोल हैं।
गोरे गोरे गोल गोल सुखमा अतोल राधे, कंधौं सुख साधे तेरे नवल कपोल हैं॥

(४६५)

कैधौं रतिराज के खिलौना हैं खिलारी खूब, कनकलता में कै सरोज जुग सरसैं।
जोबन जवाहर के खुले हैं खजाने किधौं, रंक दृग देखन कौं बेर बेर तरसैं॥
लाल बलबीर चोखे चाह भरे झलमलात, बेर बेर प्यारे कर फेर फेर हरषैं।
गोरे गोरे गजब गरूर भरे राजें गोल, प्यारी के कपोल ये गुलाब सम दरसैं॥

(४६६)

काम के बटा से खासे चमकत चाह भरे, अधिक उमाह भरे राजत अडोल हैं।
गेंदा से गुलाब से गहब गुल्ललालन से, कमल से कोमल हैं अमल अतोल हैं॥
लाल बलबीर चल देखिये सुजान किधौं, मखमली रतनन की डिबिया अमोल हैं।
लेत मन मोल करैं मुख पै किलोल कंसे, गोरे गोरे गोल गोल गोरी के कपोल हैं॥

* तिल वर्णन *

(४६७)

कैधौं रूप सागर में बिकस्यो असित कंज, कैधौं विष्णुपदी माँहि जंबु फल गिरचो आन।
कनक लता में अहि सिमट बिराज्यो किधौं, भ्रमर गुलाब मकरन्द पिये सुखदान॥
लाल बलबीर छबि निरखि लट्टु हैं मट्टु, सुखमा निहारन कौं रहैं दृग हुलसान।
एरी गुन खान जान कीरति किशोरी तेरे, नवल कपोल पै अमोल तिल दीप्तमान॥

(४६८)

जोबन नृपति ताको राजै दरवान किधौं, किधौं गंग बीच अलसी को पुष्प गेरो है।
आनन मयंक पर राजत कलंक किधौं, किधौं बिधना की रोसनाई को उजेरो है॥
लाल बलबीर हेर मोहन मगन किधौं, कनक पटी पं नीलमनि को बसेरो है।
कीरति कुमारी सुकमारी प्रानप्यारी किधौं, गोरे से कपोल पँ अमोल तिल तेरो है॥

(४६९)

कैधौं हिमगिरि पै विराज्यो आय श्याम घन, कैधौं अलि कियौ पुंडरीक पँ बसेरौ है।
कैधौं अहि मनि पै विराज्यो पूत पन्नग कौ, कैधौं निशि तम कौ मुकर पर डेरौ है॥
लाल बलबीर छबि देखत मगन भये, कैधौं ये मयंक ने कुरंग कियो चेरौ है।
कीरति किशोरी चितचोरी गोरी भोरी किधौं, गोरे से कपोल पै अमोल तिल तेरौ है॥

* अधर वर्णन *

(४७०)

मानिक मलीन किये चुन्नी नग दीन किये, दाडिम दलैया हैं लजैया बिम्ब ही के हैं।
इन्द्र की वधू के गुंज हू के औ कसुंभ हू के, लोहित अमल जलजात गात फीके हैं॥
लाल बलबीर जू के चमकत चाह भरे, सुखमा अथाह भरे ऐसे ना रती के हैं।
पूरित अमी के पीके आनन्द करैया जी के, लाल लाल नीके ये अधर स्वामिनी के हैं॥

(४७१)

मोतिन की हीरन की पन्ना पुखराजन की, लालन की लहैसन की कांति परिहरी हैं।
बिंब की प्रवालन की लालन गुलालन की, विस्व की ललाई लै इकत्र बिधु करी हैं॥
लाल बलबीर जू को मन हरबें कौं राधे, सबै सुख साज राज सौंज तुम भरी हैं।
ऊख की पियूष की मयूष की मधुरताई, एती शुभताई अधरन माँहि धरी हैं॥

* दसन वर्णन *

(४७२)

जोबन उजारी प्यारी बैठी आन चित्रसारी, अंग सुकमारी साज जरी के बसन हैं।
नासिका सुढारी तामें बेसर है मोरवारी, तैसी झूमकी में गजमोती की लसन हैं॥
लाल बलबीर अंग बाढ़ी सुखमा अपारी, तैसी मन्द मन्द चारु हीरा सी हसन हैं।
चन्द से बदन में अमन्द छबि झलकंत, देखौ प्रान प्यारे कैसे प्यारी के दसन हैं॥

(४७३)

चंचल चपल एँड़दार मतवारे कारे, सेत लाल प्यारे नैन मैन मद भरे हैं।
अधर रसाल लाल लाल सुधा पूर लाल, कमल गुलाब बिंब फल हू सों खरे हैं॥
लाल बलबीर चल देखिये गुपाल लाल, प्यारी जू के रदन अनूप ढार ढरे हैं।
मेरे जान मोतिन की माल हीरा लाल मैन, जौहरी ने मानिक डिबा से खोल धरे हैं॥

(४७४)

कैधौं सिन्धुनन्दन के क्रीट सीस हीरन कौ, किधौं उरगन की जमात पास ढरी हैं।
किधौं बारिजात मांहि कुन्द की कली हैं भली, कोमल अमल झलकत रूप भरी हैं॥
लाल बलबीर कैधौं दसन की पाँत राधे, देख उर भ्रांति लाल जू की मति हरी हैं।
मेरे जान मैन जड़ी विद्रुम पटी में आन, बीन कें नवीन नोंनी मोतिन की लरी हैं॥

(४७५)

कैधौं रूप सागर में कुन्दकी कली की भली, अवली सजी हैं सम सुखमा न आन है।
कैधौं वारिजात माँहि दाड़िम दरार खाय, छिप्यौ अकुलाय कीर ही सों त्रास मान है॥
लाल बलबीर छबि निरखि निराली आली, रीझै बनमाली छैल मोहन सुजान है।
प्यारी तो हँसन में दसन छबि देत ऐसे, बिद्रुम के बीच मनों हीरन की खान है॥

* रसना वर्णन *

(४७६)

कैधौं मनमोहन की मोहनी रची है विधि, निसरे अनूप बानी मानौं अमी घुरी है।
सुनत सुजान कान्ह बिबस भये हैं आन, मन हू में मैन ऊदीपन की अंकुरी है॥
लाल बलबीर हेर रसना तिहारी प्यारी, मेरे मन उपमा अनूप आन फुरी है।
ग्रीषम की बात तें सकात बीरबधू तासों, लोहित कमल दल मध्य आय दुरी है॥

* वाणी वर्णन *

(४७७)

मधुर मधुर मन्द मन्द बतराती तबै, मानों तान मोहनी की बीन में बजाती हैं।
सुनि सुनि कानन में कानन में हास भरी, दिसि दिसि सुरभीन यूथिका भजाती हैं॥
लाल बलबीर रीझे मोहन रसिक राय, समता न पाती हेर कोकिला अजाती हैं।
जाती है न मोसों कछु सुखमा बखानी राधे,तेरी सुन बानी बानी बानी की लजाती हैं॥

* मुख-सुगन्ध वर्णन *

(४७८)

मन्द मन्द हँसत अमंद मुखचन्द ही सों, बारिज बिकास की सुबास सरसाती हैं।
दिशि दिशि द्वार द्वार वीथी व्रज-मंडल में, अतुल अखण्ड राधे घटा बगराती हैं॥
लाल बलबीर सार केतको गुलाब जुही, केवड़ा कदम्ब गुलदाबरी सकाती हैं॥
मोरछली मोतिया चमेली चंपा खस जुही, पानड़ी सुहाग एला बेला कौं लजाती हैं॥

(४७९)

वाकौं मुख देखें चौथ लागत कलंक अंक, याकौ मुख देख टरै कोट जग फन्द है।
वदन निहार वाकौ सुकृत हिराय जाय, इनकौं निहार बढ़ै आनन्द कौ वृन्द है॥
लाल बलबीर एक ही तें छबि छीन वाकी, इनकौ प्रकाश जगमगत अमन्द है।
कोट कोट चन्दमुख मन्द होत याके आगें, देखौ ब्रजचन्द कैसो राधा मुखचन्द है॥

(४८०)

जाकी सुख दैनी बैनी लहर लहर करैं, चकित ह्वै चितै जात चौंकत फनिन्द है।
चंचल चपल अनियारे नैन मतवारे, ताके नोंकझोंकन अनंग सर बन्द है॥
लाल बलबीर लोनी लफे लचकीली लंक, केहरि के संक दाबें गवन गयंद है।
कोटि कोटि चन्द मुख बन्द होत जाके आगें, देखो व्रजचन्द कैसो राधा मुख चन्द है॥

(४८१)

वाकौ तो प्रकाश पूर पूरन निशा में होत, इनको प्रकाश सर्व दिवस निशा में है।
सीतलता वाकी तौ प्रगट चार जामैं याको, सहित सुगन्ध सों प्रकाश आठ जामें हैं ॥
लाल बलबीर वाकौं दोज कौं प्रनामें याकौं, चौधेहु भुवन करें निसि दिन प्रनामें है।
देखो नँदनन्द सुखकन्द व्रजचन्द प्यारे, राधा मुखचन्द की न चन्द समता में है ॥

(४८२)

कोऊ कहै स्वामिनी कौ बदन निशाकर सो, अङ्ग अङ्ग पातक अनेक बहु वामें है।
पूरन निशा ते कला दिन दिन छीन ताकी, जिनकी कला तो छिन छिन अधिकामें है ॥
लाल बलबीर त्रास राहु की सतामें वाकौं, रावरे ही प्रेम को हुलास बहु यामें है।
देखौ नन्दनन्द सुखकन्द व्रजचन्द प्यारे, राधा मुखचन्द की न चन्द समता में है ॥

(४८३)

गवन गयंद की गमाई गरुताई सबै, केहरि ते लंक हीन स्वामिनी घनेरो है।
बोलन हँसन मुसिकन चितवन आगें, वृन्दारिक नारिन को दर्प गार गेरो है ॥
लाल बलबीर छबि देखिये सुजान प्यारे, जाके पद कंजन कौं भृङ्ग मन मेरो है ॥
राधे के वदन सुख सदन अदन आगें, कमल कमन लागे चन्द होय चेरो है ॥

* चिबुक-बिंदु वर्णन *

(४८४)

सुखमा सरोवर में फूल्यौ बारिजात किधौं, हेत मकरन्द के भ्रमर वास कीनों है।
कैधौं रति रानी के मुकर पै अमोल गोल, राजत कनूका नीलमनि कौं नवीनों है॥
लाल बलबीर राजें सुखमा अगाधे राधे, कैधौं विधि बसीकर्न जन्त्र लिख दीनों है।
सुन्दर अमोल करें नथ सों किलोल तेरे, चिबुक के बिन्द ने गोबिन्द बस कीनों है ॥

(४८५)

कैधौं चतुरानन करी है चतुराई चारु, जाकी छबि हेर फेर लगे जक्त फीकौ है।
सहित सुबास को सरीर है सुभग कैधौं, कैधौं आय बैठ्यो धाय चेंटुआ अली कौ है ॥
लाल बलबीर मंजुताई श्यामताई आगें, नीलमनि नीकौ है न पुष्प अलसी कौ है।
देखौ नन्दनन्द सुखकन्द व्रजचन्द कैसो, चिबुक कौ बिन्दु वृषभानुनन्दनी कौ है ॥

* चिबुक वर्णन *

(४८६)

सुन्दर सुढार तेरी चिबुक कुमारि राधे, प्यारे व्रजराज कौ दिवैया है अनन्द की।
बारौं री गुलाब ये रसाल फल सों बिसाल, एरी प्रतिपाल ये परैया प्रेम फन्द की ॥
लेत रस सार चारु सदां ही अधार हैं ये, लाल बलबीर जू के कर अरविन्द की।
सुखमा अमंद उर करत विचार वृन्द, आनन्द कौ कंद कै सिरी है मुखचन्द की ॥

* ग्रीवा वर्णन *

(४८७)

कैधौं रूप सागर में फूल्यौ बारिजात ताकी, सुन्दर सुहावनी मृनाल सुख दीवा है।
कैधौं मनमोहन सुजान प्रान प्रीतम की, भुज की अतूप रूप सेज-सुख सीवा है ॥
हारे कंबु हेर री सकल दंभ दूर कीने, कीने बस लाल बलबीर प्रान जीवा है।
जीवा मोहिबे की कोटि सुखमा धरीवा प्यारी, कैधौं सुकमारी राधे रावरी ये ग्रीवा है ॥

(४८८)

कीरति कुमारी सुकमारी प्रानप्यारी तेरो, सुन्दर अमल मुखचन्द तें उजाला री।
सुन सुन बानी बानी रानी की लजानी रानी, कोकिला सकानी सुन भयो तन काला री॥
लाल बलबीर मनमोहन जगत कौ री, सोऊ देख मोह्यो अङ्ग सुखमा बिशाला री।
राजत जड़ाऊ तेरें हार गरें रतनन कौ, कंचन लता में मनौ जगी दीपमाला री॥

* पीठ वर्णन *

(४८९)

कैंधौं सुरलोक की बनी हैं ये सुघाट बाट, हेर हेर आभा कलधौत की बिलाती है।
कैंधौं रूप भूप के भवन की दीवाल दीह, देत सुख जीय बिज्जु ही सी दमदमाती है॥
लाल बलबीर किये मुकुर मलीन दीन, सुखमा अपार हेर उपमा लजाती है।
कीरति कुमारी सुकमारी प्रान प्यारी किधौं, जादूगर पीठ दीठ लाल की चुराती है॥

* भुजा वर्णन *

(४९०)

कैंधौं मनमोहन के अंसन की भूषण है, दूषण हरैया प्रेम मदन विकासनी।
कैंधौं रूप लतिका में प्रघटी अनूप बेल, एक रंगरेल मेल परभा प्रकाशनी॥
लाल बलबीर दासी कोक की कला सी खासी, रहत हुलासनी सनेह जाल फाँसनी।
प्रीतम पिया के तन मन कौं लपेटें लेत, सुख की सकेत तेरी भुज सुख रासनी॥

(४९१)

बदन मयंक राजें हीरा सी हँसन छाजें, दशन की पाँति नीकी मुकतन माल सी।
सुधा सम बोल हैं गुलाब से कपोल गोल, लोचन बिलोल श्याम बैनी बनी ब्याल सी॥
लाल बलबीर प्यारी अंगन की छबि न्यारी, अमित उजारी नव रत्नन की माल सी।
नाभी रस ताल पग परभा प्रबाल सी है, कुच फल ताल सी हैं भुज हैं मृनाल सी॥

* करतल वर्णन *

(४९२)

प्यारी जू के करतल लालन निहारो चल, लोहित अमल मखमल हू सो खरी है।
रेखा शुभ सोहत छबीली छबि मोहनी है, जोहत ही कहौगे अतूल सुख भरी है॥
तामें बहु राजत अमन्द मँहदी के बुन्द, उर बलबीर उपमा की बेलि फुरी है।
आलस बलित इन्द्रबधु के बिराजे वृन्द, सैन हेत मानौं सेज पंकज की करी है॥

(४९३)

प्यारी जू के कोमल कमल से करन माहिं, पृष्ठ मूल सुखमा अतूल है मनीन की।
दश नख चन्दन की मेंहदी के बुन्दन की, प्रगटी अमन्द प्रभा उपमा मलीन की॥
लाल बलबीर हेर छिन में अधीर ह्वै हौ, भूल जैहो सुध तन मन बेनु बीन की।
आरसी छलान की छबीली छबि हेर हेर, लाल अंगुरीन की जड़ाऊ मुदरीन की॥

* कुच वर्णन *

(४९४)

किधौं काम भूप के खिलौना जुग लोना सोना, उमग उठोना रति रंगबीर नेरे हैं।
श्री फल अनार मठ उलटे नगार कुंभ, संतरा सुरंगन के दर्प गार गेरे हैं॥
लाल बलबीर जू नें जब ही सों हेरे, तब ही सों ए सुजान जू के भये दृग चेरे हैं।
एरी सुकमारी वृषभान की दुलारी प्यारी, बसीकर्न टोना ये उरोज जुग तेरे हैं॥

(४९५)

कंचन कलश किधौं अमल प्रकाशित हैं, जुगल समान ये अमी सों भर राखे हैं।
कंधौं रति रानी मैन भूप के रिझायबे कौं, सुघड़ सलोना ये खिलौना धर राखे हैं॥
लाल बलबीर किधौं जोबन खिलारी बैस, पिंजरा में चकवा के बाल ढर राखे हैं।
प्यारी श्याम कंचुकी में उमगे उरोज तेरे, इनने बिहारी कौं बस कर राखे हैं॥

(४९६)

कंधौं हेम कलश पीयूष भरे सोभित हैं, कंधौं फल ताल के सुढार ये सुहाने हैं।
कंधौं हैं अनार किधौं संतरा बहारदार, रचे करतार ढार चकवा लजाने हैं॥
लाल बलबीर किधौं उरज कठोर जोर, इनकौं बिलोकि राधे मोहन लुभाने हैं।
कंधौं काम भूप बसे रूप बाटिका में आय, सुरख बनात के सिमाने दोय ताने हैं॥

(४९७)

कंधौं प्रानप्यारी जू के उरज अतोल गोल, कनक लता के फल सुन्दर सुहाने हैं।
कंधौं प्रान प्रीतम खिलारी की जुगल गेंद, जिनें हेर हेर कें अनन्द मन माने हैं॥
लाल बलबीर कंधौं चकवा चटकदार, कूही कौं बिलोक और दौर आ दुराने हैं।
कंधौं काम भूप बसे रूप बाटिका में आय, सुरख बनात के सिमाने दोय ताने हैं॥

* रोमराजी वर्णन *

(४९८)

कंधौं नाभि कूप तें निकरि कें पै पान हेत, कंचन कलस सों पिपील पाँति भाजी है।
कंधौं रूपसागर में लहरैं उठत तामें, कंत मन बाट परबे कौं नाव ताजी हैं॥
कंधौं छबि भूपति की सेज पै सिंगार रेख, इन्हैं देख नैनन की गति मति भाजी है।
भये लाल राजी सुख साजी है उदर पर, कंधौं प्रानप्यारी ये तिहारी रोमराजी हैं॥

* त्रिबली वर्णन *

(४९९)

कंधौं रूप सागर में नागरि नवेली लौनी, परम सुहौनी ये लहर सुखकारी हैं।
कंधौं पिय नैनन की वीथी ये अनूप सोहै, सुखमा अपार सर्व उपमा लजारी हैं॥
लाल बलबीर मनमोहन मगन भये, तनक निहारी तन सुधि लै बिसारी हैं।
ये री सुकमारी मुखचन्द उजियारी किधौं, कोमल उदर पर त्रिवली तिहारी हैं॥

(५००)

गोरी गरबीली तेरौ गवन गरूर भरचो, तरुन गयंदन कौ मन मद भरचो है।
चन्द तें अमन्द मुख परभा प्रकाशित है, अङ्ग अङ्ग मानो सर्व सांचे ही में ढरचो है॥
लाल बलबीर मनमोहन सुजान कान्ह, बस कर राखे भाल भूरि भाग भरचो है।
एक पेच परे कोऊ निसरै जतन मन, ललन त्रिभंगी तेरी त्रिवली में परचो है॥

* उदर वर्णन *

(५०१)

कंधौं प्रेम भूप के विराजन की थली भली, कंधौं रंगरली अली सुखमा सहेट है।
कंधौं रूप बैठ्यो रोम राजी कर सक्ति लिये, नाभि सर जंत्रन कौं मालन चपेट है॥
लाल बलबीर चामीकर सो चमंकै चारु, चीकनों परम नवनीत को लपेट है।
कमल गुलाब मखमल सो नरम लाल, मन कौं लपेट लेत प्यारी तेरो पेट है॥

* नाभी वर्णन *

(५०२)

कैधौं रूप चोर की गुफा है बिमला है भली, कैधौं मोहनी नें ये सुघाट बाट करी है।
जोबन भवन कौ दुआर दीह कैधौं यह, सुखमा अमंद उपमा की दुति हरी है॥
लाल बलबीर नेहो नेह को अन्हावन कौं, सरस सुहावनी सिंगार रस भरी है।
नागर नवेली अलबेली रंगरेली तेरी, कैधौं सर नाभी लाल मान मन हरी है॥

* लंक वर्णन *

(५०३)

कोऊ कहै लंक है कि जंत्र मन मोहनी कौ, कोऊ कहै विद्या वर जादूगर भरी है।
कोऊ कहै वार सी सिवार सी है तार सी है, कोऊ कहै नृपति अनंग कर छरी है॥
लाल बलबीर मेरे जान अनुमान ये ही, केहरि गुमान दागबे कौं बिधि करी है।
गोरी तेरी कमर कुमर व्रजराज हेर, छीन अति शंक उर लालन की परी है॥

* जघन वर्णन *

(५०४)

कैधौं मनमोहन के आलय जुगल थंभ, कैधौं रंभ तर उलटारे लाय धरे हैं।
गोरे गोरे चीकने चमक चारु चपला से, कोमल अमल मंजु सुखमा सों भरे हैं॥
लाल बलबीर जू के मन के हरैया रूप-जाल के परैया छैल हाल बस करे हैं।
गोरी तेरे जंघ जंग जीतत अनंग रंग, प्रीति ही के रंग जुग सांचे ढार ढारे हैं॥

* गुल्फ बर्णन *

(५०५)

गोरे गोरे गोल गोल गजब गरूर भरे, नूर भरे नाजुक निहार नैन ललकैं।
चरन कमल ही के संग ही जनम लीने, छैल बस कीने भूल लागत न पलकैं॥
लाल बलबीर बीर बांके रनधीर केते, उपमा अधीर करी लुंज दलमलकैं।
कीरति किशोरी चित चोरी श्याम रंग बोरी, गोरी तेरे गुलफ गुलाब सम झलकैं॥

(५०६)

आनन है चन्द सो गयंद सों गवन मन्द, बैनी है फनिन्द पन्नगी सी चारु अलकैं।
भृकुटी पिनाक सुक की सी है सुढार नाक, मैन सर आंख औ पटा सी चारु पलकैं॥
लाल बलबीर राजैं कुन्द से दसन हेर, सुधा सी हँसन लालजी को मन ललकैं।
कीरति किशोरी चित चोरी श्याम रंग बोरी, गोरी तेरे गुलफ गुलाब सम झलकैं॥

* नूपुर वर्णन *

(५०७)

नूपुर अनूप रूप जातरूप गाजैं साजैं, झुनर मुनर हेर रागनियाँ लाजैं हैं।
कोमल चरन पुंडरीक के बरन तामैं, भूषन अगन मन मानिक के राजैं हैं॥
लाल बलबीर बाढ़ी सुखमा अगाधे राधे, देख उर भ्रांति कांति दामिनियाँ लाजैं हैं।
त्रिभुवन जीत कें उछाह की उमंग मनौं, मदन महीप जू की दुंदुभियाँ बाजैं हैं॥

(५०८)

कोमल अमल मंजु कञ्ज से चरन तामें, अष्टादश नूपुर अनूप जुग साजे बाल।
जगर मगर जोत फैल रही चारौं ओर, जटित जवाहर अमोल नग हीरा लाल॥
लाल बलबीर ये रसीले मन्द मन्द बाजैं, इनकौं निहार हारैं राग रागनी के जाल।
कीरति कुमारी वृषभान की दुलारी प्यारी, छबि कौं निहार त्यारी रीझ रहे नन्दलाल॥

* चरण वर्णन *

(५०६)

जव चक्र रेखा धुजा कमल पहौप लता, अंकुश बलय इन्दु छत्र के धरन हैं।
मीन रथ परबत गदा सक्ति संख बेदी, कुंडल अनूप बेंदी पी मन हरन हैं॥
लाल बलबीर गुन गावैं ध्यान लावैं सदाँ, रसिक प्रवीनन के उर आभरन हैं।
आनँद करन जन भ्रमना हरन बन्दौं, नव दस चिह्न जुत राधे के चरन हैं॥

(५१०)

जो पै अरबिन्द से बताऊँ वृषभानुजा के, सकुच निशा में तन कंटक धरैन हैं।
विद्रुम चुनीन मन मानिक बताऊँ जड़, कहा मृदुताई पाई सौरभ झरन हैं॥
लाल बलबीर नख चन्द से बताऊँ जौ पै, दिवस मलीन बहु कालिमा भरन हैं।
उपमा न आवैं सम कोऊ दस चार लोक, राधे के चरन ऐसे राधे के चरन हैं॥

* बिछिया वर्णन *

(५११)

राधे के चरण जलजात के वरन तामें, भूषन अगन मन मानिक के राजे हैं।
दाडिम कली सों भली आँगुरी अँगूठन में, दश नखचन्द्र देख चन्द दुती लाजे हैं॥
लाल बलबीर चामीकरके चमंकें चारू, बिछिया झनङ्क झीने झीने सुर गाजे हैं।
मेरे जान मदन महीप जू के द्वार आली, बसीकर्न दुंदुभी रसीली आज बाजे हैं॥

* नख वर्णन *

(५१२)

कनक लता में किधौं विकसे नबीन पुष्प, अमल अनूप राजै परभा बिलन्द की।
विद्रुम पटीन में जटी हैं किधौं हीर कनी, दाड़िम कली में प्रभा उडुगन वृन्द की॥
लाल बलबीर मति पाँगुरी भई है राधे, कैधौं आँगुरीन नख छबि है आनंद की।
कैधौं बारिजात के दलन पै अमल भल, अवली बिराजी आय कैधौं चारु चन्द की॥

* एड़ी वर्णन *

(५१३)

दाड़िम प्रसून हू की किंसुक कसूम हू की, इन्द्र की बधून हू की परभा लजेरी हैं।
कमल गुलाब हू की मानिक प्रवाल हू की, बिंब औ गुलाब हू की दुति गार गेरी हैं॥
लाल बलबीर जपा जावक मजीठ हू की, इंगुर सिन्दूर हू की भई गति चेरी है।
देखौ नन्दलाल चलि लाड़ली लडैंती जू की, एड़ी नग जाल लाल हू ते लाल हेरी हैं॥

(५१४)

कैधौं तन मन्दिर के आभा चढ़बे की सीढ़ी, मानिक चुनीन गुंज हू की दुति थाकी हैं।
कैधौं रजोगुन की जुरी हैं आय रास खास, पुरट घटा में किधौं चंचला चमाकी हैं॥
कमल गुलाब इन्द्रबधू के बरन मंद, भये भदरंग हेर सुखमा अदा की हैं।
ढाँकी हैं त्रिलोक की निकाई बलबीर देखौ, कैसी सुकमार लाल एड़ी राधिका की हैं॥

(५१५)

मंजुल चरन नवनीत के बरन हरैं, सुखमा नवीन जल जातन की जोरी की।
विमल अंगुली नख चंद तें अमन्द राजैं, हीरा मुक्ता उडुगन रस दुति थोरी की॥
लाल बलबीर पायजेब जेब वारिजात, रूप की झनंकें हैं रसीली चित चोरी की।
देखौ नन्दलाल तबै ह्वै हौ जू निहाल हाल, मानिक प्रबाल हू सौं एड़ी लाल गोरी की॥

* सर्वांग वर्णन *

(५१६)

कोमल अमल भल राजत जुगल कंज, कंज पर कदली अनूप छबि छाती हैं।
कदली पै केहरि सरोवर कपोत दोय, तापर मृनाल कंबु बिम्ब झलकाती हैं॥
बिम्ब पर कुंदकली तापै सुक राजत हैं, तापै सीस मीन धनु बंक दरसाती हैं।
तापै ससि लाल बीलबीर अर्द्ध सोहत हैं, तापर फनिन्द नारि भूमि झोटा खाती हैं॥

(५१७)

बंन सटकारी भाल केशर की खौर धारी, आखें कजरारी नथ नासा भलकारी है।
सीप से करन वारी बिंब अधरन वारी, कंठ पचलरी भुज बलया सुढारी हैं॥
देखौ बलबीर जू नवीन उरजन वारी, नाभि सर वारी छीन लंक सुकुमारी है।
जंघें तरु रंभ वारी गवन गयंद वारी, पग अरविन्द वारी कीरति दुलारी है॥

(५१८)

लाल बलबीर वृषभान की किशोरी जू के, सौरभ समूह अंग अंगन तें बरसै।
घेरदार घाँघरो सुरंगी पचरंगी जंगी, तंगी कुच कंचुकी नरंगी कसी करसै॥
सारी नील सीस धारी जरी की किनारीदार, तामें मुख सुखमा अनूप हेर सरसै।
सामल घटा में चारु चंचला चमंकैं मनौं, तामें पूर चन्द्रमा असंद आज दरसै॥

* सुकुमारता वर्णन *

(५१९)

विपिन विलोकन कौं प्रीतम के संग आई, अचक अचक प्यारी पगन धरत है।
लचकि लचकि जाय कच कुच भारन तें, लंक मुख मोर मोर सिसकी भरत है॥
लाल बलबीर सुकुमारी रूप उजियारी, रंभा रतनारन की गुरुता हरत हैं।
जित मग ढरत परत छबि जाल हाल, तित तित छिति दुति लोपित करत है॥

* महल वर्णन *

(५२०)

उज्जल मृदुल मंजु मंडित मुकुर वृन्द, हीरन खचित कल कुरसी सुसाजे हैं।
अरुन हरित नील पीत पाये मन भाये, टोटे छात छज्जे मनि मानिक के भ्राजे हैं॥
परदे जरी के द्वार चाँदनी चँदोवा चारु, झालर झमंक देख रबि दुति लाजे हैं।
विद्रुम पलंग मखमल की विछात तापै, लाल बलबीर श्रीकिशोरीजू विराजे हैं॥

(५२१)

अतर लगाऊँ हुलसाऊँ श्रीकिशोरीजू के, सीतल सुगंध नीर ही सों लै न्हवाऊँ मैं।
बसन नवीन पहिराऊ अङ्ग अङ्गन में, सुमन समूह कच कबरी गुथाऊँ मैं॥
सीस फूल बंदनी करनफूल झूमकान, बंद्रिका मनीन भाल बैना लै सजाऊँ मैं।
बीरी लै पवाऊँ पद पंकज में सीस नाऊँ, लाल बलबीर दासी तबही कहाऊँ मैं॥

(५२२)

बदी मनि बेसर चिबुक नील कन बुन्द, कंज से द्रगन माँहि अञ्जन अँजाऊँ मैं।
झूमर झमंक मनि पुरट सजाऊँ कंठ, जब मुक्त पुष्पन की माल पहिराऊँ मैं॥
हीर हार चंद हार पन्नन हमेल चारु, कंचुकी जरी की नीकी उरन धराऊँ मैं।
बीरी लै पवाऊँ पद पंकज में सीस नाऊँ, लाल बलबीर दासी तब ही कहाऊँ मैं॥

(५२३)

श्रीवन निकुंजन में प्रीतम के संग प्यारी, चाह भरी दीन जान दरस दिखाऔगी।
माल गुहि लाऊँ पहिराऊँ हरषाऊँ तबै, निज कर पल्लव कौं सीस पै धराऔगी॥
'नीर भरि लावौ री पिवावौ हमैं आय धाय', लाल बलबीर दासी टेर यों बुलाऔगी।
और कौन मेरी तेरी चेरी हौं मैं गोरी भोरी, हा हा श्रीकिशोरी मोहि कब अपनाऔगी॥

(५२४)

श्री रंगदेबी अब मैं सरन तिहारी आई, दीन जानि आप दृष्टि कृपा को ढरीजिये।
कुटिल कुबुद्धिनी मलीन हौं अधीन हौं मैं, दया की निधान नहीं औगुन मनीजिये॥
लाल बलबीर दासी जानिये चरन ही को, बिनती करत मेरो एतौ आज कीजिये।
श्रीवन बिहारिनी विहारी के निकुंज माँहि, एहो सुख पुंज जू टहल माँहि लीजिये॥

(५२५)

चाहे कीर कोकिला कपोत कर सारस तें, चाहैं सुख चन्द की चकोरी लैं बनाइये।
चाहे कर लता द्रुम फल फूल पल्लव तें, मधुकर चाहैं केकी दया दृष्टि लाइये॥
लाल बलबीर दासी दीन है विचारो आप, कीजिये जरूर यहाँ जोई मन भाइये।
जैसे बने तैसें करुना निधान स्वामिनी जू, हा हा श्रीकिशोरी मोहि श्रीवन बसाइये॥

(५२६)

हा हा रंगदेवी जू सुदेवी हा हा ललिते जू, हा हा श्रीविशाखे जू सुनौ हो टेर सुखरास।
हा हा चंपकलते जू हा हा चित्रा तुंगविद्य, हा हा इन्दुलेखा तुम प्यारी पिय रहो पास॥
लाल बलबीर दासी दीन हे दया की राशि, तुम पद पदम की है मन मलिन्द आस।
करुना निधान गुन आगरि उजागरि जू, हा हा मिलि सबै मोहि दीजिये निकुंज बास॥

(५२७)

परम दयाल दूजी आप सी न दीसै और, एहो सिरमौर पदपद्म सिरनाऊँ मैं।
लाड़िली लला की मन भावनी रिझावनी हो, गुनन अथाह सिन्धु थाह किमि पाऊँ मैं॥
अति मति हीन दीन बावरी हौं स्वामिनी जू, एहो कृष्ण अली चेरी रावरी कहाऊँ मैं।
श्री वन निकुंजन में दीजिये निवास सदा, लाल बलबीर राधा राधा गुन गाऊँ मैं॥

श्री रंगदेवी की सखी, कृष्ण अली सु सुजान।
तिनहिं कृपा सिखनख कह्यौ, अपनी मति अनुमान॥५२८॥

ढीठौ ह्वै कछु इक कह्यो, तौऊ युक्ति मिलाय।
पिय प्यारी कौ रस सुजस, रसिकन हिये सुचाय॥५२९॥

यह रस सिंधु अगाध है, मो मति अति लघु मीन।
रसिक अनन्यन मुख सुन्यों, सोई यह लिख लीन॥५३०॥

* कुण्डलिया *

(५३१)

श्रधा हीन औ करमठी, ज्ञानिन तें जिन बोल।
सखी भाव बासी विपुन, तिनहीं सों यह खोल॥
तिनहीं सों यह खोल, होय राधा पद दासी।
विलसौ हिलमिल कहा, लहौ रस सिंधु बिलासी॥
कृष्ण अली कौं गहौ, मिटै जग की सब बाधा।
निसकैं करिकैं रटौ, कहौ गुन राधा राधा॥

* दोहा *

निशि पति गृह अरु वेद ऋषि, संवत श्रेष्ठहि जान।
फागुन कृष्णा तृतीय गुरु, शिख नख कियो बखान॥५३२॥

* नखशिख वर्णन *

* दोहा *

श्रीराधे नन्दलाल की, चरण रेणु सिरधार।
चित चाहे कारज सरैं, करैं सकल अघ छार॥५३३॥
जै जै श्री रासेश्वरी, बिनै सुनौ चित लाय।
कछु छबि बरनन चहत हौं, कीजै आप सहाय॥५३४॥

* चरण रज वर्णन *

* सवैया *

(५३५)

कानन निहार आई रसिक रसीले संग, रसिक रसीली अङ्ग अङ्ग हरषाती हैं।
कनक लता सी खासी कर कान्ह अंस धरे, रति नेह धरें नैंन तीरन चलाती हैं॥
देख देख आली री निराली कांति आज हाली, हीरन जटित अलंकारन सजाती हैं।
राधिका रँगीली की चरन रज अंचल तें, झार झार दासी निज आनन लगाती हैं॥

(५३६)

इनहीं कौ ध्यान नित्त करें सनकादिक से, सेस जी की रसना सदौ ही जस गाती हैं।
संकर से ज्ञानी रिषि नारद से आदि जेते, दरस करन हेत गिरा ललचाती हैं॥
दास कहैं नन्दलाल लाड़िले सजीले जी की, अँखियाँ रसीली हेर हेर हरषाती हैं।
राधिका रँगीली की चरन रज अंचल ते, झार झार दासी निज आनन लगाती हैं॥

* चरण वर्णन *

(५३७)

राजत रँगीले लाल लाल के रिझैया छैल, जक्त जस छैया असरन के सरन हैं।
दश नख चंदन की कांति है अनंदन की, सरद कलाधर की कला के हरन हैं॥
कंचन जटित हीर झांझन झनंकत हैं, चलन रसीली गति करी की दरन हैं।
दास कहैं हरन कलेस जाल हाल राधे, करुना निधान री तिहारे ये चरन हैं॥

(५३८)

करत इन्हीं कौ ध्यान ईस सनकादिक से, रटैं जस संत केते झाँझ लै करन हैं।
हिये हरषाते सिरनाते आय धाय धाय, कहत इही जी कल कंटक हरन हैं॥
लाड़िले रसिक छैल लाड़िली दयानिधि ये, लाल नंदलाल हिये धीरज धरन हैं।
दास चित्त आलै हैं करत हैं निहालैं हालैं, सदाँ ही दयालै राधे तेरे ये चरन हैं॥

* एड़ी वर्णन *

(५३९)

चीकनी चटकदार नारंगी करी हैं छार, इनकी सजीली काँति राजत घनेरी हैं।
कड़े छड़े साँठ कल झाँझन झनंकत हैं, कंचन जटित हीर जेहर तरेरी हैं॥
दास कहैं दीरघ कला की छटा राजत हैं, हेरत अलीन की है रही दृष्टि चेरी हैं।
कीने नँदनन्दन अधीन रस लीन राधे, एड़ी नग जाल लाल हू तें लाल तेरी हैं॥

(५४०)

नागर रसिक छैल आनन झलक आगें, सरद कलाधर को कलागन चेरी हैं।
चलन अदां की कल ताकी है न ऐसी कहीं, तरुन गयंदनि की गति गार गेरी हैं॥
दास कहैं तेरे अङ्ग अङ्ग की निकाई नीकी, गिरिजा गिरा तें तड़ता ते री घनेरी हैं।
कीने नँदनंदन अधीन रस लीन राधे, एड़ी नग जाल लाल हू तें लाल तेरी हैं॥

* नख वर्णन *

(५४१)

नख हैं जलद कांति हीरा गण की ये सान, इनकी निकाई हरषत अली लख हैं।
लख हैं न निद्ध तारे केते दर डारे ससि, झलकन हारे कहा अहंकार रख हैं॥
रख हैं रँगीले आस हिये जे अनंद रास, छिनक न टारे नंदलालन के चख हैं।
चख हैं तरे की रज दास दासी रसना तें, धीरज धरन राधाचरन के नख हैं॥

(५४२)

चन्द ते चटकदार राजत सजीले सेत, जलज लजाय जल गिरे खाय सक हैं।
आनन्द करैया हैं धरैया तन धीरज के, छिन छिन इनहीं की कांति लाल लख है॥
दास कहैं लाड़िली रंगीली अरी राधिका जू, इनहीं की लालसा सदां ही छैल रख हैं।
ढक हैं दिनन्द झलकन हीरा थक हैं री, सरस सजीले तेरे चरन के नख हैं॥

* जेहर वर्णन *

(५४३)

हीरन जटित कल कंचन की राजत हैं, जड़िया अनंग जाल सजल सजाये हैं।
जग्जगात कली कली सहस्र कला की छला, सरद ससी के नीके जस ले गराये हैं॥
दास कहैं लाड़िली रंगीली राधिका जी हेर, हेर हेर आलिन के नैन लै सिराये हैं।
जेहर निहारे जन रीझत सकल तेरी, जे हर चरन कीने जे हर रिझाये हैं॥

(५४४)

रची रस सार करतार री रँगीली राधे, आनन निहार ससी सरद लजाये हैं॥
हँसन दसन गत चंचला डसन कल, चलन अदां की तें गयंद सिर नाये हैं॥
दास कहैं तेरे अंग अंग की निकाई आगे, गिरा गिरिजा सी दासी रती तननाये हैं।
जेहर निहार जन रीझत सकल तेरी, जेहर चरन कीने जे हर रिझाये हैं॥

* जघन वर्णन *

(५४५)

चलन गयंद की लजाई चाल हाल कटि, केहरी ते छीन लचकीली री घनेरी हैं।
कंज कलिका सी खासी दसन कतार राधे, जलज करी हू ह्वै रहीं री हेर चेरी हैं॥
दास कहें एरी ये सजीली घांघरे से घिरीं, टारत न दृष्टि छैल ताछिन तें हेर हैं।
कीने नद नन्दन अधीन रसलीन आली, चीकनी चटकदार जंघें यह तेरी हैं॥

(५४६)

राजत सजीली करी गात तें टरीली चट-कीली ये रँगीलो करता नें रच दीनी हैं।
रति रंग छाकी सजें दीरघ अदां की नेंक, नन्दलाल ताको ताकी दृष्टि जिन छिनी हैं॥
दास कहैं ताछिन तें धीर न धरानी छिन, छिन हहरात हित हेरन अधीनी हैं।
कीनी हैं सरस चतुराई चित चाही इन, जरीदार घांघरे तें जंघें ढांक लीनी हैं॥

(५४७)

रची करतार ये सिंगार रस सार राजें, कांति की अगार गत करी की हरी की है।
छैल नन्दलाल जी के चित की हरैया दीह, जालन गिरैया री कहा ये जंत्र सीकी है॥
दास कहैं अचल निहारै दृग टारैं नाहिं, छिनक निहारे दृष्टि ऐसी ढीठ की की है।
सरस सजीली सार साँचे सी ढरीली आली, कैसी लचकीली लंक कीरति लली की है॥

(५४८)

खेलत ललन संग खेल रसरेल अति, लचलच जात चित तनक न संक है।
चीर जरीदारन तें हीरन के हारन तें, तीजें केस धारन तें ऐसी चित रंक है॥
दास कहैं याकी कहा कहिये निकाई अली, अति ही सजीली राजै चार की सी अङ्क है।
रची करतार राधे साँचे की सी ढार राजैं, कांति की अगार कैसी छीन करी लंक है॥

(५४९)

जलज की नालन तें राजें सटकारी दीह, सरस सजीली ये करत झलझल हैं।
कंकन कनक छन हीरन के साजत हैं, काँति के अगार छटा ससि ही को दल हैं॥
दास कहैं वैसी आरसी है करजन छला, हेर हेर अली दृष्टि छिनक न टल हैं।
कीजिये दरस चित हरष करैया लाल, कैसे लाल लाल लाड़िली के करतल हैं॥

* हार वर्णन *

(५५०)

लाई अली कानन तें केतकी कनेर जुही, चांदनी चटकदार कली रस सार हैं।
नरगिस गेंदा गेंदी हार री सिंगार साज, सरस सजीले अति कांति के अगार हैं॥
दास कहैं रचत रँगीली चित चातुरी तें, नील सेत लाल ले लगाये एक ढार हैं।
दरस हरष लाई लाड़िली लड़ैतीजी के, लालन ललकि कें सजाये कंठ हार हैं॥

* मुख वर्णन *

(५५१)

कनक लता सी लचकत लंक दीह खासी, कांति की घटा सी करता नें रचौ छन्द है।
नेह रंग छाकी जाकी अँखियां अदां की सदां, इनही के हेरत रिझाने नँदनन्द है॥
दास कहैं रति की गिरा की हैं न गिरिजा की, सरस निकाई आली आनँद की कन्द है।
राधिका रँगीली जी के आनन के आगें दैया, दीन है री देख देख राका निसि चन्द है॥

* अधर वर्णन *

(५५२)

रसिक रसीलीजी के आनन के आगे आज, सरद कलाधर की कान्ति दीह डर हैं।
कारे रतनारे नैन चंचल हैं अनियारे, खंजन जलज अहिपारी सर सर हैं ॥
दसन गसन दरसन विहँसन आगें, दास कहैं चंचला चटक गतिहर हैं।
देख नन्दलाल दृग कीजिए निहाल हाल, कैसे लाल लाल लली राधे के अधर हैं ॥

* दशन वर्णन *

(५५३)

काके हैं झलकदार आली देखिये से दीह, हेर हेर इनें चंचला के गन थाके हैं।
थाके हैं अनंत जस गाय गाय नेत नेत, कंज की कलीन के दरैया छैल ताके हैं ॥
ताके हैं न ऐसे हेली जलज लरी के दल, दास कहैं सदां चित हरत लला के हैं।
लाके हैं दिखाय दीजै हैं न दश चार देस, सरस सजीले री दशन राधिके के हैं ॥

(५५४)

ऐंडदार आनन तें झलकत रैन दिना, जलज लरीन की निकाई के डसन हैं।
कंज की कलीन तें रंगीले राजै दास कहैं, जिनकी झलक आगें सरद ससि न हैं ॥
रसना रसीली रस कहत हँसत चित, लाल की रिझैया दीह हीरा सी हसन हैं।
देख देख आली नैंन कीजिये निहाली कैसे, सरस सजीले सेत राधे के दसन हैं ॥

* नासिका वर्णन *

(५५५)

राधिका रंगीलीजी के अंगन निकाई आगें, सारदा सती सीरी रती सी हेर लाजैं हैं।
रची करतार रस सागर की सार दीह, नन्दलाल जी के हित ही के दैन काजैं हैं ॥
दास कहैं हीरन जटित कल कंचन की, जलज लरी की नीको नासा नथ साजैं हैं।
कै ये कीर आनन निशाकर की रक्षा हेत, ऐंडदार आज आली चक्र लियें राजैं हैं ॥

* नेत्र वर्णन *

(५५६)

आछे कजरारे रतनारे ही सजीले दीह, हिरन के हारे खाली एक रंग कारे हैं।
ह रंग छाके सजैं सजल अदां के री, अनंग सर थाके री सरस अनियारे हैं ॥
दास कहैं लाल नन्दलाल के रिझैया अलि, गन के सहैया सिर ताज री निहारें हैं।
कैसे ये सजीले नैंन देख री लड़ैतीजी के, जहाँ जहां झांके तहां जीत जीत डारे हैं ॥

* लट वर्णन *

(५५७)

रची करतार कारीगर नें चलाकी कर, कांति दस चार देस देस की सकेरी हैं।
तेरे अंग अंगन की सरस निकाई राधे, हेर हेर आलिन की करी दृष्टि चेरी हैं ॥
आनन निशाकर तें खेलत हैं दास कहैं, नागिन तें सरस सजीली दीह हेरी हैं।
चीकनी चटकदार लहर लहर करैं, कारी सटकारी री रँगीली लट तेरी हैं ॥

* ताटंक वर्णन *

(५५८)

देख देख आली चाल कीरति लड़ैंती जी की, हंस हहराने री गयंदन के संक हैं।
कंचन से अंग रंग केसर के दंग दिये, केहरि लजाय लंक चार केसे अङ्क हैं॥
जलज लरी तें खरी दशन कतार राजें, कंज कलिका की ताकी निकाई के टंक हैं।
कंचन जटित दास हीरा नग जालन के, जगत दिनंत तें ये करत ताटंक हैं॥

* आनन वर्णन *

(५५९)

कानन निहार आई रसिक रसीले संग, आनन अनंग की तरंग दीह छलकैं।
धाई गेह जलज लचकती जलज नैनी, जलज की सेजन चढ़ी है हल हलकैं॥
राजें गलहार नीके जलज कलीन ही के, एते साज राह की गई न खेद टलकैं।
दास कहैं आली देख आनन लड़ैंती जू के, कैसे ये सजीले सेत सेदकन झलकैं॥

* केश वर्णन *

(५६०)

सरस सजीले नील गगन तें चटकीले, असित जलज गन कांति गार हारे हैं।
लहर लहर कर एडिन ते आय लागें, अलिन के हेर दल कानन सिधारे हैं॥
दास कहैं दरसत चित के हरैया नेह, जालन गिरैया करता नें रचि डारे हैं।
छिनक न टारे दृग जब तें निहारे लाल, लाड़िली रँगीलीजी के केस सटकारे हैं॥

(५६१)

सहज चरन धरें धरनि लड़ैंती तहां, लाल लाल रंग के कलश से ढराते हैं।
चलन अदां की ते गयंद गस खाते लख, छीन कटि केहरी से कानन सिधाते हैं॥
दास कहैं आली आगें आनन रंगीली जी के, अति चटकीले ससि सरद लजाते हैं।
हिये हरषाते हैं निहार नन्दलाल जाल, सरस सजीले सिर केस लहराते हैं॥

(५६२)

कारे सटकारे केस दीन किये नाग देस, आनन नें दरी हैं निकाई सर्द चन्द की।
तीखे रतनारे नैन चंचल चलाक त्यारे, खंजन जलज कांति छली है अलिंद की॥
दास कहैं लाड़िली रँगीली अरी राधिके जी, दृष्ट्र डूस तेरी ने हरी है नदनन्द की।
लंक की लचाई नें नसाई रास सिंघन की, चलन अदां की ऐसी टाली है गयंद की॥

(५६३)

निकस निकुंजन तें आई छबि पुंज प्यारी, धीरें सुकुमारी जू चरन मग देत हैं।
ताही छिन वन भूमि लोहित बरन भई, लाल बलबीर बढ़्यौ अति उर हेत हैं॥
लचक अचक भूम छबि सौं छबीलौ छैल, निरख निरख हरषत कर लेत हैं।
सुखमा कौ खेत है कि सौरभ निकेत मेरौ, जीवन निकेत राधा रानी पग रेत हैं॥

(६४)

नवल सखीन संग नवल किशोरी आई, बिपिन निहारन कौं बढ़ौ उन हेत हैं।
भूषन मनीन नव अङ्ग अङ्ग भूषित हैं, जारीदार चादर सुहाई सिर सेत हैं॥
जित जित चलत करत मग मग लाल लाल, लाल बलबीर बर उपमा अचेत हैं।
सुखमा कौ खेत हैं कि सुख कौ संकेत मेरौ, जीवन निकेत राधारानी पग रेत हैं॥

(५६५)

सरस्वती धार हैं कि हींगुर की छार हैं, कि सेंदुर बगार हैं सरस दुति देत हैं।
मीनकेत बाग हैं प्रगट अनुराग मई, मूंगा मनि मानिक की उपमा अचेत हैं ॥
लाल बलबीर नव पल्लव रसाल हैं कि, लोहित गुलाल हैं अमित उर हेत हैं।
सुखमा को खेत हैं कि सौरभ सकेत मेरौ, जीवन निकेत राधारानी पग रेत हैं ॥

(५६६)

लैकें दधि नारी आई चन्द सी उजारी देख, कही बनवारी कितै जात रूप बाँकरी।
कनक लता सी चपला सी काम अबला सी, घूँघट उघार सुकमार नेंक झांक री ॥
लाल बलबीर आवौ दधिकौं पिवावौ तन, ताप कौं नसावौ क्यों रहो हौ मुख ढांक री।
कांकरी चलाई लाल मन्द मुसिक्याई बाल, सांकरी गली में कछु हां करी न ना करी ॥

(५६७)

आवौ बैठी जावौ सुसतातौ सुकमारी बधु, रम्भा मैंनका तें नौंनी जोबन अदाँ करी।
सीस लै दहैड़ी ऐंड़ी ऐंड़ी चली आई नार, देख धूप ही में श्याम पीतपट छाँ करी ॥
लाल बलबीर जू कौं दीजै दधि दान आन, कीजै ना सयान जू सुजान छैल बाँकरी।
काँकरी चलाई लाल मंद मुसिक्याई बाल, साँकरी गली में कछू हाँ करी न ना करी ॥

* कपड़ा बन्ध *

(५६८)

आनँद की कन्द कियें झालर सज री रीत, अनि लस रही ऐसी ठनगन ठाई तें।
सांल री न दीजै अङ्ग जीतें धन कहा लई, गाढ़ा लै ससक नारी कीजै रस जाई तें ॥
दास कहैं पाराचित राख नारि जाली गति, गाछ तर ररें आछी टकना कराई तें।
दिल है दर्याई खासा अचकन छाँड़ दीजै, गदंरी न कीजै जस लहैरिया कन्हाई तें ॥

* कवि नर्म बन्ध *

(५६९)

श्रीधर सिरताज सारंगधर सनेही आली, सीतल हैं सन्त सदा नन्द हरद्वाल हैं।
काशीनाथ संकर से हरिदास टेर कहैं, जगदीश जगन्नाथ करत निहाल हैं ॥
दास गदाधर गिरधारी तें हठीली रिस, कीजै जिन रसलीन रस कर साल हैं।
चन्द सखी निंद चल छैल तक रस राज, कीजै ना जलील री अधीर नन्दलाल हैं ॥

(५७०)

आनँदघन ईस हैं आगन्त तेरे दर्शन कौं, कीजै ना अनाथ दै अनन्द रिस टारी त।
नेही नैन नागर हैं नायक नरेस छैल, रसखान रसिया ये ललित कटारी ॥
दास कलाधर केहरी की गति छीन हरी, दयानिधि दीन हाल ललन निहारी तैं।
धीर धर सैन चैन कीजै रस रंग री तें, नागरी अनन्त रस लीजै गिरधारी तं ॥

* वृष वन्ध *

(५७१)

किस मिस कान नूं अकेला तैंनू चड्डि दित्ता, बनाँ सथ्थ अमली अनारन क्यौं हेंदी है।
कीती क्या असोख प्रीती खिरनो लगां दी नीम, जायफल लेंदी हैं न ताल कर देंदी हैं ॥
लाल बलबीर तू न खट्टा कर दित्ता मन, मिट्ठा क्यों न बोल दी है चीणता गहेंदी है।
बेर बेर केंदी बरसौं हैं न रिसेंदी कद्दी, अमली रहैंदी बिहँसी नैंना लगेंदी है ॥

(५७२)

काबुल करीले मान पूर तुमी येई येगो, कान पुर येइ कान कासिक करी ये चे।
कोथाय गया पौ लैये येई अपिराग करी, अकौल कोथाय तुमी हसार खिजीये चे॥
लाल बलबीर उर छौ एकौरी आपनुनाई, आगुजी एतेर मैन पूरीर सौतैये चे।
सूरत दिखै ये कौल कोरी जे पुराई नाई, उदैपुर दिल्ली मुखे राधार डाकीये चे॥

* लट वर्णन *

(५७३)

फूले बरिजात को गहन मकरन्द वृन्द, सिमट सुहावनी अलिन्द पंक्ति धाई हैं।
कंधौं कुल त्याग आई पन्नगी कुमारी प्यारी, सरद ससी ते अमी पीवन कौं आई हैं॥
लाल बलबीर बाढ़ी सुखमा अपार राधे, हेर हेर प्रीतम की अँखियाँ सिराईं हैं।
वदन सलोल में कपोल गोल गोल नीकौ, तिन पै सुजान किधौं लट लटकाई हैं॥

(५७४)

एक ही हरी तें आज निरखें अनेक हरी, सरस सजोले लालसा हैं दृग हेरे की।
हर की ररन देख देख चित चैन जाके, जाकी हैं कहन नीकी गरज घनेरे की॥
दास कहैं कीजिये खियास हित आस स्वास, लीजिये अरज धार येती चित चेरे की।
अधर कहा है याका अर्थ कर देना नहीं, दंगल दलील छाँड़ राह लीजै डेरे की॥

(५७५)

उठी परयंक तें प्रभात होत इन्दु मुखी, मुकर लै हाथ गात निरखी उम्हाये तें।
सुनौ ललितादि बात सिथिल है मेरौ गात, गत श्रम भये बिन सेवन कराये तें॥
जाबक न लागो पाय अचरज लखौ धाय, दरसैं विशाल लाल सहज सुभाये तें।
खात हुती बीरी नित कबहू न ऐसें लखे, कुन्द सम कुन्दन भये हैं आज काये तें॥

(५७६)

मान कर पौढ़ी परयंक पै नवेली आय, प्रीतम सुजान जू सों अति ही रिस्याई तें।
आये मनमोहन छबीली छबि जोहन कौं, चापे जू चरन बर चित की उम्हाई तें॥
लाल बलबीर उन जावक दियो विशाल, विनती सुनाई बहु रसना सिहाई तें।
बीरी लै पवाई निज करलें बनाई आज, दरसैं सहस ये विशाल लाल याई तें॥

(५७७)

जाओगी न भूल अब आली यमुना के तीर, लाल बलबीर ठाड़े लियें सखा सैनी कौं।
ढपही बजावैं गावैं राग लाज बोरी होरी, अति ही सिहावैं नारि देख मृगनैनी कौं॥
भर पिचकारी नीर केसरिया रंग वारी, छांड़त बिहारी चित अधिक सिहैनी कौं।
सिख तें भिगैनी उर धीरज धरैनी धाय, मसकैं उरोज छैल कंचुकी तनैनी कौं॥

* नैन वर्णन *

(५७८)

कंज सम चरन सुचाल गजराज की सी, केहरि सी लंक सर नाभी दरसाती है।
मखमली उदर उरोज सुभ श्री फल से, बिंब से अधर दन्त कुन्दकली पाँती हैं॥
भनै बलबीर मुख ससि सौ प्रकाश बाल, चलिये गुपाल बैठी सेज अरसाती है।
भृकुटी कमान तान मारत है सैन बान, नैनन की नोकैं झोंकैं फोंकैं कर जाती है॥

(५७६)

देखी एक नारी सुकमारी बनवारी जाके, सीस धरी भारी चीर धारे गुजराती है।
घाँघरौ घुमाती बर सोहै सखीआन साथ, हेरत हँसत मुसिक्याती इठलाती है॥
भनै बलबीर पनियाँ को चली जाती जाको, अंग की सुगन्ध व्रज वीथिन भराती है।
भृकुटी कमान तान मारत है बान जाके, नैंनन की नोंकैं झोंकैं फोंकैं कर जाती है॥

(५८०)

जलज लजात मृग मीन पछितात जात, खञ्जन खिजात अकुलात भौंर काले हैं।
रूप के जहाज सुख साज के समाज राज, रहित निसंक बंक मद मतवाले हैं॥
रस में रसीले लखे जस में जसीले छैल, लाल बलबीर मनमोहन निराले हैं।
काजर से काले सेत संख से उजाले तेरे, नैंन मतवाले लाले सुधा के से प्याले हैं॥

(५८१)

प्रेम भरे प्रीत भरे नीत भरे रीत भरे, जीत भरे भौंरन तें देखियत कारे हैं।
रस भरे जस भरे नेह भरे नीर भरे, नोंक भरे झोंक भरे काम सर वारे हैं॥
मैंन भरे सैन भरे चैन बिन बैन भरे, लाल बलबीर मधु भरे मतवारे हैं।
स्यान भरे ग्यान भरे मान बान आन भरे, लोभ भरे लाग भरे लोचन तिहारे हैं॥

(५८२)

ओढ़े सीस सारी जरतारी की किनारीदार, कानन की आभा आभा इन्दु की निपाती है।
करन तरौना जगमगत जराऊ वारे, कारी सटकारी लट लहर लहराती है॥
भनैं बलबीर अङ्ग कंचन सौ झलमलात, केसर की खौर भाल हू पै दरसाती है।
भृकुटी कमान तान मारत है मैन बान, नैनन की नोंकैं झोंकैं फोकैं कर जाती है॥

(५८३)

जाती है ढरक तहाँ भूमि पै महावर सी, मन्द मन्द प्यारी जितें तितें कौं सिधाती है।
साती है न कोऊ मदमाती चली आती लाल, रावरेई माधुरे सुरन जस गाती है॥
पाती हैं न चंप जाके अङ्ग की निकाई कहूँ, प्रभा बलबीर कलधौत को बिलाती है।
झूम झूम जाती छबि बरनी न जाती जाके, नैनन की नोकैं झोंकैं फोंकैं कर जाती है॥

(५८४)

जाकी बानी मन्द मन्द सुने तें अनन्द होत, बानी फेर बीन हू की नेंक ना सुहाती है।
जाके सुख चन्द कौं निहारत चकोर वृन्द, निरख सिहाती और चन्द को नचाती है॥
भनैं बलबीर जाके लंक की लचक देख, हिय में हचक गति सिंघ की लजाती है।
बरनी न जाती छबि देख हरषाती हिये, नैनन की नोंकैं झोंकैं फोंकैं कर जाती है॥

(५८५)

देखी एक बाला नन्दलाला खड़ी चित्रशाला, राजै कान बाला सीस सारी गुजराती है।
मोती गुहि बाल बाल दीपति बिशाल भाल, नासिका सुहौनी नथ झूम झोटा खाती है॥
गेंदा से गुलाबी गाल बीरी मुख चाबे लाल, दसन दमक दुति दामिनी दुराती है।
मन्द मुसकाती छबि बरनी न जाती, जाके नैनन की नोंकैं झोंकैं फोंकैं कर जाती है॥

(५८६)

देखी सुख सौनी गज गौनी मैं सलौनी बाल, चारौं ओर भौंरन की भीर भननाती है।
झूमत झुकत जित जित कौं सिधाती मानौ, तितै व्रज वोथिन गुलाब छिरकाती है॥
लाल बलबीर बिधि बिश्व की सुगन्धताई, धरी है सकेल मेल मन कौं भुराती है।
मन्द मुसिकाती छबि बरनी न जाती याके, नैनन की नोकैं झोंकैं फोंकैं कर जाती है॥

(५८७)

आज जलकेलि में विलोकी नन्दलाल बाल, कौतुक नवीन परवीन दिखलाती है।
उछरि उछरि मार चूबक नवेली नारि, मलत उरोज तन हेर हरषाती है॥
लाल बलबीर मधुमाती अंगराती बेनी, पीठ पै लुरत नागिनी सी लहराती है।
मंद मुसिक्याती छबि बरनी न जाती याके, नैंनन की नोकैं भोंकैं फोंकैं कर जाती है॥

(५८८)

आज ते न जावौं दधि लैंकें मथुरा कौं दैया, जैसी कछू बीती तैसी जानत हौं मन में।
आये दल निकर गरज कुंज कुंजन तें, देखत निपट थहराय गई तन में॥
लाल बलबीर उन मटकी झटकि लई, पटकी धरनि नख मारे हैं बसन में।
हार तोर डारे छोर डारे कंचुकी के बन्द, बाँदर विकट बास करैं वृन्दावन में॥

(५८९)

लैंकें दधि जाय ताय रोकत हैं बीच ही तें, खेंचत हैं बख बार डारै घुरकन में।
कान्ह के हिलाये हैं खिलाये बर माखन के, टलैं ना टलाये घेरा देत हैं सघन में॥
लाल बलबीर ऐसे बाँके रनधीर करैं, छिन में अधीर बटवारे तन तन में।
मैं तो खिसियाय धाय आई भग भागन तें, बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(५९०)

लूटैं बाट बारे ते हठीले बलवारे बाँधे, तुपक दुधारे से अधीर होंयँ मन में।
धामैं धाम धाम खायँ बिंजन बिनाई दाम, निसि दिन आठौं जाम हर्षित ह्वै तन में॥
लाल बलबीर पान करैं जमुना कौ नीर, करत किलोल भूमि भूमि कैं तरन में।
मोहन के प्यारे गढ़ लंक के जितारे ये ही, बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(५९१)

लै लै वस्त्र झारी चढ़ जात हैं अटारी तिनें, टेरैं ब्रजनारी दै दै अन्न कुल्लरन में।
खायँ ढार ढारी जुरैं सैना साथ बारी सारे, करत अपारी हरषित होंयँ तन में॥
लाल बलबीर बिहरत बाग बारी कूद, फुलवारी डारी तोड़ डारत धरन में।
रसिक बिहारी छैल जू के हितकारी भारी, बांदर बिकट करैं बास वृन्दावन में॥

(५९२)

भोगत हैं राज सुखसाज हद्द बाँट राखी, आवत न दूजैं आवैं क्रोध करैं मन में।
घुरकि घुरकि धमकावत हैं नाना विधि, खैंच खैंच पुंज कर खौंटत हैं तन में॥
लाल बलबीर बीर बाँके रनधीर ऐसे, बिटप अडिगन हलावैं हरषन में।
पावैं फल फूत्र रसमूल फूल फूल केते, बाँदर बिकट करैं बास वृन्दावन में॥

(५९३)

बाँध बाँध गोल बीर करत किलोल राजें, बल में अतोल हरषात मन मन में।
जुरें कहूँ आय जुद्ध करैं धाय धाय केते छलन दिखावैं क्रोध भरैं तन मन में॥
लाल बलबीर टूटे टाँग कर पूँछ कान, लागत भयानक ये घूमैं कँदरन में।
भरे धीरपन में न लावैं शंक मन में सु, बाँदर विकट बास करैं वृन्दावन में॥

(५९४)

आगैं आगैं जान लेत पाछैं नारि बच्चन कौं, घुरकि घुरकि कूदि कूदि लरैं रन में।
टूटे कर पूँछ कान मानत न नेकौं हानि, धावत सुजान क्रोध भरे तन तन में॥
लाल बलबीर बीर देखत लजामैं इन्हैं, जायँ मुख मोर मोर संका खाय मन में।
राधा महारानी जू की पद रज गर्व भरे, बाँदर बिकट बास करैं वृन्दावन में॥

(५९५)

लै कौर आमार घटी गाछइ पलैये गेले, एमोन तुमा के कि गोविन्द बले दीये चे।
काँदी काँदी मरि आमी दुई हात जोड़े कोरी, दया कर ब्रजबासी तुमार देसे रहीये चे॥
लाल बलबीर तुमी मौने कोथा बूजो नाई, छाँड़ौ नाई कैनों तुमी कौथा जि सिखी ये चे।
लीए लेओ चाल डाल बूंट भाजा आर किछू, सेई सेई भालो लागे तेई आमी दीये चे॥

* वन विहार वर्णन *

(५९६)

ठाड़ी फुलवारी सुकुमारी रूप उजियारी, गहे द्रुम डारी नैन प्रेम मद भीने हैं।
मन्द मुसिक्यावैं छैल नाचैं बाँसुरी बजावै, भावन बताय राग गावत रँगीने हैं॥
लाल बलबीर छबि कहत बनै न आली, चुबक गहत ललचात परबीने हैं।
रीझि कैं किशोरी चित चोरी गोरी भोरी जू ने, गहिकै सुजान कान्ह कण्ठ लाय लीने हैं॥

वन-विहार समै (५९७)

देख सखी बिपिन निहारन लड़ैती लाल, लटकि लटिक छैल दोऊ चले आवैं हैं।
प्रेम मधुमाते भाते मन्द मुसिक्याते आज, अधिक रसिले राग मीठें सुर गावैं हैं॥
लाल बलबीर दासी द्रुमन लतान माँहि, फरे फल मधुर अनेक दरसावैं हैं।
भूमि भूमि आवैं तोरि लेत मन मोद ही सों, कुमर किशोरी लाल बाँटि बाँटि पावैं हैं॥

(५९८)

प्यारी सुकमारी संग रसिक बिहारी बर, निकसि निकुंजन तें फूल बन आये हैं।
अचक अचक धरैं चरन लचक भूमि, भूमि आये द्रुम फूल सेवन जनाये हैं॥
हरस हरस कर परस परस सबै, श्रम मान कृष्णअली भवन सिधाये हैं।
बैठे मसनन्द पै बिलन्द मुखचन्द दोऊ, लाल बलबीर दासी पग सहराये हैं॥

(५९९)

पावत हैं फूल रस मूल फल फूल दोऊ, सुखमा अतूल हेर हेर हरषावैं हैं।
कोऊ लै नरंगी रस रंगी अति चाहन सों, कोऊ शुभ बेस साज सपरी पवावैं हैं॥
लाल बलबीर दासी निरखि सिरावैं नैन, निसरैं न बैन मन्द मन्द मुसिक्यावैं हैं।
कोऊ सिर नावैं कोऊ चरन सिरावैं बन-राज की निकुञ्ज पिय प्यारी कौं लड़ावैं हैं॥

(६००)

देख चल आली री उताली छबि निरआली, बेर बेर फेर ऐसो समौं हू न पावैं हैं।
बैठे कुरसी पै दीपैं रत भूप रूप दोऊ, केती सखी आय पद सीस कौं नवावैं हैं॥
केती कर जोरैं केती सीस चौंर ढोरैं तहाँ, केती परबीन लै लै बीन कौं बजावैं हैं।
श्रीबन लतान की छटान कौं निहारैं छैल, लाल बलबीर दासी बीरी लै पवावैं हैं॥

(६०१)

खेलत हैं गेंदन सों जुगल छबीले छैल, दौरि दौरि भूमि गहि गहक चलावैं हैं।
कारी पीरी लाल लीली शुभग अनेक रंग, धावत समूह मनौं खंजन उड़ावैं हैं॥
हों हो ललितादि मुसिक्यात कहैं छाँड़ो अजू, कोऊ कहैं अली लै लै प्यारी कौं गहावैं हैं।
श्रीवन सुहावने को कुंज सुख पुंजन में, लाल बलबीर दासी हेर सचु पावैं हैं॥

(६०२)

नवल निकुंजन तें नवल छबीले आली, विपिन विहारन कौं आये चित चाव सों।
रुनक झुनक धीरे चरन धरत भूमि, नूपुर रसीले धुन बाजत उछाव सों॥
एक भुज अंसन पै एक एक ही सों दोऊ, आँगुरी हलावैं मुसिक्यावैं हाव भाव सों।
लाल बलबीर दासी हेर छबि सुखराशी, आरती उतारैं सबै निज निज दाव सों॥

(६०३)

देख री सहेली अलबेली अलबेले अंग, अङ्गन तें छवि के छता से आज बरसैं।
दाहीं भुज प्रीतम के अंसन सुहायमान, बाम कर ही सों लतिकान ही कों परसैं॥
जोई भूम आवत है पद पदमन पर, पद मन सोई वंदना कौं करैं सरसैं।
लाल बलबीर बनराज के विलासी दोऊ, दोऊ गरबीले छैल हेर हेर हरषैं॥

(६०४)

खेलत बिपिन नव नवल छबीले आज, प्यारी छिटकाय गेंद करहीं सों दीनी हैं।
छूटि कैं रँगीली भूमि भौंरा सी फिरन लागी, छैल ललचाय दौर हिदैं लाय लीनी हैं॥
लाल बलबीर दासी हेर सुखरासी अंस, धार भुज मंद मुसिक्यात रंग भीनी हैं।
कुमरकिशोर लाल कुमरि किशोरी गोरी, भोरी चितचोरी जू कौं कंठ लाय लीनी हैं॥

* पद *

(६०५)

यह छबि टरत न उर तें टारी।
नवल कुंज में राजत पिय सँग श्री वृषभान कुमारी॥
मंडित बदन गुलाल लाल सों सुखमा बढ़ी अपारी।
चरन टहल में राखौ स्वामिनि दासी मोहि बिचारी॥

* होरी के कवित्त *

(६०६)

केसरिया हौजन पै मौज सों मचो है फाग, मंजुल गुलाबजल राखे हैं अतर घोर।
कंचन पिचक्क भर घालैं छैल प्यारी ओर, प्यारी मुसिक्याय छांड़ै रसिक विहारी ओर॥
भये सरबोर अंग अंगन उमंग भरे, रंग मुख पौंछ पौंछ छिरकैं बहुत जोर।
सुखमा अथोर उठै प्रेम की हिलोर हेर, लाल बलबीर दासी डारैं तृन तोर तोर॥

(६०७)

दै दै गलबाहीं छैल नाचत उमंग भरे, लचक लचक धरैं चरन धरन ओर।
भीजे तन मन प्रेम केसर गुलाल कीच, फटिक सरोवर में न्हात नीर कौं झकोर॥
लाल बलबीर दासी अङ्गन अँगोछ वस्त्र,-भूषन सजावैं रुचि बीरी देंई कई जोर।
रूप कौं निहारैं प्रान वारैं आरती उतारैं, दोऊ मुख चन्द की सबै अली भईं चकोर॥

(६०८)

नवल निकुंजन में खेलत रँगीले फाग, भरैं पिचकारी धार चलै रंग भीनीं हैं।
मन्द मुसिक्यावें गावैं जुगल छबीले छैल, छबि बलबीर दासी लसत प्रबीनी हैं॥
प्यारी लै अबीर मुठी घालत बिहारीजू पै, रसिक बिहारी छाँड़ै प्यारी पै रँगीनी हैं।
पी मुख रसीली लै गुलाल कीच मींज दीनी, पिय अनुराय प्यारी अंक भर लीनी हैं॥

(६०६)

फटिक मनीन के भरे हैं कमनीय हौज, अमल सुजल तामें राखे हैं सुरंग घोर।
खेलत रँगीले फाग दोऊ अनुराग भरे, बरसत रंग अंग होत ना अथोर बोर॥
लाल बलबीर दासी छबि सों छबीले छैल, छलकर घालैं घात रूप उजियारी ओर।
प्यारी सुकमारी रंग रसिकबिहारी जू पै, छाँड़ै पिचकारी लाल जावैं मुख मोर मोर॥

(६१०)

खेलत नवल फाग नवल निकुंजन में, नवल सखीन कर नव साज लीने हैं।
अमल अबीर नीर केशर कलस भरे, भर भर छिरकैं छबीले रंग भीने हैं॥
लाल बलबीर दासी बाढ़त उमंग हेर, दोऊ रसलीन हैं प्रवीन हैं नवीने हैं।
प्यारी सुकमारी पै चलावैं पिचकारी लाल, लाल मुख लाड़िली गुलाल मल दीने हैं॥

(६११)

श्रीवन निकुंजन में खेलत जुगल फाग, भरी अनुराग संग सखी परवीनी हैं।
अबिर गुलाल लै उड़ावैं गावैं हरषावैं, कुमरि रिझावैं तान गावत रँगीनी हैं॥
लाल बलबीर नीर घालैं पिचकारी प्यारी, प्यारे जू की एकौ घात चलन न दीनी हैं।
हरि रस लीन अली आगैं करिकैं प्रबीन, दौरिकैं लड़ैती जू कौं अंक भरि लीनी हैं॥

(६१२)

लाड़िली लला के कर कंचन पिचक राजैं, केसरिया नीर लै चलावैं सुख सरसैं।
भरि भरि देत कृष्ण अली श्रीकिशोरी जू कौं, प्यारे की बचाय चोट मोर मुख हरसैं॥
थाल लैं गुलाल लाल उड़ावैं बिहारी जू पै, प्रीतम कमोरी गोरी ढारत ऊपर सैं।
लाल बलबीर दासी निरखि बिशाल ख्याल, दोउ मुखचन्द लाल लाल लाल दरसैं॥

(६१३)

मेल भुज अंसन पै आये हंस सुता तीर, दोऊ रनधीर प्रेम अंग अंग दरसैं।
तैर तैर न्हात मुसिक्यात अंगन मलात, छूटत गुलाल जल लाल रंग दरसैं॥
लाल बलबीर दासी निरख सिरावैं नैंन, होत उर चैन सुखमा अभंग दरसैं।
मानौं छबिसिंधु तें निकसि बिंब चंदभान, अरुन घटा में छैल दोऊ संग दरसैं॥

* डोल *

(६१४)

खेलत निकुंजन में जुगल छबीले फाग, भरे अनुराग अंग अंगन नवीने हैं।
कछु श्रम मान सुख दान रस खान आन, पल्लव नवीन डोल बैठे रंग भीने हैं॥
लाल बलबीर दासी लाल ललचाय उर, परसन झोटा देत दीरघ प्रबीने हैं।
झिझकि किशोरी चितचोरी गोरी भोरी जू ने, गहकि सुजान कान कंठ लाय लीने हैं॥

(६१५)

लटकि लटकि आये निकसि निकुंजन तें, दोऊ रस लीन दोऊ बिपिन दिखावैं हैं।
मेलि भुज अंसन पै ललन प्रसंसत हैं, मन्द मन्द छैल रस लीन सुर गावैं हैं॥
ठुमकि ठुमकि धरैं चरन लचकि भूमि, कोटि रति मैन रूप प्रेम कौं लजावैं हैं।
कृष्ण अली ठाड़ी पाछैं चौंर लै ढुरावैं छबि,-हेर बलबीर दासी हियैं हरसावैं हैं॥

* ग्रीष्म *

(६१६)

कोमल नवीन पदमन की रची है कुंज, झूमर हैं झब्बा झालरन में निवारे हैं।
कुमर किशोर संग कुमर किशोरी तामें, राजत छबीले आज रूप उजियारे हैं॥
सीतल गुलाब जल नहरें भरी हैं खरी, परदे उसीर उड़े सौरभ अपारे हैं।
लाल बलबीर दासी देख छबि सुखरासी, चारों ओर छूटत फुवारे रंग वारे हैं॥

(६१७)

अतर गुलाबन सौं महकै महल मंजु, लता झुकि रहीं पुंज प्रभा दरसत हैं।
सीतल उसीर नीर चलत फुआरे भारे, लाल बलबीर लखि मोद सरसत हैं॥
तीर तीर बिहरें बिहारी प्यारी रंग भरे, करतल ही सौं धाय धार परसत हैं।
लागत झरत बूँद ऐसी छवि देत मनौं, प्रात अरविन्द ओस मोती बरसत हैं॥

(६१८)

आई एक कौतिक बिलोकि नव कुंजन में, कोटि रवि चन्द की प्रभा तें तन नीके हैं।
पौढ़ी परजंक पै नवेली अलबेली प्रिया, प्रीतम प्रवीन काज करत हँसी के हैं॥
लाल बलबीर छबि कहत बनै न आली, देख री उताली हाली बैन हित ही के हैं।
मैंन रति ही के लीये प्रेम मद रूप भूप, चाँपत चरन आज लाल लाड़िली के हैं॥

* दोल *

(६१९)

फूलन सिंगार साज आये फूल वनराज, सुखमा निहार बाढ़ी अंग अंग फूले हैं।
फूल रच्यौ डोल कृष्णअली नव पल्लवन, बैठे आजु गल बढ़ी सुखमा अतूले हैं॥
लाल बलबीर दासी झोटा देहिं हरें हरें, नीके सुर ररें राग प्रेम भरे झूले हैं।
सहर सहर चलें सीतल समीर पाछैं, फहर फहर उडैं अंगन दुकूले हैं॥

(६२०)

चलत फुहारे री गुलाब आब वारे भारे, झरन फुआर धार सहित सुगंध की।
गुलम लता हैं अंग पल्लव छता हैं खिले, सुमन अथाहैं धुंध छाई मकरन्द की॥
अतर सुतर कर बीजना ढुरावें अली, गावैं हैं रँगीली तान जुगल पसन्द की।
लाल बलबीर आली देख री उताली आज, मालती महल झाँकी राधिका गुबिन्द की॥

(६२१)

बैठे आ गुलाब के भवन में लड़ैती लाल, दिपत अमन्द छबि चंद तें उजाला सी।
भीजत हैं रीझत हैं दोऊ रसराज नीर, झरत फुहारन तें धार मेघमाला सी॥
बापी कूप सरिता सरोवर सलिल भरे, पैरें कलहंस बंस मंडली उताला सी।
लाल बलबीर दासी लै लै जुही चौंर ढारैं, ग्रीषम की बात आय लागै गात पाला सी॥

(६२२)

महल उसीर के विराजैं श्रीविहारी प्यारी, चादर फुआरे तें बिलन्द धार धामैं हैं।
मंजुल अमल नीर चलत समीर धीर, सहित सुबास खास चारौं दिशि छामैं हैं॥
लाल बलबीर दासी खासी सुखरासी लै लै, नूतन गुलाब सार अंग चरचामैं हैं।
झीने सुर गामैं मन मोद सरसामैं केती, फूल फूल फूलन के चौंर लै ढुरामैं हैं॥

(६२३)

फूलन सिगार सुख सार धार अङ्गन में, फूल फूल नाचें प्रिया प्रीतम मगन में।
फलकारी सारी बर सोहति है प्यारी जू के, प्रीतम बिहारी जू के पीतपट तन में॥
लाल बलबीर दासी खासी सुखरासी पासी, गावत सुधासी तान प्रीतम (की) परन में।
छिंछि छम छिंछि छम करत ढरत आवें, नूपुर ररत आवें कोमल पदन में॥

(६२४)

ठुमकि ठुमकि नाचें जुगल रसिकवर, छवि सों छवीले अंस अंस कर धरें हैं।
परम प्रवीन रसलीन हैं नवीन दोऊ, दोऊ सुर माधुरे रँगीन राग ररें हैं॥
लाल बलबीर मिलि नूपुर मँजीरा गाजें, पाछें ललितादि दासी चौंर सिर ढरें हैं।
मोद उर भरें चित हरें जित तित ढरें, तित पग लाली तें गुलाली छिति करें हैं॥

* साँझी के कवित्त *

(६२५)

लाईं फूल बीन सखी ललित लतान ही सौं, हिये भाव भरी मन परम प्रवीनीं हैं।
चारौं ओर जोर कोर रची हैं रंगीली वर, बूटा (?) कौन कौन पै दिपत रंग भीनौं हैं॥
लाल बलबीर छिप चलौ तौ दिखाऊँ तुम्हैं, साँझी में सुजान आज कैसो काम कीनो हैं।
देख मन छीनो मेरो मोद है नवीनों उर, सीस पं सजीलो राधा नाम लिख दीनों हैं॥

(६२६)

चुन चुन सुमन कलीन लै नवीन सखी, धरत सुधार उर अति अनुराग है।
झूम रहीं ललित तमालन की लोनी लता, छता भौंर गुंजें मोर डोलें ताहि जाग है॥
लाल बलबीर दासी जगत जवाहर सी, साँझी को सरस शुभ सर सौं सुहाग है।
देख चल चल आली सुखमा बिसाली आज, कीरति किशोरी जू के बन्यौ राधा बाग है॥

(६२७)

कारे केश कुटिल किलोल करैं कांधन लौं, कुंडल कनक कान कलित हलैया के।
कैसे कजरारे कोरवारे नैन के कटाक्ष, कामिनि करेजन कौं कतल करैया के॥
लाल बलबीर कंठ कोकिल सो गाजत है, कहत कवित्त कल काम के जगैया के।
करन सजैया कड़े काछनी कछैया देख, कोमल चरनकंज कुमर कन्हैया के॥

(६२८)

श्यामा सुकमारी प्राणप्यारी श्रीविहारीजी की, सुन्दरीसिरोमनि सकल लोक सिरताज।
बिपिन विहारिनी सकल हित कारिनी जू, प्रीत उर धारिनी रहे हैं जस वृन्द गाज॥
लाल बलबीर जन जानियै अधीर बीर, करुना निधान सुनिये जू टेर सुख साज।
ये ही मन आस राखो चेरी कर पास देखूँ, जुगल बिलास ह्वै निकुंज पुरी मेरी राज॥

(६२९)

देख चलि आली री निराली दुति आज बलि, राजत निकुंज छबिपुंज चहुँ ओर सों।
नवल किशोरी संग नवल किशोर वर, हँसि हँसि बातें करैं प्रेम की हिलोर सों॥
लाल बलबीर दासी लैकर बजावैं बीन, परम प्रवीन तान लै लै सुर जोर सों।
कंचन सिंगासन प्रकासन अनंत राजें, बैठे श्रीविहारी प्यारी मदन मरोर सों॥

(६३०)

कब वनरानी सुखदानी ये छबीली मोकौं, नवल निकुंजन में नाचबौ सिखावौगी।
भूलि भूलि जावौं गत लहन न पावौं तबै, हेर कर बोदर लै लंक पै लगावौगी॥
लाल बलबीर दासी त्यारी सुखरासी पासी, महामन्त्र ही कौं निज कर्न में जनावौगी।
हिये सचु पावौं मुसिक्यावौगी निहार माल, लैकर प्रसादी मोर कंठ पहिरावौगी॥

(६३१)

कीरति लली के संग कानन करत केलि, कुमर किशोर कान्ह रूप उजियारे जी।
काछनी जरी की कटि किंकिनी कनक गाजें, कौस्तुभ मनी के कर्न कुंडल सुढारे जी॥
लाल बलबीर कल कोमल किलोल करैं, काँधन लौं केस मनौं भूमैं नाग कारे जी।
कबधौं करौगे कृपा करुनानिधान आन, कुमर किशोरी मिल येहो नैन तारे जी॥

* छप्पय *

(६३२)

सजत शीश शुभ पेच रतनमय क्रीट विरज्जैं।
सुन्दर गोल कपोल श्रवन ताटंक सुसज्जैं॥
नासा भाल विलोकि दसन दामिनि दुति लज्जैं।
गल राजैं मोतीन माल (मधुर) पग नूपुर बज्जैं॥
ये बिनै लाल बलबीर की, कृपा दृष्टि कर कर श्रवन।
यहि छबि सों मो उर बसौ सदाँ छैल राधारमन॥

* होरी के कवित्त *

(६३३)

खेलत हैं फाग अनुराग सों लड़ेती लाल, गावैं मुख राग नोंनी मदन उछाल की।
केशर अतर घोर राखे हैं गुलाब नीर, भरि पिचकारी छाँड़ैं चलन उताल की॥
लाल बलबीर जू पै घालत अबीर मुठी, अति ही अनूठी बहु रंगन रसाल की।
ढँकी दुति माल छई कुंडल बिशाल लाली, मोर के मुकुट पर गरद गुलाल की॥

(६३४)

लीने संग गोरी वृषभान की किशोरी सुनी, साँकरी की खोरी धूम माची नन्दलाल की।
कनक कमोरी रंग केशरिया रंग घोरी, भरि चितचोरी चली मदन उछाल की॥
लाल बलबीर जू पै घालै रंग झोरी धुंध,–माची चहुँ ओरी छैल भूले सुध ख्याल की।
ढँकी दुति माल छई कुंडल बिशाल लाली, मोर के मुकुट पर गरद गुलाल की॥

(६३५)

भ्रमत गुपाल लाल बाँधि गोल ग्वाल बाल, भरि भरि पिचकारी छाँड़ैं धार नीर की।
भीजि गई गोरी छैल कहैं हँसि होरी होरी, खेलौ चितचोरी आय आगैं जू अहीर की॥
लाल बलबीर लाल मसकैं उरोज गाल, घालत गुलाल चित सकल अधीर की।
नीर की झरन अनुराग की भरन अङ्ग–अङ्गन दिपत ओप सरस अबीर की॥

नख सिख जुगल विनोद कौ, कियौ सतक संपूर।
रहौ लाल बलबीर सिर, कृष्ण अली पदधूर॥६३६॥

निधि बिधि ग्रह निसकरहि लह, सम्मत श्री सुखकन्द ।
माघ शुक्ल तिथि पर भ्रगुर, रच वृन्दावन चन्द ॥६३७॥

* फुटकर कवित्त (अभिसारिका) *

(६३८)

मोतिन के गजरे सजाये हार हीरन के, मनिन जटित गरें राजैं गुलीबन्द है।
ओढ़ि नील सारी बनवारी पै सिधारी प्यारी, रैंनि अंधयारी रूप दिपत अमन्द है॥
देखि देखि कहैं बलबीर सबै आपस में, सुरी है कि परी है छलावा है कि छन्द है।
परचौ प्रेमफन्द उर बढ़चौ है अनन्द वृन्द, इन्दुमा दमा है सुखमा है किधौं चंद है॥

(६३९)

कर जात सोलह सिंगारन बिहारी पास, अचक अचक मन्द मन्द पग धर जात।
धर जात जित कौं सरोज से मयंक मुखी, तित बन बीथिन मलिन्द वृन्द भर जात॥
भर जात सहज सुगंधन सों सर्व वन, तबै बलबीर चीर बदन सों ढर जात।
ढर जात सौतिन को गरब गुमान सबै, चंद हूं समेत चान्दनी को मन्द कर जात॥

(६४०)

छैल ब्रजचन्द सों मिलन सज चन्दमुखी, छोड़ कुल कान बान नेह घर-वर तें।
जोबन जवाहर की जंगी जेब जगमगात, जौहर जबर आन परचौ पंच सर तें॥
लाल बलबीर लौनी लफै लचकीली लंक, लोट लोट जायँ कच कुचन जबर तें।
हर तें लगौ है नेह डर ते डरै न बाल, भेंटन छबीली चली सामरे सुघर तें॥

(६४१)

कारी सीस सारी साज कारे ही सँवार बार, कारी भाल बेंदी सजी सुखमा अपारी है।
कारी बंक भृकुटी पिनाक सी दिपत वर, कारे नैन कज्जल की रेख लगै प्यारी है॥
लाल बलबीर कारी कंचुकी उरोजन पै, कारे घांघरे की लखी घूमन घुमारी है।
कारी निसि कारी घटा काम की सताई बाम, छोड़ि धाम काम कान्ह कारे पै सिधारी है॥

(६४२)

सारी सेत जरी सम्हारी सीस जारीदार, चारौं ओर चाँदने की किरन सम्हारी है।
सेत अंग अतर लगाय मोतिया कौ बेस, सेत घनसार घिस भाल खौर धारी है॥
सेत बलबीर अङ्ग मोतिन के आभूषण, सेत हार हीरन के आभा उजियारी है।
सेत चन्द्रमा की चाँदनी कौं लखि चन्दमुखी, मंद मंद प्यारे ब्रजचन्द पै सिधारी है॥

(६४३)

सुन्दर सुजान के मिलन कौं सरोजनैनी, सारी सीस धारी प्यारी जरी की सुहाई है।
जेवर जवाहर के जगमगात अङ्गन में, अङ्गन निहार हेम लतिका लजाई है॥
लाल बलबीर उठैं मदन तरंग अङ्ग, उरज उतंगन पै कंचुकी कसाई है।
चंद चाँदनी को कर मन्द मन्द चन्द्रमुखी, निज मुखचन्द की जुन्हाई में सिधाई है॥

(६४४)

छाती है सौरभ समूह व्रज वीथिन में, अचक अचक मन्द मन्द चली जाती है।
जाती है न आन तीय पास मन मोहन के, रूप की रँगीली छबि हेर हरसाती है॥
साती हैं न कोऊ मदमाती बलबीर आती, मैंन की मरोरन में भूम अँगराती है।
राती है अनूप सारी सीस आभा भई भारी, होत जात मग में बनात सी बिछाती है॥

(६४५)

साजे हैं सिंगार गरैं हीरन के हार चारु, झूमकी झमकि रही देखौ कान बाला तें।
चंचल चपल चटकीले नैन मैन भरे, छैल के रिझावन कौं एक एक झाला तें॥
लाल बलबीर जरी चीर अङ्ग जगमगात, करत उजेरी रैन जोबन उजाला तें।
मद भरी बाला रूप दिपत निराला आई, लैन मन माला छैल प्यारे नन्दलाला तें॥

* स्वप्न के कवित्त *

(६४६)

कोऊ ना निवारै पीर कासों जा कहैं री बीर, कुबिजा हमारौ प्रान प्यारौ बिरमायौ है।
ऐसी बद जाती काती छाती में लगाती नहिं, भेजत सँगाती नैन नीर ढरकायौ है॥
लाल बलबीर आयौ सुपन सुजान कान्ह, बाँसुरी बजाय गाय दरस दिखायौ है।
हँसि मुसिक्यायौ अङ्ग अङ्ग सों लगायौ जौलौं, तौलौं हीं बजर मारे गजर बजायौ है॥

(६४७)

काल सुपने में कान्ह बाँसुरी बजाई तामें, ऐसी तान गाई लै लै सब ही को नाम री।
गाम री बिसारचो औ बिसारचौ गृह काम सबै, गई बनराज में निहारी सुख धाम री॥
लाल बलबीर जौलौं मुरग बजरमारे, कूक कै नसाई नींद कियौ कूट काम री।
कितैं गई बाम कितैं वन कौ अराम देख, सूनी परी धाम कितैं गये घनश्याम री॥

(६४८)

सोवत में आज लख्यौ आनँद अनूप एक, दीनी परकम्मा सुपने में व्रज वन की।
बिधि के संजोग जाय पहुँच्यौ तहाँई जहाँ, हरि गुन गान करैं भीर रसिकन की॥
लाल बलबीर ब्रजराज जू के अङ्ग संग, बैठी सिरताज राज चौधेहू भुवन की।
आरत्ती उतारैं कोऊ सीस चौंर ढारैं बाँकी, सूरत निहारी प्यारी राधिका रमन की॥

(६४९)

सोवत में आयौ मनमोहन सुजान कान्ह, बाँसुरी कौ राग मेरे कानन भलौ गयौ।
जोलौं रूप माधुरी निहारन कौं आई तौलौं, जाने ब्रजराज प्यारौ कित में चलौ गयौ॥
लाल बलबीर चौंकि जाग परी चकित ह्वै, सांमरे बियोग नैन नीर तन लौ गयौ।
झूठौ सुख सुपने को पायौ ज्यौं न पायौ सखी, हाय हाय मेरौ मन नाहक छलौ गयौ॥

(६५०)

आये मथुरा कौं री बिसार मन मोहन जू, सुनिकैं भनक तन भई अति राजी री।
अङ्ग अङ्ग आभूषन धारे नव रतनन के, चूँदरी सुरंगी पचरंगी सीस साजी री॥
लाल बलबीर छबि निरखि सिहाने नैन, आयौ नहीं बैन पीर मैन भूप गाजी री।
अङ्क भर जौलौं परजंक सुख लैन लागे, तौलौं री निसंक नींद नैनन सों भाजी री॥

(६५१)

आज सपने में गई देखन सघन वन, सामरौ लखौ री सीस धारैं मोर पँखियाँ।
हरषि हरषि हँसि हँसि उर आय लाग्यौ, मैन उर जाग्यौ री उरोज कर रखियाँ॥
ता समै कौ सुख मुख बर्नत बनै न आली, लाल बलबीर प्रतिपाली संग सखियाँ।
जौ लौं मैं उचक मुख चुंबन कपोल लागी, तौलौं उरदागी भागी नींद छोड़ अँखियाँ॥

(६५२)

प्यारी सीस सारी है गुलाबी आबी जरी धारी, प्यारे सीस चोरा पचरँगिया सुहायौ है ।
प्यारी कुच कंचुकी सुहावनी धनुषधारी, प्यारे जू कौ पटका हरित मन भायौ है ॥
प्यारी जू कौ लहँगा लहरिया लहलहात, प्यारे पीतपट कटि ही सों लपटायौ है ।
प्यारी पीउ सुखराशी हेर बलबीर दासी, प्यारी प्रान ही को छबि सीस पद नायौ है ॥

(६५३)

प्यारी के चरन माँहि जावक की रेख राजैं, प्यारे पद हीना छबि छीनत प्रवाल की ।
प्यारी जू के पायजेब बिछिया अनूठो साजैं, प्यारे जू के नूपुर की धुन एक ताल की ॥
लाल बलबीर रस रास में रसीले छैल, नाचत जुगल मम अखियाँ निहाल की ।
मैंन रति बाल की हू वारौं कोटि प्रीति आली, लीजिये निहार छबि राधिका गुपाल की ॥

* श्रीकृष्ण के कवित्त *

(६५४)

छोटे से चरन माँहि नूपुर की घोर होय, रेसमी जरी की कटि काछनी कसी रहै ।
उर वनमाल गज मुक्तमाल गुंजमाल, वीरी मुख लाल जू के ललित लसी रहै ॥
लाल बलबीर चटकीले मटकीले नैन, वदन निहार छकि सरद शशी रहै ।
ऐसी छबि माधुरी सलौनी अङ्ग अङ्गन की, एहो व्रजराज मेरे दृगन बसी रहै ॥

(६५५)

लालन कौं पालने झुलावत जसोदा रानी, मुदित मुदिन देख देख छवि मनियाँ ।
छोटे से चरन छोटे छोटे से गुलफ गोल, छोटे से नितम्ब छोटी छोटी सी भुजनियाँ ॥
लाल बलबीर छोटी गरैं गज मुक्तमाल, लोचन विशाल भाल केसर लसनियाँ ।
छोटे मुख चन्द सों गोविन्द मन्द मन्द हँसैं, छोटे से अधर छोटी दूध को दतुरियां ॥

(६५६)

छोटे से चरन तामें नूपुर झनक होत, मन्द मन्द मानौ धुनि बाजत तमुरियाँ ।
कबहूँ मधुर मुख तोतरें सुनावैं बैन, कबहूँ नचत छैल भाज जात दुरियाँ ॥
लाल बलबीर लाल करत अनेक ख्याल, देख उर नन्दरानी मोद भर पुरियाँ ।
अचक अचक झूम झूम पग धरैं भूमि, मटकैं सरोज नैंन लटकैं लटुरियाँ ॥

(६५७)

इन्दु से बदन पर मीन से दृगन पर, बिज्जु से दसन छबि दृगन खगी रहै ।
मन्द मुसिक्यान पर बाँसुरी की तान पर, पट फहरान पर मो मति ठगी रहै ॥
अधरन लाल पर कंठ मनिमाल पर, लाल बलबीर उर जोत सी जगी रहै ।
मुक्त से नखन पर कंज से चरन पर, सामरे ललन ! मोरी लगन लगी रहैं ॥

(६५८)

आनँद करैया एहो भैया बलराम जू के, धेनु के चरैया वन बाँसुरी बजैया हौ ।
असुर दलैया भूमि भार के हरैया सुर,-मुनिन रिझैया आप नन्द के ललैया हौ ॥
व्रज के रखैया हो रिझैया गोप गोपिन के, माखन चखैया लाल जसुधा के छैया हौ ।
लाल बलबीर झलकैया सिर मोर पखा, ग्वाल हू लसैया संग ख्यालन खिलैया हौ ॥

(६५९)

लोचन विशाल बैन बोलत रसाल गरें, मुक्त मनि माला रूप जक्त उजिआला री।
पीतपट वाला कर्न कुंडल विशाला व्रज, बुही बैन वाला छैल अजब निराला री॥
डाल प्रेम जाला हाला करेंगे निहाला आली, लाल बलबीर लाल प्रान रखवाला री।
भई मैं बिहाला बिन एरी वा गुपाला मेरे, मार नैंन भाला गयो कहाँ नन्दलाला री॥

(६६०)

प्रात उठ आई गोपी नन्द के सदन माँहि, कह्यो नँदरानी जू सों वचन हरखियाँ।
दीजिये दिखाय मुख सामरे सलौने जू कौ, बाढ़ै उतसाह उर लेहिं छबि लखियाँ॥
बोली हरखाय माय भोर भयो लाड़ले जू, लीजिये निहार द्वार ठाड़ी सबै सखियाँ।
लाल बलबीर गेह शशि सो प्रकाश उठ्यौ, उठे व्रजचन्द मुखचन्द खोल अखियाँ॥

(६६१)

बंशी को बजैया है गवैया मीठी तानन को, माखन मलाई दधि गोरस खवैया है।
भुनर मुनर पग नूपुर बजैया हँसि, हँसि मात आँगन में निरत करैया है॥
लाल बलबीर जू चरैया गाय बच्छन कौ, गोपी गोप ग्वाल उर मोद उपजैया है।
बिस्व को रचैया है रखैया दास दीनन को, दानव असुर कंस वंस को नसैया है॥

(६६२)

माता जू सों हँसि कर कहत कन्हैया लाल, माखन औ मिसरी री मोहि अति भावै है।
और देत मेवा पकवान पूआ पापरी कौं, सेव री लठोर गूँझा नाहीं रुचि आवै है॥
लाल बलबीर जू के तोतरे बचन सुनि, दौर हँसि लाड़ले कौं कंठ सों लगावै है।
हिये सुख पावै मुसिक्यावै छबि हेर हेर, बेर बेर लै लै मुख माँहि सों खवावै है॥

(६६३)

चीरा चटकीला राजै लाल के नरंगी सीस, चंद्रिका सिखी के नीके नीके लै सजाये हैं।
कंचन जटित कंठ हीरन के हार राजैं, संग लै सँगाती छैल कानन ते धाये हैं॥
दास कहैं ठाढ़ी नारी निरखैं अटारी चढ़ी, जलज भराय गीत आनंद के गाये हैं।
आरती करत नन्दरानी हरषानी आज, गैयन चराय नन्दलाल घर आये हैं॥

(६६४)

केशर तिलक सीस केसी के किरीट राजैं, चलत दिनेश छैल कानन तें धाये हैं।
काछनी जरी की कटि किंकिनी कनक राजैं, जलज के हार कंठ सखन सजाये हैं॥
नीके राग गाते हरषाते संग गायन के, दास नर नारी लखि आनँद अघाये हैं।
आरती करत नन्दरानी हरषानी आज, गैयन चराय नन्दलाल घर आये हैं॥

(६६५)

माथे पै मुकुट राजै कानन कुंडल विराजै, नासिका बुलाखि जाकी आँख अनियारी हैं।
मुख में तमोल चाबैं मन्द मुसिक्यात आवैं, लटक चलन हेर सुध बुध हारी हैं॥
गायन के पाछैं पाछैं मुरली बजावैं आछैं, पीत पट काछैं जाकी छबि लगै प्यारी हैं।
लाल बलबीर आली देख रेख री उताली, आवैं वनमाली छैल बाँकड़े बिहारी हैं॥

* अधर अष्टक *

(६६६)

केर दल सदक छिरक घनसारन तें, खस की कनात सीरे नीर छिटकाती है।
चन्दन चहल कर कंचन सजाये थार, चन्दन अतर तन चीरन सजाती है॥
जलज के दलन की चित्रित रची हैं सेज, राधा कृष्ण राजैं कांति ससि की लजाती है।
दास कहैं ठाड़ी सखी आनँद निहार रहीं, जेठ की जलाका की न तहाँ गत आती है॥

(६६७)

सीरे सीरे नीरन की ललित तलाई तहाँ, घिस घनसार कंज दल गारियत है।
खिरकी हजारी तहाँ खस की कनात डारी, कंचन की झारी धर नीर ढारियत हैं॥
जलज के हार हिये साजे तर संदल के, चन्दनो सरस तन चीर धारियत हैं।
कदली के दलन की सेज रची दास कहैं, राधा कृष्ण राजैं जेठ त्रास टारियत हैं॥

(६६८)

चली नन्दलाला के दरस हेत कंज नैनी, चरन धरत धरा लाली रंग ढर जात।
सारी नील राजैं सीस जरी की किनारी दार, घन की तड़ित की झलक हेर दर जात॥
दास कहैं कण्ठ चार हीरन के हार साजैं, अंगन निहारि कें अनंग नारि रर जात।
चली जात अलिन कतारे संग गंध हेत, आनन निकाई तें निकाई चन्द हर जात॥

(६६९)

सकल सिंगार साज नन्दलालजी के काज, चली केलि ग्रेह अङ्ग अङ्ग हरषाती है।
नैंन अनियारे कारे नासा लख कीर हारे, दसन झलक हेर तड़ित सकाती है॥
दास कहैं सीस तें निकस लट नागिनी सी, गंडन के तीर ही लहर लहराती है।
आती है झलक चढ़ी अङ्गन अनंग जी की, नीकी कांति हेर नारि रति सी लजाती है॥

(६७०)

नैंक ही निहारें तें चटाक चित हरें लेत, करें लेत दासी कहा करता कला की है।
ताकी है न ऐसी आली ऐ निहार राजैं, नथनी सहित कांति जलज झलाकी है॥
दास कहैं धीरन के धीरन डिगैया लाज, काजन नसैया दैया करत चलाकी है।
छाली हैं अचल रस लै लै नैंन आनन के, कैसी ये अदां की नासा नन्द के लला की है॥

* दावानल लीला के कवित्त *

(६७१)

काली नाथ करकें सनाथ नाथ आये तीर, देख नन्दराय सखा रानी हरषाई है।
धाय धाय लाल कहैं छाती ते लगाय लीनी, कीनी आज ललन नरायन सहाई है॥
दास निसि दंड गई कीजिये अनंद यहाँ, डेरा कर दीने नैन नींद घिर आई है।
अर्द्ध निसि आई खल करी खलताई धाई, जान कान कानन लै अगन लगाई है॥

(६७२)

लागी लागी कहैं नर नारी आग जागी जाहे, हेरत दिशान ताकी त्रास तें तचै गये।
कैसी करें कहाँ जाय कासों कहैं हाय हाय, धाय कही लाल याकी लाह ते लचै गये॥
दास कही कान्ह सीख कीजिये सकल कान, लीजिये दृगन ढाँक याही तें कचै गये।
करुना निधान कान्ह जानि कें जनन हानि, शीघ्र कर तान कें चटाक ही अचै गये॥

(६७३)

लै लै सखा संग करै नारिन तें जंग ऐसे, नये नये ढंग लाल कौनें ये सिखाये हैं।
सीधे नन्दराय रानी ऐसी ना अनीत ठानी, छांड़िये अयानी रीति नगर हँसाये हैं॥
दास कहैं कंसराय जानै ना अयाने ये रे, तेरे छल छन्द जेरे चलें ना चलाये हैं।
दान दीजै दान दीजै कैसें दान ज्ञान कीजे, साँचो कहि दीजे लला कानें ये लगाये हैं॥

(६७४)

दृगन निहार हारे खंजन जलज अलि, नासिका निहार कीर कानन सिधारे हैं।
दसन निहार हारे हीरा कर दंग डारे, अधर निहार छैल लाल नग हारे हैं॥
अंगन निहारें तें हरारे किये जलधर, आनन निहारे ते निशाकर लजारे हैं।
दास कहैं आनँद के कंद नँदनन्दन के, चरन निहार कंज केते गार डारे हैं॥

* काली के कवित्त *

(६७५)

दह कर गरल दहन चल गर धर, जल धस अड़कर लड़त नगन सन।
गरज गरज कर तरजत सन सन, लड़त लड़त अहि रहत सथल तन॥
नथ कर ततक्षन नरतत सर चढ़, गरजत सरल हरस लख जन गन।
चढ़कर गगन अजर जल जन ढर, दस कह जय जय जय हरि धन धन॥

* गिरिवर *

(६७६)

गरज गरज घन अड़त तरज कर, गगन डरत जन थर थर थर थर।
तड़त तड़क तड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़ ड़, सर सन चलन जलन कर झर झर॥
सदन सदन कढ़ चलत अचक नर, गह गह चरन सरन रख रख हर।
करतल करजन खन तर गर वर, हरषत सजन लषत लल अन कर॥

(६७७)

द्रगन चलत गत सरन थकत चट, झलकन झलक अलक लल अन कर।
रदन अरन तक हलन चलन लल, हसन दसन लख जलज सकल टर॥
गल झलकत अत रतन जटित हर, कनक कड़न कर अधक धरन धर।
जघन सघन कट कछन कछत अत, चरन धरन अघ हरन रटत नर॥

* कृष्ण *

(६७८)

आई एक दक्षनी सुलक्षनी निहार प्यारे, जाके रूप आगें रूप रत कौ रती कौ है।
कारी सटकारी बेनी लहर लहर करै, मानौ जू फनीस सुधा पियत ससी कौ है॥
लाल बलबीर झूम झूम पग धरे भूमि, लूम लूम आवै मान मलत करी कौ है।
रूप रमनी कौ हेर सुखमा घनी कौ जुग, जंघ पट नीकौ जु कछौटा कामिनी कौ है॥

(६७९)

सीस सीस फूल छबि दिपत अतूल मानौ, नभ में प्रकाश फैलो सरद ससी कौ है।
नवल कपोल माँहि राजत है तिल मानो, सोहत सरोज सेज पूत गंडकी कौ है॥
लाल बलबीर रतनारे नैन अनियारे, देख सर सर जाल रत के पती कौ है।
रूप रमनी को हेर सुखमा घनी कौ जुग, जंघ पट नीकौ जू कछौटा कामिनी कौ है॥

(६८०)

मोहन के संग में उमंग भरी प्यारी बाल, राति सुख लूट प्रात बात करै गोता की।
चतुरन संग चतुराई ना चलाई चलै, हमसों छिपाव कर बनै मत कोताकी॥
लाल बलबीर जू कौ नेह ना दुरायो दुरै, साँचो जिन कहै रूप सागर भरो ताकी।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानो, गद्दर अनारन पै चोंच लगी तोता की॥

(६८१)

आई बन कुंज तें प्रभात उठि इन्दुमुखी, कहाँ चली जात गात चञ्चल अकोता की।
अधरन पीक लीक दरसै कपोलन पै, ढीली भई बेनी पाट रेसम गुहोताकी॥
लाल बलबीर जू सों लगन लगाय नैन, काहे कौं दुरावत है नेहन भरोता की।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानो, गद्दर अनारन पै लगी है चोंच तोता की॥

(६८२)

सीसफूल बन्दनी करनफूल बाली पत्ते, झूमर झमंक रही बैना बाल भाल पै॥
बेसर नवीन में बुलाख झूम झोटा लेत, घूम रहे झूमका अनूप जुग गाल पै॥
लाल बलबीर पचलरी गुलीबन्द हार, हँसली हमेल गरैं हियरा बहाल पै।
जोसन बिसाल बांह कंगन बरा हडाल, बाजूबन्द साज बाल चली नन्दलाल पै॥

(६८३)

कड़े छड़े साँठ पायजेब जेब देती पग, झाँझन झनंकैं धुनि छाई यति ताल पै।
बिछिया समार पग पानि छल संकरीन, झनझनात किंकिनियाँ दामिन बिशाल पै॥
लाल बलबीर कर आरसी अगूँठी छल्ला, पहोंची गुही है बर मखतूल जाल पै।
जौसन बिशाल कर कंगन बरा हडाल, बाजूबन्द साज बाल चली नन्दलाल पै॥

* प्रवस्यत् पतिका *

(६८४)

जाछिन तें चलबे की चरचा चलाई तुम, ताछिन तें हिये माहिं अमित उदासी में।
तुम तौ सुजान नहिं जानत हिये की हानि, कीजै ना पयान जू फँसाय नेह फाँसी में॥
लाल बलबीर धरूँ कौन बिधि धीर बाढ़ी, विरहा की पीर ल्यौ बचाय जान दासी में।
एहो सुखरासी वृन्दाविपिन निवासी, न तौ प्रान तो बसाऔ मेरे आपनी खवासी में॥

* स्वयं दूती *

(६८५)

सास गई मायकें ननन्द ससुरारैं गई, द्यौरानी जिठानी लरकीयौ ग्रेह न्यारौ है।
बालम बिदेश कछू भेज्यौ ना सन्देश बड़ौ, येही है अँदेश मन्त्र कौन लै विचारौ है॥
लाल बलबीर आप सांझ समैं जावौ जिन, कानन में देखौ त्रास पंचानन भारौ है।
कीजै यहाँ सैन बड़े चैन में बितावौ रैन, बसिये बटोही सुनौ बचन हमारौ है॥

(६८६)

कदम कनेर केर कंज कमरख हेर, झूम झूम झूमत कतार बाँध केरे हैं।
बेल हैं बिजौरे हैं सुबेरे बड़हर बेस, बन्ना बर बेत हैं बिही हैं री बहेरे हैं॥
लाल बलबीर लौनी लता हैं लवंगन की, लफत लखौट हैं लसीले री लखेरे हैं।
सोच मति कीजै री सलौनी ये सयानी बाल, सासुरें तिहारें बन बाग बहुतेरे हैं॥

* वर्तमान गुप्ता *

(६८७)

आई मैं भरन नीर आली या कलिन्दी तीर, बानर बिकट फौज ऐसी तौ न चीनी मैं।
कीनी ना कछू री ये गरज आये कूक दै दै, ताछिन खरीरी बीर ह्वै गई अधीनी मैं॥
लाल बलबीर आये नन्द के रँगीले छैल, आय अकुलाय कोटि जौहर तें छीनी मैं।
भागन बचाई या बचाई मोहि समारे नें, याई डर माई याकी जेट भरि लीनी मैं॥

(६८८)

लखत कहा है बीर चकोभकी उभकी सी, एक तैं प्रवीन बात मेरी सुनि लीजिये।
एक व्रजबाला गई मार नैन भाला गिरे, भूमि नन्दलाला कौ उपाय कछू कीजिये॥
लाल बलबीर बार बार मैं उठाय हारी, चेतत न सामरौ हमारौ तन छीजिये।
जौं लौं भरि अङ्क मैं रही हौं लिपटाय धाय, तौलौं जाय जसुदा सों बेगि कहि दीजिये॥

* मनः शिक्षा *

(६८९)

येता या कलाम में लिखा है उस मालिक ने, इस में उजर नहीं तेता पास आवेगा।
याते हो अचित सब चिंत को बिसार दीजै, भजिये अनंत को अनंत फल पावैगा॥
लाल बलबीर क्यों अधीन फिरें मुलकों में, मुल्क का मालिक मकां पै ही पहुँचावैगा।
वुही काम आवै तेरे फंद को नसावै, जो वा नजर बिलन्द से तू लगन लगावैगा॥

(६९०)

छाँड़ दे जहाँ की आस कीजै व्रज ही का वास, पुजैं सब आस दिल रंज को नसावैगा।
नन्द का रंगीला गरबीला वो सुजान कान्ह, कदी तौ पियारा रस आनँद दिखावैगा॥
लाल बलबीर ऐसा चार दश लोकन में, और है न दूजा उर मोद उपजावैगा।
वुही काम आवै तेरे फन्द कौ नसावै जो वा, नजर बिलन्द से तू लगन लगावैगा॥

(६९१)

बार बार प्यारे मैं तौ तेरे भूलने की सीख, प्रीति सों सिखाऊँ नेक मान सुख पावैगा।
उससें जरूर जो तू करेगा मुहब्बत को, तौ पै जन्म जन्मन की तापना नसावैगा॥
लाल बलबीर चित लाइये जरूर प्यारे, ऐसा समै बेर बेर फेर तें न पावैगा।
वुही काम आवै जग फन्द कौ नसावै जो वा, नजर बिलन्ब से तू लगन लगावैगा॥

(६९२)

चाहै कहौ राम राम चाहे रघुबीर कहौ, चाहै मधुसूदन गुपाल गिरधारी जी।
चाहै ओंकार निरंकार निरविकार कहौ, चाहै व्रजगोपिन के प्राण हितकारी जी॥
चाहै नन्दनन्द सिर निर्त्त किये कालीदह, चाहै कहौ पूतनानिकन्द बनवारी जी।
चाहै बलबीर कृष्ण कृष्ण कहौ बार बार, चाहै व्रजराज कहौ बांकड़े बिहारी जी॥

(६९३)

पंडित भये तौ कहा सास्तर पुरान पढ़ै, जो पै वेद हू कौं मथ माखन निकारौ ना।
धनद भये तौ कहा लाखन किरोर पाये, जो पै लै गरीबन कौ दारिद्र बिदारौ ना॥
लाल बलबीर सूरवीर जो भये तौ कहा, बखत परे पै मित्र कारज सुधारौ ना।
जोगी भये जती भये तपी भये त्यागी भये, धूर भये जो पै राधा नाम कौं उचारौं ना॥

(६६४)

मिथ्या जग बाद के बिषादन में स्वाद मान, छाँड़ि कें सुपंथ कौं कुपंथ मग जावै है।
सार बिसराई जासों होय न भलाई देख, पापन की पोट जोर सीस पै धरावै है॥
लाल बलबीर पायौ मानस जनम हाय, तौऊ तें रँगीले मति नैक ना उपावै है।
लाज हू न आवै धिरकार तेरे जीवन कौं, बैठि ना निकुंजन में राधा गुन गावै है॥

(६६५)

तू तौ मन बौरा भयौ डोलत है दौरा दौरा, ये जग लबार बन्यौ कारज नसायगौ।
अजहूँ तू सोच मति पोच कौं बिसार दीजै, कठिन परै पै काज कोई नहिं आयगौ॥
लाल बलबीर जबै घेरैं जम के सपूत, बैस अवधूतपनो तेरौ लै बिलायगौ।
जस रहि जाय त्रास पास हू न आय कदी, सदां हुलसाय जौपै राधा गुन गायगौ॥

(६६६)

छाया कर साधुन की संगत मैं बार बार, सदां पद पंकज में सीस कौं नवाया कर।
न्हाया कर प्यारे मारतंड तनया में जाय, रज कौं लगाय अंग अंग हुलसाया कर॥
पाया कर प्रभु के प्रसाद कौं प्रसन्न ह्वै कें, श्री वनराज जू की परिक्रमा जाया कर।
लाया कर ध्यान बलबीर मग्न ह्वै कें नित, बैठि कें निकुंजन में राधा गुन गाया कर॥

(६६७)

मानुस जनम पायौ बास बनराज जू कौ, चतुर कहाय सीस साधुन कौं नायौ ना।
धनी हू कहायौ धन दीयौ श्रीगुपालजू ने, दान करिबे कौं कर ऊँचौ लै उठायौ ना॥
लाल बलबीर छाय रह्यौ जग जालन में, एरे मतिहीन तोय नैक सोच आयौ ना।
जोई काम आयौ सोई सोई बिसरायौ हाय, बैठि कें निकुंजन में राधा गुन गायौ ना॥

(६६८)

केतिक दिना में यह बानक बन्यौ है आन, एरे गुनमान बिनै सुन लीजै सुखधाम।
और चरचा बेकामैं जनम बितामैं कामैं, एक हू न आमैं आमैं गामैं जो हरी कौ नाम॥
लाल बलबीर पामैं जामैं जो अरामैं कीजै, बुही मित्र कामैं जामैं सुखी होय आठौं जाम।
बुही बसुधा में आमैं सुघड़ कहामैं भूल, मन ना डुलामैं सदां गामैं गुन श्यामा श्याम॥

(६६९)

जाके काम आयौ ताकौ नाम बिसरायौ वृथां, जनम गमायौ जग देख भयौ गैला है।
झूंठे फर फंदन के धंधे में लगोई रहै, अजहुँ समार सार छोड़ अब फैला है॥
लाल बलबीर धारे भूषन अनेक चीर, येतौ रे अधीर रहै भीतर तें मैला है।
त्याग जग सैला राधेश्याम भज गैला तन, निपट निकाम देख चाम ही का थैला है॥

(७००)

मौंन गहि लीजै बाद कूर सों न कीजै जासों, तन मन छीजै होय जक्त ये खिसाना है।
जान कें अजान होय रहना जहान बीच, आप दिल हाल जाय कौन कों सुनाना है॥
लाल बलबीर ध्यान धरना हरी का जाने, सारे ही जहांन को दिलाया आब दाना है।
सोच मन दाना जग फन्द में न आना छिन, मुलक बिराना होय नाजुक जमाना है॥

(७०१)

बात बिन रोस ठानै सब ही सों डर मानै, शास्त्र कौं न जानै ताके संगत न छीजिये।
आलस में चूर पर निंदा भरपूर आये, समौ परै दूर ताकैं रंग में न भीजिये॥
लाल बलबीर मित्र द्रोही कृतघनी क्रूर, खसिया लबारन की बात ना पतीजिये।
रसिक प्रवीनन सों बिनती हमारी ये ही, एतिन सों भूलि ना सुजान प्रीति कीजिये॥

(७०२)

मानस जनम समौ पाय कें मिलौ है तोय, जाकौं तौ सुजान ग्यान मन में बिचारबौ।
चौरासी जौनिन में जौन तें निकासौ गयौ, अब तो अजान कछू दया उर धारबौ॥
लाल बलबीर बन्यौ चाहै बड़ो सूर बीर, सूरबीर है तौ तन द्रोह दर डारबौ।
दीन के सतावन में मिलै ना बड़ाई तोय, जीतबौ कैं हारबौ गरीबन कौ मारबौ॥

(७०३)

श्याम नाम कहें ते अहिल्या रिषि नारि तरी, सजकैं सिंगार पास पति के सिधाइ ये।
श्याम नाम लेत ही छुड़ायौ गजराज हाल, भारत में अंडन की जा करी सहाई ये॥
श्याम श्याम श्याम कही अजामिल तार दियौ, देख भक्ति सिबरी बैकुण्ठ कौं पठाई ये।
लाल बलबीर धीर धरिकें सुजान मन, राधेश्याम श्यामा श्याम श्याम गुन गाईये॥

(७०४)

मो मन मतंग संग रहत कुढंगन के, मद में मदंध याहि कौन विधि मोरौगे।
राति दिन आठौं जाम कामन के परौ फंद, है न सतसंग प्रीति रीति नीत जोरौगे॥
लाल बलबीर छिन ज्ञान के लगै न तीर, प्रेम रूपी वारिध में कैसी बिधि बोरौगे।
एहो ब्रजराज मेरे पाप गढ़ को न ओर, लंका है तो नाहिं ताहि डंका देत तोरौगे॥

(७०५)

बिटप भलौ है जो फलौ है फल फूलन सों, जाकी छाँहि बैठिकें बड़ो ही सुख पाय है।
नेह जो भलो है आदि अंत लौं निबाह होय, देह जो भलो है पर कारज में धाय है॥
कूप जो भलो है मीठो सीतल अथाह नीर, रूप जो भलो है हेर सब ही सिराय है।
सुख जो भलो है बलबीर सरबत्र होय, मुख जो भलो है श्रीराधा गुन गाय है॥

(७०६)

मित्र तौ वही है जो बिपति मैं सहाय करै, पुत्र तौ वही है कुल धरम चलाय है।
नारि तौ वही है पति सेवा में मगन रहै, कार्य तौ वही है देह पालन कराय है॥
ज्ञान तौ वही है बलबीर जो गुरु नें दियौ, ध्यान तौ वही है ब्रजराज कौ धराय है।
सुख तौ वही है जन ही कौं सरबत्र होय, मुख तौ वही है श्रीराधा गुन गाय है॥

(७०७)

राग तौ वही है जामें राधिका को नाम होय, बाग तौ वही है फल फूल दरसावै है।
बाज तौ वही है रन देख कें न भाजै लाजै, राज तौ वही है जाकी राज सुख पावै है॥
लाल बलबीर भ्रात वुही जो न छाँड़ै साथ, तात तौ वही है लै सुपंथ कौ सिखावै है।
बात तौ बही है सुनि सब कौं अनंद होय, हाथ तौ वही है हरि कारज में आवै है॥

(७०८)

जाना है न तूनें ब्रजराज को रंगीलो छैल, देख धन धामन कौं हो रहा अजाना है।
माना है अपन भूँठे तात मात भ्रातन कौं, साथी है न कोऊ जान क्यों बनै अजाना है॥
आना है न एकौ काम आय हैं हरी का नाम, लाल बलबीर ध्यान वाही का धराना है।
राना है न तोसा तू अजाना भया नाहक में, चेत रे अचेत पास मालिक के जाना है॥

(७०९)

काहे कौं फिरत नर भटकत ठौर ठौर, चतुर प्रवीन सीख एती चित लाउ रे।
चौरासी जन्म तें सिरोमन मनुष्य देह, तामें तौ रसीले ध्यान धनी कौ धराउ रे॥
लाल बलबीर अबै चेतन कौ औसर है, बनै क्यौं अचेत चेत जड़ता बहाउ रे।
सील उर लाउ काम क्रोध ही नसाउ सदा, बैठि कें निकुंजन में राधा गुन गाउ रे॥

(७१०)

कर लै जतन ऐसो धर लै हरी कौ ध्यान, टरलै कुपंथ सों अगारी काम आवैगो।
कायर कपूत कूर करै क्यौं कुटिलताई, कपटी कठोर तू पिछारी पछितावैगो ॥
भनै बलबीर जू अधीर होय जैहै जबै, बंधैगो जंजीर सों सवाई मार खावैगो।
जंगी जमराज सों जरूर न जुरैगो जंग, जालिम सों जोर बिना कौन लै बचावैगो ॥

(७११)

आये कौन काज कौल करिकें कृपाल जू सों, ताकौं बिसराय कैं कुपंथ माँहि धाते हौ।
जन्म जन्म जन्मन के पाप तन धोयबे कौं, सो तो लै न खोये और पातक लगाते हौ ॥
लाल बलबीर चेत काहे कौं अचेत बनै, हीरा सो जनम पाय नाहक बिताते हौ।
सील उर लाते नहीं राधे गुन गाते नहीं, जीवना कितैक यापै जूना भये जाते हौ ॥

(७१२)

लाखन तुरंग ये गयंद गरबीले गोल, जानि कें अमोल से बड़प्पन जताते हौ।
मेरौ धन मेरौ धाम मेरौ देश मेरौ नाम, मेरौ सब काम देख देख कें उम्हाते हौ ॥
लाल बलबीर संग कोऊ ना चलैंगे बीर, अंत कौं सुजान वृथा कंटक बुवाते हौ।
सील उर लाते नहीं राधा गुन गाते नहीं, जीवना कितैक जापै जूना भये जाते हौ ॥

(७१३)

देख दस मास तेरौ उदर निवास कियौ, तहाँ सब दीयौ लै लगाई नैक ढील ना।
पाहन में पौहमि पताल हू में पानिन में, सब में दिवैया सदां जामें मान हील ना ॥
लाल बलबीर याते वाही कौ भरोसो राख, ना तौ लूट लैहैं जम के समान भीलना।
ढील ना करै रे अब कील ना बनै तू भूल, राधेश्याम बोल मन माटी के मटीलना ॥

(७१४)

मीठे बैन बोलौ साधु संतन के संग डोलौ, करिकैं ढिठाई उर काऊ कौ सु छील ना।
कठिन पंथ आवै ताकूँ कौन लै लँघावै तबै, पीछैं पछितावैं जबै चलौ जाय मील ना ॥
लाल बलबीर न्याव साहिब केरे गौ जैसी, करै सो भरैगो तीजै होयगो उकील ना।
ढील ना करे रे अब कील ना बनै तू भूल, राधेश्याम बोल मन माटी के मटीलना ॥

(७१५)

पापन के फंदन में ऐसो लवलीन भयो, आनन्द के कन्दन को नाम नहीं आनौ है।
झूठे फर फंदन कौं नीकें हुलसाय सुने, सांच कहै कोऊ ताहि कहत दिवानौ है ॥
साधु गुरु विप्रन कौं देख मुख फेर जाय, कंचनी कुलंगन कौं हेर हरषानौ है।
भनै बलबीर चेत अजहूँ अचेत चित, राधेश्याम बोल नहीं जमपुर कौं जानौं है ॥

(७१६)

बालापन बालन के खेल में गमाय दियो, तरूनई छाई तिय रंग में भुलाना है।
बृद्ध बैस भई तौ कहन लाग्यौ हाय मरचो, नाती सुत कहैं मोर कुल कौ लजाना है ॥
खैंच पग तोय देख पौरी माँहि डारि दियौ, तौ भी व्रजराज जी सों चित ना लगाना है।
भनै बलबीर चेत अजहूँ अचेत चित्त, राधेश्याम बोल नहीं जमपुर कौं जाना है ॥

(७१७)

कौल कर आयौ तैं न गायौ गुन वा मद कौ, आमद कौं देख कहै हौं हू सूर जानी मैं।
काहू कौं खसूटैं लूटैं त्रिपति न क्यों हू होय, होय न गुजारौ मोर येती राजधानी में ॥
लाल बलबीर चेत अजहूँ समार प्यारे, राधेश्याम बोल धरयौ कहा आनाकानी में।
देह मुरझानी माया होयगी बिरानी आयु, ऐसें चली जाय जैसें नाव जाय पानी में ॥

(७१८)

छाँड़ि जग बाद के विषादन कौं ऐरे मन, स्वाद है कहा रे जग भ्रमना भ्रमन में।
कीजै सतसंग तासों होय मन तम भंग, होयगी उमंग छिन छिन अलीगन में॥
लाल बलबीर दासी भाव सों खवासी माँहि, राखौ सुखराशी जू के नेह चरनन में।
बिहरौ पुलिन में पतन माँहि सैन करौ, राधा राधा रटौ बास करौ वृन्दावन में॥

(७१९)

आये हौ अवनि पै करार कर बालम सों, कियौ ना भजन भूल रह्यौ पाय ज्वानी में।
होकर मदंध रति रंग में रंग्यौ प्रवीन, काहे मति हीन अबै लीन भयौ रानी में॥
भनै बलबीर चेत अजहूँ समार लीजै, स्वर्ग नर्क काम मोक्ष चार बात बानी में।
देह कुम्हिलाई माया होयगी पराई आयु, ऐसें चली जाय जैसे नाव जाय पानी में॥

(७२०)

कीने हैं जतन बहु प्रकार याही के हेत, जुग परियंत तोहि जीवन की आसा है।
मेरौ सुत मेरी बाम मेरौ धन मेरौ धाम, मेरौ निज गाम यह मेरौ निज बासा है॥
माया के लपेटा में भुलानौं बहकानौं जान, जबहीं लौं सात गात तब ही लौं स्वाँसा है।
त्याग बलबीर आसा रटौ हरि नाम खासा, पानी में बतासा तैसा तन का तमासा है॥

(७२१)

भूल निज कर्मन कौं गहत कुकर्मन कौं, कर्म कौं निहार नित खाय मद्य मासा है।
तात मात भ्राता सुत दारा परिवार प्यारे, झूठे परपंच जान माया की भुलासा है॥
चतुर सुजान काहे निपट अजान बने, पाप कौं कमावै दिन चार की न आसा है।
त्याग बलबीर आसा रटौ हरि नाम खासा, पानी में बतासा तैसा तन का तमासा है॥

(७२२)

लख ललयन यह जरत अनल सन, जर कर करत गरल कर छरकन।
लड़त लड़त छल करत झणक झण, तन धर कर गरधर चढ़ ततक्षण॥
नद कर ललन नचत नग सर चढ़, दस लख हरषत सकल सजन तन।
चढ़ चढ़ गगन अजर जस कर अस, जयति जयति जय धन धन धन धन॥

(७२३)

सखन सहित हरि चल गहन दधि, तकत तकत चल सदन सदन कर।
झभक झभक कर चरन अचक धर, लषत न नर सर हतन ललन घर॥
सध दध गहत झटक ललयन कर, चषत खलत घट ढरत धरन धर।
दस कह यह गत करत सकल घर, सजन हरष कह धन धन धन हर॥

(७२४)

दरसत तड़त लजत लख तत छन, लख लख जन गन तन तन हरषत।
हरसत रहस रहस जस कह कह, गह गह भजकर नच गन करसत॥
कर सत नखन तरन झलकत हत, सजत सजल लल जल जन झरसत।
झरसत कल कल दस कह अर जद, हर कर चरन हरन अघ दरसत॥

(७२५)

दरसत हरत सकल जग कल हन, जन कर करसत ततक्षन हरसत।
हरसत रटत रसिक जन जस कर, हरषन लगन जतन कर करसत॥
करसत लगन अजर जस लह कर, दह कर अजस सरस जस सरसत।
सरसत लघत जगत कर दस जद, हर कर चरन हरन अघ दरसत॥

(७२६)

कर हर लगन सकल अघ हर हर, हरक हरक हर असन रटत नर।
नर तन धर धर सकल खल दलन, धरत रहत हर जन हरि जस धर ॥
धर कर सरल नचत जद गर धर, अचक अचक धर चरन लचक हर।
हरसन कहत सखन अह ललयन, टरत न द्रग यह दरस अधक कर ॥

(७२७)

प्रात उठि आई केलि मंदिर तें इन्दुमुखी, झप झप जात आँख आलस भरोता की।
हिये हरषात सकुचात जमुहात जात, ऐंठ रहीं अलकें अनूप इत्र पोता की ॥
लाल बलबीर ये कपोलन की पीक लीक, दुरैना दुराई छबि छाई है अकोता की।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानौ, गद्दर अनार पै लगी है चोंच तोता की ॥

(७२८)

आई रस लूटि कें छबीले सों छबीली बाल, साँचौ कहौ हाल बात कीजिये न गोता की।
मींड रही सारी औ बिथुर रहे बार माल, टूट रहीं उर तें प्रसूनन अकोता की ॥
लाल बलबीर ये लजौहैं अरसौं हैं नैन, चुगली करत दोऊ प्रगट असोता की।
उन्नत उरोजन पै नखत प्रतक्ष मानौ, गद्दर अनार पै लगी है चोंच तोता की ॥

(७२९)

आये हौ कहाँ ते औ कहावत हौ कौन आप, जहाँ फरफन्द लाल चलै ना चलायौ है।
लूट लूट खायो दधि गोपिन की कानन में, ऐसोई यहाँ पै आन ऊधम उठायौ है ॥
लाल बलबीर कान दै दै ना सुनौ जी कान, लता फल पुष्पन में राधा धुन छायौ है।
व्रज वृषभान कौ सुता है वृषभान संग, राधे जू कौ वृन्दावन वेदन में गायौ है ॥

(७३०)

आये ग्वाल बाल दौर धाये बलराम जू पै, रोवत सकल बैन ऐसें कह भाखौ है।
लाल बलबीर लाल आपने भवन ही में, खेलत खिलौना एक माट फोर नाखौ है ॥
ताछिन तें सांटी लै रिसानी ना अघानी माय, बदन मलीन लाल माखन न चाखौ है।
गैयन चरैया सब ही को हुलसैया भैया, सामरौ कन्हैया मैया नें बांध राखौ है ॥

(७३१)

ग्वालन कौं संग लै गयो री धँस गेह मेरे, टेर लीये केकी गन मर्कट अपारी री।
खाये दधि माखन लुटाये फैलाये आय, फोर डारे बासन लै किये ढेर द्वारी री ॥
लाल बलबीर भलौ जायौ री सपूत पूत, खोल दिये धेनु बच्छ बन कौं हंकारी री।
हारीं हम व्रज के न बास कौं करैंगी दैया, कहाँ लौं सहैंगी याहि देंगी अब गारी री ॥

(७३२)

पूजे कुल देवी देव सुकृत अनेक कीनें, याही के प्रताप सुत वृद्ध बैस पायौ री।
नव लख धेनु मेरे अपर अनेक राजें, दूध दही माखन कौ कौन सो घटायौ री ॥
लाल बलबीर बीर भूलना विलम कीजै, दूनौ भर लीजै री इतेक जितौ खायौ री।
दोऊ कर जोर नन्दरानी कहैं गोपिन तें, गारी मति दीजौं मो गरीबनी को जायौ री ॥

(७३३)

जा छिन ते परी कान ता छिन तें तजी कान, लोक वेद हू की ज्ञान स्यान सबै बन्द की।
ऐसी धुन गाई नई रागनी जमाई लेत, सब कौ चुराय मन बानी प्रेम फन्द की ॥
लाल बलबीर माई चलौ वनराज जू में, कीजै आज झाँकी बाँकी आनँद के कन्द की।
छन्द सों भरी हैं ये करन फरफन्द लागीं, बाजि रही बाँसुरिया प्यारे ब्रजचन्द की ॥

(७३४)

राधे के जनम दिन बाजत बधाई द्वार, नाचि नाचि गोप लै लुटावें पकवान हैं।
ठाड़े सूत मागध औ बन्दीजन गान करें, हिये हरषाय कुल करत बखान हैं॥
लाल बलबीर नृप सबैं सनमान किये, जाचक अजाच किये दिये बहु दान हैं।
चढ़े नभ आन सुर सुमन झरावें कहैं, धन्य वृषभान रानी धन्य वृषभान हैं॥

(७३५)

जन्म सुनि लालन कौ धाये व्रज गोपी ग्वाल, लै लै दूध गोरस कों नन्द ग्रेह चाल की।
मोर के पखौआ सीस केसर तिलक भाल, तैसी छबि छाई गरें गुंजन की माल की॥
लाल बलबीर लै बजावत अनेक बाजे, इन्द्र घन गाजे धुनि मुरली विशाल की।
गावत बधाये अङ्ग अङ्ग हुलसाये कहैं, नन्द के अनन्द भये जै कन्हैया लाल की॥

(७३६)

एहो प्रान प्यारी मुखचन्द उजयारी तेरी, जाऊँ बलिहारी नैंक हेरौ ओर मोरी जू।
छांड़ौ मान बानि गुन खानि ये सुजान प्यारी, हँसि मुसिक्याऔ लेत हियरा हिलोरी जू॥
कहैं बलबीर मन माखन ते कोमल है, वृथां कौं रँगीली चित करौना कठोरी जू।
मान बिनै मोरी कहूँ दोऊ कर जोरी मोहि, रहै आस तोरी वृषभान की किशोरी जू॥

(७३७)

फूलन के सदन छिरकि घनसारन तें, फूलन के परदे परे हैं द्वार द्वारी में।
फूलन की चांदनी चन्दोबा चारु फूलन के, फूलन के छत्र लगे फूल फूल डारी में॥
फूलन के आभूषन साजे अङ्ग अङ्गन में, दोऊ बलबीर छैल फूले हैं बहारी में।
फूलीं सखी चारौं ओर ढोरें चौंर फूलन के, राधिकारमन बैठे फूले फूलवारी में॥

(७३८)

फूलन की झालरैं बितान तने फूलन के, फूलन के परदे कपाट द्वार द्वारी में।
फूलन की माल उर साजें साज फूलन के, फूलमई भूमि भई अधिक बहारी में॥
फूलन के गोखा औ झरोखा मोखा फूलन के, फूले अलि गूँज रहे फूल फूल क्यारी में।
लाल बलबीर छबि नैनन निहार आज, राधिका बिहारी राजैं फूलकुंज प्यारी में॥

* मनहर सर्वगुरु *

(७३९)

कीकै काजै आयौ छै तू ईठाने ऐ म्हारे प्यारे,
झूंठी झूंठी बानी काढ़ौ जीया नें क्यौं छोलौ जी।
लारे ना जासी जी कोई माई भाई जाती साती,
छांड़ौ ईसों नेहा गेहा ही की गाठी खोलौ जी॥
स्वामी के पैयां जा लागे ऊठै सारी माया भागे,
संसारी तें सूता जागो चाहें जीठे ठोलौ जी।
बंसी माँहि बोलै बीरे गावैं लाला धीरे धीरे,
राधे श्यामा राधेश्यामा थें बी बीरा बोलो जी॥

(७४०)

चालैं चालैं आली हाली जी ठैं छैला ठाड़ें खाली, कारै कारै नैना तीके तीखे तीखे राजैं छैं।
ज्ञानी ध्यानी राजारानी तीकें ही चेरे जी हेरे, हेरे जी के अंगे केते चन्दाजी से लाजैं छैं॥
दास जी की है कै रैयो ई देही के लाहे लैये, नारंगी जंगाली लाले लीले चीरा साजैं छैं।
नन्दा जी के लाला रंगी राधाजी के संगी संगी, नाचैं ताता थैया थैया नीकी तानैं गाजैं छैं॥

(७४१)

आई छूँ म्हैं लैंबा काजैं थाकैं काजैं एजी छैला, ऊठैं ठाड़ी म्हैला माई रानी गैला हेरैं छैं।
खावा नैं कठौ छै थाकूं घी कौ लौंदा मथानी तें,मीठा होबा काजैं उमै चीनी बीनी गेरैं छैं॥
लालाबोले बीरे थारी पैयाँलागूँ नाहीं त्यागूँ,जाऊँ आली खाली ठाली कीको नैना फेरैं छैं।
नन्दाजू कौ लाला ठाला छांड़ एजी ग्वालाबाला,चालौ म्हारे लारे थाकूँ थारी माता टेरैं छैं॥

* प्रेम-पचासा *

(७४२)

शेष महेश रमेश जु की नित ही प्रति हैं पद पंकज आसा।
नारद शारद सूर सुता वृषभान सुता जु कर्यो निज दासा॥
है बलबीर की टेर यही कर दीजै कृपा वनराज निवासा।
श्रीगुरुदेव कृपा करिये कहुँ गोपिका श्याम को प्रेम पचासा॥

(७४३)

तुम दीन दयाल कहावत हौ कछु दीनन की सुधि लैबौ करौ।
झलकाय कें रूप सुधाधर सो हमैं जान चकोर चितैबौ करौ॥
बलबीर जु पाय सरूप भलौ हँसि हेर सदा दरसैबौ करौ।
तुम लैबौ करौ मन भावै सोई मुख माधुरी तान सुनैबौ करौ॥

(७४४)

सिर मोरपखा वनमाल गरैं श्रुति कुंडल कौं झलकैबौ करौ।
कटि पीतपटी लिपटी कर में लकुटी मुख बैन बजैबौ करौ॥
बलबीर जू या छबि सौं नित ही प्रति लाल हमैं दरसैबौ करौ।
तुम लैबौ करो मन भावै सोई मुख माधुरी तान सुनैबौ करौ॥

(७४५)

जा दिन ते व्रजराज लला छबि आलि ये नैन निहारिये री।
अरी तादिन सौं गृह काज औ लोक की लाज सबै लै बिसारिये री॥
बलबीर जू कासों कहा कहिये तन की सुधि नाहिं सँभारिये री।
मनमोहन की मुसिक्यान के ऊपर कोटि पतिव्रत वारिये री॥

(७४६)

आवत गाय चराय लला घर ग्वालन संग निहारिये री।
चख चंचल चारु चलावत हैं मधुरे सुर तान उचारिये री॥
बलबीर जू मोहि लियौ जियरा उर काहू की संक न धारिये री।
मनमोहन की मुसिक्यान के ऊपर कोटि पतिव्रत वारिये री॥

(७४७)

जेतिक कौल किये मनमोहन तेतिक में नहि एक भये हैं।
सास रिसानी रहै सतरानी जिठानी कड़े मुख बैन कहे हैं॥
त्यौं बलबीर लगे नहिं अंक निसंक कलंकन अंग दहे हैं।
प्रानपियारे तिहारे लियें गुरु लोगन के उपहास सहे हैं॥

(७४८)

मुसिक्यान के बान लगे जब तें तबतें उर धीर धरावै नहीं।
बलबीर उपाय न एक बनै कोऊ धीर दै पीर मिटावै नहीं॥
दृग दीन मलीन बिलोके बिना बिरहा निधि थाह कौं पावै नहीं।
अब नेह की नाव में बैठ सुजान सनेह सों पार लगावै नहीं॥

(७४९)

मुसिक्याय कें मो मन मोहि लियौ तब तें गृह काज सुहावै नहीं।
बलबीर दोऊ कर जोर कहैं बिनती हमरी चित लावै नहीं॥
यह माधुरी मूरत एहो सुजान कभू हँस हेर दिखावै नहीं।
अंखियाँ यह साम्ररे रंग रंगीं रँग दूसरो और चढ़ावै नहीं॥

(७५०)

तुम प्रीति करी हमसों हठ ठान पै प्रीति की रीति निभायौ करौ।
मुसिक्याय के मो तन हेर सदां मुख माधुरी तान सुनायौ करौ॥
बलबीर ये सांझ सकारें कभू इन बीथिन में ह्वै जायौ करौ।
बस कैं मनमोहन एक ही गामन एतो न त्रास दिखायौ करौ॥

(७५१)

जा दिन तें छबि तेरी लखो निसि बासर ध्यान तुम्हारौ रहै है।
जैसें चकोर मयंक हि हेरत आन न और सों काज लहै है॥
चातक स्वाति की बूंद चहै नहिं सागर कूप कौ नीर गहै है।
त्यौं बलबीर बसी छबि मोहन देखे बिना बिरहागि दहै है॥

(७५२)

यह दीन मलीन रहै नित ही छिन एक घरी नहिं सोवती हैं।
फड़कै अति रूप चुगे हित जे अकुलाय दशौं दिशि जोवती हैं॥
बलबीर जू कासों कहा कहिये नित आंसुन सों तन धोवती हैं।
सुन प्रानपियारे तिहारे निहारे बिना अखियाँ यह रोवती हैं॥

(७५३)

जैसें कुरंग लग्यो चित बीन में प्रानहि देत न बैन बिसारै ।
जैसें पतंग चहै नित दीप चकोर निशंक मयंक निहारै ॥
तैसें हि आय बसी छबिमाधुरी लोक की लाज नहीं उर धारै ।
प्रानपियारे तिहारे निहारे बिना दृग धीर न धारैं हमारै ॥

(७५४)

जब तें सजनी छबि मोहन की यह नैनन आय अरी सो अरी ।
तब तें बदनाम भई व्रज में गुरु लोग चबाई करी सो करी ॥
उर काहू की कान न आनत है ग्रह सास जिठानी लरी सो लरी ।
तजि संक निसंक भई बलबीर गोविन्द के फंद परी सो परी ॥

(७५५)

सिख काकौं सुनावै सयानी भट्ट तुम सौं वह बात कही सो कही ।
हम नीत अनीत न जानत हैं एक प्रेम की रीति गही सो गही ॥
बलबीर सुजान के रंग रँगी कुल कान की बात गई सो गई ।
हमैं और के काम सौं काम कहा नन्दलाल की दासी भई सो भई ॥

(७५६)

मटकी लै गई जमुना जल कौं मनमोहन छाँह ठड़ौ वट की ।
धर झारी सिधारी बिहारी कही सुकमारी सु जात कहाँ सटकी ॥
मुख चन्द सो देहु दिखाय हहा बलबीर गुपाल यही हठ की ।
अटकी छबि ताही समैं मो हृदै चट ही पट मोहनी सी पटकी ॥

(७५७)

पटकी कुलकान तबै सजनी छबि देखत ही नँद के नट की ।
नट की उर धीर तबै सटकी लट झूम कपोलन पै लटकी ॥
लटकी गजमुक्त की माल गरैं बलबीर भनै कटि पै अटकी ।
अटकी श्रुति तान गुमान भरी चट ही पट मोहनी सी पटकी ॥

(७५८)

जा दिन तें चितचोर लख्यौ सखी वा दिन तें उर धीर धरौंना ।
वा मुसिक्याय कैं तान सुनाय कैं बांसुरी में कछु डारि के टौना ॥
ता दिन तें ब्रज बीथिन में बलबीर भ्रमी न मिल्यौ बो सलौना ।
देहु बताय कहाँ वह कान्ह जसोमति लालन नन्द डिठौना ॥

(७५९)

आली गई जमुना जल लैन लख्यौ वट के तट नन्द दुलारौ ।
गाय कें तान बजाय के बैन लियौ तबही छल चित्त हमारौ ॥
ता छिन तें भई ऐसी दशा बलबीर टरै नहिं नैंनन टारौ ।
देहु दिखाय दयाकर मोहि जसोमति लालन नन्द दुलारौ ॥

(७६०)

जब तें हम प्रीति करी तब तें गृह कारज नाहिं सुहावत है ।
बलबीर ये ध्यान तुम्हारौ रहै बिन देखे जिया अकुलावत है ॥
हम और न जानत प्यारे लला नित प्रीति की रीति निभावत हैं ।
हमकौं नहीं कंठ लगावत हैं हंस औरन ते बतरावत हैं ॥

(७६१)

मोहन मोहनी डारि दई मन मोहती बार पै बारन लाई ।
पंकज हेत भ्रमै जिमि भौंर तिहीं बिध मोर न चित्त थिराई ॥
दुस्तर रोग बियोग जग्यौ उर शोक के सिंधु की थाह न पाई ।
बलबीर भनै अब होत कहा दइ हाय सुजान कूँ पीर न आई ॥

(७६२)

ज्यौं ज्यौं मो भाल लिखी करतार नें त्यौं त्यौं भई यह दोस है काकौ ।
कासों कहा कहिये जिय की यह प्रीति की रीति को पंथ है बाँकौ ॥
क्यौं दृग दीन मलीन रहौ बलबीर क्यौं रोई बढ़ावत साकौ ।
साँच भई जग की कहनावत अंत के तंत पै जाकौ सो ताकौ ॥

(७६३)

प्रीति करी तुमनें हठ ठान पै प्रीति की रीति निभाइये जू ।
दृग दीन मलीन बिलोके बिना मुख चन्द लला दरसाइये जू ॥
पलकैं न लगैं पल देखे बिना पल ही जुग लौं बिसराइये जू ।
जिय चातक जान अहो बलबीर सुधा सम तान सुनाइये जू ॥

(७६४)

जब तें हरि हेर पियारे लला मन मोहि लियौ करिकैं चतुराई ।
आवत हे नित मेरे लियैं अब प्रीति की रीति सबै बिसराई ॥
कौन सी चूक परी हम सौं बलबीर सुजान सु देहु जताई ।
दीजिये आय दिखाय अहो मुख चन्द हरौ तन की विकलाई ॥

(७६५)

जा दिन तें मोहि त्याग गये मनमोहन सोहन लाल पियारे।
ता दिन तें बिरहा तन दाहत होत सहायक कौन हमारे।।
रावरो रूप बिलोके बिना बलबीर नहीं उर धीरज धारे।
दीजिये आई दिखाय अहो मुखचन्द बड़ी-बड़ी आँखिन बारे।।

(७६६)

प्रीति लगाय अहो बलबीर अबै केहि फंद सलोनौ परौ।
नहि बैन कह्यौ तिनसों कबहूँ जिनसों हूँ अधीन सुहोनौ परौ।।
कासूँ कहा कहिये जिय की दिन रैन सदा मग जोनौ परौ।
तुमरे फंसि फन्द में प्यारे लला निज अश्रुन सों मुख धोनो परौ।।

(७६७)

तुम गाइ जु तान बजाइ जो बाँसुरी मो सुर कान सलोनौं परौ।
गईं टूट सबै कुल कान की बान सुजान मो ओर चितौनौं परौ।।
जब सों नहिं देत दिखाई जिया तरसैं तेहिं ते मग जोनौं परौ।
बलबीर पियारे तिहारे लिये निज अश्रुन सों मुख धोनौं परौ।।

(७६८)

मुसिक्याय कें मो मन मोहि लियौ तब प्रीति कौ बीज सु बोनो परचो।
अब भूलि न आवत मेरी गली बिन देखें जिया तरसौनो परचो।।
बलबीर जू ये जिय जानत हैं लख काहे हमैं हरषौनो परचो।
तुमरे फँसि फन्द में प्यारे लला निज अश्रुन सों मुख धोनो परचो।।

(७६९)

मोहन मोहनी डारि गयौ कहि जात भयौ उर राखि भरोसौ।
ता दिन तें नहिं आयो कहाँ जाय छायो कोऊ जग छैल न तोसौ।।
कासों कहौं गति कौन लखै बलबीर लिख्यौ निज भाल में दोसौ।
आस बंधाइ निरास करी अब बैठि रही मन मार मसोसौ।।

(७७०)

गाय कें तान बजाय कें बांसुरी मो सिर मोहनी दीन चलाई।
प्रीति करी पहिलें हठ ठानि अबै तुम प्रीति की रीति नसाई।।
हाय दई सो बिसार दई बलबीर कहा तुमरे जिय आई।
साँच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई।।

(७७१)

प्रीति करी हम जान सुजान विचार जेही निभ जाई सदाई।
हास सह्यो गुरु लोगन को सिर पै बदनामी की पोट धराई॥
काहे लला मुख मोर चले बलबीर यही उर सोच सवाई।
साँच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

(७७२)

लै रसिया रस भाजि गये तुम जानत हौ नहीं पीर पराई।
प्रीति कहा अनरीति करी तुम प्रीति की रीति सबै बिसराई॥
त्यौं बलबीर लिखी भई भाल की सोच किये अब होत कहाई।
साँच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

(७७३)

टेढ़ी सी पाग मराल सी चाल बिसाल सी मूरति आन समाई।
नैंनन सैंनन बैंनन में बलबीर लियौ मम चित्त चुराई॥
त्यागि गये हमकौं ललना मग हेरत हेरत आँख पिराई।
सांच भई जग की कहनावत ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

(७७४)

वा दिन मैं जमुना तट पै वो लख्यौ हतौ गाय चरावन हारौ।
ता दिन तें उर धीर गई तन पीर जगी गृह काज बिसारौ॥
त्यौं बलबीर कहा करिये जिय तैं न टरै छिन एकहु टारौ।
ताछिन तें अँखियान हमारी बस्यौ बु बड़ी बड़ी आँखिन वारौ॥

* कवित्त *

(७७५)

काहे कौं करी ही प्रीति आपनै रँगीले छैल, जौ पै कदी दया दृष्टि मेरी ओर लावै ना।
मार नैन बान जानै छिपै हो कहां सुजान, कहाँ जाय ढूँढ़ैं लै गुमान कहीं पावै ना॥
लाल बलबीर आप ऐसी तौ न कीजै लाल, तेरे बिन देखैं उर धीरज धरावै ना।
काहे कौं सतावै सोक तन कौ नसावै नहीं, कदी तौ सुजान आन दरस दिखावै ना॥

(७७६)

देखौ मेरी ओर कहूँ दोऊ कर जोर लगी, तुमहीं सों डोर नैक दया दृष्टि लाया कर।
तुमहीं सों यारी करी लोक लाज टारी छैल, सुन्दर बिहारी उर मोद उपजाया कर॥
लाल बलबीर ढरैं नैंनन सों नीर बिना, देखं हैं अधीर ताप तन की नसाया कर।
गाया कर राग रागिनीन कौं रँगीले छैल, कदी तो सुजान आन दरस दिखाया कर॥

(७७७)

झलक दिखाय बंक भृकुटी तनाय तीर, नैंनन चलाय धाय उर में समायगो।
कासों कहुँ जाय कोऊ पीर कौं न जानैं हाय, हियो अकुलाय तन विरहानल छायगो ॥
देत हैं जराय याकौ कीजिये जतन आय, लाल बलबीर तौ बिलोकत सिरायगो ॥
हँसि मुसिक्याय मोहि कण्ठ सों लगाय, मनमोहन सुजान तेरो जस रहि जायगो।

(७७८)

जादिन तें तेरी लखी हेरन हँसन लाल, तादिन तें नाहि दिल धीरज धराई ये।
रसिया रसीले छैल त्यागिये न नेह गैल, छांड़ अनरीति सीख एती चित्त लाईये ॥
दास कहैं हेरत हिराने दृग राह हाय, दीजै तज संक लीजै अंक तें लगाईये।
आना जाना देखना दिखाना तक छांड़ दीना, येरे असनाब तेरी कैसी आसनाई ये ॥

(७८६)

लगन लगाय अब रहे कहाँ छाय जाय, हीयो अकुलाय धीर कैसे कैं धराय गौ।
कछू ना सुहाये बिन देखै रह्यो ई न जाय, लाल बलबीर नीर नैंनन में छायगौ ॥
मेरी ओर चाहि तेरौ कहा घटि जाय एती, बिनैं उर लाय गौ तौ मोद उर छायगौ।
हँसि मुसिक्याय मोहि कण्ठ सों लगाय मन-मोहन सुजान तेरौ जस रहि जायगौ ॥

(७८०)

जादिन तें हेर हँस गये लाल मेरी ओर, तब तें बिसासी दृग हेरत हैं राहवा।
रावरी सलौनी लौनी सूरत बिलोके बिना, कैसें बलबीर उर धीरज धराहवा ॥
धन्य उन भाग उर लागत हजार बार, बिरह अगिन मम लागी तन दाहवा।
चोर चित्त गये मोर बोर बिष वारिधि में, आज लौं न आये मित्र वाहवा जी वाह वा ॥

(७८१)

प्रीति करी प्रीतम सुजान गुनखान जौपै, तौ पै ए अरज मेरी लीजै चित लाहवा।
लाल बलबोर उर पीर कूँ बिचार प्यारे, भूलिकैं सुजान चित अन्त न लगाहवा ॥
रैन दिन संग में उमंग रस रंग कीजै, अङ्ग सों लगाय अंग बाढ़ै उतसाहवा।
सबै बिसराई ताप तन की नसाई धाई, अंत रे सुजान तेरी जागी रहै बाह वा ॥

(७८२)

अब तौ बदनाम भई आली व्रज मण्डल मैं, लाज गुरु लोगन की खो गई सु खो गई।
ननद जिठानी सतरानी इतरानी रहीं, सासु कटु बात कहै सो गई सु सो गई ॥
भनें बलवीर हम नीति ना अनीत जानें, प्रेम रूपी बेलि यह बो गई सु बो गई।
सामरी सलौनी छबि कैसें कैं बिसारी जाय, दासी मन मोहन की हो गई सु हो गई ॥

(७८३)

आली हौं गई ही नीर लैन जमुना के तीर, सामरौ बजाय रह्यौ बैन छाँह वट की।
सीस धर झारी ज्यौं सिधारी बनवारी आय, दौर मुसिक्याय कही कहाँ जाय सटकी ॥
भनै बलबीर मुख माधुरे बचन सुनि, ता समैं की शोभा आय नैंनन में अटकी।
भूली सुध घट की रही न राह औघट की, बसी उर आन फहरान पीतपट की ॥

(७८४)

रस के रसीले छैल अब क्यौं तजी है गैल, छाँड़ सब सैल पग नेह मग दीजिये।
भने बलबीर दृग देखे बिन हैं अधीर, बिरहा की पीर जगी आय सुधि लीजिये ॥
बाँसुरी बजाय मुसिक्याय कें सुनाय तान, संक तजि अंक लगि प्रेम मधु पीजिये।
नन्द के कुमार करजोर कहूँ बार-बार, ऐसो ना मुरारि तें कठोर चित कीजिये ॥

(७८५)

जादिन तें तेरी छबि लखी है सुजान कान्ह, तादिन तें मोहि गृह कारज सुहावै ना।
राति दिना आठौ जाम रटूँ गुन रावरे ई, निपट अधीर उर धीरज धरावै ना॥
लाल बलबीर उर जागी बिरहा की पीर, लोचन चकोर मुख चन्द दरसावै ना।
मेरौ मन तेरे बस परयो पियारे लाल, एहो ब्रजराज नेक मेरी गली आवै ना॥

(७८६)

मोहन करी है प्रीति रीति की निभावौ नीति, त्यागि अनरीति कौं सनेह मग धाउ रे।
ज्यों चित कुरंग अलि पंकज चकोरन के, बीन अरविन्द रवि ससि उर लाउ रे॥
जैसें बलबीर कीट चातक औ दीप घन, तैसें मुसिकन माँहि मो मन लगाउ रे।
नन्द के कुमार कर जोर कें हजार बार, करूँ मनुहार प्यारे मेरी गली आउ रे॥

(७८७)

पायौ है सरूप तैं अनूप बिधना ने दियो, कुण्डल अमोल तो कपोल पै हल्यौ करैं।
बोलि मृदुबानी मन छीनि लियौ ऐसी बिध, उरध उसास स्वास स्वास पै चल्यौ करैं॥
नेह तज गेह तें सिधारे क्यौं पियारे लाल, द्रगन तें नीर हर बार ही ढल्यौ करैं।
भनै बलबीर कण्ठ लाग्यौ जाय सौतिन के, एहो ब्रजराज हम हाथ ही मल्यौ करैं॥

(७८८)

जादिन तें बिछुरे हमारे प्रान प्यारे तुम, तादिन तें सेज मोहि सूली सी दिखाती है।
आय आय लागें हिय बान पंचवान जू के, नैनन सों नीरन की नदी भर जाती है॥
भनै बलबीर चित धीर है न व्यापी पीर, निपट गयौ री निसि आई डर पाती है।
बिनती हमारी चित लाय सुनौ प्यारे लाल, रावरे बिलोके बिना फटी जात छाती है॥

(७८९)

बदन मयंक बारौ भौंयें धनु बंक बारौ, केहरि सी लङ्क बारौ रूप उजियारौ है।
लोचन बिशाल बारौ गरें मणि माल बारौ, मत्त गज चाल बारौ जब सों निहारो है॥
पीत पट बैन बारौ मधु भरी सैन बारौ, लाल बलबीर प्यारौ टरत न टारौ है।
मोर के मुकुट बारौ टेढ़ो सी लकुट बारौ, नन्द कौ दुलारौ सो हमारौ प्रान प्यारौ है॥

(७९०)

सामल बदन वारे कुन्द से दसन वारे, माधुरी हँसन वारे रूप दरसाउ र।
गैयन चरान वारे माखन के खान वारे, बांसुरी बजान वारे मीठी तान गाउ रे॥
लाल बलबीर जसुमति के दुलारे मेरी, आंखिन के तारे तन तपत बुझाउ रे।
मो मन हरन वारे जादू सौ करन वारे, नन्द के दुलारे प्यारे मेरी गली आउ रे॥

(७९१)

थर्थरात गात कछू कहत बनै न बात, कैसी करूँ प्यारी मेरो जिया अकुलात है।
कछूना सुहात पल पल जुग सम जात, खरोहि हिरात छिन धीर ना धरात है॥
लाल बलबीर जात सोचत ही प्रात रात, तीर ना दिखात सोक सिन्धु में डुबात है।
लीजौ गह हात दास जानिकैं अनाथ राधे, मेटौ जग बाधे मेरी लाज तेरे हाथ है॥

(७९२)

ऊबत हौं डूबत हौं सोच के समुद्र माँहि, कृपा करि मोकों यह संकट सों टार दै।
ठाड़ौ दरबान में पुकारत हौं बार बार, मोहन उदार नैंक सीस उर धार दै॥
लाल बलबीर कहूँ कासूँ जा हिये की पीर, करुननिधान नाम ही कौ पन पार दै।
जार दै सकल कलिमल कौं कृपानिधान, हा हा नाथ मेरी भव भ्रमना निवार दै॥

(७६३)

मैं तो दीन दूबरी परी हूँ आन तेरे द्वार, और कहूँ कासौं कौन सुनै बिनै मोरी री।
दीजै बनवास ये ही हिये में हुलास मेरी, काटौ भव फाँस भई जात मत बौरी री॥
लाल बलबीर दासी घेरी जगलाल ब्याल, बनै ना उपाय कछू करै बरजोरी री।
कुमरकिशोरी मोरी ओरी हेर येरी आज, मोय तौ सदांई रहै एक आस तोरी री॥

(७६४)

सेन की नसाई लै मसाल कौं जराई नाथ, धना की नसाई खेती हरी लै कराई है।
पायल बनाय कें नसाई ही तिलोचन की, चौहान की नसाई तेग सार की दिलाई है॥
जहाँ जहाँ दासन पै त्रास परयौ दीनानाथ, लाल बलबीर आप सबकी नसाई है।
संतन सहाई जदुराई मेरी टेर सुनौ, मेरी बेर बेर आप काहे कौं लगाई है॥

(७६५)

कीनी ना अबेर प्रह्लाद खंभ बांधे तात, नरहरि तन धारो जाय दुष्ट मारौ है।
कीनी ना अबेर गज ग्राह तें छुड़ायौ नाथ, बाहन बिसार निज पदहि सिधारौ है।
कीनी ना अबेर जब पांडुवधू टेरी तोहि, लाल बलबीर चीर अखै कर डारौ है॥
कीनी ना अबेर जहाँ दासन कौं त्रास भये, मेरी बेर बेर कहा आसरौ तिहारौ है।

* कालिय वचन *

(७६६)

पाय बल भारी मैं बिसारी सुधि रावरी जू, अब तौ कृपाल कान्ह बिनै सुनि लीजिये।
टूटी जाय देह आप कीजिये सनेह कहूँ, और जाय कासौं तासौं तन मन छीजिये॥
लाल बलबीर सब औगुन बिसार मेरी, सुनियै पुकार नेंक कृपा दृष्टि कीजिये।
मैं तौ हूँ अनाथ तुम दीनन के नाथ हौ जू, एहो व्रजनाथ मोहि जीवदान दीजिये॥

(७६७)

लखि कैं अनाथ मोहि करन सनाथ नाथ, भलो करी आपने बिचार दंड दियौ है।
जानी न परी ही आप नर तन धार आये, कपटी कुटिल मो कठोर घोर हीयौ है॥
लाल बलबीर मिटी मद की खुमारी छैल, सुन्दर बिहारी तो दरस आज कीयौ है॥
जोई आप दीयो सोई सोई भेंट कीयो नाथ, विष का सुजान कान्ह मैंने कर लीयौ है॥

* उद्धव-गोपी संवाद *

(७६८)

मोहन गवन सुन तवन लगी है तन, धाय धाय चलीं अकुलाय घर घर से।
बावरी लौं बकत तकत व्रज वीथिन कौं, घायल सी ह्वै रहीं वियोग रोग सर से॥
लाल बलबीर होय रहे चहूँ ओर सोर, दीन ह्वै पुकारें री मिलाऔ कोऊ हरि से।
बरसें हमारे नैन ऊँचे चढ़ कहैं बैन, अब पति रथ की पताका हू न दरसै॥

(८६६)

पूरौ क्रूर अकरूर बैरी काहू जनम कौ, सुन्दर सुजान कौं लिबाय गयौ घर से।
कासों कहैं जाय धाय कछू ना उपाय बनै, हाय हाय माय ना बस्याय जाय हरि से॥
लाल बलबीर भये व्याकुल सरीर ढरै, नैनन सों नीर बिरहा के मेघ बरसे।
चढ़िकें अटारी चित्रसारी नारी टेरत हैं, अब पति रथ की पताका हू न दरसे॥

(८००)

मोहन गवन कियौ तुम ना गमन कियौ, प्यारे व्रजराज बिन कहा सुख पावैगो।
जाके संग संग में अनेक रस रंग किये, ता बिना रँगीले घोर बिरहा सतावैगो॥
लाल बलबीर बिन काहे कौं रह्यौ तें जीव, फेर बजमारे मोहि लाजन लजावैगो।
कोटिन धृकार तेरे जीवन कौं जन्म हारे, फेर बीतौ देह कौ सनेह छोड़ जावैगो॥

(८०१)

छांड़ गयो हमकौं सुजान मन मोहन जू, गोपिन बिसार जाय मथुरा बसावैगो।
गायन चरायबौ जू वन वन जायबौ जू, बाँसुरी बजायबौ जू कैसें मन भावैगो॥
लाल बलबीर बिन कैसें कै धरैगी धीर, फेर बजमारे मोहि लाजन लजावैगो।
कोटिन धृकार तेरे जीवन कौं जन्म हारे, फेर बीतौ देह कौ सनेह छोड़ जावैगो॥

(८०२)

आयौ आयौ ऊधौ ये सखा री मनमोहन कौ, सामरे सुजान कौ संदेशो कछू लायौ है।
पूछौ पूछौ पूछौ री इकंत में पिया की बात, भले भाग सों री आज सबै मिलि पायौ है॥
लाल बलबीर कब आमैंगे रंगीले छैल, कुबिजा कलंकिनी नें कैसे बिरमायौ है।
कहा मन भायौ नेह हम सौं नसायौ हाय, उधव पठायौ प्रान प्यारौ क्यौं न आयौ है॥

(८०३)

परम पुनीत तुम श्याम के सखा हौ ऊधौ, साँची कहौ कथा ताके कहा मन भायौ है।
हम कौं उदासी छोड़ दासी की फँसी है फाँसी, आवत है हाँसी भलौ सुकृत कमायौ है॥
लाल बलबीर गोप ग्वालन सौं गऊन सौं, और तात मात हू सों नेह बिसरायौ है।
लंपट लबार कान्ह पटी अपार देखौ, आप करै भोग जोग हमकौं पठायौ है॥

(८०४)

साँची कहौ ऊधौ मनमोहन सुजान जू कौं, कबहूँ हमारी सुध आवै कै न आवती।
जा छिन तें मथुरा पयान कियौ प्यारे लाल, ताछिन तें बिरहा अनल तन तावती॥
लाल बलबीर कछु बनै ना उपाय हाय, नायन मलीन महारानी जू कहावती।
जो पै गह पावती तौ मार मार लातैं मैं, वा कूबरी की कूबरौ करैजा कढ़वावती॥

(८०५)

ऊधव तू आयौ घनश्याम कौं न लायौ, सौति कुबिजा हमारी जोग लिखि कैं पठावती।
कुलटा कलंकिनी कमीन मति हीन दीन, पाय कैं प्रवीन पटरानी जू कहावती॥
लाल बलबीर ताकौं जो पै गह पावती मैं, तौ पै तौ घमंड ताकौ छिन में नसावती।
मार मार लातैं मुख पीट पीट थापन सौं, कूबरी को कूबरौ करैजा कढ़वावती॥

* परकीया-प्रीति *

(८०६)

लोचन कहत रूप माधुरी निहारचौ करौ, तबै धीर धरौं कोटि भाँति सुख पाऊँ मैं।
कान कहैं कान्ह की कहानी सुनौं केलि मई, सकुच सरीकनी सों भौन धसि जाऊँ मैं॥
लाल बलबीर कहै रसना हमारी प्यारो, सुन्दर सुजान जू सौं हँसि बतराऊँ मैं।
अंग सों लगाऊँ अंग कहत अनंग भरे, लाज कहै भूलि आंगुरीऊ न दिखाऊँ मैं॥

* विप्रलब्धा *

(८०७)

सुन्दर सिंगार साज प्यारे के मिलन काज, आई केलि मन्दिर लौं ससि की उजारी सी।
बारन के भार ना सम्हारै सुकुमारि लफ, लफ लंक जाय जैसें चंपक की डारी सी॥
लाल बलबीर तहाँ पाये ना बिहारी लाल, बिरहा अपार नें करी है देह कारी सी।
देख सुकुमारी सेज पै न बनवारी घूमि, गिरी बेकरारी खाय काम की कटारी सी॥

(८०८)

आई अलबेली अलबेले सों मिलन काज, जाकी छबि देखि कैं लजाय काम नारी सी।
नाजुक बदन नव जोबन उमंग भरी, अंग हैं अनूप रूप साँचे की सुढारी सी॥
लाल बलबीर छबि कहाँ लौं बखानैं जाकी, उपमा न पावती रही है मति हारी सी।
देख सुकुमारी सेज पै न बनवारी घूमि, गिरी बेक़रारी खाय काम की कटारी सी॥

(८०९)

मोहन मनोज मई मूरति दिखाय मोपै, मंद मुसिक्याई मोहनी सी कर डारी री।
ताछिन तें खान की न पान की रही है सुधि, कासों जाय कहौं पीर हरै जो हमारी री॥
लाल बलबीर बिन कछू ना सुहाय आली, जैसें बिना नीर मीन अधिक दुखारी री।
एहो प्रान प्यारी अर्ज सुनिये हमारी मोहि, दीजिये मिलाय मित्र सामरौ बिहारी री॥

(८१०)

जब सों निहारौ रूप बारौ नन्द कौ दुलारौ, तब तें हमारी कुल कान बानि सटकी।
मन्द मन्द आवन की पट फहरावन की, ललित लफीली छबि माधुरी लकुट की॥
लाल बलबीर जू की बाँसुरी बजावन की, दृगन मिलावन की भृकुटी बिकट की।
मन्द मुसिक्यावन की भीनैं सुर गावन की, बसी छबि आन उर मोर के मुकट की॥

(८११)

जाछिन तें लख्यौ कान्ह ताछिन तें गई कान, सबै ज्ञान स्यान उर जानै लाभ हानै ना।
ननद जिठानी दिवरानी सास बार बार, सिखावैं हजार सीख एक उर आनै ना॥
लाल बलबीर जू के दरस बिलोके बिना, कैसें धरौं धीर जोउ कोऊ पीर जानै ना।
स्यानै ना करत कोऊ प्रानै ना बचावै आली, सामरे सुजान बिन मेरौ मन मानै ना॥

(८१२)

कल ना परत मोहि ललना विलोके बिन, बिरहा अगिन में कहाँ लौं बीर जलना।
दलना कुटम्ब लाज ढलना कुसंगन सों, बस्यौ उर आन मित्र नन्द जू कौ ललना॥
लाल बलबीर ढलना है जग जालन सौं, और गृह काजन सों हमकौं उलझना।
छल ना करत तोसौं चलना जरूर जहाँ, सांमरौ सुजान छैल झूल रह्यौ पलना॥

(८१३)

प्यारे के दरस बिन तरस रहे हैं नैन, चैन है न रैन दिन नीर ढरकाऊँ मैं।
हितू ना हमारी जो निवारि हैं हिये की पीर, बिरह विथा की कथा कौन कौं सुनाऊँ मैं॥
लाल बलबीर बिन कछू ना सुहाय हाय, बासर वियोग भरे कैसै कैं बिताऊँ मैं।
तबै सुख पाऊँ ताप तन की नसाऊँ, मनमोहन सुजान जू कौं कंठ सौं लगाऊँ मैं॥

(८१४)

मोहन के संग में उमंग भरी प्यारी बाल, राति-सुख लूटि प्रात बात करै गोता की।
चतुरन संग चतुराई ना चलाई चलै, हम सों छिपाव करै बनै मति कोताकी॥
लाल बलबीर जू को नेह ना दुरायौ दुरै, साँची किन कहै रूप सागर भरोता की।
उन्नत उरोजन पै नक्षत्त प्रतक्ष मानौ, गद्दर अनार पै लगी है चोंच तोता की॥

(८१५)

प्यारी जू तिहारे पद पंकज की बलिहारी, सदा हो बिहारी लाल मन ते न टारैं हैं।
वे हरत कुसुम पराग तबै लागैं जबै हेर, अलबेले पीत पट की सों झारैं हैं॥
जावक बनाय चित्र सुखमा विचित्र हेर, लूटत मयूर पिच्छ प्रान धन वारैं हैं।
हित ध्रुव रस यह सबन तें दुर्लभ है, रसिक सु बलबीर दासी उर धारैं हैं॥

(८१६)

लोक की कान नहीं परलोक की औ गृह के तज काज भजौं गी।
रूप अनूप निहारे बिना विरहाग की आग में कौ लौं दहौं गी॥
धार लई बलबीर यही उर प्रान पियारे के रंग रँगौ गी।
चाहै कलंक लगौ सजनी मनमोहन मीत के अंक लगौं गी॥

(८१७)

आवत गाय चराय लला सँग ग्वाल लियैं बन तें वनमाली।
गावत तान उमंग भरे मुख बाजत है धुन बैन रसाली॥
सासरु नन्द कौ त्रास इतै इत देखे बिना उर माँहि बिहाली।
या सुख कौं बलबीर अरी हम झाँकैं झरोकैं निकाली है जाली॥

(८१८)

लालन ग्वालन संग लियें जमुना तट पै बहु खेल रचावै।
बीन बजावै रिझावै कभू कबहूँ कोउ माधुरी तान सुनावै॥
आवै कोऊ जल के हित नारि तहो गगरी महि माँहि लुढ़ावै।
जाइ सभीत रहैं बलबीर कोउ पनिया भर जान न पावै॥

(८१९)

अरुन कमल हू तें कोमल जुगल पद, मानौ नभ मंडल में बिज्जु दरसाती है।
आँगुरी सुढार मति हारत निहार किधौं, दाड़िम कलीन नख मोतिन की पाती है॥
सुन्दर सजीले गरबीले से गुलफ किधौं, डावी रंभ खंभ के कपूर की सुहाती है।
धुजा औ पताका बलबीर ये बिलोक लोक, उपमा न पाती पाँती रंक सी दिखाती है॥

(८२०)

जानत हैं ब्रजबाल सबै हरि रोकत टोकत संक न लावै।
याही सभीत न जात बनै बिन देखे जिया नहिं धीर धरावै॥
लै कर में बँसुरी बलबीर जबै मुख माधुरी तान सुनावै।
होत यही उतसाह तजैं ग्रह फंद गोविन्दहि अंग लगावै॥

(८२१)

मोहन की रुचि माखन सों जननी उठि प्रातहि बुद्धि बिचारी ।
लै दधि कौं मथि कें मन तें नवनीत पुनीत तेहो सों निकारी ।।
टेरत हैं मधुरे सुर सों उठि हो बलबीरन होत अबारी ।
आलस दूर करौ मम लाल लखौं मुख चन्द जाऊँ बलिहारी ।।

(८२२)

चाँदनी चन्द की मन्द भई औ कमोदनियाँ उर में सकुचाई ।
दूर भयौ तम भानु उदै भयौ पंकज की दुति होत सवाई ।।
कोइल कीर कपोत सबै द्रुम त्याग चले दश हू दिशि धाई ।
जागो हो लाल खड़े तेरे ग्वाल अहो बलबीर तेरी बलि जाई ।।

(८२३)

कंचन झारी भरी जमुना जल लै कर में मुख लाल कौ ध्वायौ ।
कोमल चीर तें पौंछि तबै मुसिक्याय कें एक डिठौना लगायौ ।।
चूमि कपोल हृदै सौं लगाय तबै जननी एक बैन सुनायौ ।
तेरे लियें पकवान अनेक धरे कर लेऊ जेही रुचि आयौ ।।

(८२४)

माखन औ मिसरी जननी अरि मोकौं बहौत यही रुचि आयौ ।
धौरी औ धूमरि की टटकी कर लैकर कंद दराय रलायौ ।।
हेम कटोरन में धरि कें हँसि थोरोइ थोरो लला कौं पवायौ ।
या सुख कौं बलबीर लखै जसुधा यहि कोविद सौ ललचायौ ।।

(८२५)

खेलत खेल खिलौनन तें जननी लखिकें उर मोद बढ़ावै ।
नाच उठैं कबहूँ किलकाय कबौं मुख माधुरी तान सुनावै ।।
जाकौं सुरासुर सिद्ध मुनीस महेश सदा उर ध्यान धरावै ।
सो सिसु होय वुहाँ व्रज में बलबीर जू नन्द कौ लाल कहावै ।।

(८२६)

लाल गये गृह ग्वालन के छिपि कें जब ही दधि में कर नाये ।
दृष्टि परयौ प्रतिबिंब जबै मणिखंभ सों दीन ह्वै बैन जताये ।।
आयौ प्रथम्म करन्न मैं चोरी कौं आधो लै बांटि जितै मन भाये ।
हर्ष उठी ब्रजबाल तबै बलबीर सकुच्चत दौर सिधाये ।।

(८२७)

पूरन ब्रह्म अखंड अगोचर नैंनन हीं मन माँहि बिचारी।
पुत्र कौ भाव जसोमति मानत ग्वाल हियैं निज मित्र बिहारी॥
नंद जू जानत हैं जिय लालन गोपी लखैं निज प्रान अधारी।
मेरे लियैं गऊ लोक तज्यौ जिन लालसा पूरन कीजियै सारी॥

(८२८)

ग्वालिन लैन कमोरी गई गये लालन ग्वाल लियैं गृह ओरी।
माखन लै मथनी तैं मनोहर खान लागे हँसि कैं मुख मोरी॥
भाज चले झिझके से सबै इतने ही में आय गई वह गोरी।
श्याम कौ रूप निहारत ही बलबीर प्रबीन हुती भई भोरी॥

(८२९)

एक कहैं मेरे घर आवैं जो गुपाल प्यारौ, तौ ले मनमोहन कौं माखन खवावौंगी।
एक कहै मेरे घर आवैं जो सलोनो श्याम, तौ लैं निज आँगन मैं नांच ही नचावौंगी॥
एक कहै मेरे घर आवैं ब्रजराज आज, तौ पै वा छबीले जू कौं हृदै सों लगावौंगी।
एक कहै जो पै घर आवैं बलबीर, तौ मैं चूमि कै कपोल बैन माधुरै सुनावौंगी॥

(८३०)

जावौगे लाल अबै कितकौं, गृह कौन है आय बड़ी जु ढिठाई।
लै चलि हौं जसुधा के समीप, लखौ निज लालन की चतुराई॥
बोले जबै हँसि कैं मनमोहन, छूऔ नहीं दधि तेरी दुहाई।
खाय कें ग्वाल गये भजि हाल, दियौ नहिं मो कर एकहु राई॥

(८३१)

माखन खावौ गुपाल तुम्हैं मन आवै, इतैक भरी है कमोरी।
वो जो चली गृह लैन तबै मुसिक्याय कें, लाल भजे बन खोरी॥
लै कर में नवनीत गुआलन, लालन कौं चितवै चहुँ ओरी।
क्यौं बलबीर गये तजि मोहि, जसोमति लालन डार ठगौरी॥

(८३२)

लालन की छवि देखे बिना उर, ग्वालन के नहिं धीर धराई।
कैसें मिलूँ ब्रजचन्द गोविन्द सौं, सोचत नन्द के मन्दिर आई॥
चन्दमुखी मृग लोचनि सुन्दरि, बैन कह्यौ करिकें चतुराई।
तैं ब्रजराज बधू कहवाय भली, बलबीर कौं सीख सिखाई॥

(८३३)

माखन खान सुजान सखान लै, धाय चले हँसते वन खोरी।
सूनौ लख्यौ गृह जाय धँसे, वुह नीर कौं लैन गई हुती गोरी॥
द्वार उभै सिसु खेलत हैं, तेहिं देखत भीर भगै मुख मोरी।
हेरत माखन खाय सबै बलबीर, धरी हुती छींकें कमोरी॥

(८३४)

ग्वालन लालन के कर में कर, लै जसुधा के समीपहि लाईं।
नैंक नहीं सिख देत गुपाल कौं, जाय कें मोगृह धूम मचाई॥
माखन खाय लुटाय जबै दधि, गोरस माट मही ढरकाई॥
खोल दिये बछरा बलबीर भ्रमैं, बन माँहि नहीं सुधि पाई॥

(८३५)

जावौ न भूल कहूँ ललना तुमकौं, तुमरी जननी समुझावै।
ग्वारि गमारिन जानैं कहा, परिया भर छाछ पैं नाच नचावै॥
नौलख गाय दुहीअत आपनौ, ताहू पै माखन चोर कहावै।
मानौ कही हमरी बलबीर हँसैं, पुरलोग पिता दुख पावै॥

(८३६)

माखन खाय दही ढरकाय मही, छिरकाय ललान कौं रवाये।
छीकेंन तोर खखोर सबै गृह, बासन फोरिकैं ढेर लगाये॥
संग लियै ब्रजग्वाल गुपाल कौं, दूसरौ खेल नहीं मन भाये।
क्रोध भई सुनिकैं जसुधा बलबीर, तें मानिहै नाँहि सिखाये॥

(८३७)

मानत नाँहिन प्यारे लला निसि, बासर भाँतिन सौं समझायौ।
मैं नाँहि जाऊँ दई इनके घर, झूँठौ हि आन कैं नाम लगायौ॥
लागि रह्यो कर ते मुख ते नवनीत, ये श्याम दुरैना दुरायौ।
बैर परे बलबीर सु ग्वाल री, खाय मो आनन तैं लिपटायौ॥

(८३८)

बाल विनोद लला को निहार, जसोमति के उर हर्ष बिशाला।
भक्तन के हित काज करै नित ही, प्रति प्रीति सों दीन दयाला॥
सैंस सुरेंस महेश कहैं कब, लोचन सिद्धि करेंगे कृपाला॥
देव चढ़े नभ सेव जनावैं, सुनावहि अस्तुति छन्द रसाला॥

(८३९)

जादिन तें लख्यौ छैल अहीर कौ, ताछिन त उर धीर न आनै।
वा मुसिक्यान पै मोहनी तान पै, त्याग दई सगरी कुल कानै॥
कैसी करूँ गत कासों कहूँ, बलबीर बिना मन मेरौ न मानै।
मोहि सबै जग सामरौ सूझत, सामरे की गति सामरौ जानै॥

(८४०)

आली लख्यौ जमुना तट पैं, मनमोहन सोहनि गावत तानै।
मो सों कह्यौ हँसि कें ललना, मृग लोचनी दीजिये गोरस दानै॥
ताछिन तें बलबीर बसे दृग, लोक कौ कान नहीं उर आनै।
मोहि सबै जग सामरौ सूझत, सामरे की गति सामरौ जानै॥

* सोरठा *

(८४१)

दासन के हित लाल, करत चरित रस रास नित।
दै दै दरस निहाल, करैं सराहैं जन हियैं॥

कान्ह सखन तें कहत हँसि, एती सिख धर कान ।
लै लै दधि नारी चलीं, लीजै इनतैं दान ॥

* दान लीला *

(८४२)

लै लै दधि नारी चलीं छैल के दरस हेत, हंसजा के तीर नन्दलाल धेनु चारैं हैं।
केते सखा संग संग खेलत अनेक रंग, नाचत रँगीले किंकिनी की झनकारैं हैं।
दास कहैं तैसें लतिकान चढ़े केकी कीर, सरस सजीली रस तातैं तान ढारैं हैं ॥
चन्द गन हारे हेर हेर तन काँति दीह, रचि रचि कंजन के हार गल धारैं हैं ॥

(८४३)

देख देख नारी गिरीधारी कही सखन तें, कारी लीली सारी ये घटा सी दरसाती हैं।
अङ्ग अङ्ग कंचन के अलिकार साजे कल, चीरन के तीर चंचला सी झलकाती हैं ॥
दास कहैं गगरी सकल दधि धारे सीस, घेरिये रँगीले धाय कहाँ ये सिधाती हैं।
लीजै दधि दान जान दीजै ना सयान कियै, हियैं हरषाती आज कैसी चली जाती है ॥

(८४४)

घेरीं जाय सखन अगारी तें सकल नारी, चित्र की सी काढ़ी रहीं धीरज दरीजियै।
अधिक डरारी चित कहैं कहाँ गिरधारी, कहा कर डारी यहाँ काकी सर्न लीजियै ॥
दास कहैं नन्दलाल निकस लता तें हाल, कही हरषाय धाय संग जिन कीजियै।
लीजियै जी राह चाह करियै सजीली एती, तनक रँगीली आज दधि दान दीजियै ॥

(८४५)

कैसें कहैं कान्ह आन छाँड़िये सयान ऐसे, कहा ये हठीलै जाल नये लै गिराये हैं।
छल कर कर घर घर दधि खाये केते, तनक रँगीले तेरे हृदै ना अघाये हैं ॥
दास कहैं छाँड़ अनरीति रीति लीजै छैल, तेरे ये अजस लाल देस देस छाये हैं।
कंस जान लैहे दैहे नगर-निकारौ हाल, कहा नन्दलाल दान दधि के लगाये हैं ॥

(८४६)

लै लै सखा संग करैं नारिन ते जंग ऐसे, नये नये ढंग ये कहाँ ते सीख आये हैं।
सीधे नन्दराय रानी ऐसी ना अनीत ठानी, छाँड़िये अजानी रीति नगर हँसाये हैं ॥
दास कहैं कंसराय जानैं ना अजानै ऐसे, तेरे छल छन्द ये रे चलें ना चलाये हैं।
दान दीजै दान दीजै कैसें दान ज्ञान कीजै, साँची कहि दीजै कान्ह काने ये लगाये हैं ॥

(८४७)

कहा कंस त्रास ताहि करैं जाय नास एक, लागि है न साँस ऐसे केते ना निहारे हैं।
लरिका ही जानैं करनी ना चिन्हानैं त्रिना, से री अघासे खल केते दल डारे हैं ॥
दास कहैं कान्ह आन ताही ते लगाये दान, कीयै हैं हजार नारि कारज तिहारे हैं।
इन्द्र अहंकार गारे काली जल ते निकारे, सात दिना-राति हाथ गिरि नख धारे हैं ॥

(८४८)

धारे गिरिराज छैल नन्द जननी के काज, नारिन तें नाहक ऐसान जिन कीजै जी।
घर घर खाय छाछ कही अनकही केती, एती निज सही लेत दान तन छीजै जी ॥
दास कहैं आन कान करत सियान जहाँ, छाँड़िये अजान ज्ञान हृदै लै धरीजै जी।
हठ जिन कीजै नैक दीनता गहीजै चित, चाहै जी जितैक कान्ह दधि चाख लीजै जी ॥

(८४९)

दीनताई ताकी जाकी छायौ लै रहत जेही, ऐसे कै गगरी सीस ही तें जाय छीनी है।
टेरि कैं सँगाती जाती नन्द के रँगीले लाल, एक एक हरष हरष चाख लीनी है॥
दास कहैं ठाड़ी नारी लखें चित्र कीसी काढ़ी, नई रे कन्हाई ये ढिठाई आज कीनी है।
हृदै लाय लीनी हरि त्रियन निहाल कीनी, डार नेह जाल लाल नेह तार दीनी है॥

(८५०)

धाईं जित तित कहैं ललन गये री कित, अँखियाँ निहारे जिन धीर ना धराई हैं।
कैसी करें कहाँ जायँ कासौं कहैं हाय दैया, करत सलाह चाह नन्द गेह आई हैं॥
दास कहैं जननी तैं ऐसें लै जनाई जाय, येरी नन्दरानी घर ललन कन्हाई हैं।
दधि छीन लीने चीर चीर तार कीनें, ईंडुरी सकल तिन दह लैं गिराई हैं॥

(८५१)

एरी नन्दरानी छैल लाल की कहानी जान, कानन रँगीले जाय रार तिन ठानी हैं।
सारी चीर डारी आंगी करी तार तारी छाती, नखन की धारी हेर रीत ये अजानी है॥
दास कहैं नैक जननी न सीख देय ताय, कासों कहैं जाय सहैं कैसें नित हानी हैं।
कहै दधि दानी देत लेत न सिलानी आज, दीजै हंस आनी निज अंगन के दानी हैं॥

(८५२)

काहे इतरानी सतरानी ये अजानी नारि, घातिन लगाय नख घात दरसाती हैं।
दस साल हीके निज नैक से कन्हाई लाल, घेरा देत रहत सकल दिन राती हैं॥
दास कहैं तरुनि गयंदनी सी धाय धाय, हेरती न निज तन आई इठलाती हैं।
नैक न लजातीं हैं लगातीं आग नीर धाय, रार ही जगातीं छिन घर ना रहातीं हैं॥

* दोहा *

(८५३)

नैन दरस के लालची चित, नहिं सदन थिराई।
इतै नन्दरानी खिजैं चालीं, सकल लजाई॥

(८५४)

छाई घर घर दान दधि के लगाये हरि, ऐसें जिय जान नारि हिये हरसाई हैं।
करिके सिंगार गरें हीरन के हार चारु, चादर जरी की अङ्ग अङ्गन सजाई हैं॥
दास कहैं रतन जटित ईंडुरी लै सीस, धार धीर कैं दहैंड़ी अगैंड़ी सिधाई हैं।
राधा ललितादि लाई हेर तड़िता सबाई, आनन कैं आगैं छटा शशि की लजाई हैं॥

(८५५)

ठाड़े श्री कालिन्दी तीर कान्ह लै सखा अहीर, देख कहैं नारी दई कहा रचि दीनी री।
राजैं गिरिधारी छैल आज निज घेरैं गैल, करि हैं जहल कहा जिय की न चीनी री॥
दास कहैं केती ये अजान आन कानन री, जानकैं अकेली तिय करत अधीनी री।
केती कहैं आली कलि हाली छैल जाली जानैं, सीस तें दहैंड़ी दधि की झटकि लीनी री॥

(८५६)

चलीं हट नारी करी ह गे की तयारी धाय, कही गिरिधारी नई रीति जिन कीजै जी।
सदन सिधाई कहा त्रास ने सताई यहाँ, आइये सदांई हिय आनन्द धरीजै जी॥
दास कहैं कानन रखैया हित छैया छैल, सांझ या सकारैं ह्वै निसंक राह लीजै जी।
छिन छिन छीजै देर कीजे जिन कंजनैनी, हठ ना गहीजै आय दधि दान दीजै जी॥

(८५७)

करै अनरीति आय नई ये लगाई रीति, काल ही तें कान्ह तेरे कहा जिय आईयें ।
ऐसे हीं जितेक चहे जी जितेक चाखि लीजै, दधिदान की न लाल चरचा चलाईयै ॥
दास कहैं कंस को ये राज है रँगीले छैल, छाँड़ दीजै गैल रार नाहक जगाईयें ।
चलै ना चलाई तेरी अकड़ नसाय जाय, कानै ये लगाई ताके लिखै लै दिखाईयै ॥

(८५८)

काके लिखैं देखि हैं हठीली ये अजानी नारि, देत हैं न दान रार नाहक जगाईयें ।
छीन लीने चीर लै ललन अरुझाय दीनें, सीस तें दहैंड़ी गहि धरनि गिराईयें ॥
दास कहैं हनें ताय जाय ततकाल धाय, जाकी लै हजार चार सेखी लै जनाईयें ।
दसानन दल डारे हिर्न्य हिरण्याक्ष गारे, कहा कंस दीन जाकी चरचा चलाईयै ॥

(८५९)

* दोहा *

खलन दलन दलते रहै, निज दासन के काज ।
जानत जान अजान नहिं, सदां सदां निज राज ॥

(८६०)

सदां हीं के राज राज साज ही के कीजै काज, सिंहासन राज गाय चार तजि दीजियै ।
केकी सिर सिखा ढार हीरन के क्रीट धार, कंचन जलज ही के छत्र लै धरीजियै ॥
दास कहैं त्यारी कही चलि हैं रँगीले छैल, आगें डर कंस ताहि जायकें हनीजियै ।
कीजै जी इतैक लाल जबही चलैये गाल, चाहे जो जितैक जाकें आन दान लीजियै ॥

(८६१)

जब लगि हौं त्यारे संग तब ही लगि जियै कंस, राखि हैं न संस ताकी छार करि डारेंगे ।
निज जन ही के काज रचत अनेक साज, त्रासन की रास लै अखण्ड दीह ढारेंगे ॥
दास कहैं केते काज चरचा चलाई आज, चढ़ें जब गाज ताके अहंकार टारेंगे ।
गाजेंगे इकत्र जग जस के नगाड़े दीह, जा दिना सजीली ताके नगर सिधारेंगे ॥

(८६२)

खाईये अघाय दही कही अनकही जेती, करुणानिधान कान्ह कान जिन कीजिये ।
रहिये सदां ही संग करिये अनेक रंग, खेल रस रेल हिये आनन्द धरीजियै ॥
दास कहैं नैंनन के तारे रहिये न न्यारे, नैंक ना निहारे छिन छिन तन छीजियै ।
कीजियें दया दयाल दीजें घर जान हाल, चाहे जी जितेंक लाल दधि दान लीजियै ।

(८६३)

दीजिये जिनस जेती साथ हैं तिहारे नारि, खाली दधि ही कौं एक लैकें कहा कीजैजी ॥
लादें लिये जात कित अति ही सयानी नित, सकल दिनान ही के लेखा कर दीजैजी ॥
दास कहैं दीजिये जताय ढिग कहा लाल, नाहक करत रार हेर चित्त खीजैजी ।
गिरियां अनार दाख लादे कित खैला जात, तिनकौं रँगीले कान्ह आन दान दीजैजी ॥

(८६४)

गिरिया अनार दाख कहि डहकात कहा, खैला कौं लदायकें गयन्द गत जात नित ।
दीजै जिन दान देंहैं लहैंगे सकल साज, कहा रहीं गाज आज जायगीं सयानी कित ॥
दास कहैं नारी ऐसी कीजै नहिं गिरधारी, जानी जिय जानी ऐजी ह्वै गये सयाने चित ।
नित नित करें अनरीति कित सही जात, कानन छलत रहैं नारि लाल जित तित ॥

* दोहा *

(८६५)

रिस कर लालन नें कही, देत न सीधें दान।
झटकें हिय ते जलज लरि, करिहैं कहा अजान ॥

(८६६)

झटकी जलज लरी अटकीं सकल नार, तैंने रे अजान कान्ह कहा आज कीने हैं।
हिये हरसात रिसियात निज आनन में, धाय धाय लाल छैल अंक लाय लीने हैं ॥
लेत रस अंग नैन दै दै कें सकल सेन, जानी हिये सखा लाल ह्वै गये अधीने हैं।
दास जन दीनी हुंक नारिन नें करी संक, धाय खिसियाय गिरिधर छैल छीने हैं ॥

(८६७)

कही रिसियाय लाल आन है अंनग जीकी, तिनके सकल दंड नीकी रीति दैहैं जी।
सीधी ही के कहत जे गहत हठीली रीति, करत अनीत नारि कैसें नित सैहैं जी ॥
दास नैंक देत ना खरी ही इतरात जात, खरी ही खरी ये इठलाय कैं खिजैहैं जी।
आज कहाँ जैहैं जान जैहैं निज नीकी रीति, एक एक दिन के सकल दान लैहैं जी ॥

(८६८)

सखन तें कही लाल घेरिये जी राह लाल, दीजिये न जान नारि दिये बिन दान के।
ठाड़े जाय जाय जित तित ही रँगीले धाय, हरष हरष सटकीन कर तान के।
दास कहैं कानन करत रस रेल खेल, अति ही रसीले नित नित ही सियान के।
लाड़ली तें हँसि कर कही अंस कर धर, लीजिये अनंग रस लता गृह आन के ॥

(८६९)

चले हरषाते दोउ ललित लतान गेह, कञ्जन सजीले सेज छैल दृष्टि आनी हैं।
करैं रस रेल केल आनन्दहि झेल झेल, सिथिल ह्वै रही देह देह अरुझानी हैं ॥
दास जित तित रंध्र झाँकत सयानी तहाँ, निरख अलीन हू की अखियाँ सिरानी हैं।
नेह रस सानी कहैं सरस कहानी रानी, राधिकाजी राज आज नन्दलाल दानी हैं ॥

(८७०)

ऐसें रसदान कान्ह लीजिये सदां ही आन, निरख निरख निज अखियाँ सिरात हैं।
लतागृह त्याग आये सखा दिशि दिशि छाये, लैं लैं के रँगीले दधि गागरी तें खात हैं ॥
दास कहैं नये नये खेल करैं रस रेल (लाल), अति ही सजीले अङ्ग अङ्गन सिहात हैं।
धन्य यह नारी निज कर राखे गिरिधारी, जा रस दरस हेत गिरा ललचात हैं ॥

(८७१)

* दोहा *

धनि यह कानन धन्य रज, धन्य धाय यह नारि।
इनके संग खेलत हरी, सकल जगत आधार ॥
चरण रेनुका इनन की, करि हैं शीघ्र सनाथ।
केहि दिन दासी कर गहैं, लैहें निज गन साथ ॥

(८७२)

छड्ड दे दिगारे असी नन्द दे रँगीले छैल, कीया तें हठीले साड़ी दहैंड़ी गहैंदा है।
नई नई कानन अनीत कान्ह करदां है, किस्स के कहे ते दद्ध तान तें चहैंदा है॥
दास कहैं कंसजी के डर तें न डरदा है, अरदां है कोया हथ्थ छतियाँ चलैंदां है।
अजस ही लैंदा निक्की रित्त ना चलैंदा कट्टी, ऐंड़ी एंड़ी गल्लें कैंदा हथ्थ क्यों लगैंदा है॥

(८७३)

लगादां है इत्थे दान कानन दे नाल सांडा, कीयी तें रँगीली एंड़ी एंड़ी ही रहैंदी है।
जेड़ी थारी गल्ले रल्लें निक्की हैं न छल्ले चल्ले, हीयें हार हल्ले हीर नाहक रसैंदी है॥
कंस ही कहेंदी है जनेंदी है न कीयां धाय, गल्ले हीं चलेंदी अक्ख अँखियाँ तनैंदी है।
रार ही जगेंदी है अड़ेंदी है दिगादे नाल, सीस की दहैंड़ी तैंन चंगा दद्ध देंदी है॥

(८७४)

थारी लङ्गराई छैल चालसी न इट्टे चिनी, नई रे हठीला आज काईं हाथ आसी जी।
छाँड़ दीजै गैला गैला काई काज ठाने रार, छाड़सी न ये जी नई राज कनें जासी जी॥
दास कहैं थानैं लाल नीकी सिख देसी हाल, धारसी न ऐयां तें घिरासी जी।
जननी खिस्यासी तात नन्द नें लजासी जान, अैयां री तहां ते काँईं दधि छैल खासीजी॥

(८७५)

काँई काज घेरे छै हठीला नारि कानन में, गागरी नें हात घाल अंखियाँ ने ताने छै।
नट रे सजाय साज ला करो हलाई आज, सथ्था नें रे टेर कें नई अनीति ठाने छै॥
दास कहैं थारी थे अकल कि नां हरी आज, कंस जी रा गैल दे चिनी न डर आनें छै।
छाने नार होसी लाल राजनें जनासी हाल, अकड़ नसासी घर हीरा राज जानें छै॥

(८७६)

के ठाईं चली ले नारि सीसेर गागर धार, ऐई काछं केई आसे हातार ढाकीये चे।
केई कर नाय नाय रखल लगोले खाय, सहल दहीर दान ये खाने लागीये चे॥
दास डांक कैने तीत करीचे कन्हाई लाल, ऐई कथा सिथी जैये कंसेरे जनैये चे।
अकड़ नसैये तार राजेर धरैये दीले, दीले नाई कटी रार केतोर जागीये चे॥

(८७७)

सकल कन्हाई दधि खायेचे ढालीये दीले, येई काज तार नँद नन्देर डाकीये चे।
लरिर छांड़ा डांकेत कानन तें तेती करी, छाड़ँ नाइ ये की लाल के तार कांदीये चे॥
हजार कही ले कथा केई ना करीले कान, दास केनें धीर धारी ये साज ताकिये चे।
सेई ठाईं जेये राज कंसेर थाकिरै छोले, तेरखानेर खाल तार सिध्रि धरीये चे॥

(८७८)

किसके कहे ते कान्ह करता अनीत एती, टेढ़ो टेढ़ी आंखें कान्ह किस्तरें दिखाता है।
जाता है न सोधा चला करता दलील ठाड़ा, दिल की न जानी जाय सेखियाँ जनाता है॥
दास कहैं सिर से दहेंड़ी छीन लीनी दद्ध, हँस्स हँस्स खाता लै लै सखन खिलाता है।
नैंक ना लजाता छैल सीधा चला आता उर, किस न खाता नारि सीने से लगाता है॥

(८७९)

चाहिये न ऐसी करनी सलाह नन्दलाल, रासते चलत नारियाँ से जंग ठाना है।
चित ललचाना खाना दधि जरा चाख लोजे, दहेंड़ो छिनाना जान कर ये अजाना हैं॥
दास कहैं आना जाना सदां का रहाना यहाँ, ह्वै कर सयाना दान किसतरें लगाना है।
कान्हा इठलाता छांड़ दोजिये सहा ना जाय, नित्त का खिजाना राज कंस का न जाना है॥

* सवैया *

(८८०)

सिर की गगरी छीन लई कस कंसाराय कर जाय जनें हैं ॥
घेरत नार नन्द कर लरिका नीक जान तेहि ठाँई घिरे हैं ॥
डगर जात काहे इठलैये दास कहैं छल तहीं नसै हैं ।
दधि का छैल चहै है इहि गति तेंहि कर नेक छाच नहिं दै हैं ॥

(८८१)

नीकी न लागत यह गति कान्हर काहे लाल करत लरकैयाँ ।
कंसराय का राज न जानसि नन्दलाल कां हाल घिरैयाँ ॥
दास कहैं केहि सीख लीन असा नारिन कां तेहि लगै खिजैयाँ ।
जद लग गाल चलैं अति नीकैं तद लग राज न जाय जनैयाँ ॥

* कवित्त *

(८८२)

आली रस रास लाल लाड़ली नचत संग, अचक चरण लच धरनि धरत हैं ।
ताताथेई ताताथेई कर गत लेत देत, झनन झनन कल झांझन करत हैं ॥
दास कहैं देखरी रँगीली रस नेह सानी, सरस रसीली तान रसना ररत हैं ।
एक एक ही निहारैं दृष्टि छिनक न टारैं, केते रति नाहक की चाहन दरत हैं ॥

(८८३)

नाचत हरस हँस लाड़ली ललन संग, कैसे रसरेलन के खेलन करत हैं ।
चलन अदा की ताकी ऐसी नाहिं झांकी आली, तरुण गयंदनि की गति ही गरत हैं ॥
दास कहैं जित जित धरत चरण कंज, तित लाल रंग के कलस से ढरत हैं ।
एक एक ही निहारैं दृष्टि ना छिनक टारैं, केते रति नाहन की चाहन दरत हैं ॥

(८८४)

देख री सहेली रंगरेली हेली आन नैक, इनके निहारैं री अनंग रति लाजैं हैं ।
कंचन जटित नग खचित सजीले कल, कैसे ये रंगीले अङ्ग अलंकार साजैं हैं ।
दास कहैं दासी खासी लै लै हित रासी साज, सारंगी सितारन रँगीली तान गाजैं हैं ॥
अंस कर घालैं करें हेर न निहालैं कैसे, हीरन तखत श्रीलड़ैती लाल राजैं हैं ।

(८८५)

केती सखी कली रंगरली लैं लतान ही तें, रचत रँगीले हार इनहीं के काजैं हैं ।
केती चीर चाँद चाँदनी से लैं चटकदार, चिन चिन चार जरीदार अंग साजैं हैं ॥
दास कहैं केती घिस चन्दन जही के सार, आनन लगाय हरषाय जस गाजैं हैं ।
अंस कर घालैं करें हेरन निहालैं आज, हीरन तखत श्रीलड़ैती लाल राजैं हैं ॥

* कालीदह के कवित्त *

(८८६)

जै जै कीरति लाड़ली, जै नँदनन्दन अधार ।
जै जै आनन्दकन्दनी, दास आस हिय सार ॥

कालीदह लीला ललित, की लागी चित आस।
जन अघ टारन लाड़ली, रचि दीजै हित रास॥

(८८७)

देख धरा त्रास हित रास ऋषि नारद जी, खल दल नास हित सीघ्र ही सिधाये हैं।
कंस सिर नाय हरषाय निज आसन दे, केते दिन गये आज दरस दिखाये हैं॥
दास चित कहि तें अधीर हैं रंगीले छैल, सांची कह दीजै कहा संकट सताये हैं।
हा हा नाथ दीजिये सलाहजी सनाथ कीजै, हलधर कृष्ण लाल काल से दिखाये हैं॥

(८८८)

कागा से तृणा से खेला से सहस्र हनें गये, खेलत ही धेनुका त्रिणाकौं लै नसाये हैं।
छिन छिन घरी घरी रैंन दिन कल नाहि, कासों कहैं जाय दीह संकट सताये हैं॥
दास कहैं त्यारे लै दरस ते हरष तन, करुणानिधान जस देश देश छाये हैं।
हा हा नाथ दीजिये सलाह जी सनाथ कीजै, हलधर कृष्ण लाल काल से दिखाये हैं॥

(८८९)

केतिक हैं काज राज ताही तें रहे जी आज, लिखि खत आज हलकारे हाथ दैना जी।
नन्द जी से कह देना सत लख कंज दह-काल ततकाल नहीं दिये तें टलैना जी॥
दास कहैं सांची ये सलाह चित लाह लीजै, ऐसी चरचा के ताके धीरज रहैना जी।
जहाँ रहे कालीजी कराली जी गरल घाली, तहाँ जाय लाल हाल जीवत रहैना जी॥

(८९०)

टेर हलकारे कही नन्द के सदन जारे, देना ये जनाये सत लाख कंज चाय हैं।
कालीदह हीके नीके लगे हित हीके काज, कहीं कंस जीनें काल सीघ्र ही लदाय हैं॥
दास कहैं लिख खत दीना जित होना जान, जीना जन चाईयें तें देर ना लगाय हैं।
आय हैंन काल काल आये हैं सकल हाल, कृष्ण हलधर तेरे धायकें घिराय हैं॥

(८९१)

लैकें सात चिठी ईंठी चरचा इ कीठी जाय, दई नन्दजी के हाथ देखत लजाये हैं।
टेर कें सँगाती जाती नारी नर कहैं हाय, कहा ये अखण्ड आज सीस त्रास छाये हैं॥
दास कहैं कैसी करें काकी जा सरन लहैं, ऐसी अर रहे राज कहा जिय छाये हैं।
खेलत ही कान्ह आये हँसि हँसि के जनाये, कहाँ तैं ये आये तात कहा कर लाये हैं॥

(८९२)

कंस के सिखाये आये लाये एक चिठी लाल, कहा कहैं हाल जिय कहत लजाईयै।
काली दह कंज काल चाहिए सतक हाल, कीजिये न देरी सीघ्र सकल लदाइयै॥
दास कहैं कैसी करैं जतन रंगीले कान्ह, कठिन कराल सीस त्रास रास छाईयै।
नीकै जिन दैहैं जाय जैहैं जिय सांची जान, हलधर कृष्ण तेरे आय कें घिराइयै॥

(८९३)

कंस त्रास होते गिरें संसै के सकल सिंधु, ललन कहे तें चित धीरज धराये हैं।
टेर टेर सखा संग खेलत अनेक रंग, गेंद लै रँगीले कर कानन सिधाये हैं॥
दास कहैं जाके ध्यान करें सनकादिक से, नेह ! ग राचे ये अहीरन सँग छाये हैं।
अति ही सजीली दरसात लतिकान छटा, नेह की घटा सहित कालीदह आये हैं॥

(८९४)

कीजै जिन संक चित रहिये असंक त्रास, राखि है न अंक निज इष्ट हितकारी हैं।
रहैं सदा संग करें खलन तें जंग तिरणा से, ही (जी) अघारे कागासेन के संहारी हैं॥
दास कहैं तेई सीस काली के लदाय कंज, नासैं जन रंग कंस अहंकार गारी हैं।
करुणा निधान कान्ह करि हैं सकल काज, राख लैहैं लाज सरैं कारज हजारी हैं॥

(८९५)

खेलत हँसत गेंद खेलन रँगीले छैल, धाय कें चलात ताक ताक घात कीनी है।
आई कर कान्ह के दरण अहंकार कंस, दीन दीनता हरन डार दह दीनी है॥
दास कहैं सखा तैंने करी ये कहा रे लाल, दीजै ताय लाय धाय अंक गहि लीनी है।
कहा कान्ह कोनो जान कैं गिराय दोनी निज, जरीदार तारन ते गसत रँगीनी हैं॥

(८९६)

दीजै छाँड़ लंक रे असंक यार नाहक तें, एक गेंद ही के काज एती रिस ठानैं है।
लीजैं गिन चार नैंक धीर हिये धार गिर, गई तेन ऐहैं नैन ताही हेत तानैं हैं॥
दास कहैं त्यारे काज कीने हैं हजार आज, नैक चीज ही के काज साँति जी न आनैं हैं।
ऐसे खिसियाने चित नैंक न लजाने हने, धेनुका अघा से कहा तैंने नहिं जानैं हैं॥

(८९७)

सखन रिस्याने जाने नन्द के रँगीले छैल, चढ़े तरु ताल देत कछनी कसाय कें।
कंस अहंकार गारी काली जल तें निकारी, दीन अघटारी हिय अति सरसाय कें॥
दास कहैं जाके ध्यान करें सनकादिक से, नारद से रिषि रहे जग जस छाय कें।
नर तन आय कें धराय जन हेत चेत, गिरे हैं कालिन्दी दह कृष्ण लाल धाय कें॥

(८९८)

देत हैं न गेंद सीख देत है हजार आन, तेरे ये सयान चित्त एक ना धरैं हैं जी।
देख लई चाल ख्याल करत हजार लाल, लैहें ततकाल यदि जान घर दैहैं जी॥
दास जरीतारन की नगन हजारन की, ऐसे नित हानि कान्ह कैसें जान सैहैं जी।
सत्त ही जनैहें चित नैंक न लजैं हैं धाय, नहीं रे रंगीले नन्दजी तें जाय कैहैं जी॥

(८९९)

गिरे नन्दलाल धाय देख कहैं हाय हाय, सकल संगाती छैल कहा जिय लाये हैं।
गेंद ही के काज राज जान निज दई कान्ह, ऐसे ये अखंड आज त्रास लै दिखाये हैं॥
दास कहैं दरशन हेत है अधीर रहे, जैसे झष जल हीन तैसें दरसाये हैं।
अधिक लजाय कर हाय नैंन जल धारा, चले हहराय जन नन्द गेह धाये हैं॥

(९००)

इतै नन्दरानी याद लालन की आनी दीह, देर री लगानी आज छाकन नहीं कीनी है।
चली धाय गेह लेह देह अति ही सनेह, तहाँ एक नारी लै तड़ाक छींक दीनी है॥
दास कहैं गई थहराय अति ही लजाय, निकरी अजिर चित्त अधिक अधीनी है।
कहा रचि दीनी दई गति हीन चीनी जाय, आज हाय कंस की अधिक त्रास चीनी है॥

(९०१)

लालन के देखन चले हैं नन्दराय रानी, अधिक हिरानी संग कानन सिधाये हैं।
तित तें संगाती दरसाय कहैं हाय हाय, रहे नैन जल छाय अधिक डराये हैं॥
दास गिरे कान्ह जान कालीदह गेंद हान, ताछिन तें नैंक नहीं दरस दिखाये हैं।
टिनकत सीघ्र आये जगह जनाये तिन, जननी जनक गिरे धरन लजाये हैं॥

(६०२)

आये घर नन्द नारि देखी हैं अनन्द नहीं, कही कहा छन्द आज ह्वै रही अधीनी है।
लालन की छाक हेत चाली ही सदन धाय, ताही छिन नारि नें तड़ाक छींक दीनी है॥
दास कहैं कैसी करैं हाय हाय एजी राज, कही ऐसी ही अकाज राह निज चीनी है।
कहा रचि दीनी चित्त धीरज गही ना जाय, देखन ललन राह कानन की लीनी है॥

(६०३)

धाये जन जित तित कहैं लाल गिरे कित, सकल सँगाती दरसाय ठाँह दीने हैं।
त्राहि त्राहि त्राहि राय रानी ये लगाई टेर, गिरे हैं धरनि चित अधिक अधीने हैं॥
दास कहैं कान्ह त्रास जराये दिखाय आन, दरस तिहारे नहीं धृक निज जीने हैं।
सीने दरकत जात धीर ना धरात छिन, हाय कैसी करैं आय दई घेर लीने हैं॥

(६०४)

गिरन चले हैं जल जन के सहित रानी, कर गहि राखे जन ऐसी जिन कीजिये।
कान्ह ही कें संग जान सकल संगातिन की, ये जी सिरताज यह सांची जान लीजिये॥
दास जानै कहा लिख दीनी करता लिलाट, देखिये दिखाई छिन धीरज धरीजिये।
कीजै निज इष्ट ध्यान हरैं जे कलेस आन, ये ही है सयान नहीं यहै तन छीजिये॥

(६०५)

व्याकुल विलोक तात मात व्रजवासी राम, बैन सुखधाम अमी सींचत जिवाये हैं।
आवत हैं कान्ह गुण खान नाथ काली हाली, कंस मद भंजन कौं दह में सिधाये हैं॥
लाल बलबीर बीरताई कौं बिलोकि देखौ, बकी वका वत्सासुर तिननि नसाये हैं।
केते उर आये श्याम सब लै दराये तुमै, देखतहि तर देव स्वर्ग कौं पठाये हैं॥

(६०६)

बूड़ी सुत सोक के अथाह सिन्धु नन्दरानी, मोह वश ह्वै कैं तन सुध बिसराइयैं।
आवौ प्रान प्यारे पास नैनन के तारे कृष्ण, हलधर वारे मेरे ऐसे कै सुनाइयैं॥
माखन मधुर धौरी धूमर कौ काढ़ राखौ, नैक नैक चाखौ देखौ कैसो सुखदाईयैं।
देर ना लगाईये सिधाइये सदन ओर, लाल लाल लाल कहि टेर क्यौं लगाईयैं॥

(६०७)

उरग की नारी बनवारी वेंनु धारी जू कौं, चकित अपारी मुख चन्द्र कौं निहार ही।
कौन कौं पठायौ भरमायौ यहाँ आयौ हाय, नाग विष ही ते जल उमग्यौ अपार ही॥
लाल बलबीर धीर कैसें मन राखें माय, उनकौं रिझाय घर क्यौं नहीं सिधार ही।
जाग जैहैं कंत बलवन्त है अनन्त तन, ये कही छिनक में करैगो जार छार ही॥

(६०८)

कंस कौ पठायौ यहाँ आयौ हौं कमल लैन, दीजिये जगाय नाग कैसौ बलकारी है।
तापै लदवाय पहुँचाय हौं नृपति द्वार, कीजिये न बार मन येही मैं विचारी है॥
लाल बलबीर तोहि देखि कैं लगत मोह, हठ छाँड़ दीजै सीख साँची ये हमारी है।
देह सुकमारी क्यौं करैगो जार छारी तूही, लीजिये जगाय जो मरन मन धारी है॥

(६०९)

गरब अहारी बनवारी श्रीविहारी लाल, अति ही बिशाल वपु ही कौं बिसतारौ है।
टूटन लगोहै अंग सबै मद भयौ भंग, जान्यौ मन ये ही अवतार व्रज धारौ है॥
लाल बलबीर ह्वै अधीर दीह बाढ़ी पीर, सरन सरन हौं जू दीन ह्वै पुकारौ है।
गायौ ना सम्हारौ लघु कीयौ ततकाल प्यारौ, करुणा के सिंधु कौ विरद पन पारौ है॥

(६१०)

तबै बनवारी यह पूँछ दाब दई गारी, चौंक्यौ उर भारी ज्यौं गरुड़ रिपु आयौ है।
देख्यौ दृग बाल क्रोध छै गयौ बिशाल मुख, छाँड़त है ज्वाल हरि अंग लिपटायौ है॥
लाल बलबीर की निहार छबि नारी कहैं, हाय मन कहाँ ते मरन ये सिधायौ है।
अति हरषायौ काली कहत गरज हाली, मो सम न कोऊ जग ही पै गर्ब छायौ है॥

(६११)

येही टेर सुनी गजराज की रँगीले छैल, गरुड़ बिसार नंगे पाइन सिधारौ है।
येही टेरी सुनी द्रौपदी जू की सभा के मध्य, दुष्ट मद गारचौ चीर अरबै कर टारौ है॥
येही टेर सुनी लाखा ग्रेह ते निकारे जन, बलबीर ऐसो बेनु जात ना सहारौ है।
लघु तन धारौ नाग कियौ है सुखारौ, नाथ कूद चढ़े सीस ताके नच्यौ प्रान प्यारौ है॥

(६१२)

देख कैं दरस मन हरष बढ़ायौ नाग, दीन ह्वै दयाल जू सों वचन सुनायौ है।
कपटी कुटिल क्रूर काइर हौं दीनानाथ, तुम्हरौ न भेद स्वामी वेद हू ने पायौ है॥
जे पद परसि सुरसरिता पुनीत भई, तीनलोक पावन सु जाकौ जस छायौ है।
कृपा सो धरौ मो सीस पातक नसाई ईस, संभ्रम भगायौ दास अभय जू करायौ है॥

(६१३)

उतै नन्दरानी बिलखानी मुरझानी कहै, अहो बलराम श्याम अजहूँ न आमैं हैं।
जीवन वृथांई सुखदान कान्ह बिनु जान, कोऊ गुन खान नहीं दरस करामैं हैं॥
लाल बलबीर बिन कैसें मैं धरूँगी धीर, बिरहा अनल आन अधिक जरामैं हैं।
काहे कल पामैं सुख पामैं ये कहाँ सुजान, निपट अजान प्रान निकर न जामैं हैं॥

(६१४)

सुनि दीन बानी सुखदानी रिझानी मति, अभय हेत काली सीस चरन धराये हैं।
कंस नें मँगाये हम आये हैं सरोज लैन, तीन कोटि ताके पर पिठ्ठ पै लदाये हैं॥
लाल बलबीर चले ब्रज सुखदाई छैल, लीनौं उचकाय दास अति हुलसाये हैं।
नागन की नारी करैं विनती अपारी नाथ, बिन ही प्रयास आप दरस दिखाये हैं॥

(६१५)

बोले बलराम श्याम आवत हैं सुखधाम, काहे कौं बिराम मात होत मन माहीं री।
काल हू कौ काल खल दल कौं विहाल करैं, चौदहू भुवन ५ वो आप निज साही री॥
लाल बलबीर दास दीनन रखैया कोटि, कंटक दरैया उन्हैं नैंक डर नाहीं री।
जहाँ परै काज सुख साज राज लाज हेत, कोप करि गाज छैल तितही कौं जाहीं री॥

(६१६)

जानि कैं उदासी ब्रजबासी सुखराशी छैल, फन चढ़ि नाग के यमुन तट आये हैं।
देख नर नारी बनवारी श्रीबिहारी जू कौं, जाय जाय नन्दरानी कौं सुनाये हैं॥
लाल बलबीर लाये कमल लदाय लाल, सुनत ही बैन मन अति हुलसाये हैं।
ग्रीष्म के भान के तचाये प्यास ने सताये व्याकुल मरत मनौं लघु लै पिवाये हैं॥

(६१७)

आये तीर कान्ह सुखदान मनमोहन जू, कमल धराय बैन कह्यौ ये नबीनौ है।
जावो निज लोक सोक मन तें बिसार दीजै, करौ सुख साज जोई भावै रंगभीनौ है॥
कह्यौ बलबीर जू सों त्रास है गरुड़ जू कौ, पाइन परै तौ ग्रान कीनौं सीस चीनौ है।
अभय पद दीनौ डर दीन जान छीनौं नाथ, कीनों हौं सनाथ पद बन्दि चल दीनों है॥

(६१८)

नाचै लाल काली की फनाली पै निराली भाँति, मधुर मधुर सुर बाँसुरी बजावहीं।
देख ख्याल ख्याली वनमाली के उताली देव, नभ में ते जै जै कर पुष्प बरसावहीं॥
लाल बलबीर ब्रजबासी सुखराशी जू कौं, कोऊ जल माँह तीर ठाड़े ललचावहीं।
अति अतुरावैं ज्यौं तुरावैं गाय बच्छ हेत, मिलै सुखरास तन त्रास जबै जावहीं॥

(६१९)

तीर कान्ह आये हुलसाये ब्रजबासी सबै, दौर तात मात लाल अङ्ग लिपटाये हैं।
ता समैं कौ सुख मुख वरन्यौ न जाय कछु, मरत ही मानौ प्राण फेर उर आये हैं॥
लाल बलबीर कही जलज धरे हैं तीर, कंस ने मँगाये अबहू न पहुँचाये हैं।
आज जौ न जैहै कालि सैना साज ऐहै, एती सुन नन्दराय धाये सकट लदाये हैं॥

(६२०)

दीने हैं सकट लाद कोटि दधि माखन के, घर भर अहीरन काँधे धरवाये हैं।
तीन कोटि कमल दिये हैं काली तीर धरे, चाहे चितै लीजै लिख पत्र कौं गहाये हैं॥
भनै बलबीर सब गोप नन्दराय जू नें, संग में सिखाय दीनें ताई कौं पठाये हैं।
बोले हँसि श्याम कियौ काम कैऔ कंस जू सौं, नाम कौं जनैयौ सुन मथुरा सिधाये हैं॥

(६२१)

चलै हरषाय सबै आये वृन्दावन दीयौ, पाय नन्द सिरो पाय सबन दिखायौ है।
भये कंस राजी भाजी ब्रज की सकल त्रास, निरभै करैंगे बास संभ्रम नसायौ है॥
भनै बलबीर उतै राज मुरझाय जाय, दावानल ही सों निज मंत्र लै जनायौ है।
कालीदह आये गोपवृन्द सबै छाये तहाँ, दीजिये जराय जाय दाव भलौ पायौ है॥

(६२२)

पहुँचे जा द्वारे हलकारे सों सुनाई बात, जाय कही कंस जू सों सीघ्र उठि धायौ है।
देखत ही फूल सब सुध-बुध भूल गयौ, उऋयौ उर भूल ज्ञान ध्यान बिसरायौ है॥
भनै बलबीर सोच पोच मति केती फेरि, भीतर कौं जाय पहरामन कौं लायौ है।
उर झुँझलाय मुख करत मधुर बात, नन्द जू सरस यह कारज बनायौ है॥

(६२३)

चल्यौ हरषाय खलराज की रजाइस लै, निज करतूत आज कंस कौं दिखाइये।
जार करूँ छार तहाँ लाऊँ ना अबार होय, सब ही सुधार नैक दृष्टि पर जाइये॥
भनै बलबीर धायौ है कर अधीर सबै, भीर व्रजवासिन की एक ठाँह पाइये।
देर न लगाई क्रूर क्रूरता दिखाई जहाँ, सौवत हे तहाँ जाय अगिन लगाइये॥

(६२४)

प्रगटी प्रचण्ड वन दावानल चहूँ ओर, पवन झकझोरन तैं दौरत ही आवै है।
साखा द्रुम बेलिन में रह्यौ मचि कोलाहल, खग मृग जीव बहु जंतुन जरावै है॥
जागे ब्रजबासी छाई अमित उदासी उर, हेरत दिसान राह कित हूँ न पावै है।
त्राहि त्राहि बलबीर टारौ यह पीर नाथ, कीजिये सनाथ त्रास सह्यौ नहीं जावै है॥

(६२५)

खोले नैन भये चैन बोले हँसि सबै बैन, काल सों कराल ज्वाल कित में बिलाई है।
जान्यौ न परत ख्याल छैल नन्दलाल जू कौ, ब्रजप्रतिपाल ये बड़ेई सुखदाई है॥
लाल बलबीर जाय नाथ्यौ जी पताल नाग, तीन कोटि कंज लायौ तापै लदवाई है।
करत सहाई व्रजजन पै सदांई यह, पूर्ण अवतार हितसार लियौ आई है॥

(६२६)

टेर व्रजवासिन की सुनी सुखराशी छैल, कीजै न उदासी सबै आँख मूँद लीजै जी ।
करत सहाई बुही लेंगे सुधि आइ दौर, बड़े बलकारी ध्यान उनहीं कौ कीजै जी ॥
सबै बलबीर धारौ धीर आवैगो न नीर, भूल हू न कोऊ मन नैंक ना डरीजै जी ।
सुन्दर सुजान कान्ह गये कर पान जान, काहू नहिं पाई फेर कही खोल लीजै जी ॥

(६२७)

रहे दिन राति प्रात होत ब्रजबासी सबै, सहित गुपाल निज सदन सिधाये हैं ।
करै नव खेल रसरेल बलबीर लाल, निरख निहाल जन त्रास कौं भुलाये हैं ॥
कब कंस कज माँग कब जल नाथे नाग, कब वन लागी आग कब गये आये हैं ।
माखन कौं खात मुसिक्यात सुखधाम श्याम, माँग तात मातन के लोचन अघाये हैं ॥

* अघासुर लीला *

(६२८)

ग्वालन के संग छैल वन में चरावैं बच्छ, स्वच्छ जल देख यमुना कौ सुखपावहीं ।
कोऊ घेर लावै कोऊ टेर दै बुलावै कोऊ, अङ्गन सिरावैं तृण हरित चरावहीं ।।
लाल बलबीर जू कौं कोऊ द्रुम बेली रंग, रेली अति हित सौं दिखावहीं ।
कोऊ हरषावहीं सुनावहीं रंगीली तान, मान भरी तान कान्ह बाँसुरी बजावहीं ॥

(६२९)

बदन समाने सबै अघा ने अकोरे ओठ, दशहू दिशा में छयौ अन्धकार भारौ है ।
बोले अकुलाय ग्वाल कहाँ गये नन्दलाल, कठिन कराल जाल जात ना सम्हारौ है ॥
लाल बलबीर चौंके खलन दलैया सुन, भक्तन सहैया तन दुगुनो समारौ है ।
गयौ ना संघारौ फारयौ मुख बीच प्यारौ, फट्यौ दसम दुआरौ स्वाँस रोक मार डारौ है॥

(६३०)

अघासुर आयौ खल कंस कौं पठायौ, भूमि तें अकास लग बदन पसारो है ।
जान लई कान्ह याके कीजै तन ही को हानि, लैकें ग्वाल बच्छ छैल तित ही सिधारौ है॥
लाल बलबीर जू की जानें कौन माया दीह, सकल सँघाती मग सुखद निहारौ है ।
मोद मन धारौ धन चरेगौ हमारौ तृन, हरित हरित जहाँ निपजत भारौ है ॥

(६३१)

बाहर निकारे ग्वाल जानिकैं बिहाल लाल, निरख भये निहाल सबै हरषायौ है ।
धन धन कान्ह सुखदान प्रान प्रीतम जू, धन्य पितु मात जिन ऐसो सुत जायौ है ॥
लाल बलबीर खल गिरचौ पछार डारयौ, काल ते कराल जिन त्रास लै दिखायौ है ।
बोले हँसि श्याम सुखधाम तुम मित्र मेरे, तुम्हरी कृपा तें अघासुर मरि पायौ है ॥

(६३२)

मित्रन के संग वन भोजन कर श्याम, पावैं सुखधाम छाक छीन छीन कर सें ।
खाटे मीठे रोचक सलोने पकवान बहु, अति ही सुहौने लौने बेर बेर परसें ॥
लाल बलबीर जी कौ निरख बिलास हास, अमरपुरी के सब देव वृन्द तरसें ।
जै जै नन्दलाल ग्वाल बाल मिल खेलौ ख्याल, सदा ही कृपाल वर पुष्प भर बरसें ॥

(६३३)

जान चतुराई चतुरानन की व्रजराई, ग्वाल बच्छ हीके तन आपनैं बनाये हैं।
रूप गुन बैंस सबै वैसे रंग रेख भेख, बोलन हँसन विहँसन सम छाये हैं॥
लाल बलबीर विधि करी है ढिठाई दीह, तदपि विचार दास कीये मन भाये हैं।
बोलि कैं सँगाती कह्यौ साँझ नियराती, सबै मण्डली सिहाती छैल सदन सिधाये हैं॥

(६३४)

भोजन करत बन ग्वाल बच्छ चोरे बिधि, लाल बलबीर जू की माया भरमाये हैं।
कैसौ भगवान खाय झूटन अहीर आन, कौन है सुजान मन भेद नहीं पाये हैं॥
प्रथम गो नन्द दूजै गोपन के बाल वृन्द, लै कै छल छन्दन सों लोक कौं सिधाये हैं।
सबई जान जैहैं तौ पै ये बुलाय लैहैं ऐसे, करत विचार माया सैन में सुबाये हैं॥

* दोहा *

(६३५)

घर घर श्रीगोपाल जू, ग्वाल बच्छ धर देह।
खेलत जननी जनक मन, दिन दिन बढ़यौ सनेह॥

(६३६)

आयौ चतुरानन विचार व्रज छैहैं त्रास, देखे बच्छ-ग्वाल नन्दलाल जू चरामैं हैं।
चौंक गयौ लोक तहाँ सोवत ही पाये सबै, धायौ पुनि दौर दृष्टि वैसे ही लखामैं हैं॥
लाल बलबीर जू की माया भरमायौ मन, अति अकुलायौ कहै हाय सत्त कामैं हैं।
पामै है न सारदा महेस सनकादि भेद, छिन में चहैं तौ ब्रह्माण्ड कौं बनामैं हैं॥

(६३७)

डोल्यौ बिधि बरस न पायौ भेद लालन की, करुनानिधान जन जान मुसिक्याये हैं।
दीनों जब ज्ञान धर ध्यान कौं विचार रह्यौ, ग्वाल बच्छ जल भुज चत्र दरसाये हैं॥
लाल बलबीर जू सों हाय मैं विरोध कीनौं, ऐसो मति हीनौं छल स्वामी कौं दिखाये हैं।
कपटी कुमति कुटिल क्रूर कायर कपूत हौं मैं, दीनबन्धु राखि लीजै सीस पद नाये हैं॥

(६३८)

करी है ढिठाई अनजाने त्रिभुवन राई, माया मैं भुलानौ ना प्रताप वर चीनौ मैं।
बनि है न मुख मोरैं चूक परी आन भोरैं, देवन के देव हाय घोर त्रास दीनौ मैं॥
लाल बलबीर दास आपनौ ही सुखरास, राखौ निज पास बुद्धि दीजै मति हीनौ मैं।
मेरे यह औगुन बिचारिये न येहो नाथ, कीजिये सनाथ बिधि तुम्हरौ ही कीनौ मैं॥

(६३९)

जान बिधि दीन दीनबन्धु श्रीबिहारी लाल, निज हस्त कंज ताके सीस पै धरायौ है।
पर्‌यौ है चरन जाय गहक लीयौ उठाय, मन्द मुसिक्याय मन संसै कौं मिटायौ है॥
लाल बलबीर जू की अस्तुति करन लाग्यौ, जै जै करुनानिधान जक्त जस छायौ है।
कौन भेद जानै त्यारी माया में भुलाने सबै, सर्व ब्रह्मांड नाथ आपकौ बनायौ है॥

(६४०)

धन्न ब्रजबासी प्रेम किये बस अविनाशी, इन ही के संग बन बच्छ लै चरावै जी।
धन्न दिन आज निज राज कौ दरस पायौ, ये जू महाराज चाह चित की पुजावौ जी॥
लोक ना सुहाई रखौ चरनन लाइ बिनैं, सुनौ सुखदाई विध और प्रघटावौ जी।
खग मृग रेनु तृन द्रुम लता एहो नाथ, चाहै सो बनाऔ मोहि ब्रज में बसावौ जी॥

(६४१)

सुन विध बानी सुखदानी श्रीबिहारीलाल, कौंन कौं बनावौं हँसि वचन सुनायौ है।
व्रज परदक्षिणा दै आवौ निज लोक जावौ, महा प्रेम ही सों दीन सोत माँग पायौ है॥
लाल बलबीर उर दीन्यौ पहिराय हार, सुखमा अपार हेर हेर हरषायौ हैं।
आयसु कौं जाय जाय ग्वाल बच्छ दीने लाय, सीस पद नाये निज धाम कौं सिधायौ है॥

(६४२)

प्रथम ही पूतना सु आई ग्राम गोकुल में, अस्तन गरल लेप कीनो छल भारी है।
चीर खूब साजे हैं नवीन अंग आभूषन, तैसो बन आई कोऊ गोप की कुमारी है॥
लाल बलबीर धाई नन्द के सदन माँहि, यसुधा नें आदर दै निकट बंठारी है।
नजर बचाय कुच दीनौं मुख लालन के, खेंचत ही चीर प्रान खेंच मार डारी है॥

(६४३)

कागासुर कुमति कुटिल आयौ गोकुल कौं, बैठ्यौ जाय नन्द जू के धाम पै सड़ाक दै।
पालनें में झूलतौ निहार्‌यौ लाल सूधरौ सौ, हरष चढाय आय उतर्‌यौ झड़ाक दै।
क्रोधातुर होय खल आयौ पास पालने के, चोंच गहि कान्ह थाप मारी है तड़ाक दै॥
मोर मुख तोर पर फेंक नभ माँहि दीनौं, परयौ जाय कंस की कचैरी में पड़ाक दै।

(६४४)

लावें हैं नारद मुनि शेषजी से इन ही कौ, नित प्रति ही सों उर ध्यान कौं अगावे जू।
ढावें हैं मद काम क्रोध के सु जालन कौं, ज्ञान की कमानन सों काटत सु बाधे जू॥
भनै बलबीर कह्यौ सुनौ यह धाय सजन, प्रिया जू कौ जस है तू गाय सुख राध जू।
छाँड़ दै सबै जू जग फन्दन के धन्दहि तूँ, हिये व्रजचन्द हित रह्यौ करौ राधे जू॥

* सवैया *

(६४५)

लावें हैं नारद सेस जी से इनकौं नित प्रीति सों ध्यान अगाधे।
ढावें काम औ क्रोध के जालन ज्ञान कमान सों काटत बाधे॥
त्यौं बलबीर कह्यौ सुन धाय सुजान प्रिया जस है सुख साधे।
छाँड़ सबै जग फन्दन के धन्द हिये व्रजचन्द रटौ कर राधे॥

* दोहा *

(६४६)

लावें हैं नारद मुनी, शेषजी से नित ध्यान।
ढावें हैं मद काम औ, क्रोध जाल कौं ज्ञान।

* वहरा लापिका *

(६४७)

काहे में बनिक कौं नफा है कौन बेंचै पान, कौन वियोगन कौं अमित झरसाय हैं।
तम कौ हरैया साँझ हेरत बटोई कहा, नारी पति पुन्य किति बटेरी कहाय हैं॥
कब लौं न छोड़ें भूमि धनी कौं दमंकै घन, कहा सिर धारे श्याम सिन्धु कौं लँघाय हैं।
लाल बलबीर अर्थ उत्तर वरन मध्य, अति ही सजीलौ रस सार हेर पाय हैं॥

* अंतरालापिका छप्पय *

(६४८)

चन्द हि नीके लगत कहा है सजन धार चित।
कहा निरख आनन्द रहत है चकई के नित॥
काके आगैं रहत छैल नँदनन्द अधीने।
कीरति लली सखीन रास किनके सँग कीने॥
कहा धनी सिख देत हैं, अरे कीर यह रीति दृढ़।
दास अर्थ एकत्र कह, निशि दिन राधा कृष्ण रट॥

* छप्पय शरद *

(६४६)

अमल अवनि आकास कमल पर अलिगन गुजैं।
अमल विटप फल फूल सजल बेलिन की कुंजैं॥
अमल नदी कर नीर मुदित मन मीन कलोलैं।
भनै लाल बलबीर चकी चकवा सन बोलैं॥
दमदमात दस हौं दिशा, मनौ बिछायत फरद की।
चमचमात प्यारी लखौ, अमल चांदनी सरद की॥

* हिंडोरा *

(६५०)

वाणिक कौ वित्त कौड़ी पैसा औ रुपैया मित्र, विन सों करत बिवहार लग नित्त है।
सूरन कौ वित्त तेगा बरछी धनुष तीर, तिन ही लै जाये छैल करैं रन जित्त है॥
संतन कौ वित्त बलबीर बर राधा नाम, तिनहीं सौं आठौं याम लग्यौ रहै चित्त है।
दोहा छप्पै चौपाई अरिल्ल औ सवैया आदि, कविन कौ वित्त हित जानियै कवित्त है॥

(६५१)

झूमत हिंडोरे अङ्ग श्याम रंग गोरे दोऊ, प्रेम रंग बोरे संग सखी ही झुलावैं
गावत मलार रस सार झनकार चारू, सीतल सुगंधित समीर धीर धावैं हैं॥
उड़त दुकूल बाढ़ी सुखमा अतूल छैल, अंग अंग फूल हेर हेर सचु पावैं हैं।
रमक बढ़ावैं सुख सिन्धु में बुड़ावै नैंन, आगैं बलबीर दासी मुकर दिखावैं हैं॥

(६५२)

मंजुल मनीन के जड़ाऊ खंभ राजैं चारु, रंग रंग दामिनी लगाई मखतूलैं हैं।
कंचन की चौकी पर चमंक चहूँघाँ बिछे, किरन किनारीदार जरी के दुकूलैं हैं॥
लाल बलबीर दासी झोंटा दैई हरै हरै, हेरतु छबीली छवि अंग अंग फूलैं हैं।
सावन सलूनौं पूनौं दूनौं रंग देख आली, राधा वनमाली री हिंड़ोरे झूम झूलैं हैं॥

(६५३)

सब सुखरासी वृन्दाविपिन विलासी छैल, घर घरवासी तुम जानौं पास दूर की।
करुनानिधान गुनखान सामरे सुजान, चतुर अगार सुधि लेते रहे कूर की ॥
लाल बलबीर दास जानकैं खवासी माँहि, राखौ निज पासी आँख प्यासी बर नूर की।
गरजी विचारै कौं तें अरजी कियै ही बनै, माननी न माननी ये मरजी हुजूर की ॥

(६५४)

कमल कमीन मीन पानी में अधीन रहे, दीन किये भँमर कुरंग वन ढारे हैं।
गारे हैं गुमान सर्व खंजन खवास की ये, जीये जो न जीये फिरे भ्रमत बिचारे हैं ॥
लाल बलबीर बीर चंचल चलाक भरे, अरे रहैं श्याम मन प्रेम फंद डारे हैं।
ऐसे मतवारे करैं वार पर वार प्यारी, लोचन तिहारे कैधौं मैन सर भारे हैं ॥

* ब्रह्मचारी लीला के कवित्त *

(६५५)

प्यारी के दरस की चटक भई चित माँहि, रसिक बिहारी ग्वाल मंडली बिसारी है।
कैसें मिलूँ जाय कहा कीजिये उपाय धाय, काँख दाबि पोथी खौर केसर समारी है ॥
लाल बलबीर कर लई माला झोरी कोरी, सुरख बनात बर अंसन पै धारी है।
कारे सटकारे किये केश यूथ छिटकारे, गहवर सिधारौ छैल बन्यौ ब्रह्मचारी है ॥

(६५६)

मंडल मनीन मध्य नाचत जुगल छैल, गावत रसीली तान विविध अनन्द की।
सखी लै बजामें कर सारंगी मँजीरा बीना, सरस नवीना रंग भीने सुर छन्द की ॥
लाल बलबीर चलै सीतल समीर धीर, चमचमात चाँदनी चहूँधा चारु चन्द की।
देख चल आली नैन कीजिये निहाली कैसी, लीजिये निहार झांकी राधिका गोबिन्द की॥

(६५७)

आईं सखी चार रहीं रूप कौं निहार मन, करत बिचार कोई ये तौ सिद्ध भारी है।
सीस कौं नवाय गई प्यारी जू के पास धाय, कही हरषाय सुनौ बैन हितकारी है ॥
लाल बलबीर आईं देखिकें बाबा के बाग, पंडित प्रवीन जू बड़ोई तेजधारी है।
भूत औ भविष्य वर्त्तमान कौं बतावै आयौ, चलौ जू कुमर दूधाधारी ब्रह्मचारी है ॥

(६५८)

दूध लै अधौटा भर भाजन रलाये कन्द, बांटकर एला वर तामधि मिलाई हैं।
ललिता विशाखा इन्दुलेखा तुंगविद्या चित्रा, चंपलता रंगदेवी सुदेवी सुहाई हैं ॥
लाल बलबीर जू सहित यूथ यूथेश्वरी, गावत हँसत गहवर कौं सिधाई हैं।
देखि प्रान प्यारी ब्रह्मचारी यौं उचारी कौन, दामनी सी दमक घटासी घन आई हैं ॥

(६५९)

अब क्यौं गही है मौन आपनै सुजान एती, औरन के आगें बहु बार बतराये हैं।
आईं हैं दरस हेत कीजिये हरस मन, समदृष्टि तुमकौं पुरानन में गाये हैं ॥
लाल बलबीर सुनि प्यारी के बचन बर, प्रेम के रचन भरे मन्द मुसिक्याये हैं।
जान परी त्यारे जू प्रवीन यूथ संग सखी, मेरी यह सिद्धता उड़ावन कौं आये हैं ॥

(६६०)

आई वृषभान की कुमरि दरसन हेत, पंडित प्रवीन जिन क्रोध उर धारौ जी।
बढिहैं तिहारौ मान करें सनमान सबै, निज सील व्रत ताकौं चित ते न टारौ जी ॥
लाल बलबीर आप गुन कौ प्रकाश कीजै, जैसो मचि रह्यौ सोर नगरी तिहारौ जी।
धरी दूध दोनी आगी चरचा करन लागीं, कछू ब्रह्मचारी आप मुख तें उचारौ जी ॥

(६६१)

बूझौ मन भाई चित लालसा भई है कहा, पति परिबार भूरि भाग दरसैं हैं जी।
बोली तुंगविद्या वर विद्या तुम पाई कहाँ, कौन गुरुदेव कौन नगर रहैं हैं जी ॥
लाल बलबीर अजू देश है तिहारौ कौन, हाँसी जिन मानौ बात हित की कहैं हैं जी।
साँची कहि दीजै ब्रह्मचारी हितकारी आप, चौप है अपारी मन सुनन चहैं हैं जी ॥

(६६२)

पूरन गुरू हैं विद्या नगर रहत सदां, पाई तिनके प्रसाद अति अधिकामैं हैं।
कानन है देश गिरि बसत रहत सदां, तहां हीं निवास कर कर सुख पामैं हैं।
लाल बलबीर रच रचिकैं रँगीले छन्द, काम की कलान कौं रसीले मुख गामैं हैं ॥
और पढ़ी जोतिष सामुद्रिक की विद्या अंग, जैसो होय लक्षण सु प्रघट जनामैं हैं ॥

* दोहा *

(६६३)

विद्या बोली कहौ रिषि, आगम लख यह नीति।
श्रीराधे नन्दलाल की, कैसी निभि है प्रीति ॥

(६६४)

ये तौ सुकमारी राधे परम उदार वर, कान्ह छैल लंपट लबार चोर भारे हैं।
को हैं दश चार लोक ओक में मुकुट मनि, नन्दलाल जू से दूजें रूप उजियारे हैं ॥
आपसी सहस्र गई दर्श माधुरी के हेत, वृन्दावन रास रच्यौ यमुना किनारे हैं।
हम तौ न देख्यौ निज कानन सुनी है बात, तुम सब ही के वह नैननि के तारे हैं ॥

(६६५)

ललिता कहत कहौ राजसुता लक्षण जू, कहा विधना नें बर भाल लिख दीनौ है।
सुभग सुहाग भाग दरसै अपार मोहि, रोम रोम सुख जू परम रंग भीनौ है ॥
सर्व लोक वनितागन चूड़ामनि ह्वै हैं ये जू, लाल बलबीर नीकौ मतौ लखि लीनौ है।
प्रीतम सुजान जू सों ह्वै है चित मान कछू, अति ही उदार मन कोमल नवीनौ है ॥

* सोरठा *

(६६६)

गाय चरावत ग्वाल, आये गहवर के निकट।
बैठे देखे लाल, कपट रूप धरि तियन में ॥

(६६७)

देकें बिलगैयाँ गैयाँ छोड़िकें हमारे पास, क्यौं रे छैल नन्द के जू देख्यौ छली भारी है।
वन वन ढूंढ़त फिरत तोहि हे सुजान, आप करे जारी ख्वारी करत हमारी है ॥
लाल बलबीर ऐसी चाहिये न तोहि स्वाँग, नृपति कहाय बहुरूपिया कौ धारी है।
भोरी व्रजनारी लाईं गोरस बिचारी यहाँ, सिद्धई पुजावै बन बैठौ ब्रह्मचारी है ॥

(९६८)

भाजि चले लाल गिरी फेंट तें मुरलि हाल, लई ललिता जू दई प्यारी जू कौं धाईयैं ।
बनें ब्रह्मचारी अब नट ह्वै कें नाचौ लाल, लड़िली बबा कौ बर सुजस सुनाईयैं ॥
लाल बलबीर नटवर भेष धार नाचैं, जै जै वृषभान जू की तान लै जनाईयैं ।
रीझिकें किशोरी चित चोरी भोरी,स्वामिनी जू नीलमनि माल लाल कंठ पहिराईयैं ॥

(९६९)

खेलत हँसत विलसत सुख नाना भाँति, सखिन समूह संग राजैं हितकारी जू ।
प्यारी के दृगन लाल लाल नैन लाड़ली जू, बसत सदां ही छबि छिनक न टारी जू ।
लाल बलबीर रचैं कौतुक नवीन नित, करत छद्म नये नये रूपधारी जू ॥
दोऊ रूप-बाग के मधुप हैं सनेही वर, दोऊ ब्रजचन्द वृन्दाबिपिन बिहारी जू ॥

* मनिहारी लीला *

(९७०)

बनि बनवारी मनिहारी रूप उजियारी, गई वृषभान की दुआरी हरषामनी ।
चुरी नीलमनी को सुमन की हरनहारी, लाल पीत वारी दमकत मनौं दामिनी ॥
लाल बलबीर आई तकि राज की दुआरी, लीजिये बुलाय सुकमारि कोऊ भामिनी ।
कीरति कुमारी कह्यौ ललिता तं बेगि जा री, लाइयै लिवा री आज टेरैं कोऊ कामिनी॥

(९७१)

ललिता ललक आय मन्द मुसिक्याय कही, घर घर काहे कौं फिरति देत भाँमरी ।
परम सलौनी गजगौनी मन की हरौनी, कुमरि बुलाई तोहि चलि राजधाम री ॥
लाल बलबीर सुनि धाई मुसिक्याई मन, धन्य यह घरी छिन धन्य यह जाम री ।
पूजै सुभ काम होय चित कौं आराम देखि, श्याम के चरन में नवायौ सीस सामरी ॥

(९७२)

आरी बैठि जा री सुसिता री मनहारी प्यारी, अति सुकुमारी किधौं राज की कुमारी है ।
रूप उजियारी वर विधना सुधारी लगै, साँचे की सी ढारी तोसी और न निहारी है ॥
लाल बलवीर पट मोहनी सी डारी कछू, होत ना सम्हारी चित टरत न टारी है ।
नाम तौ कहा री दीजै सजनी जना री गाम, बसत कहाँ री उर लालसा हमारी है ॥

(९७३)

मोहि जिन कीजिये खिलौना बलिहारी त्यारी, जाऊँ सुकुमारी जू गरीब चुरिहारी हौं ।
फिरत फिरत मग साँझ होय गई मोकौं, नैक नगरी में नांहि किनहूँ हँकारी हौं ॥
लाल बलबीर देह थाकी गति साँची कहूँ, तकत तकत आई राज की दुआरी हौं ।
परम उदारी हित सारी एहो प्रान प्यारी, सामरी मो नाम नन्दगाम रैन-हारी हौं ॥

(९७४)

एरी चुरिहारी सुकुमारी खोल के दिखारी री, कौन कौन बंदनी नवीन तें सजाई है ।
एती सुन बानी सुखसानी हरषानी मन-काम (काँख) ते सुघर पोट माँहि दरसाई है ॥
केती नीलमनि केती पन्नई पिरौजी लाल, लाल बलबीर रंग रंगन सजाई है ।
जो जो मन भाई छबि छाई सुखदाई सो सो, सामरी सजीली श्यामा जू कौं पहिराई है ॥

(९७५)

देखत सुघर कर श्यामा कौं सनाथ भई, अति सुख दई अंग अंग ना समाई जू।
रूप सिंधु ही में मन-मीन लहरान लाग्यौ, फूले करकंज भरे नैन जल छाई जू॥
लाल बलबीर अंग अंगन अधीर भई, सामरी प्रवीन यह उकत बनाई जू॥
आप कर लायक अहो नवीन लाड़ली जू, चूरी चटकीली तौ सदन भूलि आई जू॥

(९७६)

छूवत ही हाथ मन हाथ सों चलो है छूट, प्रेम की घुमेरन सौं सुधि लै बिसारी है।
बोलि कही प्यारी ललिता री याहि देखौ आय, भयो है कहा री किधौं रोग की दबारी है॥
लाल बलबीर लखौ अंग अंग सुकमारी, फंट में प्रवीन बर मुरली निहारी है।
हँसे देत तारी ये तौ छैल धूत भारी प्यारी, है न मनहारी बनवारी ये खिलारी है॥

(९७७)

दौरिकैं लड़ैती जू नें लीने भर अंक लाल, रचौ ऐसे ख्याल चित आवे नैंक कानें ना।
कबहुं मनिहारी बीनवारी पानवारी बनौ, कबहुं सुनारी सो रहै छदम छानैं ना॥
लाल बलबीर ऐसी कीजिये न आप प्यारे, नैंनन के तारे ये मिटत तुम बानैं ना।
कैसी करूँ प्यारी सुकुमारी रूप उजियारी, आपके बिलोके बिन मेरो मन मानैं ना॥

* जोगी लीला *

(९७८)

जोगी बन आये मन भोगी मनमोहन जू, सींगीनाद हाथ भस्म धारी देह कारी पैं।
ओढ़ि मृगछाला लाला रूप दरसे बिशाला, मुद्रा कान डाला सो सनेह चौंप भारी पैं॥
लाल बलबीर बरसाने के डगर बीर, जादू सो करत है नवीन ब्रजनारी पैं।
अलख अलख कर झूमत झुकत डोलैं, दई आय टेर वृषभान की दुआरी पैं॥

(९७९)

लाड़ली निहार कें विचार कही ललिता सों, देख देख या की गति मेरो मन भरमैं।
चञ्चल रसीले चल चलत चहूँधा धाय, जहाँ तहाँ नारिन रिझावत है घर मैं॥
लाल बलबीर बाज दुष्ट ये झरत भृष्ट, ऐसे तौ सयानी नहीं योगिन के धरमैं।
लीजिये बुलाय धाय देखरी सयानी जाय, पूछिये चलाय बात जाकी उर मरमैं॥

(९८०)

जे तौ जोगीराज तुम राज सुता लाड़िली जू, घट बढ़ मो सों मुख कैसें कही जाईहैं।
लाऊँ मैं लिवाय जाय आप ही कृपा करिकैं, पूछिये सुजान अजू जो जो मन आईहैं॥
लाल बलबीर मुख सुखमा निहार याकी, कोटिन अनंगन की दुति गश खाईहैं।
देख सुख पाईहैं रिझाईहैं नगर नारि, जो पैं अलबेली पुर बाबा के बसाईहैं॥

(९८१)

लीयौ है बुलाय जोगी बैठो है संमुख आये, हिये हरषाय मनौ रंक निधि पाइयै।
सींगी कौं बजाइये जू गाइये रसीलौ राग, एहो नाथ आज राज सुता कौं रिझाइयै॥
लाल बलबीर बिधि दियौ है अनूप रूप, तैसोई प्रघट निजगुण कौं दिखाइयै।
दैहैं वृषभानपुर बास सुखरास तुम्हैं, अलख लड़ैती नौनीकुटी हू छवाइयै॥

(६८२)

होठ धर सींगी कौं बजाई सुखदाई छैल, रीझि वृषभान लली माल पहराई जू।
कौन मनोरथ सौं परम अवधूत भये, अलख पुरुष सों न प्रीति लख पाई जू ॥
लाल बलबीर कहा भासत अनीति ऐसो, योगिन की रीति राज सुता कठिनाई जू।
खेल सौ दिखाई तुमैं परे ना लखाई हम, गुरु की कृपा तें गहौं हस्त सुखदाई जू ॥

(६८३)

हाथ का परे हैं जोग ध्यान सुनौ सुन्नसान, कारौ गोरौ सेत ताकौ रंग ह्यो बताई जू।
सब ही उन्हीं के रंग व्यापक हैं अंग अंग, चार दस लोक में उन्हीं को सक्ति छाई जू ॥
लाल बलबीर कौन देखें हैं आकाश फूल, ऐसे ही अलख की न लखी रेखताई जू।
भली ये चलाई तुम चरचा रँगीली सुन, ऐसे कूटवाद पग छिन ना उठाई जू ॥

(६८४)

छोड़ौ हम वाद जू विषाद मति कीजै मन, कहा हेत आपनै कठिन जोग लीनौं जी।
कौन देश कुल वर रावल प्रकाश करौ, एही उर सरस संदेह परवीनौ जी ॥
लाल बलबीर निज देश है रंगीलौ कुल, परम पवित्र जू विदित रंग भीनौं जी।
सर्व सुख सर्व प्राणी निर्भै ही बसत जहाँ, तहाँ गुरु ज्ञान सौं फिरत मन दीनौं जी ॥

(६८५)

प्यारी प्यारे दरस की, उठत चटपटी आय।
लाज वार कौं प्रेम निध, सीघ्रहि देत बहाय ॥

(६८६)

यह तौ सकल सुख देखौं व्रजमण्डल न, और ब्रह्ममण्डल में कितहूँ निहारे जू।
सुनत बचन वर प्रेम के रचन भरे, भूले हैं छद्म राधे नाम लै उचारे जू ॥
लाल बलबीर हेर हँसी व्रजनारी बिन, रसिक बिहारी महामन्त्र कौ उघारे जू।
धीर उर धारे लाज काजन विसार छैल, ऐसे ही रचत सदा रहौ प्रान प्यारे जू ॥

(६८७)

स्वांग सजौ सामरै सजीलौ जोग फागुन कौं, देख रूप ताकौ छकी कीरति दुलारी जू।
बोली तुम रावल जी बसत कहाँ हौ, घर कैसें धरें धीर निज तात महतारी जू ॥
लाल बलबीर कौंन तीरथ करें हैं आप, काको करौ जाप को तिहारो हितकारी जू।
तेज तपधारी अंग अंग चातुरी अपारी, सींगी कौं बजाय तुम मोहीं व्रजनारी जू ॥

(६८८)

सुनो हो सयानी निज मन की कहानी, हम जोगी ब्रह्मज्ञानी तिन हीं के रंग भीने हैं।
चीनें हैं पुरुष आदि छोड़ जग के विषाद, वाद में न स्वाद बास कानन के लीने हैं ॥
लाल बलबीर दीने क्रोध ईरिसा बिसार, भाव-भक्ति राखें रहैं श्रद्धा चित चीने हैं।
राज की कुमारी सुकुमारी तुम जावौ ग्रेह, खीजें पितु मात क्यौं बिलम्ब बन कीने हैं ॥

(६८९)

बरसानें बास सुखरास करौ रावल जी, फागुन मास दूध दही सुख भारी है।
काल ही चलेंगे होरी खेलन सकल मिल, नंदीसुर के गाम ससुरारि वाँ हमारी है ॥
लाल बलबीर व्रजपति कौ सजीलौ पूत, रूप गुन बैस सब मिलत तिहारी है।
बाँसुरी बजाय वुह गावत रसीलौ राग. तूम हू सरस कर सींगीनाद धारी है ॥

(६६०)

तुमैं उनै वेलि प्रीति उपजै अपार बिधि, रचे एकसार जोरी सरस समारी है।
अङ्ग अङ्ग तुमरै भभूत शुभ शोभित है, उन भाल केशर की खौर बरधारी है॥
बाघम्बर धार तुम शोभित अपार उन, पीताम्बर धारण की चौंप उर भारी है।
तुम सीगी नाद करि हरौ मन सब ही कौ, बाँसुरी बजाय उन मोहीं व्रजनारी है॥

(६६१)

तुम कौं छकन अति रावल अमल की है. उनकौं छकन रूप ही की अति भारी जी।
तुम कौं है प्यारो जोग एजो सुखकारौ भारौ, उनकै सदां जी गऊ धन सुखकारी जी॥
लाल बलबीर ज्ञान रीति में प्रवीन तुम, वे हू रस रीति में निपुण वर भारी जी।
दोऊ सुकुमार सङ्ग एक ही विराजै जबै. सब ही के नैन सुख लूटैंगे अपारी जी॥

(६६२)

तुमकौं जू नीकी गिरि कन्दरा लगे हैं अति, उनकौं जू हेत वृन्दा विपुन सों भारौ है।
तुम हौ गुरु के लाल लाड़ले रसिक बह, व्रजपति जू कौ छैल प्रानन ते प्यारौ है॥
लाल बलबीर सींगी नाद कौं बजावौ तुम, सुनन कौं नेह मन अति ही हमारौ है।
भयौ सुख भारौ भूले छदम सहारौ लाल, बार बार राधे राधे नाम लै उचारौ है॥

(६६३)

देखि यह कौतुक अलौकिक अनूप नारि, प्यारी कौं जनाय सैन हँसी मुख मोरी जू।
महामन्त्र ही कौ भेद जानै नहीं और कोऊ, बिन गरबीले अरी श्याम चितचोरी जू॥
लाल बलबीर मन जानी जान लीने हम, भाज चलै छैल कहौ होरी आज होरी जू।
लागी हैं बलैयाँ लैन धन धन छत्र ऐन, घेरन कौं चाह भई चितै चहूँ ओरी जू॥

(६६४)

मोहन रसिकराय बनि कै चितैरी दुई. भानपुर फेरी नई युक्ति उपजाइयै।
लीजियै बुलाय रिझवार कोऊ ग्रेह मेरी, देख कर कारीगरी चित्र लिखवाइयै॥
लाल बलबीर झाँकती-सी फिरै द्वार द्वारी, जाकी ओर ताकी ताकी मति लै चुराइयै।
देखि कैं अनूप रंगरूप सुता भूप कीसी, अति हुलसी सी बहु भीर संग धाइयै॥

(६६५)

बूझत फिरत कौन कौन रिझवार प्यार, करिकैं बताय दीजै कोऊ सुकुमारी जू।
चित्र हैं विचित्र मो पै परम पवित्र चित, करिके इकत्र नैक देखो हितकारी जू॥
लाल बलबीर जब जानौं कर कारीगरी, कैसी ढार ढरी छबि परम उजारी जू।
बोली हंसि नारि मन सांमरी तै धीरधारी, है री रिझवारी वृषभान की दुलारी जू॥

(६६६)

पायौ मैं पता जू दीजै तुम ही बता जू, देख चंपकलता तैं कह्यौं बैन हरषाइयै।
प्यारी सों मिलावौ याके चित्र जू दिखावौ, नई सामरी सजीली ये चितैरी आज आइयै॥
लाल बलबीर चली सङ्ग सब भीर तन, ढाँपत है चीर जी अधिक सकुचाइयै।
कह्यौ हंस नारी राज द्वार में गमारी जिन, कीजिये विचारी री निसंक ह्वै सिधाइयै॥

(६६७)

हों तौ हौं गमारी नहीं जानौं राज रीति येरी, जान निज चेरी मोकौं आप ही निभाइयै।
झिलब कहारी रूखारो लाज भारो बोर, अखिल समाज विधना ने तू बनाइयै॥
लाल बलबीर जाइ प्यारी के लगाइ पाय, सुनो जो कुँवरि ये चितेरी नई जाइयै।
कैसे चित्र लाई प्रिया कह्यौ मुसिक्याई, अरी सामरी सलौनी लौनी हमकौं दिखाइयै॥

(९९८)

दीयौ है निकार चित्र परम पवित्र तामें, जाना द्रुम बेली झूम रहीं सुखदानी हैं।
राजत चकोर मोर सारौ पिक पंत जोर, तिनको सरस सोहे सुखमा निमानी हैं॥
लाल बलबीर ताके मध्य कमनीय भौन, मनिन जटित राजै काम रति रानी हैं।
देख सुखदानी ताकी रचना निरानी मन, समझ समझ मन्द मन्द मुसिक्यानी हैं॥

(९९९)

कहत चितेरी सुनो राजसुता बिनै मेरी, विद्या बहुतेरी चित चहौ सो दिखाऊँगी।
सप्तदीप चार धाम कहौ व्रजमंडल कौं, चहौ जो पै चौधहू भुवन लिख लाऊँगी॥
लाल बलबीर सनमान मन मान पाय, मैंहू गुनमान आन जान ना छिपाऊँगी।
परम उदार सुकुमार राज की कुमारी, तुमसौं दुराय जाय कौनै दरसाऊँगी॥

(१०००)

सब ही प्रकाश गुन नागरी उजागरी तें, देख छबि आगरी कौं प्रीत अधिकाईयै।
नैन तौ फिरत चहुँ ओर चकडौर तोर, थीरता हू मन की न नैंक लख पाइयै॥
लाल बलबीर सुकुमार राज की कुमारि, आई हौं सहारौ तक आप ना उठाइयै।
कीने विधना ने डहडहे कजरारे भारे, दुरें ना दुराये जामें मेरी का खुटाइयै॥

(१००१)

दई है कसीदा वर कंचुकी निकार तामें, बूटा रंग रेल बेल सुभग सुहाईयै।
काकरेजी सारी सुखकारी लै विचित्र भारी, तैसी ही सजीली श्यामा जू कौं पहिराईयै॥
लाल बलबीर कर देखत किशोरी गोरी, मुकर दिखावै अली अति छबि छाईयै।
धन्न तू चितेरी तेरी बुद्धि है घनेरी येरी, कंचुकी अनूप साज मन मिल लाईयै॥

(१००२)

गुनन छिपाये जू फिरत हौं सुजान प्यारी, काकौं दरसा री कोऊ मिलती न पैहैंजी।
कछू निज गाँसी सी खुली है सुखरासी खासी, करिहैं कृपा तौ लै सरस दरसैहैं जी॥
मेरो चित्त कोमल अधिक परचौ सनेह, टहल बनाये करां साथ जो रखैहैं जी।
मन पलटे ते मन पाइये बिदित जग, मोको ना समझ प्यारी आप समझै हैं जी॥

(१००३)

चित्र की लिखन वर विद्या है कठिन वीर, बहुरि कसीदा रचि कहाँ सीख आई है।
बड़े कष्ट ही सों यह आई है सुजान प्यारी, नीरस न राचै हित जान दरसाई है॥
रसमई भूमि व्रजमंडल की येतौ सर्व, लाल बलबीर है निसंक सरसाई है।
कौन देस ही तें आई बसिये सदांई यहाँ, वहाँ की न भूल अब चरचा चलाई है॥

(१००४)

सुनौ जी कुमरि मम देस लोग लंपट हैं, जानकैं सलोनी कूँ कुदृष्टि सौं तकाई जू।
और ऋतु जौं लौं बचै अपनै सुभाव सील, मधुरितु प्रेम खेलै यामें ना बसाई जू॥
लाल बलबीर समौ पाय भगी भागन तें, यातैं सिरमौर चित्त रहै ना थिराई जू।
यहाँ मैं लखाई प्रीति-रीति गरुताई तातैं, राजसुता आपकी सरन दीन आई जू॥

(१००५)

भली करी वीर भज छुटी गुनखान जान, सदांई सजीली री सरस प्रीति सरि हैं।
तो सी सुकुमारी उजियारी बिन पीउ प्यारी, कैसें गुनवारी वे हिये में धीर धरि हैं॥
द्रव्य कौं लै जैहौंगी कमाइ बहु राज साज, यातैं मनभामन अधिक मोद भरि हैं।
जान सतमती कौं अनन्त बलबीर धीर, सहज सजीलौ मो चरन सेवा करि हैं॥

(१००६)

तोसी ही के सत सों थमौ है भूमि आसमान, सदां कुलवंती कौ दरस बर कीजै री।
दूजै कर कारीगरी देखन की चाह खरी, अनोखी ढार ढरी चित तित ही ढरीजै री॥
लाल बलबीर बीर लीजै अनगिन धन, भूलहू न पाय अब कितहू कौं दीजै री।
जो जो मन आवै सोई पावै प्रीति रीति नित, जिन सकुचावै मन भायौ करि लीजैरी॥

(१००७)

सुनत उदार बैन सुखद अपार भई, नन्द मुसिक्याय कही अब हौं न जाइ हैं।
अति सुकुमार वृषभान की कुमारि प्यारी, छोड़ मनुहार चित कहाँ ललचाइ हैं॥
लाल बलबीर भई बातन के माँझ साँझ, लै चली कुमर निज भवन दिखाइ हैं।
खान पान मान ही सों सुन री सजीली तोहि, सब बिधि ही सों बीर सुखद कराइ हैं॥

(१००८)

देखो कर चित्र मेरे पवन विचित्र प्यारी, तुमैं सुकुमारी जू चिह्नर बर भारी हैं।
जुगल सरूप कौ दियौ है हँसि हर हाथ, नवल निकुंजन की शोभा सुखकारी हैं॥
लाल बलबीर किये षोडश सिंगार राधे, मुकर दिखावैं केती सखी हितकारी हैं।
रतन जटित बैठी चौकी पै किशोरी गोरी, ठाड़े कर जोरैं आगें रसिकबिहारी हैं॥

(१००९)

देखकैं जुगल चित्र परम पवित्र भई, सब री चकितमई लिखौ कहा साज है।
गोप हूँ तें गोप रस अस कस जान सकै, जान लई हम यह छदंम कौ काज है॥
लाल बलबीर नख सिख तें निहार छबि, इनतें तौ चातुरी की चातुरी हू भाज है।
दै दै हँसै तारी नारी रसिकबिहारी यह, का को सीख धारी तुमैं रंचक न लाज है॥

(१०१०)

लाज कौ है कहा काज तापै आय परौ गाज, काज तौ सकल अनुराग तें सरत हैं।
दरशन चाह उतसाह होत आठौं जाम, और सों न काम चित्त भामरें भरत है॥
धवल महल कौं विलोक बर सुख होत, मनस लता जू आये इतकौं ढरत हैं।
कुमर किशोरी चित चोरी गोरी भोरी जू के, रसना रसीली जस माधुरे ररत हैं॥

* पंजाबी कवित्त *

(१०११)

सांडे नाल नेहा लाय नन्ददा रंगीला छैल, छड्ड गया मुथ्थरा नुं कुछ ना सुहांदा है।
कुंव्वरी दे नाल आप मौजनुं मनामदा है, साडे कौ लौं लिख लिख जोग दे पठांदा है॥
लाल बलबीर उधौ खबर न लेंदा साडी, करदा अनीत साडे चित्त नुं जलांदा है।
माखन ना खांदा असी चीरना चुरांदा अब्ब, दीद ना दिखांदा प्यारा इथें क्यों न आंदा है॥

(१०१२)

बांसुरी बजांमदा है भ्रकुटी नचामदा है, नेन नुं चलामदा है चित्तनुं चुरांदा है।
नाम ले बुलामदा है रूप दरसामदा है, सीने से लगामदा है मोद उपजामदा है॥
बल्लबीर गामदा है दध्धनुं छिनामदा है, ग्वालों नूं हिलामदा है सब्ब नू खिलांदा है।
हिये हरषामदा है गल्लें ये सुनावदा है, औरां नूं खिलामदा है दूनां भर पांदा है॥

(१०१३)

छड्डदे गुमानी साडी बैयां के नू फड्डदा है, साडे नाल तेंडी मल्लो मल्लीनां सुहादीं है।
लाल बलबीर कानू अख्खियाँ तमामदां है, हुंदा बदनाम क्या बड़ाई हथ्थ आँदी है॥
वृन्दावनचन्द विच्च साडा दान लग्गादा है, ऐंडी ऐंडो मैंनू छड्ड किथ्थे चली जांदी है।
भन्न सिठ्ठु गगरी नूं तैंनु क्या कर दीं मेंड़ा, दे दे दान सांडे नाल गल्लें क्यों बनांदी है॥

(१०१४)

ग्वालों नुं सथ्थ ले चरांदा नन्द जू दी गाय, जम्मना ? तीर कानु बांसुरी बजांदा है।
खांदा है लुट्ट लट्ट दुद्ध दद्ध माखन नुं, भंजदा है गगरी नूं अक्षियाँ तनादा है॥
मल्लो मल्ली रोकदा है ढोकदा हमारी दिगाँ, लाल बलबीर खोय कंसे दान खांदा है।
आंदा है मुख्खनु सुनांदा जेडी जेड़ी गल्लें, और नूं नसांदा राज्ज अप्पना जनांदा है॥

(१०१५)

आदे हो न कदी साडी गल्ली बिच्च प्यारेलाल, औरांदे डेरे सनम बार बार जादें हौ।
गांदे हो न मिठ्ठी तान बास्सुरी बजांदे कद्दी, औरांनूं सजन कीयां सीने लिप्पटांदे हौ॥
खांदे हौ न दध्ध बल्लबीर साडी गागरी से, औरांदी छाछ जाय हरदम चुरांदे हौ।
पांदे हौ न हुंदी बदनाम ब्रज्ज थाडे नाल, साडे नाल कींयां लाल दीद नां दिखांदे हौ॥

(१०१६

थाडे नाल जिस्स दिन्न नेंक हस्स दीत्ती लाल,तिस्स दिन्न सेती सस्स ऐंडी सी दिखांदी हैं।
इनांदी लगन लग्गी नन्द दे रंगीले सथ्थ, हँस्स हँस्स नारियाँ से खिसियां करादी हैं॥
दास कहैं कीयां : जींयां जी इना दे नाल, गल्लें कढ़ कढ़ साडे जियां नें जलांदी हैं।
आंदी जिया सांडे नाल कढ़ चल्ले थाडे नाल, नाहिं कलकोंदी हैं खिजेंदी हैं खिजांदी हैं॥

(१०१७)

थाडे नाल नेहा लाये लीत्ता है रंगीले छैल, असीनाल कियां तेंन निक्की तान गांदा है।
छड्ड दित्ती तेंडें नाल कांठा जे जगत्त कीती, कीती क्या अनीत असी डेरे नहीं आँदा है॥
दास कहैं करदां है जेडी जेड़ी चित्त आंदी, दिख्खदी हैं तेंडी जेडो जेडो तें दिखदां है।
हिय हषांदा हैन सीने से लगांदा कद्दी, सांडे नाल कींयां तेंन दीद दरसांदा है॥

(१०१८)

टेरदा है थाडे नाल नंददा रँगीला छैल, चल्ल सांडे नाल ऍड्डी कियां हेंदी है।
किना नें अकल्ल थाड्डी साडी हाय हर लीत्ती, लालजी के सथ्थ कियां रित्त ना चहेंदी है॥
दास सिक्ष दित्तियां हजार असी थाड़े नाल, कियां ना गहेंदी असी अक्षदे रिसेंदी है।
रिति ना चहेंदीच रिसेंदी ही रहेंदी कदी, हँस्स नदीं लालन के कंठ सें लगेंदी है॥

* जैपुरिया कवित्त *

(१०१९)

कैयां नें करी सी लंगराई लाल थारे लारें, भ्रैयां तें रसीली अँखियाँ नें नीर ढाले छै।
अैयां ना रहैगी रीत करें छूं अनीत जैयां, दीया रस थानें ईने हलाहल घाले छै॥
दास कहैं थारे हित हीकी सीख देसी थांने, जाने ना जिया नें तें इंसां इनें टाले छै।
चाल चाल गैलडी थें कैयां नें अड़ी छूं येयां, लाड़ले कन्हियां कनैं कैयां तेंन चाले छै॥

(१०२०)

कैयां नें करे छ जा तें इठै नें अकेली हेली, ईयां तें न जानें छै इठांनें जी तहां ने छै।
लारे नैं चले न कैयां सेजा रस लीजै दीजै, काई काज गै लडी जियां नें रिस ठानें छै॥
दास चित लालसा वनी छै थारे देखबाकी, दीजै जी दरस कांई अखियाँ नें ताने छै।
टेरे छैं जी थाने ये संकेत ने रँगीला लाल, लालजी रे जीया की चिनीन रीति जानें छै॥

(१०२१)

जावा नें न देसी मथुरा नें दध बेचवानें, थारो री कन्हाई रस में री विष घोरे छै।
म्हारौ दान लागे छै जी इठानें तिहारी सूंह,वर जो न मानें म्हारी वैयां नें मरोरै छै॥
लाल बलबीर लारें इसां हीं हठीला ग्वाल, करें बरजोरी मो त्यांरी लर तोरे छै।
चोली नें टटोलै छैल घूंघट नैं खोलै छै जी,मीठा मीठा बोलै म्हारी गागरी नें फोरै छै॥

(१०२२)

थारो भाग मोटो थारे म्हैला नै पधारे लाल, रोके मति ईंकौं नैंक भीतर नें आवा दे।
कोट कोट प्रानईं की सूरत पें वारूं छूं जी, म्हारी अँखियां नें ईंका दरस कावा दे॥
लाल बलबीर थारौ कांई घटजासी बाल, मदन गुपाल जू नें मंसौं तौ लगावा दे।
कैंयां रोकै गैलणी थे कान प्रान प्यारा जू नें, चिनी सी मलाई दध गोरस नें खावा दे॥

(१०२३)

बन बन हेरूँ छूं जी थारा लीये थारी सूँह, कैंयां नैं करूं जी थे तौ किठें हूं न पावौ छौ।
म्हारो नेह थांसों लग गयौ है रँगीला लाल, थेतौ कदी म्हारी ओर नजर न लावौ छौ॥
लाल बलबीर सारा ब्रज बदनाम भई, ईंकी ईसों प्रीत प्रीत रीत ना निभावौ छौ।
एती सीख लाजौ मुख मीठी तान गाजौ लाल,कैंयां ना गुपाल प्यारा म्हारीगली आवौ छौ॥

(१०२४)

जावा दरे लाल मथुरा नें दधि बेचवा नें,
कैंयां तें हठीले म्हारी डागरी नैं रोकौ छौ।
काल लौ न दीनौ छौ दहो रौ दान इठे किनूं,
किने जे लगायौ छै जगाती आपको कौ छौ॥
लाल बलबीर राज कंस कौं न जानो थानें,
ऊनें बंधवासी हाल लाल आप जो कौ छौ।
गाया नें चरावौ चोली कैंयां हाथ घालो छौ जी,
होसी ना भलाई ईमें सब ही कौं टोकौ छौ॥

(१०२५)

नन्दा जू की रानी थारो लाला चन्दा मांगें कोना,
कैंयां नें करौ छै म्हारे लारें लारें डोलै छै।
पानी आंनें जासी उठें गैलां रोकैं ठाड़ौ होसी,
कांकरी नें मारे म्हारौ घूंघटा नें खोलै छै।
लाल बलबीर ऊंकी पैयां नें परौं छू तौबी,
ऐसौ छै हटीला म्हारी चोली नैं टटोलै छै।
म्हैला नें चालौजी एजी म्हारे लारे म्हारी प्यारी,
हा हा खासी अंजी थारी मीठा मीठा बोलै छै॥

(१०२६)

कांई वह म्हारी लाल माठली लई छै थानें,
कांकरी नें हाय काईं बार बार घालौ छौ।
कैंयां नें मुरारी दधि लूट लूट खावौ छौ जी,
थारें कांई टोटो आप जसुधा रौ लालौ छौ॥
लाल बलबीर लाल राज जहाँ थारो न थी,
राज जहां कंस नों छै ऊंके उर सालौ छौ।
नन्दजी रा छैया म्हारा मारग नें मूक दोजी,
सूं काम काजें ललन बैयां तम झालौ छौ॥

* बंगाली कवित्त *

(१०२७)

बाड़ी ने गोईले काल कौन्हाई अमार ये गो, कौपाटे खुलैये कानां सेखाने बौसैयेचे।
माखौन दौहीर घोल भालौ भालौ आसे सेई, तेई तेई मौनें अैये सेई सेई खैयेचे॥
लाल बौलबीर अमी दौरजा ते ढाँके छीलें, आँवरे वाड़ी ते तुमी कोथा काज अैयेचे।
सेखानें लौजैये चोख भूमेर तौकैये नीले, मोन्द मुसिक्याई आमार मौने ले पौलैयेचे॥

(१०२८)

दौध लिये जाई मथुरा देर पौथुर आमी, नोन्देर कोन्हाई आगु बांसुरी बौजैयेचे।
डांक नींले ग्वाल सेई आय आय भीत कोरी, दान दिये जाई आमेराई नाई पैयेचे॥
कोई कोरे नाय नाय सेई से निकार खाय, भांड के भगाय ओई ठांई से पौलैयेचे।
लाल बौलबीर बोंन मांह कांन तीत कौरी, केनों धीर धोरी आमार सो कुल लुटैयेचे॥

(१०२६)

जोदी ते गोइले मोधुबन के कन्हाई लाल, तोदी ते आमार चोख बारिके ढोलीयेचे।
बाडी ना सुहाई किछू काज नांहीं मोने आई, बिरहा आगुन आमार गाये के जौलीयेचे॥
लाल बौलबीर प्रीत सकल बिसार दीले, ओ काजें आमी तौ लोक लाजैर गौलीयेचे।
ओई ठांई जैये तुमी कोथा ये डौकेये दीले, एक बार कृपा कोरी ब्रजे के पौलीयेचे॥

(१२३०)

दौध लिये जाई आमी गोपी जो ने साथ नीले, मथुरा के बिक्रीकरी तुमी केंनों धोरीचे।
आमार भांड छांड नीले केनों लाल कौन्हाईजी, पौतुरते केनों तुमी आमी तीत कोरीचे॥
बांका हुयै डांड़ा कानां साथ नीले ग्वाल बाला, छांड़ दे आमी के आमीकांदा कांदी मोरीचे
कोरीचे पुकार जाई नंद जू के बोधवाई, कंसा जू के राज कांना कैनों नाइ डोरीचे॥

(१०३१)

कौरी ब्रजबास सकल आस सिद्ध होएगो, बार बार होरी होरी होरी गान गेयेचे।
जम्नां जौलेपान कोरी ध्यान धौरी नित्तानन्दे, मांग मांग मादकुरी सेई ठाँई खैयेचे॥
वृन्दाबोने पोरीक्रमा मुदित मुदित दीले, गोविन्द गोपीनाथ दौरसन जैयेचे।
लाल बौलबीर थाके आई खाने मुजैये जोदी, केमोने निकुंज बोने रोज सिर लैयेचे॥

* चीर हरण *

(१०३२)

सकल गोपीर मोने एईमोने हुये गेलौ, केखाने दोरस लाल कोन्हाई हो जैयेचे ।
सकाल एकत्त हुये जम्ना चांन कोरी कोरी, घोटी भोर जोल गोबिन्द पूजा के कोरैयेचे॥
लाल बोलबीर मोने जेखाने धोरीबे धीर, सेवा कोर कोर आई सान बर लैयेचे ।
धोन्न धोन्न जनम सुफल हुयबै जेखाने, ते खाने आमी तो कृष्णचन्द पोती पैयेचे ॥

(१०३३)

बाड़ी येतो कुल जुटे यमुना चान कोरिबे केनो, वीने नोवीने वृजवाला सौवी साजीन्ने ।
गाए ते खुसैये चीरघाट तोट घोर दीले, कालिन्दी तें डुबा दीन लोक लाजु तोजीले ॥
लाल बोलबीर श्माम प्रेमेर तेमोन गुन हुय्ये, सकल मोनें तेमोने काम विथा गाजीले ।
भूखोन बसन काना सकल इकत्र कोरी, कुले ते कोरैये लाला सेखाने ते भाजीले ॥

(१०३४)

भूखन बोसोन कांना कौदम तें ढांक दीले, ओइ पोर चौट लाला तेखा ने लुकैयेवे ।
सेषाने गाच्छेर शोभा कोई मोन हुये गैलो, ताकोरे बिलोके ते बसंत हुलौ जयेचे ।
अन्नेक करैये गोपी जोल ते दौड़ैये गेलो, घाटेर तौ कैये बस्त्र ओखां ने नपैयेचे ॥
लाल बोलबीर गाय सीत ते सतैये गैलो, सेई समे कृष्ण कृष्ण कृष्ण कै डकैयेचे ॥

(१०३५)

एदीके ओदीके ताके कापुड़ न पैये तोदी, मोने ते लजैये जौदी जल मद्धे गैयेचे ।
कंपत सकल गाय मोन ते विचार कोरी, एमोन के आसे वृजे वस्त्र के हरैयेचे ॥
लाल बौलबीर सत्त कोरे आमी चीन नीले, एखानेते नंदेर कन्हाई लै पलैयेचे ।
आधीने सकल बाला दोऊ कौर जोर नीले, सेई समैं कृष्ण कृष्ण कृष्ण कै डकैयेचे ॥

(१०३६)

कदम बोसेये कान्हा बाँसुरी बजाई तोदी, जोदीर गोपीर मोने धीरोजे धौरैयेचे ।
सकल जुटैये बाला एई कथा डाके छीले, आमार कापुड़ देन सीत तें सतैयेचे ॥
लाल बौलबीर दया एखानें करोना तुमी, जले ते उड़ैये दुई दंड के वितैयेचे ।
दुखिरा पुकार कौरी दया नहीं आनों हरी, लज्जाते मरिजे वस्त्र एखाने न पैयेचे ॥

(१०३७)

एखाने बोले कान्हाई वस्त्र आमी कोथा पाई,मिथ्या कथा डाके तुमी लज्जाओ न पेयेचे ।
आमी तौ गाछेर बोसे मोने ते मोगोन हुय्ये, तुमी तौ आमाके कैंना डाकती बनैयेचे ॥
लाल बौलबीर तुमी मनेते विचार कौरी, तुमादेर वस्त्र आमार कोथा काज अैयेचै ।
एदीके ओदीके तुमी चोखेते तकैये लेन, आमी तौ ना नीले केऊ बाँदुर ले जैयेचे ॥

(१०३८)

कापुड़ आमार देन एखानें कौन्हाई लाल्ल, चोखेते तकैये लेन गाछे ते टोंगैयेचे ।
दीबे नानीं तुमी आमी मथ्रा पुकार कोरी, नृपत सुनीबे हाल तुमा के बीधैयेचे ॥
लाल बौलबीर ब्रजे एईमोन नित कोरी, सकल गरुर एके बारे ते नोसैयेचे ।
आमार न दोस कछू आगु ते डकैये दीले, तेईं मोन काज कोरी सेई मोन पैयेचे ॥

(१०३६)

गालागाली केनो करीओ कार ग्वालीर तुमी, एई कोथा डाक कोरे केनो वस्तु अैयेचे ।
मथुरा पुकार कोरे सीघ्र ही पलैये जैये, के काजे उड़ैये आमी आगु से बुझैयेचे ॥
लाल बोलबीर आमार के काज तुमार काछे, कापुड़ जुटैये से तुमार ठांड लैयेचे ।
एई ठांई अैये गान आयी ने डकैये जौदी, सकल गाछे ते वस्त्र तौदी तुमी पैयेचे ॥

(१०४०)

कापुड़ तुमा के आमी एई खाने दीबे जोदी, जोल ते उड़ैये तुमी एई हांई अयैचे ।
आमार कलंक नेम सिद्ध हये गैलो लाल, दुइ कर जोर जोर एमोने डकैयेचे ॥
जेमोने तुमार कोथा एकटी आमी पारबो नाई, लाल बौलबीर सत्त कथा ये जौनैयेचे ।
गोरुरे नसैये दासी भाव लै जौनैये गाय, आय आय गाछेर ताले सीस पोद नैयेचे ॥

(१०४१)

जोल ते पोलेये गाछे तौले जा उड़ये बाला,एई कथा डाके छीले आमी तुमी दासी लाल ।
येमोने कन्हाई छैल सुन मोने हुलसाय, कापुड़ औ अलंकार सकल लै दीले हाल ।
सुफल कौरीलैं चोख आमी तुमी प्रान पोति, से कथा बुझैये कौदी ऐस कोरीबे गुपाल ।
लाल बोलबीर डाके सकल धरीबे धीर, होरी मोने पीर कोरी सरद निशा के बाल ॥

* दोहा *

कृष्ण कृष्ण कह कृष्ण कह, हरे कृष्ण कह बाल ।
बाड़ी के गवनी सकल, उर धर गिरधर लाल ॥१०४२॥

कृष्ण रसामृत को स्तवन, करौ सजन मिल पान ।
जेहि राखेंगे कंठ कर रीझैं, श्याम सुजान ॥१०४३॥

* चार बोलियों में कवित्त *

(१०४४)

वृन्दावने डाके कानु आमा के तुमाके एगो, फूले बाड़ी मौधू काछैं भ्रमी विद भृंग दे ।
मंकी एंडी आर प्रेंटीलेस बाई प्लेस मूव, पीकौक एंगिल बर्ड सिंग बाई सिंग दे ।
बाँसुरी बजामदा सुनामदा है तीखी तान, लाल बलबीर ये कहाँदा ब्रजकिंग दे ।
देखो चल त्यारी व्रजराज कौ मुखारविन्द, आज नन्दनन्द राग गावत उमंग दे ॥

(१०४५)

देख तेरी शान दिल माइल हुआ है मेरा, गजब इलाही चश्म जुल्म गुजारें हैं ।
जोदी तैं आमार मोन बाड़ी काछे थाके नाहीं, जेठा कर्त्ता गित्रीं करि कोथा न बिचारें हैं॥
जिन्नों से कहेंदी जो सुनेंदी मो दिलोंदी पीर, खिलियाँ करेंदी औ बजेंदी गाल सारें हैं ।
लाल बलबीर प्यारे पैयाँ पर जासी लाल, कैंयाँ ना गुपाल म्हारी गली नें सिधारें हैं ॥

(१०४६)

छड्डदे गुमानी साडे दिलोंदी न जानी पीर,करैं क्यौं धिगांनी कानुं दिगां चली जादी बाल ।
अमार भीड़ नीले कैनों नन्देर कौन्हाई लाल, माखन दहीर घोल दान कोदी दीले ग्वाल॥
लाल बौलबीर थानैं कैंयाँ समझासी लाल, गुलचा लगासी गाल हाल छांडसी गुपाल ।
कंस पै पुकारें बाल तोकूँ बंधवावें हाल, करें हैं कुचाल तौ घमंड कौं मिटावैं हाल ॥

(१०४७)

जदीं तें निहारी लाल तदीं तें न धीर धारी, तेखानेते हरी हरी गान के करैयेचे।
गाछे गाछे तोले तोले एई कथा डाँके छीले, के खाने दरस लाल कान्हाई दिखैयेचे ॥
दास कही जेठा करता गिन्नी जन तीतकोरी, केई कोरी चेरोंण ना आगारे उड़ैयेचे।
जेई ठांई जैये शीघ्र लालन लखैये लदी, आनँद अधैये गाय गाय के लगैयेचे ॥

(१०४८)

* अथ पावस *

चालो ये गो माई बोने कैसी हरियाली छाई, कोयल डाकाई भालौ भालौ गान गैयेचे ॥
श्याम घटा छाई पौन चलत सवाई आई, भोनें बौलबीर मोर सोर के सुनैयेचे ॥
दादुर सवाई टेर चात्रक लगाई सुन, मौने हुलसाई घोरे रह्यौ नांहि जैयेचे ॥
व्रजई के वाई वाडी काज सोवी विसराई, राधिका कौन्हाई जू के झूलण झुलयेचे ॥

(१०४९)

कारे कारे बदरा झमंक झूम झूम आये, छोटी छोटी बूंदन सें बार बरसैयेचे।
जमुना के तीर जैये पैये दर्श लालौन के, गोपिन मिलैये राग मलार के गैयेचे ॥
कोइल कूकैये सोर दादुर मचैये दैये, झींगुर झिगैये मोर शोर के सुनैयेचे।
भौनें बोलबीर मौने मांहि हुलसैये जोदी, राधिका कौन्हाई जू के झूलण झुलैयेचे ॥

(१०५०)

जोदी से सिधैये मोधुवन के पियारे कान्ह, दौरसन पैये घोन धूम धूम अैयेचे।
कदम गाछीले थाके कोइलीया कूक कोरी, धीर धारे कई जोदी पीउ पीउ गैयेचे ॥
झींगुर झिगारौ मोर सोर कौरी भारी बोने, दादुर पुकारी बौकी गगौन उड़ैयेचे।
लाल बोलबीर प्राण प्यारे नहीं अैये तौदी, में नकेड़ कैये आपु तीर ना चलैयेचे ॥

(१०५१)

आमार कथा बूझे तुमी कैये कोर जोर आमी, जुगनू डकैये दैये आगुण उड़ैये ना।
दादुर पलैये दैये आगे जाय जाय वास कोरी, झींगुर पठैये मोर सोर के सुनैये ना ॥
लाल बौलबीर बदरा के समझैये दैये घूमड़ न अैये बारि बूँदें झर लैये ना।
चात्रक ना गैये गान कोईल सुनैये चपलान चमकैयें जोदी लाल बाड़ी अैये ना ॥

(१०५२)

* अँग्रेजी कवित्त *

आफ्टर एलॉन्ग टैम आई मॅट विद यू, दिल भर जरा तौ दीद अपना दिखाइये।
कम हियर माई डियर सिट ऑन दिस, मकां पै जरा तौ आप सीधी निगाह लाइये।
व्हाट आई डिड सिन इस्टील टू दी वि यू, मेरा दिल हाल सुनो अपना सुनाइये।
फॉर डू दी सॉरी एन्ड फ्रॉम दी ब्रॅस्टहग मी, लालबलबीर श्याम दिल को रिझाईये।

* दोहा *

मेरे तौ कुल पुज्ज तू, श्री वृषभान कुमारि।
जग दुख हरनी राधिके, आयौ तेरे द्वारि ॥१०५३॥

(१०५४)

श्यामा श्याम नाम सों न काम राखै एकौ, जाम रसना रसीली कूट वादन कौ भावनी ।
साधुन की संगत की रंगत न जानै मति, कुटिल कुढंगन में रहत हुलासनी ॥
लाल बलबीर प्रेम पंथ कौं बिसार सार, गहत कुसार शुभ कारज बिनाशनी ।
पातक अगाधा की ये दीन सुख साधा तुही, हरो मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी ॥

(१०५५)

पातकी हौ घातकी न सेवा तात मात की मैं, भ्रात की न जात की कराई कुल हासनी ।
क्रूर हौं कपूत हौं कलंकी हौं कुचाली हौं मैं, करत कुकर्मन भई है बुद्धि नासनी ॥
लाल बलबीर बड़ो लम्पट लवार हौं मैं, लालची हौं लेवे मत धन कौं हुलासनी ।
पातक अगाधा कीये दीन सुखसाधा तुही, हरौ मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी ॥

(१०५६)

मोहन की प्यारी वृषभान की दुलारी साधु,–संत रखवारी भव भीरन बिनाशनी ।
संपत दिवैया कोट कंटक दरैया सदां, आनन्द करैया पूजौ जन मन आसनी ॥
लाल बलबीर आयौ आस कर तेरी वीर, ब्यापी भव पीर कौं मिटा दे सुखरासनी ।
पातक अगाधा कीये दीन सुख साधा तुही, हरो मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी ॥

(१०५७)

काके द्वार जाऊँ काकूँ बिनती सुनाऊँ वृथां, जनम गमाऊँ क्यौं कराऊँ जग हासनी ।
तेरो ही कहाऊँ तोय छोड़ कहाँ अन्त जाऊँ, सीस पद नाऊँ तू है सदां सुख रासनी ।।
लाल बलबीर नेति नेति गुनगाऊँ मन,–मानी निधि पाऊँ तू पूजैया जन आसनी ।
पातक अगाधा किये दीन सुख साधा तुही, हरौ मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी ॥

(१०५८)

दीन हौं दुखी हौं अपराधी झूटवादी हौं मैं, पर धन पाइबे की रहै नित आसनी ।
कामी हौं कुटिल हौं कमीन मति हीन हौं मैं, रंक हौं रिनी हौं तू कटैया रिन फाँसनी ॥
लाल बलबीर क्रूर कायर कपूत हौं मैं, लंपट लबार लालची हौं सुखरासनी ।
पातक अगाधा किये दीन सुख साधा, तुही हरौ मेरी बाधा राधा वृन्दावन बासनी ॥

(१०५९)

कोऊ कहै मोहि सदाँ बल है भावनी जू कौ, भाषत अनूप बानी बिमल बिकाशनी ।
कोऊ कहै मोहि सदां बल मात काली जू, कौ कारज करत जन खलन बिनासनी ॥
कोऊ कहै मोहि सदां बल रहै गंग जू कौ, भोजन करत अघ पूजै जन आसनी ।
लाल बलबीर कौं भरोसो रहै येही सदां, मेरे कुल पुज्ज राधे वृन्दावन बासनी ॥

(१०६०)

दीन दुख हरनी तू वेदन में वरनी तू, आनन्द की करनी दरनी यम फाँसनी ।
दास जन तारन तू शोक गन गारन तू, दुष्ट दल मारन पूजैंया जन आसनी ।।
बलबीर करता तू घट घट बरता तू, शुभ काज सरता तू हरता हिरासनी ।
सदां सुखरासनी तू संपति प्रकाशनी मो, पातक विनास राधे वृन्दावन बासनी ॥

(१०६१)

कोमल विमल पद कंज मद गंजन हैं, नखन प्रकाश आभा उरगन हासनी ।
सोहै नील सारी सीस जरी की किनारी ताकी,छबि कौं बिलोकि घन दामिनी हिरासनी॥
लाल बलबीर लख बदन उदोत जोत, सरद सुधा-धर की प्रभा की बिनाशनी ।
सदां सुखरासनी तू संपति प्रकाशनी तू, हरौ मेरी बाधा राधा वृन्दाबन बासनी ॥

(१०६२)

लंपट क्रूर कुढ़ग हौं, कपटी कुटिल कठोर।
जन सुख साधा राधिका, हरिये कंटक मोर।

* मान पच्चीसी *

[सखी वचन]

(१०६३)

पसारट बध–

कारी जीरी बस रहो, कहैं कटेरी बैन।
सीतल चीनी में बड़ी, किसमिस श्याम मिलैन॥

[प्यारी वचन]

(१०६४)

बेलगिरि करैं अभिलाषे उन सौतिन सों, रीत मो मन दुखात जानत अनारी हैं।
किसमिस रहे चाह आयकैं करत लीला, थोतेई खिजावैं वुही नारीअल प्यारी हैं॥
लाल बलबीर रार करौ री वृथां क्यौं आप, बरस हजार लौंन मानूँ सीख त्यारी है।
सौंफ मन दीनों मैं तो धनियों न जानी बात, प्रीति करी छार छार छबीलो बिहारी है॥

[सखी वचन]

(१०६५)

चाह रहै तेरी तू चिराइ तौ न रैहै रस, चिरौंजो न बातें बिन चीतौ कर कारे कौं।
कारी मिरच रही दिपत अलसी सी आज, हूजै ना कठोर अब लाख रूप वारे कौं॥
लाल बलबीर हस ना हसो सुपारौ प्रीति, तजिये न निमिष सुपारी नैंन तारे कौं।
रार जिन कीजै री बहेरै री तिहारी बाट, जाय फल लीजै सौंफ दीजै मन प्यारे कौं॥

(१०६६)

पीपर न कीजे मान अजमान मेरी कही, कटेरी कहै तू बैन कायफल लावैगी।
कहा चूक कीनी कान कस्तूरी रिसाय रही, काऊ की न मानें खैर पीछैं पछितावैगी॥
लाल बलबीर सों करोरी ऐंस राई हर, दीजै ना रिस्याई वच मुरैठी कहावैगी।
सहित हुलास सों सु पैदा करौ रस सिंदूर, है मुलाकात तोरी मैंन फल लावैगी॥

* गहने बन्ध *

[प्यारी वचन]

(१०६७)

लटकन चाल दिखा सजन छल्ली ना दिल्ल, डार नेह जाल अंग आरसी लगाते हैं।
अंग जरे याते सतलरी हीन एक छिन, हेर हेर हार गई ग्रेह नहीं आते हैं॥
दास कहैं झाँझन किया है तन नाहक ये, छन छन करै चित्त नित्त तरसाते हैं।
संकरीन नैंक हँस लीने अंग लाय कान्हां, कड़े हेर ह्वै हैं छड़े रीति ये दिखाते हैं॥

* परचूनी बन्ध *

(१०६८)

बेसन रहत सूजी कहा तोर परी बान, मैं दासी तेरी री भली हैं न चूर दाई तें।
प्रीति कौं विदारिये न आखर करैगी चाह, सामरे सों खारी बैन कहौ ना चिताइ तें॥
लाल बलबीर जू सों नेह नवनीत यही, चून रस जोओ मार्ग हींगुर सजाई तें।
सक्कर खोरी तें मत सूक्ष तेल होरी अब, रसिकौ मंगा री दान सुन्दर कन्हाई तें॥

* वस्त्र बन्ध *

(१०६९)

कहा पेच परौ बाल जामां सुख लीजै हाल, मोर चाह जिही सुख देखौ तु ये बाल सों।
करिये रजाई चल बादौ कर आई पट, काहे कौं लगाई रत चुगो ले हुलास सों॥
लाल बलबीर गमछाप कहा रहो मुख, आँसुन सों धोती सुख हैं न यह चाल सों।
अंगरखी लाय सदां कीजै ना फितर री तें, कमरी न राखौ प्रीत पगरी गुपाल सों॥

* पुष्प बन्ध *

(१०७०)

कदम धरैन कुन्द बैठी है कहाँ ते वीर, लै कनेर माधुरी है काहे इतुराई त।
केतकी कहीरी तें मो तिया की न मानी बात, सौन जुही तने हाय मोगरा पराई तें॥
हार सिंगार लटकन न नथ डार उर माल, तीय धार लज्जावंती ह्वै रिस्याई तें।
लाल बलबीर पिया बाँसोर चमेली राख, सेवती न मान ही में के बड़ाई पाई तें॥

* वृक्ष बन्ध *

(१०७१)

नारंगी री प्रीतम सों यही तौ अनार पन, मिट्ठा तें न बोल मन खट्टा कर दीना है।
मोरछली मत नहीं पीपर रिस्याय तुही, कमरख प्रीत बेर नाहिक में कीना है॥
लाल बलबीर वर आमन विलोक बीर, जामन न देती देह काहे पापरी ना है।
तार कर दीनां हाय सेवती भई ना सदां, अमली रही तौ ये वियोग फल लीना॥

(१०७२)

अरनी अशोक प्रीति खिरनी लगाई नीम, गोंदीखी कहा आगूलरी सुखदाई तें।
अमली अनारन तू रहै लालखोट कहा, करी लंगराई कचनार क्यौं रिसाई तें॥
लाल बलबीर बधौं बनां रस रूप डोर, ऊही पनस खडार करी महुआई तें।
पापरीअ सीसों हेर कीजै अब तून बेर, लीजै जा सरस रस कुमर कन्हाई तें॥

(१०७३)

बना घर आये कचनार पापरी न धाय, कहा करतूत कायौ हरसौं अनारी तें।
बेर बेर कहौ तू न कीजै बरसों री रार, कदम धरेन सीखी रुषनों री भारी तें॥
लाल बलबीर जात जामन बहीरी बीर, सहज निहार कें बचाय काम आरी तें।
सरस सरूप पाय सेवती न पीयै धाय, कीजै भुज मेल केल सांमरे बिहारी तें॥

* तरकारी बन्ध *

(१०७४)

बेगुन भई री बाल काकरी अजानीमत, चौंरही गुमान कर के मत तिहारी की।
मैंथी री न पास चूक काहे कौं परन देती, तू वासों बिगार गत करी है अनारी की॥
लाल बलबीर मिल सूआसों अनन्द कीजै, पालक पै लूट रस जोबन उजारी की।
तोरही मनाय बेर कीजै ना सिधाय अरी, आऊ हर पीर ना री सामरे बिहारी की॥

* व्यंजन बन्ध *

(१०७५)

कहा भात है उदार खीचड़ी क्यौं बैठी मन, ऐसा गहौ तू मूँग कहाँ जा जा गमाई तें।
कढ़ी हौ कठोर फुल्का हैं वृथाँ भाल कीयैं, उठौ मरकीली पीसै मईं रस पाई तें॥
लाल बलबीर जू की आस करन पूरी री, लिपटो रस लीजै दै अङ्ग सुखदाई तें।
कैसो ये अचार मुरब्बा सों करारौ तुम, हेरी न पिया की गति प्रीत दर आई तें॥

(१०७६)

दरस दिखा जा खजलाल सें न भूल रस, इमरती जातस घेवर सों रिसाई तें।
दही देह तूनें उनुकीती क्या गुनांह प्यारी, लखा जे इंदरसे नहीं वृथा कुमलाई तें॥
कौंठा मिसरी सूं बतासे बड़ी तू आंटि करी, लाल बलबीर पूरी पैज कर आई तें।
मोद कछु पैयोगी सिराय तो फलौरी ऊही, ठौरस जलेबी जाय पागिये कन्हाई तें॥

* वस्त्र बन्ध *

(१०७७)

कौन मिस रूठी आज री आली पीतंबर तें, पीत दर आई गुल बदन रिसारी तें।
फुलालैन ललना न हूजै पापलेन अबै, लगा छतियाँ सों कीजै गर्दस किनारी तें॥
लाल बलबीर वृथाँ तास बादलाई आप, अक्रिर न छोड़ बना तन लै निहारी तें।
ऐसा ठनगन खीनखाप कर दीना मन, प्रेम पगौ टारौ धन लै हस बिहारी तें॥

(१०७८)

कहौ जीन मानौं उर असलस रहौ मान, ऐसी ठनगन धन कहा ये विचारी तें।
हैन अचकला कान तापल्लू की तूरी आन, तोसी तू अडोरिया रिसानियां हूँ भारी तें॥
लाल बलबीर तनजेब है अतूल हेर, गाढौ हेत राखौ मीठा बैन कह प्यारी तें।
नैनसुख लीजै सैन कीजै बनातन संग, गई धूप छाया रस ल्हैरिया बिहारी तें॥

* रंग बन्ध *

(१०७९)

सुरमई तेरी बुध पीत सोसनो ही रही, अबै काकरैजी देत हेर हर ताली है।
कासनी सुनैरी क्यों न सब जीया जानत हौ, रार क्यों जंगाली जामनी में नूरिसाली है॥
लाल बलबीर चंदनी में री पिया जू संग, किलमिसी जुमर्दी की फाकताई घाली है।
सर्वती मनामें हियै सर्दई अलोलै नेंक, हरो-तन मैन पीर सामरो बिहाली है॥

(१०८०)

तोती सी पढ़ाऊँ तें मोतिया की न मानै सीख, पीत में नरंगी नाफिरी री असमानी है।
कैसें सवतालूं आप रोज ही अर कपूरी, हरी संदलीली जामनी में रिस ठानी है॥
पीछैं पछिताई आ गुलाबी पिया जू कौं सबैं,-ती में तू बसंती फाकताई सुख हानी है।
लाल बलबीर कौं हवासो ना हुलासी कान, तू सी किरमिची नहीं श्याम पीर जानी है॥

(१०८१)

लाल तें नरंगी जहाँ काकरेरी येरी आय, नांहि कर सोली आज रार तें जगाली री।
सर्दई अली लै रस हरितन त्रास काहै, कासनी रँगीली देत हेर हरताली री॥
दास देख चन्दनी निसारी ना सिधानी रानी, आनंद के सरिआतें नांहि कर सालो री।
ासंग दलीली हान नीकी सिख सिखासी जान, राह अगरई चाल हँसत सिहाली री॥

* बासन बन्ध *

(१०८२)

तत्रा तन वाकौ वृथां हैन अचकला पीयु, करोरी कहो ना बैन हारी समझारी री।
लोटा दिया पीको हरी कोने तो अकल सारी, करछूई हीन तसलाई रिसभारी री॥
पलटा कहो कौ रिस कौन सी कढ़ाई आज, अरके बीर अबेला दया उर धारी री।
अंगिलास अवरात पीयौ प्रेम प्यालो, मेटो विथा रस बलबीर है बिहारी री॥

* दशावतार बन्ध *

(१०८३)

चल व्रजचन्द जू पै बीनती करत तेरी, नाहक अटक छिप रही सुखमा री तें।
वामन की पीर हेर हेरत वराह तेरी, ता परसराम ती हौ लाल मन धारी तें॥
लाल बलबीर धन रह री अबोध कछू, जानत नहिं ये मांहि भरी रिस भारी तें।
कीजिये अराम तें अमोहन न हूजै बाम, न्है कलंक लचकीली पीय संग प्यारी तें॥

* वृक्ष बन्ध *

(१०८४)

अरनी अनारन तें खिरनी सरस रस, तैसी दृग नारअल चीड़ ना निहारी हैं।
कैंत कैंत हारी कर हींस हींस ताल देत, दास हिय साल कचनार कहा धारी है॥
करी लंगराई अंक ठैरती नरंगी रैंन, ऐसें हडर तेरी रीत अनारस कारी हैं।
हार सिगार चन्द निंद तकर छैल तकनेर, चल चल केलि कीजै ललन खिलारी है॥

* चार सौंज बन्ध *

(१०८५)

प्यारे कर छुई तू टोकरी भई री बाल, लोटा मनमोहन जू थाली सब तेरी है।
घोरो विष तैनें निज हाथ सों बिगारो काम, अबै करहात देख सस की उजेरी है॥
लाल बलबीर तूती निपट अजान हैरी, चिरी बिन बातें मत विधना सकेरी है।
पीपर पयान कीजै जांमन बिलोक छीजै, बेर जिन कीजै सीख भली मान मेरी है॥

* शहर बन्ध *

(१०८६)

प्यारो तोहि छोड़ नाग यारी कहूँ भूल प्यारी, होत उर मोद सदां सूरत निहारे तें।
तें का सीख मानी री अजानी पट नाहीं खोले, दिली की न जानी उर मान पूर भारे तें॥
लाल बलबीर अलवर सों विहार कीजै, ग्वालिअर छोड़ मिल रूप उजआरे तें।
हाथरस लीजै कोल करके ना दगाह कीजै, काबल गुमान कर बैठी प्रान प्यारे तें॥

* गहन बन्ध *

(१०८७)

वारी वैस ही तें आप भुमका ह्वै रही बाल, कड़े मत बोलै बैन रूप उजआरे तें।
पायल यूं तेरे री जेहरसों न कीजै रार, हार गई मैं तो पोंहची न मान टारे तें॥
लाल बलबीर हंसली जै उर लाय रीह, मेलमें है वेसर सडार क्रोध कारे तें।
बिछीयाऊ से जरी निसंक लीजै अंक भर, बंक पन छोड़ सांठ लीजै मन प्यारे तें॥

* पक्षी बन्ध सवैया *

(१०८८)

लाल मनाय रहें तुम कौं अब, तूती अजान न मानत है री।
सारस काकी लगी सजनी तुम, मैंना की बान अजहूँ न तजै री॥
मोर सिखा वन मान अबै, बकवाद तजौ हंस उत्तर दै री।
कोयल अैसी है या व्रज में, बलबीर पपैया सों मान करै री॥

* दोहा *

(१०८९)

सुनत सखो के बैंन, हरष चली तिय पीय पै।
मिले कुंज सुख दैंन, मैंन खेल खेलन लगे ॥

* सोरठा *

(१०९०)

कृष्ण अली की कृपा तें, भयौ हजारा पूर।
रहौ लालबलबीर सिर, रसिक चरन की धूर ॥
सम्बत रिषि चतुराने, ग्रह सब राधा ध्यान।
मृगशिर सुकला द्वादशी, पूरन सतक सुजान ॥

(१०९१)

बाबा बनखंडी महादेव जग जाहर हैं, व्यास जू कौ घेरौ सो अनूप छबि छायौ है।
चारों ओर सदन बने हैं लाल लाड़ली के, चन्द ते दुचन्द तेज ऐसौ दरसायौ है ॥
सदा व्रजवासी रूप माधुरी निहारो करैं, और सौं न काम श्यामा श्याम गुन गायौ है।
लाल बलबीर नाम लै लै सब टेरत हैं, राधिका कृपा तें बास वृन्दाबन पायौ है ॥

* दोहा *

दियौ किशोरी लाड़ली, श्रीवृन्दावन बास।
जैसें ही व्रजजन सबै, करो कृपा सुखरास ॥
विदित बैस हैं चार जुग, विधि निज रचे सरीर।
रामलाल कौ सुवन हौं, नाम लालबलबीर ॥

॥ इति श्रीवृन्दावन वासी बलबीर कृत हजारा संपूर्णम् ॥
॥ इति शुभम् सं० १९५० ॥

* श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः *

बलबीरजी के भ्राता प्रेमदास जी के फुटकर कवित्त

* दोहा *

श्रीनिम्मारक भजहुँ मन, श्रीभट्ट श्रीहरिव्यास ।
परसराम पद सुमर कैं, कृष्ण अली की आस ॥ १ ॥
श्रीगुरु चरण सरोज मन, बाहर भीतर धाम ।
निशि दिन मुख जागत रहौं, श्रीराधावर नाम ॥ २ ॥
नमो नमो वृन्दाविपिन, नमो नमो सुखरास ।
नमो नमो ब्रजबासी जितै, तिन चरनन की आस ॥ ३ ॥

* कवित्त *

(४)

वेदन कौ सार सार सबही पुरानन कौ, रस हू कौ सार निरधार कर राख्यौ है ।
भूतल रसातल औ लोक ब्रजमंडल कौ, सब ही कौ सार एक वृन्दावन भाख्यौ है ॥
जिनहूँ कौ सार नव कुंजन विहार नित्त, सो तो समूह सुख ललितादिक चाख्यौ हैं
तिनहूं कौ सार आली श्रीगुरु सिखायौ जिन, प्रेम सखी राधा महा मन्त्र उर नाख्यौ है ॥

(५)

दीन हौं किशोरी तेरी दीन हौं किशोरी तेरी, अति मति हीन मेरी बिनै सुन लीजियै ।
परी तेरे द्वार प्यारी तेरी ही कहावत हौं, कपट की रास दास संतन की कीजियै ॥
वृन्दावन वीथिन में धूर तन धूसर है, फिरूँ गुनगुनाती माती लाज कौं दरीजियै ।
रसिक सहाई प्रेमसखी कौं उबार लीजै, जान एक बौरी चेरी अैसें ही गनीजियै ॥

(६)

लाड़ली लला सौं मेरी विनती है बार बार, जैसें अपनायौ तैसें कान दूर कीजियै ।
श्रीवन निकुंजन में राधे राधे राधे नाम, गाऊँ सुनि टेर वेगि लोचन ढरीजियै ॥
फिरौ कर ग्रीव जोर देखौं नख चन्द ओर, गिरूँ मुरझाय नैक ठोकर दै दीजियै ।
एती अवलाषा सदां चरन सरोज धूर, प्रेम सखी नैन भृंग रीझ रीझ पीजियै ॥

(७)

प्रानधन वृन्दावन ताकौं ना विसार मन, निरख लतान छबि उमड़ी परत हैं ।
नैंन भर ढारैं हेर हेर मतवारे संत, कदली कदम्ब अंब मन को हरत हैं ॥
झुके हैं तमाल वट रज कौं नवत माथ, दम्पति विलोक मन भाई सी करत हैं ।
सेवा की निकुंजन में चरन पलोटैं प्यारौ, प्यारी जू की प्रेम सखी बीजना ढुरात हैं ॥

(८)

केलि वनराज जू में आदि है न अन्त जाकौ, सदां ही नवीन पल पल दरसत हैं।
प्यारी जू के संग प्यारौ छिनहूँ न होय न्यारौ, निरख अलीन बार बार हरसत हैं॥
रहैं दृग जोरैं मोरैं कोरैं सु लगोई रहैं, तौबी अकुलाय धाय अङ्ग परसत हैं।
प्रेमसखी कानन है आनन उठाय देख, तीन लोक स्वामी टुक हेत तरसत हैं॥

(९)

मेरी हित स्वामिनी की गनै को उदारता कौं, कोटि कोटि विधि मुख लोयैं धर जात हैं।
आवै कोऊ द्वार ताकौं देत हैं अभय दान, मानस न मान रस पोखैं बहु भांति हैं॥
लालन हूं चेरो कर राखौ याद बाल तनें, प्रेमसखी जस पात पात विख्यात हैं।
ऐसो ही विपिन मोय श्रीगुरु बतायौ आली, नैंक रज छूयैं चूर चूर भये जात हैं॥

(१०)

श्रीवनविहारी प्यारी इच्छा हू न करते तौ, ये तौ ये संसार अवतार क्यों कहावते।
श्रीपति जू जदुपतजू जो व्रजपित होते नहीं, कहां सुख पाते भक्त दुष्ट ही सतावते।
होते जो न चन्द्र भान भूमि नभ तारागन, प्रेमसखी सुर आदि जल में समावते।
कौन रस जानते श्रीलाड़ली ललन बिन, नित्त हू न होते तौ अनित कौंन गावते॥

(११)

कठिन कठोर हौं कुलीन हौं कुजात हौं मैं, अधम अधीन हौं मैं टेर सुन लीजिऔ।
कपटी कलंकी हौं गरूर भरो क्रूर हौं री, अति मति हीन मेरी छांह मत छीजिऔ॥
नख सिख औगुन हौं होंयना बखान कछू, तोऊ जान चेरी मेरी पीठ जिन दीजिऔ।
वृन्दावन-चन्द जू में राजत अलीन मध्य, तोई सों कहत राधे नैक डीठ कीजिऔ॥

(१२)

एरे मन मेरे नीच कीच में परौ है हेर, ऊपर खड़ो है मीच राधा गुन गाया कर।
लाया कर हिये मांहि कभी तौ तू भोर सांझ, मूँद कैं दृगन रूप ध्यान बीच छाया कर॥
पाया कर लै लै कैं प्रसाद श्रीकिशोरी जू कौं, संतन कौं देख देख सीस कों नवाया कर।
जाया कर सबै छाँड़ रोज तें निकुंजन में, प्रेमसखी श्यामा जू कौं करुना सुनाया कर॥

(१३)

सोवत है जानत है पुनि उठि धावत है, हाथ हू न आवै रोय रोय पछितात है।
उठत कहाय हाय धन के जतन मोह्यौ, काम बस भयौ नार हेत दुखः पात है॥
क्रोध मद मोह द्रोह ही में अति पोय रह्यौ, संतन कूँ देख दुष्ट अति सतरात है।
प्रेमसखी सुपने हू खीजत खिजावत है, रंचक न सुखे जग दुख ही दिखात है॥

(१४)

संतन के संग रंग आवत है प्रीतम कौ, याही तें कहत मिलि श्याम रंग भीजियै।
और रंग जाय जैसें सावन दै मैल तैसें, होय पाकौ रंग ताकौ जतन सु कीजियै॥
जौं जौं फटकारैं तौं तौं चढ़त सवायौ रंग, अति गढ़वार देख देख मति भीजियै।
संतन प्रताप सार श्रीमुख कह्यौ है आप, छांड़ बिषयांन प्रेमसखी सुधा पीजियै॥

(१५)

बैठे संत मंडली में होत है अनंत सुख, सुन रस रीति प्रीति बढ़त अभंग है।
गावैं मन भावैं छिन छिन दौर दौर आवैं, बार बार सिर नावैं सत्त सत्त संग है॥
रंगे श्याम रंग पुन औरन रंगत डोलैं, बोलत रसाल बैन उठत उमंग है।
प्रीत कर प्रीत कर संत से न मीत कोऊ, प्रेमसखी पातन में येही रंग रंग है॥

(१६)

भाई बन्धु कुलजात संत मेरे तात मात, इनकी चरन रज सदां उर लाऊँगौ ।
गाऊँ गुन वृन्दावन लड़ाऊँ लड़ेतीलाल, धूर तन भूर भूर भाग कौं मनाऊंगौ ॥
कलिन्दी के कूल कूल फिरूं रस फूल फूल, हेर हेर लता पता ताप कौं नसाऊंगौ ।
छाऊंगौ निकुंजन में पाऊंगौ प्रसाद मांग, प्रेमसखी राधे राधे राग पूर गाऊंगौ ॥

(१७)

सांत रसवंत संत भरे गुन हैं अनंत, जहां तहां विहरंत जनन जियंत हैं ।
प्रेम रस वरसंत छिन छिन में हसंत, जस कौं न जो कहंत नेति नेति अन्त हैं ।
विमल गहैं इकंत तहां नाम कौं रटंत, लाल लाड़ली सेवंत नैंन निरखंत हैं ।
वनराज दरसंत सरसंत हुलसंत, प्रेमसखी कंत संत सदां ही वसंत हैं ॥

(१८)

धन्न धन्न सन्त मैं तौ तिनहीं के गाऊं जस, भव तें निकार नाव सुगम बताईये ।
उद्दम बिनाई आस पूजत कृपा की रास, जान दृढ़ मान प्रीति तिन सौं लगाईये ॥
कूप में परे हैं सूर गोता गह दैंह कूर, सन्त सुखदाई खींच मींच तै बचाईये ।
काहें कौं बनत खर सूकर है कूकर क्यौं, प्रेमसखी गाऔ हरि देह भली पाईये ॥

(१९)

सन्त से उदार कोऊ जगत बीच हैन होंई, तिन के सरोज पद देखि देखि जीजियै ।
हरि ओर कौं लगावैं ताकैं विष हैं छुड़ावैं, जान सत्त स्वांग तिनें धाय उर लीजियै ॥
धन सेवा तें न रीझैं एक प्रेम ही में भीजैं, द्रवत सुजान मिल श्याम रस पीजियै ।
काहें कौं भ्रमत छांड़ आस गह प्रीतम की, प्रेमसखी या तन की सुफलता कीजियै ॥

(२०)

राधिका कौ नाम सुखधाम विसराम चहे, येरे मन मेरे बावरेन कौं न रट रे ।
सतन के संग रंग अङ्ग अङ्ग छै उमंग, होय गत पंग भंग जंग जग हट रे ॥
वृन्दावन वास आस विमल विकास रास, मिथुन सों हास खास दास होहु चट रे ।
कालिन्दी के कूल मूल नेह रस भूल फूल, प्रेमसखी नाह तूल दम्पति सां सट रे ॥

(२१)

एरे मन मेरे भैया कैतौ समझायौ तोई, कर सतसंग प्यारे संतन के संग में ।
केतिक जनम तोई रोई रोई बीत गये, अबकै परौ है दाव चौपर के रंग में ॥
नहीं तौ भ्रमत ही फिरैगौ लख चौरासी में, दुखः तौ अनेक सुख श्याम की उमंग में ।
डोलैं मदमाते राते प्रेमसखी जू के भाते, राधा लाल बोलैं मुख मिल अङ्ग संग में ॥

(२२)

संतन के संग बिन कानें हरि पाये भ्रात, तिन हीं नें पाये साधु सेवा उर धारी है ।
सन्त ते उछीते करैं टहल बनाई स्याम, प्यारे नहीं रीझैं बात येही निरधारी है ॥
धन कौं बटोरें कूर काल गाल रहैं पूर, कै तौ समझायौ दुख दुखः ही जियारी है ।
सोवत में जागत में डोलत में बोलत में, प्रेमसखी धन्न नाम निसरै बिहारी है ॥

(२३)

राख कर चेरी येरी नैक तौ निहार बीर, तुमरी कहात फेर कौंन की कहाऊं मैं ।
त्यारी ठकुराई माँहि सबकी समाई होई, निपट अजान हौं सुजान कहाँ पाऊं मैं ॥
मैं तौ तुम भूली पर भूलो जिन मोई प्यारी, रहौ अनुकूली फूली प्रेमसखी चाऊं मैं ।
नागर नवेली अलबेली रंगरेली हेली, राख पद मेली रंगदेवी गुन गाऊं मैं ॥

(२४)

रूप हद नेह हद मृदुल अनूप हद, सीतल सुघर हद मन के हरण हैं।
विमल पराग हद अरुण अमित हद, पानप सरस हद दुति के धरण हैं॥
नख जिमि इन्दु हद अंबुज वरण हद, प्रेम कौ समूह हद लाल बसीकर्न हैं।
प्रेम सखी सुधा हद उपमा लजात हद, सुख के करण हद राधे के चरन हैं॥

(२५)

कैधौं रूप सागर तें प्रगटे कमल जुग, किधौं रतिराजजू के मन के हरण हैं।
कैधौं हर भूषण की दूषण हरण हारे, किधौं प्राण प्यारे भारे विश्व के भरण हैं॥
किधौं हैं मराल किधौं इन्दुमण्डली के भूप, किधौं छवि छत्र सब सुख के करण हैं।
किधौ बन धरण हैं कि वन हीं धरण, प्रेमसखी हैं सरण किधौं प्यारी के चरण हैं॥

(२६)

जगर मगर होत नखन लखत दुति, चखन जखन हेर फेर भ्रम पावहीं।
किधौं सोम सभा जोर मुख समता के हेत, नेत नेत कर पाय पर गुण गावहीं॥
किधौं मन मान मेरी उपमा कहत मुख, अति सकुचाय पाय पाय बहु छावहीं।
कृष्णअली सोभा लख लोभा मन लाल, किधौं, राधे नखचंद ताकौ कोटि चंद नावहीं॥

(२७)

चिबुक कौ बिन्दु इन्दु नील है विराजौ, मनौं, सुखमा कौ सोच पोच सर्न आय लई है।
किधौं काम कामिनी की नजर दबायबे कौं, दियौ है डिठौंना टौंना सौंना चहुँ छई है॥
किधौं रूप सागर में फूलौ अरविन्द हेर, गौंना अलि छौना वहाँ मौना गति भई है।
कृष्णअली कैधौं श्याम सुन्दर के मोहिबे कौं, नैनन कौं अँत रस सिन्धु आय नई है॥

(२८)

नासिका जलज मनी सोभा भल सोभित है, मानौं कल केकी कौंच सुक्र गह राखौ है।
बिछी है बिछात किधौं अरुण वरन नीकी, तापर विसद वार सुत अवलाखौ है॥
अंबुज से कर मांहि अंबुज सुहाय भाय, सौरभन लेत मनौं मोल अरनाखौ है।
किधौं छवि आप छली प्रीतम निहार मुख, चूंबत है बार बार कृष्णअली भाखौ हैं॥

(२९)

प्यारी की बेसर लख बेसर गिरत बीर, बेसर लरत मनौं बेसर बचायौ है॥
कंजन समर चढ़े बेसर के चांप लिये, सुक नैं बचाय बीच आसन जमायौ है॥
जानत ए वेसर के बेसर लौं धारी आय, याही तें पृथक नकबेसर डरायौ है।
बेसर न जानौं जिन लाल मन वेध लियौ कृष्णअली करे बस का पैं जात गायौ है॥

(३०)

पलक न बरनी सु बरनी न जाई बीर, किधौं द्वारपाल ठाड़े मदन नरेश के।
सोभा की कतार किधौं वार अनआर रची, किधौं प्रेम पगे खेलैं चैंदुआ रसेस के॥
किधौं सूर सेन उभै साज सर गढ़ किधौं, बानन कवच धार होये ना प्रवेश के।
कृष्णअली किधौं जाल मीन मन बेधबे कौं, बरनी पलक राधे मोहन वनेश के॥

(३१)

फूल उठे भोर सोय फूली सखी रहीं जोय, फूले असनान कीये फूल जलधाम में।
फूलन सिंगार कियौ फूल बाल भोग लियौ, फूली फूली जात प्यारी श्याम संग श्याम मैं॥
फूलन की कुंज राजे फूलन फुहारे छाजैं, फूलन समाज राजभोग उभै जाम मैं।
फेर उठे सोय कर करत विहार जल मांझ, भोग सौंन ऐसें जात है अराम मैं॥

फूलन-मंडली

(३२)

फूलन की कुंज जामें चलत फुहारे भारे, बीच कमनीय मध्य बैठिक सुहावनी।
देखकर सोभा लोभा होत नहीं कौन बीर, नवल किशोरी जोरी अति ही सिहावनी॥
एक एक लता जल जंत्रन के बीच बीच, लगत फुहार झरें जलज जियावनी।
जीवत मराल पाए पूँछ फरकाए रहै, गाय रहै प्रेम सखी सुकथ रिझावनी॥

(३३)

फूलन की बैठक में फूलन के खम्मा चारु, फूलन के छात छज्जे जारी सौ अनूप हैं।
फूलन के बेल बूंटा रचे हैं विचित्र चित्र, फूली सखी चहूँ ओर फूल कौ स्वरूप हैं॥
फूलन कौ पानदान पीकदान आदि लियै, फूलन गहत जात फूली मनौं धूप हैं।
फूलन सिंगार कियें नवल किशोरी जोरी, फूली फूली बात करें फूले बन भूप हैं॥

(३४)

बोलत बिहंग लता फूल फूल झूल रहीं, फूल रहे फूल फूल फूलन की वाटका।
नहर समीप ताके सुच्छ जल पूर बहै, ता मध्य कमल फूले वरन वराटका॥
फूलन निवारौ भारौ फूल रह्यौ फूलन में, तीर तीर सोभित हैं फूलन के घाटका।
फूलन सिंगासन पै राजत लड़ैती लाल, प्रेमसखी फूल हेर सुभग सुभाटका॥

(३५)

फूलन मुकट पट कुंडल हैं फूलन के, फूलन टिपारौ भारौ ललित लता कौ है।
चंद्रिका छबीली फूल फूल सरसाय रही, मुख ललचाय रह्यौ पूरन कला कौ है॥
बंदनी लसी है फूल फूल सीस फूल तरें, वेसर अतूल लख भलका छला कौ है।
फूलन अधर मूल बांसुरी बजत फूल, प्रेमसखी लेत नाम झलक झला कौ है॥

(३६)

फूलन कौ बैना भाल करन कुसुम सोहै, प्यारीजू कौ चंद्रहार अति ही लहसत हैं।
फूल सिर पेच तहाँ कलंगी झुकी है आन, फूलन के तुर्रा नकबेसर डसत हैं॥
फूलन के बाजू पहुँची बिविध बरन रचीं, चार चार चूरी फूल करन बसत हैं।
फूली फूली प्रेमसखी फूल फूल सोंज लियें, फूले फूले देख प्रिया प्रीतम हँसत हैं॥

(३७)

फूलन कौ लहैंगा सारी कंचुकी समारी फूल, फूल रही सोभा भारी कुन्द के दसन पर।
काछनी कछी है फूल फूले फूले अंग अंग, फूलन के आभरण रूप के सदन पर॥
फूली सखी आसपास फूली फूली करें बात, वारी वारी जात प्राण सुन्दर पदन पर।
फूलन के हाव भाव करत कटाक्ष फूल, फूल से बदन राधे सोभित मदन पर॥

(३८)

फूलन की सिज्जा पर राजत नवेली बाल, नवल किशोरजू के प्रानन तैं प्यारी है।
फूलन कौ पीकदान लीयौ है सखी ते श्याम, कीयौ मुख आगैं पीक जीवत बिहारी है॥
मंद मुसिक्याय चाय छाती सों लगाय लीयै, एती क्यौं करत लाल जीवन हमारी है।
प्रेमसखी नये चौंज छिन छिन रहै गोये, कृष्णअलीजू की कृपा बिन को निहारी है॥

(३९)

नवल किशोरी जोरी गोरी चित्त चोरी भोरी, धवल अटान चढ़ निरखैं घटान कौं।
चपला चमक जात त्यौं त्यौं अरुझात गात, करसौं बतामें श्याम केकी के बटान कौं॥
लता पता झुक रहीं कोयल हू कूक रहीं, रज सज चूम रहीं दंपति रटान कौं।
कृष्णअली सोभा लख लोभा मन लाल जू कौ, गोभा सी बढ़त कुच निरखैं लटान कौं॥

(४०)

निकसे निकुंजन तें सांझ पिय प्यारी संग, आयौ घन घोर मोर बोलत सुहावने।
दीरघ रसाल बुन्द परें रंग होय चूर, रह्यौ अवनीए पूर सिख ते चुचावने॥
लाई सखी कुंजन में सकल बसन भीजे, नवल सिंगार किये जिय के जियावने।
सोसनी गुलाबी सूऔ हरित नरंगी पीत, कृष्णअली देत लेत चीर मन भावने॥

(४१)

रूप रसवन्त कन्त चुबक प्रलोइ भोय, हेर हेर गौरी हिये अति हरसन्त हैं।
कबहूं अबीर बीर लै लगावै प्यारौ मुख, गावै मन भावै तान मान सरसन्त हैं॥
कबहूं गुलाल कर लेत है किशोरी भर, प्यारे के कपोल मीच कीच बरसन्त हैं।
कृष्णअली हरसन्त तहां सोभा कौन अन्त, कोकिल रटंत छयौ श्रीवन वसन्त हैं॥

(४२)

अरे मन धूर्त गह रसिक किशोर जू कौं, सुखमा के सिन्धु लख उपमा परै खरी।
खेलत हैं होरी बर जोरी सों कमोरी ढार, करत निहोरी लाल कर भाभरी छरी॥
वृन्दावन विपिन में उड़त गुलाल लाल, लता द्रुम बेली रङ्ग सौं सुही भई हरी।
प्रेमसखी सर्न जाय ये छवि विलोकती, सु दीनता बिसारी अभिमान ता गरें परी॥

(४३)

एहो सुकुमारी प्रान प्यारी हौ बिहारी जू की, जानि अति लघु दृष्टि कृपा की ढरीजियै।
भूली हौं मारग तुम दीजियै बताय मोय, करुनानिधान आप अपनाय लीजियै॥
सुन्दर सुजान एहो कहत फिरत तेरी, तेहूँ अपनाई मोई आपनी गनीजियै।
वृन्दावन राजरानी तुम सों पुकार मेरी, प्रेमसखी दासिन की दासी हू करीजियै॥

(४४)

खोले द्वार कुंजन के भीतर बढ़ी है मुष्क, सोई रहे दोऊ पट भीने में लखात हैं।
प्रीतम की दांही भुजा राजत है प्यारी अङ्ग, बाँयों कर प्यारी जू कौ अति सरसात हैं॥
चुबुक पै पान वीर देत ही में नीद आई, सखी हरषाय कछू अचरज पात हैं।
कृष्णअली बोली बीरो देत रही प्यारे मुख, जोलों नींद आई कर चुबक सुहात हैं॥

(४५)

जागियै किशोरी उठ खोलौ मुख देखौ नैक, रवि की किरन बीच रिंध्रन में आई हैं।
झाँकत झरोखन में सखी चहूँ ओर चाह, गावत विभास राग सोभा सरसाई हैं॥
उठे दोऊ प्यारे भारे आलस में पूर रहे, हेर चहुँ ओर दृग मंडली लखाई हैं।
बोले हँस काके नैन कीजिये परख प्यारी, कृष्णअली सुन मोद आनन्द में छाई हैं॥

(४६)

लाई सखी झारी भर धोयौ मुख दोऊन कौ, आछै पकवान भोग मोदक लगावहीं।
आलस भरे हैं नैन झुकझुक जांई दोऊ, सखी समराइ कौर कर सो पवावहीं॥
चौंजन की बातन में माद न समाई हिये, हँसन हँसावैं सबै दम्पति रिझावहीं।
कृष्णअली मंगला की आरती करत गाय, बाजत मृदंग बीणा बैनु धुन छावहीं॥

(४७)

टूटी लर मोतिन की अंसन विथुर रह्यौ, गंडन पै मंडित है लाली पिय पान की।
जूरा के खुले हैं पेच कुण्डल पै छाई रहे, अति सरसाय रहे पाये सुख दान की॥
फूलन की बैंनी सुख दैंनी मृगनैंनी जू की, तिन तें कुसुम झरें मानौं मन मान की।
भाल पै तिलक कछू खंडित औ मण्डित हैं, अलकें उरझि माल सोभा सरसान की॥

(४८)

चले राजभोग कर पन्नन की कुंजन में, ताके चहुँ और लता हरित सुहाई हैं।
तिन में झरत फूल रही मकरन्द पूर, त्रिविध समीर मंद सीतल ह्वै छाई हैं॥
तामें दोऊ प्यारे खेल खेलत हैं चौपर कौं, सखी दोऊ ओर हार जीत बद लाई हैं।
जीती जब प्यारी कृष्णअली मुसिक्याय रहीं, प्रीतम की भई जीत प्यारी ओर धाई हैं॥

(४६)

उत्थापन कर सखी लाई हंस सुता तीर, बैठकें निवारे प्यारे पुलिन सिधारे हैं।
गेंद कौ मचायौ खेल तक तक रही मेल, गेंद हू अनेक मानौं चलत फुहारे हैं॥
दाव कौं बचाये जाय छिप मुर झुक जाय, परम प्रीवन अली दोऊन निहारे हैं।
प्रीतम की गेंद सो तो दई है उकाय प्यारी, प्रेमसखी पीयु प्यारी गेंद खाइ हारे हैं॥

(५०)

लटकत आये सैन निहारे हैं कुंज प्यारे, करत विनोद मोद मंगल की रास हैं।
प्यारे कहैं मेरी सखी आपुन कहत प्यारी, सो तो अति भोरी तासों करत विलास हैं।
मची रार भारी एक करी चतुराई प्यारी, तासों कही छिप जा री लता वह पास हैं॥
जाकूं मिलै ताकी बद चलै ताब ढूढ़न कौं, कृष्णअली प्यारी गही प्रीतम निरास हैं॥

(५१)

बैठे हैं सिंघासन पै मदन मरोर जोर, नैंनन की कोर भौंयें भावन बतावहीं।
कोऊ पीकदान कोऊ अतर सुवास लियैं, कोऊ पानदान कोऊ मुकर दिखावहीं॥
कोऊ लियैं छरी खरी सूरजमुखी लाई कोऊ, बीजना प्रवीन कोऊ करजु फिरावहीं।
फूलन सिंगार कोऊ कृष्णअली गुहि लई, सेवा की निकुंजन में दौर दौर आवहीं॥

(५२)

मन्द मन्द नूपुर की घोर मन्द मन्द पांय, परत धरत धरा सोभा सरसत हैं।
मन्द मन्द झीने सुर गावत हैं तान मान, देत हैं अलीन हेर हेर हरसत हैं॥
मन्द मन्द बाजन की बल आदि भूषन की, मिलत समाज धुनि राग दरसत हैं।
मन्द मन्द सीतल बहत हैं पवन जहाँ, सुमन पराग कृष्णअली बरसत हैं॥

(५३)

फूले हैं आनन बैन बोलत रसाल दोऊ, थेई थेई रट चट पट पद पटकैं।
बाहु दण्ड अंस मेल बहै रस रेल पेल, रहत चखन झेल कौर गंड अटकैं॥
ग्रीवा की हलन हस्त भेद भाव उपजन, कट की लचन ताते नाहीं मन भटकैं।
बंशी वट तट जहाँ यमुना निकट बहै, शोभा लख कोटि मार कृष्णअली सटकैं॥

(५४)

देत हैं उतार माल रीझ रीझ अलिन कौं, कर सिर फेर हेर मृदु मुसिक्याय कैं।
गुन गन प्रगट कर अपनी कहत जात, सुख सरसात जात उर लपटाय कैं॥
आनाकानी प्रीतम सों हास हू करत वाकौ, चौंजन की सैंन कर कर सों बताय कैं।
कृष्णअली फूले नैन निसरत नहीं बैंन, रहत निहार बार प्रान सुख पायकैं॥

(५५)

सैंन के समैं की सैंना बैंनी करैं मृगनैनी, कीजिये गवन प्रान वल्लभ सुजान जू।
नैंन अलसानैं और लेत हैं जम्हाई पुनि, रैन हूं हिरानी मिल पौढ़ै प्रिय प्रान जू॥
चले कर जोर जाय बैठे फूल सेजन पै, कोऊ पानदान देई अधिक सिहान जू।
कौऊ दै सुबास कोऊ सारदै सुगंधन कौ, कृष्णअली करैं सैंन ऐसे प्रिय प्रान जू॥

(५६)

* दोहा *

ये सब छबि कवि उर बसैं, ह्वै है ऐंसो बान।
रसिकजनन सों दीन ह्वै, छांड़ौं सबै सयान॥

(५७)

कौंन दिन ऊँचे सुर राधिका लतान कहूँ, गहूं बनराज गति मति पंगु होयगी।
कौंन दिन स्वामिनी की सहचरी कहाऊँ गाऊँ, जुगल सनेह गीत मति अति मोयगी॥
कौंन दिन वीथिन में टक टक हेर रहौं, लोचन सिराये छबि सुध बुध खोयगी।
कौंन दिन प्यारी जू के चरन पलोटौं बीर, प्रेमसखी नाम जाकौं पद पद्म पोगी॥

॥ इति श्री कवित्त सम्पूर्णम् ॥

* झूलन के पद *

(५८)

गुरु बिन कौंन हरै भव भर्म।
जोग जप तप नेम संजम मरत कर कर कर्म।
छाँड़ कर हरि सेव्य सेवक भेव्य भेवक धर्म॥
प्रेमसखी अब खात गोता तुमहीं जानत मर्म॥

* सामरी सखी लीला *

(५६)

श्याम झूलन कौ मतौ बनायौ।
सहचरी रूप कियौ नवनागर तब प्यारी जू के ढिंग धायौ॥
बोले बचन रसाल द्वार पै सामन मन भामन दिन आयौ।
कृष्णअली पुनि पुनि हरषत हैं राग मलार अनूपम गायौ॥

* दादरा *

(६०)

झूलन चलोरी कोऊ झूलन चलौरी आज सामन की तीज।
डगर डगर और बगर बगर में कहत फिरौं मेरी कोऊ ना सुनौ री॥
झूलन कौ मोहि चाव अधिक है चाहौं संग चलौ बीनती करौं री।
कृष्णअली सुन चतुर लाड़ली बोली बैन तासों नेह भरो री॥

* पद *

(६१)

चाह बढ़ी चित झूलन की तेरैं।
डगमगात पग परत धरन पर अंग अंग दरसत फूलन की तेरैं।
द्वार द्वार उझकत झुक झांकत रांच रही सुख मूलन की तेरैं॥
कृष्णअली चलि तोहि झुलाऊँ भर लीनौ भुज मूलन की तेरैं॥

(६२)

झमकि हिंडोरना में बैठि गये दोऊ ।
वे विनके वे विन मुख चितवत रस बरसत सुख मेध छये दोऊ ॥
हँसत हँसावत रीझ रिझावत गावत मन भावते भये दोऊ ।
कृष्णअली छबि छली विलोकत नव कौतिक नव सोभा नये दोऊ॥

(६३)

तेरे झूलन में रस पूर बहै ।
अंचल उड़ उड़ जाय भुजन तें ढांपत मृदु मुसिक्याय चहै ॥
मृगनैनी ए अहो पिकबैनी निरख नैन छबि लाहु लहै ।
कृष्णअली इक टक अवलोकत चित्र लिखौ सो कहा कहै ॥

(६४)

हिंडोरना की झूल लेऊ रिझवार हिंडोरना की ।
मैं बलि जाऊँ नागरी तेरी कहा नाम सुकमार हिंडोरना की ॥
सामल गात बात रस भीनी निसरत सुखकी सार हिंडोरना की ।
कृष्णअली तू मिली भली मोहि प्रीतम के अनुहार हिंडोरना की ॥

(६५)

हिंडोरना तें उतर रही मुरझाय हिंडोरना तें ।
प्यारी कहत कहा भयौ सुन्दरि ताते रही सिर नाय हिंडोरना तें ॥
मेरी गौर प्रिया हौं सामल तुम रंग रहौं समाय हिंडोरना तें ।
कृष्णअली मुख ओर बिलोकत दौर लिये उर लाय हिंडोरना तें ॥

(६६)

कपट हिंडोरना में झूल लये कर ।
अैसो रूप धरौ नव नागर लखि शोभा सब भूल गये कर ॥
अंसन पै भुज दियैं परस्पर मुख चितवत मनौं फूल नये कर ।
कृष्णअली रंग कुंजन कुंजन बरसत सरसत मूल छये कर ॥

(६७)

अब कीजै गवन पिय कुंज भवन ।
सोभा दरसाई भाई छाई गई चहुँ ओर प्रघट दिखाई दई भूलै कब न ॥
छबि की मरोरन में कोरन अरुझ रहै थोरन घुरे दोऊ प्रान रवन अब न ।
कृष्णअली जू की प्रेमसखी गाई लीला रसिक सुजान उर ताप दवन ॥

(६८)

झूलत आज गुपाल हिंडोरे चढ़ि ।
झुक झुक जाय कहत डर लागत थाम लेउ व्रजबाल ।
मन्द मन्द मुसिक्याय मनोहर बोलत वचन रसाल ।
प्रेमसखी यों कहत परस्पर निरखौ नैन विशाल ।।हिंडोरे चढ़ि।।

(६९)

भीजैं दोऊ ठाड़े कदम की छैयाँ ।
प्यारी हँस हँस कहत श्याम सों प्रेम नेह बरसैयाँ ।।
श्याम घटा चहुँ दिशि घिर आई घुर रहीं पिय प्यारी बैयाँ ।
कृष्णअली कर छता विराजैं दोऊ एक ही मैयाँ ।।ठाड़े दोऊ।।

(७०)

श्याम घटा झुकि आईं लतन पर ।। श्याम घटा० ।।
देखौ श्याम मिलौ रंग में रंग उत दामिनी इतहीं तुमरे लर ।।
उत बरसत सरसत जल भूमी इत अनुराग ढरत आलिन धर ।।
उत नभ गोभ म्रदुल त्रन निपजत इत रोमांच रहे हैं प्रेम भर ।
इन्द्रबधु उत इत सोभित हैं बुंदन सों मंहदी सबके कर ।।
उत बग पांति इन्द्र धनु राजै इत मुकतावली चीर पचरंग वर ।
उत केकी कल कूक करत हैं इत गाजत बाजत पग नूपुर ।।
कृष्णअली हम नित्त केल वन यहँ आवत अपने ही रितु पर ।।

(७१)

जिन बरषै हौ कारी बदरिया ।
भीजैगी पचरंग चूनरी देख मन तरसै ।।
आज रंगाई पाग पिया की ताहू कौ रंग सरसै ।।
कृष्णअली अनुराग पिया कौ सुन सुनकैं छवि हरसै ।।

(७२)

ए आंई ए आंई छांई बदरिया ।
चमक चमक दामिन घन गरजत लरजत मन नहिं भीजै चुंदरिया ।
चलत पवन सननननननननन सीतल मंद सुगंध लहरिया ।।
कृष्णअली छननननननननन बाजत नूपुर मंद पहरिया ।।

(७३)

वरषा की रितु लगत सुहावन ।
तड़ड़ तड़ड़ तड़ड़ड़ड़ड़ड़ घन बोलत मोर कोईल मन भावन ।
झरर झरर झरररररररर वन दमक दमकत दम दामन ।।
कृष्ण अली रंग रली भली सब जान रिझावन सावन आवन ।।

(७४)

कौन दिना उरझाऊं यह छवि ।
जुगल किशोर तीर यमुना के भीजत राग मलार सुनाऊँ ॥
यह विनती सुनि लेऊ प्रानधन त्यारी तबै कहाऊँ ।
कृष्णअली रंगरली स्वामिनी फूलन में बरसाऊँ ॥

(७५)

ता मध झूला डार कुंज एक सुन्दर आज रची ।
रेसम डोर रतन की पटली विविध मनीन खची ॥तामध०॥
ताल तमाल कदम्ब माधुरी सुभट समीर सची ।
बोलत केकी कीर पपैरा अलि कुल गुंज मची ॥तामध०॥
सउरब उड़ उड़ परत पनारी छवि धर रूप नची ।
कृष्णअली संग लिये कुमर वर झूलन जात चली ॥तामध०॥

(७६)

सामन कौ त्यौहार सलूनौ झूलौ री सजनी ।
जुगल चंद मकरंद कंद लखि फूलौ री सजनी ॥
राखी डोरा बांध दोऊन सम तूलौ री सजनी ।
कृष्णअली झूलन की रमक सुख मूलौ री सजनी ॥सामन कौ॥

(७७)

* अथ सांझी लीला के पद *

चली फूल बीनन कौं सखियन संग राधे ।
सामरौ किशोर चित्तचोर बैठो फूलवारी कहत बुलाए फूल लीजै सुखसाधे ॥
रस बरसायबेकौं प्रीयाजू रिझायबेकौं सखी रूप धारो नहीं लखत अगाधे ।
कोऊ देख फूल गई कोऊ चितवत रहीं कृष्णअली प्यारी देख अति अह्लाधे ॥

(७८)

* राग देस *

प्यारी देखौ फूली नवल चमेली ।
गुलाबाँस गैंदा गुल तुर्रा लटकन लटकैं बेली ॥
पीत गुलाब कुंद गुलमहंदी हेर हिये रंग रेली ।
गुलैनार गुलडोरी चंपा रायबेल की ऐली ॥
मोरछली मोतिया मालती लिभिर माधुरी मेली ।
हार सिंगार जही जुही सोभित हेर मोंगरा हेली ॥
फूले कमल सरोवर नाना मधुकर कर रहे केली ।
कृष्णअली की बातें सुनकर चली धाय हँस भेली ॥

(७९)

* राग मारू *

सांझी फूल लैन हित आई हौ नवेली बाल।
औचक ही मग जाइ टेर दै बुलाई मोई अतिही रिझाई तुम संगही सहेली बाल।।
फूल रहे फूल सब नवल नवेली बेली गुंजन मधुप पान करै रसरेली बाल।
कृष्णअलीजूसौं प्यार कियौ है अपार प्यारी राखौगी निकट सदां भुजभर मेली बाल

(८०)

* राग मारू *

चलौ फूल बीनैं सांझी रचैगी निकुंजन में।
लैंहिगे विचित्र बहुभाँति रंग रंगे फूल कालिन्दी के कूल रसमूल सुख पुंजन में।।
लागी फूल बीननकौं सखी चहुं ओर सबै कृष्णअली नेह सरसावहीं दुंजन में ।।

(८१)

* राग कान्हरौ *

कहत पिय सांमरी रचौ नवरंग सांझी देख करतूत कर करनी मेरी।
रचौंगी फूल ढिग फूल समतूल वर कूल चहुँ ओर नव बेल नेरी ।।
मूल में चित्र विचित्र बहु भांति के होउ चकित छवि सब ही हेरी।
होत लघु बात मुख आप दीरघ कही कृष्णअली मौंन मुख होत ढेरी ।।

(८२)

* दोहा *

सब न्यारी न्यारी रचौ अपनी अपनी ठौर ।
काकी निसरे आगरी कहै देत सिरमौर ।।
सब रचना रचिबे लगीं बाढ़ी चौप अपार ।
प्यारी न्यारी ठौर में श्रीरंगदेवी भार ।।

(८३)

* राग जै जै वन्ती *

मोहन रचना विविध बनाई।
तामध भाव अनूपम कीयौ सेवाकुंज पुंज छवि छाई ।।
तामें सेज विराजत राधे चरण पलोटत श्याम सिहाई।
सखी चहुँ ओर लता कुंजन में तहां तहां मंडल अति सरसाई ।।
तिन पर रास-विलास सखिन जुत दंपति केलि करें मन भाई।
ताके तरें बहत कालिन्दी फूले कमल पराग उड़ाई ।।
तापर घाट बने बहु भांतन जटित मनिन मन रहत लुभ्याई।
जहां तहां लता झुकी द्रुमबेली गुंजत मधुप रहे मड़राई ।।

बहु विध रचना रची सांमरी तब प्यारीजू के ढिग आई ।
वेगि दिखावौ झांकी सुन्दर तुमनें कहौ कैसी जु बनाई ॥
निसर किशोरी देखत सबकी अधिक अधिक छवि देत दिखाई ।
प्यारी कहत दिखावौ आपुन तुमकौं हमन दई दिखराई ॥
सब मिल चलीं भवन में भामिन सांझी खोल दई दरसाई ।
चौंक परी वाकौ मुख चितवत यह रचना यानें कहां पाई ॥
नख ते सिख सिख तें नख चितवत जान लई प्यारी चतुराई ।
बोले यह अभिलाष सदां ही चरन पलोट रहौं सिर नाई ॥
ते छवि निरख सखी सब फूलीं नैन बैन इनकी गमगाई ॥
कृष्ण अली चली सैंन कुंज कौं बीरो अतर देति मुसिक्याई ॥
प्रेम सखी सांझी की लीला कृष्णअलीजू के बल गाई ।
सदां रहौं रंगदेवीजू कौ चरन सरन निशि दिन लपटाई ॥

* पद *

(८४)

प्यारी मन भावै सो कीजै ।
परबस परी नहीं बस मेरो चरन कमल चित दीजै ॥
जो कछु करो होत है सोई दीन जान उर लीजै ।
तुमरे धाम कमी काहे की बौरी एक गनीजै ॥
तुमरी दास दास दासिन की महल टहल उर भीजै ।
प्रेमसखी की अहौ स्वामिनी तुम निरखत छिन छीजै ॥

(८५)

प्रिये कब तुमरे चरन गहौंगी ।
अहो नागरि अहो सुजस उजागरि राधा नाम कहौंगी ॥
श्रीवन कुंज पुलिन वंशीवट तुमरौ ध्यान लहौंगी ।
प्रेमसखी रंगदेवी की यह कह कह लाहु लहौंगी ॥

* दोहा *

(८६)

श्रीगुरु दीन दयाल जू, यह अवलाषा मोर ।
जुगल चन्द पद कंज छबि, मन मलिन्द गत चोर ॥
श्रीवृन्दावन-चन्द छबि, श्रीराधा वर नाम ।
गाजै राजै कवि हियै, विमल चारु कर धाम ॥

अँड ऊल मो ओर कौं, आवैं प्यारी पीय।
उह छबि दृगन बिलोकि हौं, कब चट राखौं हीय॥
मैं दरशन बिन अनमनी, बैठोंगी मुख मोर।
कब मोसों कहैं लाड़ली, क्यौं रूषौ मन तोर॥

(८७)

किशोरी मोरी कब अवलाष पुजावौ।
तुम पौढ़ोगी सुभग सेज पर मो पर चरन चपावौ॥
मैं अंगुरी चटकावौं सुन्दरि, तुम हिय हर्ष बढ़ावौ।
प्रेमसखी कह कह परसंसौं रीझ रीझ सचु पावौ॥

(८८)

किशोरी मोरी कब आशा पुजवौगी।
श्रम वन कन गन तन पर सोहैं रास विलास पगौगीं॥
मैं ढोरौं तुम ब्यार उतैली तुम पिय अङ्ग जुटौगी।
सुभग सिगासन सुख सरसासन राजत मोद भरौंगी॥
होय निवार प्रस्वेद देह तें तब मो ओर चितौगी।
मोरे तन श्रम कन घन छलकैं तुम परसंस करौगी॥
मैं तौ सकु चकरौं चख इत उत तुम लै नाम हंसौगी।
प्रेम सखी सोभा उर गोभा चितवन वार डरौगी॥

(८९)

ये छवि कब आवै उर मेरे।
रंग रँगीले छैल छबीले रसिक रसीले मेरे॥
रतन जटित सिहासन भ्राजैं सोभा सील घनेरे।
करत खेल आनन मटकावौ नैन लरावौ टेरे॥
सुख में मुख अवलोक परसपर भौंयें बंक कर हेरे।
प्रेमसखी कब नवल चौंज लखि रहूँ सकुच दृग गेरे॥

* कवित्त *

(९०)

श्रीवन निकुंजन की लता द्रुमबेली कीजै, रहै रंगरेली हेली झेली फल फूल भार।
किधौं नव कुंजन कौ चातक चकोर मोर, कीजिये मराल सुक सुन्दर सुजान कार॥
पायन की पाइक की चाहन की भाइक की, गुनन की गाहक सुमोतिन हरा निहार।
कीजिये नवल थली रास कुंज गली भली, प्रेमसखी अली कीजै दीजिये उदार सार॥

* पद *

(६१)

किशोरी मोहि श्रीवन वास बसावौ ।
सदा रहौं चरनन की दासी, यह अभिलाख पुजावौ ॥
और न देखौं इन नैंनन सों, गुननहि हीय सिहावौं ।
प्रेमसखी तुमरे गुन गुन-गुन, सुन-सुन तुमैं रिझावौं ॥

(६२)

अलबेली मोय राखौ चरन सरन कर ।
मेरी कोऊ नहीं या जग में तुम बिन श्री सुन्दर वर ॥
अब तौ तुमैं निभायें बनैंगी मैं हू मचल परी तुमरे लर ।
प्रेमसखी को जिन छिटकावौ सब गुन हीन मीन जल के सर ॥

* कवित्त *

(६३)

प्यारी नख चन्दन कौं कीजिये चकोर मन, राधे गुन गानन कौ पिक कर दीजिये ।
फूले पद कंजन कौ करिये मधुप मोई, बिरद बखानबै कौं कोइल करीजिये ॥
कीजिये मराल जो पै दीजै गति आप प्यारी, केकी कर केल रेल श्याम घन भीजिये ।
कीजै द्रुम बेली खग श्रीवन निकुंजन में, प्रेमसखी तू ही धनी भावै तैसी कीजिये ॥

(६४)

कीजै मोकौ वृन्दावन की धूर ।
यह अभिमान गुमान मान सब होय मथे तें चूर ॥
रसिक सखी ठोकर ढपरावें ह्वै हैं······भरपूर ।
विहरत कुंज निकुंज जुगल वर गहौं चरन छबि पूर ॥
होय पराग अंस सों मिलकर जैसे संग कपूर ।
प्रेमसखी की अहो स्वामिनी गहौं सार ने तूर ॥

(६५)

प्यारी मोहि कीजै वृन्दावन वासी ।
मो सी दीन नहीं कोऊ सुन्दरि तुमसी नहीं सुखराशी ॥
श्रीरंगदेवी हितु सहचरी श्रीहरि प्रिया उपासी ।
काहे घर तज फिरत आन यह मेटो जगत की हाँसी ॥
रहौं सदा पद कंज मंजु गह निरखौं हास विलासी ।
प्रेमसखी की आस निरन्तर कृष्णअली की दासी ॥

(९६)

प्यारी मोई कीजै चरन की चेरी ।
हा हा नागरि सुजस उजागरी दीनन की हित हेरी ॥
औगुन भरी खरी द्वारे पै गुनन हीन हौं तेरी ।
श्रीरंगदेवी हितू सहचरी कृष्णअली है मेरी ॥

(९७)

श्रीराधे अब बेग सम्हारौ ।
अहो नागरी फेर न कीजै अपनी चेरी जान निहारौ ॥
संशय हरौ ढरौ निज परिकर यह अभिलाख हमारौ ।
प्रेमसखी की अहो स्वामिनी यह संदेह निवारौ ॥

(९८)

श्रीहरिप्रिया स्वामिनी राधे ।
श्रीरंगदेवी की निज जीवन हितू सखी की सुख की साधे ॥
कीजै तिन चेरिन की चेरी गुन नव रूप अनूप अगाधे ।
प्रेमसखी तुमकौं आराधे हरौ कोटि ब्याधिन की ब्याधे ॥

(९९)

श्रीराधे जय राधे राधे ।
श्रीवृन्दावन श्रीआनँदघन श्रीनवकुंज फिरत अहलाधे ।
नित नित होरी जलकेली औ पावस झूल शरद सुख साधे ।
कृष्णअली सेवत बपु सहचरी धर नव रूप अनूप अगाधे ॥

(१००)

किशोरी मोहि कब कहोगी मेरी ।
कब हँस चहौ कहौ कछु सेवा कब कहवाऊँ तेरी ॥
कब बृन्दावन कुंज लता द्रुम कब रहौं इकटक हेरी ।
प्रेमसखी कह कह कब टेरौ कृष्णअली की चेरी ॥

(१०१)

इन कुंजन बिहरत नित ही नित ।
सेवाकुंज पुंज छबि बरषत हरषत निरखत रहत जित ही तित ॥
जुगल किशोर रूप रस माते फूली सखी रहैं चित ही चित ।
कृष्णअली सों यह छबि जाचौं राचौं परचौ रहौं जित ही तित ॥

* राग वसंत *
(१०२)

नवल वसंत नवल धन पूजें नवल किशोर किशोरी ।
नवल हो साज समाज नवल सज नवल हो गावें गोरी ॥
नवल ही फूल नवल अलि तिन पर नवल ही अंबन बौरी ।
नवल ही कीर कपोत हंस पिक नृत्तत केकिन जोरी ॥
नवल निकुंज नवल श्रीवृन्दावन नव छबि बरनै कोरी ।
नवल वसंत बने दोउ नागर नव नव निरखत ओरी ॥
नवल लता द्रुम उलहे पल्लव उड़त गुलालन थोरी ।
कृष्णअली चल हिलमिल खेलैं श्रीवनचन्द चकोरी ॥

* राग सोरठा *
(१०३)

अब दोऊ पौढ़िये पिय प्रान ।
किसलै दलन रची सखी सिज्जा अरुन नैन अलसान ॥
झुक झुक जात नैन आलस जुत करौ सेज रस पान ।
प्रेमसखी पिय झमक सेज मिल सोय रहे पट तान ॥

(१०४)

राधे के चरन मन निरख निरख जीजै ।
कोटि चन्द मन्द होत नख दुति लख लीजै ॥
मानौं जुग छबि के पुंज राजत हैं नये कुंज,
हेर हेर सखियन के लोचन जल भीजै ।
पंकज छबि होत छीन जावक लखि होत दीन,
अरुनता एड़िन की सोभा कहा कीजै ॥
इत उत कौं धरत पाइ मखमल सी बिछत जाइ,
मानौं श्रीवृन्दाविपिन भूषन लै रीझै ।
प्रेम पराग झरत रहै लालन बस करत रहै,
कृष्णअली नेहन सों प्रेमसखी पीजै ॥

* ठुमरी *
(१०५)

श्रीवृन्दावन वासी हैं हम श्रीवृन्दावन वासी हैं हम ।
देवी देव पितर नहीं जानें संतन चरन उपासी हैं हम ॥
सेव्य हमारे किशोरी वल्लभ श्रीराधे जू की दासी हैं हम ॥
कृष्णअली की सरन पाइकैं प्रेमसखी सुखरासी हैं हम ।
श्रीवृन्दावन वासी हैं हम० ॥

* दोहा *

(१०६)

यह रस रसिकन के लिये, रसिकहि रस बरसंत।
रसिक जौहरी रस रतन, रसिकन ही पै बसंत ॥

* पद *

(१०७)

यह रस रसिक ही जन जानैं ।
वृन्दावन की सहज माधुरी छिन छिन गुन गन गानैं ॥
हास विलास रास रस विलसत सरसत हिये हरसानैं ।
अँडे रहैं प्रपंच अभ्र सौं कृष्णअली पहचानैं ॥

(१०८)

संत गुरु छिमिऔ अपनौ जान ।
मैं तौ पातक भरौ पातकी तुम हौ कृपा निधान ॥
बालक मूत रहत गोदी में समझत नहीं अजान ।
तैसें ही प्रेमसखी कौं समझौ सीतल सुघर सुजान ॥

(१०९)

मैरौ मन संतन हाथ बिकानौं ।
छाँड़ भार सुख सार हात गह रसिकन रस में आनौं ॥
मधुकर तौ सौरभ कौ लोभी कीट कीच लपटानौं ।
प्रेमसखी बलि जाय कुमर की तिन यह रस में सानौं ॥

(११०)

जापर तू अनुकूल किशोरी तापर माया कहा करैगी ।
जदपि यहै बलवान बहुत सी तदपि ह्वै पांय परैगी ॥
यह ठगिनी कादर ही जीतत सूरन सौं यह कहा लरैगी ।
प्रेमसखी मुएन कौ मारत जीतन के डर आप डरैगी ॥

(१११)

जिनके मुख नहिं निसरत राधे ।
तिनके मुख कूकर सूकर सम पोखत गात मिटे नहिं बाधे ॥
इत उत फिरत चहूँ दिस चितवत आपते आप लगें अपराधे ।
प्रेमसखी इक नाम बैद बिन तड़फत हैं भव सिंधु अगाधे ॥

(११२)

कोयल कौ सुत बायस के घर राखत पोखत भाँति भली है।
करत ममत्त जान अपनौ ही करता की नहीं बात चली है॥
होत सयान दिनैं दिन देखत जान लई इन मोइ छली है।
प्रेमसखी तज जात कुजातन अब जातन में आय मिली है॥

(११३)

ऐसी प्रीति देउ किन प्यारी।
छिन छिन पल तुम पद अवलोकौं ह्वै कै रहौं तिहारी।
डमाडोल डोलत मन मेरौ जहाँ जाय तहाँ ख्वारी।
प्रेमसखी की यही बीनती राखौ सरन न कीजै न्यारी॥

इति श्रीप्रेमदासजी के पद सम्पूर्णं
वैशाख शुक्ला ४ सम्वत् १९५०

परिशिष्ट

बाल-पचीसी—

[कवि की इस अप्रकाशित रचना की खण्डित प्रति उपलब्ध हुई है जिसे स्वयं कवि ने ही अपनी लेखनी से लिखा है। अन्य कोई प्रति उपलब्ध नहीं हो पायी। अतः प्राप्त रचना को खण्डित रूप से ही प्रकाशित कर दिया गया है।]

सिर गंग तरंग औ भङ्ग पिये, दृग रंग भरे व्रज आवत हैं।
घनश्यामहि देख सिहात हिये, मणिचन्द्रहि हाथ गहावत हैं॥
तहिकों उलटें पलटें कनुआं, मुसिकाइ हिये सन लावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं॥११

द्विज पाक कियो प्रभु भोगलगा, हरि खायकं ताइ भकावत हैं।
सुत कौन कहा? मोहि लेत बुला, नहिं भक्त सौं अन्तर भावत हैं॥
सुनि ब्राह्मन पायनु आय परचौ, अँगना मह लोटि सिहावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं॥१२

हरि खेलत हैं नँद के अँगना, तिय कोउ खड़ाम मँगावत हैं।
सुन ल्यावत हैं धरि सीस तिनें, यह जान बबा की सिहावत हैं॥
चलते भकभूम परें धरनी, हँस दौर कोऊ उर लावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं॥१३

कबहूँ हँसि कोउ मँगावै पटा, सुनि कैं हरि सीघ्र सिधावत हैं।
छल सौं बल सौं बहु भाँतिन सौं, न उठै पुनि ताहि हटावत हैं॥
पुन ठोकत खम्भन रोपत हैं, भुज भूमि सुनाय चलावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं॥१४

हरि खेलत हैं अन भाँतिन सों, कबु भौन की पौरि लौं धावत हैं।
गह चौखट कौं जुग पाननि सों, पग दोउन कौं लटकावत हैं॥
व्रज की ललना अभिलाख भरी, लखती छवि अङ्गन भावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं॥१५

नँदराय की चौखट उन्न हरी, उतरें सिढ़िया नहिं छ्वावत हैं।
उतरें न बनें चढ़ते न बनें, अकुलावत अश्रु बहावत हैं॥
तिय दौरि उठाय लिये उर ला, अनखा जननी सँभरावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं॥१६

कबहूँ हरि लै व्रज के लरका, सङ्ग पौर के बाहर आवत हैं।
हँसि खेलत मेलत मित्र भुजा, मुख तोतरे शब्द सुनावत हैं॥
लख बाल गुपाल के बाल चरित्रन, मात न फूल समावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं॥१७

कबहूँ गउ काजर धौरिन के, रिस बाँह उठाय बुलावत हैं।
कबहूँ हँसि नंद बुलावै तिनै, कछु गावत नाचत आवत हैं॥

कबहूँ मुख माखन नावै कभू, मणिखम्भ कूँ जाय दिखावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥१८

जब जेंवत हैं व्रजराजहु के, संग ले कर सुख नावत हैं।
कछु देत बबा मुख में हँसि कै, कछु जात कछू ढरकावत हैं॥
गह दाढ़ि औ तोंद सबै सन कै, लखकें मन नंद सिहावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥१९

कछु खात पिता सँग बैठ लला, टुक लैत बरा मुख नावत हैं।
जब मिर्च लगै अकुलाय भजें, अँसुवा दृग दोउ बहावत हैं॥
तब दै मधुरौ कछु रोहिणीजू, नवनीत सों तीत मिटावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥२०

जब खेलत ग्वालन के सँग में, तब भाजन में गहि पावत हैं।
हम ठाड़ भये तब आय गहै, सब भूठहि नाम लगावत हैं॥
नहि राखहि रोमटिया कहु साथ, सु रोवत मात पै आवत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥२१

अब दूर न खेलन जाउ लला, व्रज हाउ सुनें हम आवत हैं।
इकले दुकले लरकान कौं देखत, ही चट कान कटावत हैं॥
छिप औचर में जुग कानन दाब, सुदाउ कूं टेर बुलावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥२२

जिन पीवो लला अब अस्तन कों, इन सों दतिया बिगरावत हैं।
अब स्याने भये हो गुपाल, गुवाल लखें सब हाँस करावत हैं॥
सुनिकै सकुचे मुसिक्याय कछू, मुख आँचर माँहि लुकावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥२३

करिये पय पान प्रदोकेन आय, हँसो बलि चोटि बढ़ावत हैं।
हँसि पान करैं कर एकहि सों, करिये कहि शीश फिरावत हैं॥
न बढ़ी जननी वहुबार भई, कह भूँटहि मोहि पियावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥२४

कढ़ि भौन तै बाहिर जात लला, मग बैठे बछे हँस पावत हैं।
तिन की गहि पूँछन खैंचत हैं, उठ चौंकि उठे मग धावत हैं॥
तिन के संग भूमत जात चले, नँद देखि उठा उर लावत हैं।
बलबीर जु मोहन सोहन के, यह ख्याल नये नित भावत हैं ॥२५

(दोहा)

उक्त जुक्त सब सूर की, मम बुधि नहिं गम्भीर।
बालविनोद पचीसिका, कही लाल बलबीर ॥२६

* इति श्री बालविनोद पच्चीसी श्रीलालबलबीर कृत सम्पूर्णम् *

मिति अधिक ज्येष्ठ शुक्ला ८ सं० १९६०